सिक्ख इतिहास

अर्थात

सिक्ख पंथ कहां से कहां

ज्ञानी अमर सिंघ

१ओं सतिगुरु प्रसादि ।।

सिक्ख इतिहास

अर्थात्

सिक्ख पंथ कहां से कहां

इस पुस्तक में (सम्वत १७५६) अमृत छकाने के समय से लेकर अब तक (सम्वत २०२५) के हालात अंकित हैं । अमृत छकने के बाद सिंघ कैसे उठे ? बंदा बहादुर, भाई मनी सिंघ, भाई तारू सिंघ आदि की शहीदियां । मस्सा रंघड़, दुरानी और दुरानियों के हमले, घल्लूघारे, सिक्ख मिसलें, सिक्ख-राज, सिक्ख-राज का अंत, फिर नामधारी, सिंघ सभा, अकाली लहरों और पंजाबी राज्य के अब तक के पूर्ण विवरण इस पुस्तक में दर्ज किये गए हैं ।

लेखक- **ज्ञानी अमर सिंघ**

प्रकाशक :

भा० चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर

प्रस्तुत

✰ उन शूरवीर बहादुर सिंघों को जिन्होंने सिक्खी को बचाने के लिए अपनी जानें कुर्बान करने में फर्क न रखा ।

✰ उन हठीले सिंघों को जिन्होंने चरखड़ियों पर चढ़-चढ़ कोड़े खा कर तथा कई असहनीय कष्टों को सहा, पर सिक्खी सिदक केशों और स्वासों से निभाया और धर्म न हारा ।

✰ उन दृढ़शाली विश्वसनीय सिंघनियों के लिए जिन्होंने अपने प्यारे बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवा कर फिर गले में लटकवा लिए, सवा-सवा मन दाने पीसे, थोड़ी-थोड़ी रोटी पर गुजारा किया पर अपने सतिगुरु का दामन नहीं छोड़ा, दुखों से डर कर धर्म का त्याग नहीं किया ।

✰ उन अनखीले और जोशीले सिंघों को जिन्होंने मजलूमों की खातिर युद्ध भूमि में पुर्जा-पुर्जा हो कर शहीदियाँ पाईं, देश और धर्म की शान को ऊँचा करते, अपनी जानें कुर्बान कीं और निश्चित किए हुए प्रोग्राम के साथ आगे ही आगे बढ़ते गए ।

✰ उन निडर सिंघों को जो जीवित ही वृक्षों (जड़ों) से बांध कर जलाए गए, कीमां-कीमां हुए पर पीछे नहीं लौटे । अत्याचारी का जुल्म हँसकर सहा और अपने धर्म के नाम को ऊँचा किया ।

दृढ़ इरादा

वहीं मनुष्य दुनिया में प्रगति करता है, जो दृढ़ इरादे वाला हो और कौम भी वहीं बस सकती है, जिसका विश्वास दृढ़ता वाला हो, एक अंग्रेज लेखक ने बहुत अच्छा कहा है-

Not Gold can make a nation Great or Strong
But men who for honour's sake stand fast & Suffer long.

भाव-किसी कौम को सोना या धन नहीं बल्कि वह आदमी ही मजबूत बना सकते हैं, जो कि अपने अस्तित्व (Existence) के लिए देर तक दृढ़ता से मुश्किलें झेल सकते हों ।

सिक्ख इतिहास इसी चीज़ की लासानी (बेमिसाल) मिसाल है और यह अपने आप में दृढ़ता का एक समुद्र है, इसकी मिसाल कहीं और नहीं मिलती ।

सिक्ख इतिहास की साखियों और कारनामे कौम पर मुश्किल बनने पर सच्चे सहायक और प्रेरणा तथा सच्चे साथी के जैसे काम करते हैं । अपनी कौम और भाईयों के प्रति अपने कर्त्तव्य को पालने की, अपनी कौम के लाभ और हानि को जानने और मुश्किलों को झेल सकने की जांच यह भली-भांति हमारा इतिहास हमें बता रहा है ।

१ओं श्री वाहिगुरु जी की फतहि ।।

भूमिका

अपने इतिहास की तरफ देखें तो ऐसे प्रतीत होता है कि हमारा इतिहास कुर्बानियों की एक बेमिसाल श्रेणी है । सिक्खी धारण करने से पहले सिर को गुरु-अर्पण कर देने की शर्त पर ही सिक्ख धर्म की गौरवता का अनुमान लगाए कि सिक्खी कैसे निडरता की गोद में बैठ कर फली-फूली । इस कौम की बेहिसाब कुर्बानियां करना ही इस बात का प्रत्यक्ष सबूत है ।

सिक्खी आदर्श को धारण कर चुके सिक्खों के लिए और इस दुनिया में है भी क्या ? तन गुरु का, मन गुरु का, धन गुरु का, फिर सिक्ख इस से बढ़कर और प्यार किससे करे ? इसलिए ही वह धर्म पर सब कुछ कुर्बान कर देता है । सिक्ख इतिहास यही बताता है कि सिक्ख जानें कुर्बान करके धर्म की रक्षा करता आया है और करता रहेगा । गुरुबाणी की रोशनी में सिक्ख को विश्वास हो जाता है कि इस दुनिया पर उपकार, नेकी और धर्म की कमाई ने ही मानव जीवन को सफल करना है । धर्म न हारना ही सिक्खी का सच्चा आदर्श है ।

इसी शानदार सिक्खी आदर्श ने ही सिक्ख का जीवन ऊँचा सदाचारी वाला और आदर्शवादी बनाया है, जो वक्त नहीं टालता, बल्कि वक्त को सम्भाल कर, शहीदों की मृत्यु मर कर देश और कौम का नाम ऊँचा करता है । कबीर जी ऐसे ही आदर्श का बयान करते है :-

कबीरा मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ।।
ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ।।२९।।

(सलोक कबीर जी)

दुनिया के और धर्म के इतिहासों की तरफ निगाह मारे तो पता लगेगा कि बाकी धर्म राजसी ताकत के जोर और हकूमत के दबाव से ज़बरदस्ती करके दुनिया में फैले हैं, पर सिक्खी धर्म केवल बेशुमार कुर्बानियों, खुद को कुर्बान कर देने की भावना के ज़ोर से मुकाबला करके बढ़ा है । ज़ालिम के जुल्म का शांतमयी ढंग और तलवार के जोर से अपने आपको और

अपने देश को बचाने वाला यहीं धर्म है ।

श्री गुरु अर्जुन देव जी और श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदियां कौम को शांतमयी का सबक सिखाती हैं और शांतमयी से धर्म की रक्षा करना सिखाती है, परन्तु यदि ज़ालिम ज़ुल्म से फिर भी न रुके तो छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी और दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज ने शूरवीरता के सबक सिक्ख कौम को सिखा कर, कौम को लड़-मरने और मर-मिटने की शिक्षा दी है । क्योंकि करारे हाथों के बिना ज़ालिम का दिमाग कभी ठीक नहीं होता । कलगीधर पातशाह ने जफरनामे में कैसा सुन्दर फरमान किया है :-

चु कार अज हमा हीलते-दर-गुज़शत ।
हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत ।

अर्थात-जब हर ढंग फेल हो जाए तब तलवार का सहारा ले लेना चाहिए ।

दुश्मन बहुत है, इस विचार में सिक्ख नहीं पड़ा करते, वह हक और इन्साफ को मुख्य रख कर जीत प्राप्त किया करते थे । अगर भाई मनी सिंघ, भाई तारू सिंघ तथा और ऐसे सिदकी सिक्ख शांतमयी ढंग से दुश्मन को अचम्भित कर गये तो बाबा बंदा सिंघ बहादर, बाबा दीप सिंघ, भाई महताब सिंघ और सुक्खा सिंघ आदि की दिलेरी ने भी सिक्ख बहादुरी को चार-चाँद लगाए हुए हैं ।

इस पुस्तक में कलगीधर पातशाह के अमृत छकाने से सम्वत 1756 की वैसाखी से लेकर अब तक 2025 तक के हालात अपने प्रेमी पाठकों को जानकारी के लिए दर्ज किये गए हैं । हमारा इतिहास दुनिया के इतिहास की तरह केवल जानकारी ही नहीं, बल्कि निरोल खून की स्याही से लिखा हुआ इतिहास है और ऐसा केवल सिक्खों का इतिहास ही है । यह इतिहास कौम के जीवन में इंजैक्शन का काम करता है और समय पड़ने पर पंथ की अगुवाई करता है और करता रहेगा ।

अक्तूबर 1968 पंथ का दास
-ज्ञानी अमर सिंघ

विषयसूची

सिक्ख इतिहास

अर्थात

सिक्ख पंथ कहां से कहां

नौ गुरु साहिबान ने अपने शुभ उपदेशों और निर्मल करनियों द्वारा अपने सिक्खों तथा और दुनिया के सामने पूर्ण मानवता का आदर्श प्रस्तुत किया । श्री दशमेश पिता जी ने उस आदर्श को उजागर किया और अपनी बाणी में उन्होंने पूर्ण सादर्शी की व्याख्या ऐसे की :-

जागति जोत जपै निस बासुर, एक बिना मन नैक न आनै ।।
पूर्ण प्रेम प्रतीत सजै ब्रत, गौर मड़ी मट भूल न मानै ।।
तीर्थ दान दया तप संजम, एक बिना नह एक पछानै ।।
पूर्ण जोत जगै घट मै, तब खालस ताहि नखालस जानै ।।

(दशम ग्रंथ)

इतिहास बताता है कि गुरु नानक देव जी ने हिन्दू सम्प्रदाय के डाले गए भेदभाव, पुजारियों के डाले गए भ्रमादि, पुरातन रस्मों की कुरीतियों को रद्द किया । सिक्खी मार्ग को नौ गुरुओं ने अपनी जयोति से उजागर करके आगे रास्ता बना दिया । सिक्खी मार्ग को सीधा सरल स्वच्छ कर दिया, परन्तु सिक्खी में कौमियत दाखिल करके इसको पंथ बनाने का दायित्व अकाल पुरख ने श्री गुरु गोबिन्द सिंघ को सौंपा था ।

दशमेश पिता जी ने सिक्खों में कौमियत का करंट इतनी तेज़ी से भर दिया कि भजनीक अमन-पसंद सिक्खों को दुनिया की बहादुर कौमों की पंक्ति में खड़ा कर दिया । श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी के समय आप की आयु केवल नौ वर्ष की थी । उस समय दिल्ली के तख्त पर मुगल शासकों में सबसे ज़ालिम और कट्टर बादशाह औरंगज़ेब का राज्य था, जो दूसरे धर्मों को खत्म करके केवल अपने धर्म को ही बढ़ता-फूलता देखने का चाहवान था । उसकी ताकत और रौब का सूर्य शिखर पर था । इतनी बड़ी ताकत के विरुद्ध जेहाद का बीड़ा उठाने वाले गुरु

साहिबों के घर के विरोधी धीरमल और राम राय भी औरंगज़ेब के हाथों में खेलकर गुरगद्दी के विरुद्ध अनेक प्रकार की साज़िशें कर रहे थे। फिर दिल्ली, पंजाब और काबुल से दूर तक के पीरों, गाजियों और जेहादियों से हिन्दुस्तान भरा पड़ा था और वह सारे औरंगज़ेबी बोली ही बोल रहे थे। हिन्दू राजे, अमीर, वज़ीर सब स्वाभिमान से हीन होकर हिन्दू धर्म के लिए मुसलमानों से भी बुरे बन चुके थे। उन में अपनी स्वदेशी तहज़ीब, अपने प्राचीन धर्म और देश-भक्ति नाम-मात्र भी अंश बाकी नहीं रह गई थी। वह मुगल हकूमत के जी-हज़ूरीये बनकर देश और कौम के बड़े गद्दार बने हुए थे। तब सोचो और बताओ कि ऐसी ही हालत में ज़ालिम के विरुद्ध झण्डा उठाने वाले में कितनी बहादुरी, निडरता और दिलेरी की समर्था होगी ? ऐसे वातावरण में सच की आवाज़ को प्रकट करने वाली कितनी महान आत्मा होगी ?

इसलिए यह स्पष्ट है कि जिस महांबली श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने इस दबी-कुचली जा रही गरीब जनता को उभारने का प्रोग्राम बनाया, यह उनका ही काम था, यह शक्ति किसी और देवी-देवते में उस समय नहीं थी। आपने दबे हुए स्वाभिमान को उजागर किया, बीर-रस के प्रचार को चलाया और तलवार को लिश्काते हुए फरमायाः-

खग खंड बिहंडं खल दल खंडं अति रण मंडं बरबंडं ॥
भुज दंड अखंडं तेज प्रचंडं ज्योति अमंडं भान प्रभं ॥
सुख संता करणं दुरमति हरणं किलबिख हरणं असि सरणं ॥
जै जै जग कारण स्त्रिष्ट उबारण मम प्रितपारण जै तेगं ॥२॥

कलगीधर पातशाह ने देश की इस दुःखदायी हालत को सुधारने के लिए अपने विचार अपने सिक्खों, पहाड़ी राजाओं, पंडितों और विद्वानों के सामने प्रकट किये। देवी प्रकट करने वालों के पाखंडों को भी सतिगुरु जी ने इसी सिलसिले में ही नग्न किया। देवी पूजने की सलाह देने वाले पंडित केशो दास से लाखों रुपयों की सामग्री जला देने पर भी जब देवी प्रकट न हुई और कई महीने जब उसने आज-कल करते ही गुजार दिए तो सतिगुरु जी के पूछने पर टाल-मटोल करते हुए उसने कहा-

'महाराज ! देवी तो प्रकट होगी, यदि किसी कुलीन और महापुरुष की बलि दी जाए ।' पंडित का इशारा तो इस समय साहिबज़ादा अजीत सिंघ की तरफ था, और उसका ख्याल था कि सतिगुरु जी यह बात नहीं मानेंगे और मुझे इस पाखंड को बिना निर्णय किये ही खत्म करने का अवसर मिल जाएगा, परन्तु अन्तर्यामी सतिगुरु को कौन छल सकता था ?

दशमेश जी कहने लगे-'पंडित जी !आपसे अधिक उत्तम और कुलीन पुरुष और कौन हो सकता है ? इसलिए आपकी बलि देकर हम अब देवी को प्रकट कर लेते हैं । पंडित जी यह बात सुनकर पेशाब (मलमूत्र) करने का बहाना करके ऐसा खिसके, कि दोबारा वापिस ही नहीं आए । सतिगुरु जी ने सारी बाकी सामग्री एक बार ही हवन कुण्ड में डलवा (फैंकवा) दी । जिससे अग्नि की लपटें एकदम निकली और इतना प्रकाश हुआ कि कई लोगों को देवी के प्रकट होने का ही भ्रम पड़ गया । सतिगुरु जी ने लोगों का भ्रम दूर करने के लिए कहा और फरमाया कि यह तो उस प्रभु का अपना प्रकाश था-

अनहद रूप अनाहद बानी ॥
चरन सरन जिह बसत भवानी ॥

गुरु साहिब ने बताया कि अकाल पुरख जो सब ब्रह्मंडों का मालिक है, उसके दर पर अनेकों भवानियाँ (देवियां) खड़ी उसके चरणों पर नमस्कार कर रही हैं : इसलिए हमने तो सारे कार्य उसी अकाल पुरख की ओट से करने हैं ।

इसके बाद गुरु साहिब ने सब को ऐलानियां कहना शुरू किया कि हमें ज़बर ज़ुल्म के मुकाबले पर खड़े हो जाना चाहिए और खड़े तब ही हो सकते हैं यदि एक झण्डे के नीचे इकट्ठे हो और बहादुरों की तरह ज़ालिमों का मुकाबला करें ।

आपने कहा-बुज़दिली, कायरता और स्वाभिमान (आन) से हीन होकर जीवन से तो मृत्यु हज़ार दर्जे अच्छी है । आपको घोड़ों पर चढ़ने का हुक्म नहीं, आपको ऊँची बोलने, तेज़ चलने और बाजा आदि बजाने और सुनने की आज्ञा नहीं तो बताओ आपका यह जीवन किस अर्थ है ?

उठो, तोड़ दो इन बंदिशों को और मुकाबले पर आ जाओ हुक्म ऐसे देने वालों के । आप अपने जीवन को इस निशाने वाला बना लो–

'भै काहू कऊ देत नहि नहि भै मानत आन ।।'

सतिगुरों के इस प्रचार का यह असर हुआ कि दब कर रहने वाले, लोगों के मन झंझकोरे गये और वे बढ़–चढ़ कर सतिगुरों के इस प्रोग्राम में शामिल होने लग पड़े ।

अब सतिगुरु ने इन उत्साही लोगों में मरजीवड़िया (मृत्यु की प्रवाह न करने वाले) के चुनाव का प्रोग्राम बनाया । इस विचार को सतिगुरु जी कई दिन विचारते रहे । कुछ समय पश्चात उन्होंने मुख्य तौर पर हुक्मनामे भेजकर सम्वत 1756 की वैसाखी पर देश की इस महान आवश्यकता को पूरा करने के लिए सिक्ख संगतों का भारी समागम करने का फैसला किया । सतिगुरु के भेजे संदेश–पत्र अनुसार दूर–दूर की सिक्ख संगतें श्री आनंदपुर जी में बड़े उत्साह पूर्वक पहुंच गई । वैसाखी के ऊंचे दीवान के लिए केशगढ़ की धरती नियत हुई । श्री गुरु जी के हुक्म अनुसार तम्बू कनाते लगाई गईं और संगतों के लिए दरियां गलीचे बिछाये गए । इस पंडाल के बीच में कलगीधर जी का सुनहरी तख्त सजाया गया, जिस का दरवाज़ा तख्त के किनारे पर था । रात से ही श्री गुरु जी इस तम्बू में बैठे कुछ सोच रहे थे, कोई निकटवर्ती भी पास नहीं था ।

यह सोच क्या थी ? वहीं थी जिससे सतिगुरु जी गीदड़ों को शेर और चिड़ियों को बाज बनाना चाहते थे । भाव दबेल और डरपोक लोगों को जालिम और अत्याचारी के मुकाबले पर खड़ा ही नहीं करना चाहते थे, बल्कि अपने बनाये बहादुरों से उनको शिकस्त भी देना चाहते थे ।

अमृत छकाना

कार्यक्रम अनुसार अमृत समय रणजीत नगारे पर चोट लगी और पहाड़ियां गूँज उठीं, जिससे धर्म विरोधियों और ज़ालिमों के हृदय धड़क उठे । सिक्ख संगतें सतलुज से स्नान कर बाणी पढ़ती दीवान में आ आ कर सज रही थी और रागियों ने इलाही–कीर्तन श्री आसा जी की वार

का कीर्तन आरम्भ कर दिया। सब संगतें रब्बी बाणी के कीर्तन का आनन्द मान रही थीं और जैसे–जैसे आसा की वार के कीर्तन का भोग का समय आ रहा था, तैसे–तैसे श्रद्धालुओं की दर्शन की इच्छा प्रबल हो रही थी। सबकी आँखें दर्शन के लिए उतावली थीं कि कब गुरु जी तम्बू से बाहर निकल कर दर्शन दें। सिक्खों के हृदय गुरु जी के अमृतमयी उपदेशों को ग्रहण करने के लिए उतावले थे। किसी–किसी का मन इस बात को भी विचार रहा था कि सतिगुरुों की तरफ से दूर–दूर से खास हुक्मनामे भेज कर संगतों को बुलाने का क्या कारण है, परन्तु प्रतीक्षा में थे।

इतने में कीर्तन की समाप्ति हुई और दशमेश पिता जी धीरे–धीरे तम्बू से बाहर आए। कलगीधर जी का चेहरा आज हमेशा से कुछ अलग–अलग प्रतीत हो रहा था, माथे पर पड़े बल शाही रौब में रंगा हुआ चेहरा, अंगारों की तरह दहकते नेत्रों को देखकर सूर्य की चमक भी मद्धम पड़ रही थी।

श्री आसा जी की वार की समाप्ति पर अरदास के बाद श्री गुरु जी ने अपने हाथ में चमकती तलवार लेकर तख्त पर खड़े होकर गर्जती आवाज़ में संगत को सम्बोधन कर के कहा–

'गुरु नानक के प्रेमियो ! और गुरु घर के श्रद्धालुओं ! देश की बिगड़ी दशा को संवारने और मजलूमों की रक्षा के लिए, मुझे आज एक सिर की आवश्यकता है। आओ कोई शूरवीर, जो अपना शीश भेंट कर सकता हो।

यह सुनकर सारी संगत सोचों के समुद्र में डूब गई और सारे पंडाल में सन्नाटा छा गया।

कलगीधर जी ने अपनी माँग फिर दोहराई तो एक सिदकी सिक्ख, जिस का नाम भाई दया राम था, सामने आया और शीश चरणों पर रखकर कहा, सच्चे पातशाह ! इस दास का सिर हाज़िर है।'

गुरु जी ने बड़े उत्साह में उसको बाजू से पकड़ा और घसीट कर तम्बू में ले गये। जोर से तलवार चलने की आवाज़ आई, दया राम का सिर अलग होकर धड़ ज़मीन पर गिर पड़ा, रक्त के परनाले तम्बू में से

बाहर बह पड़े ।

श्री गुरु जी फिर दूसरी बार दीवान पर आए तथा एक और सिर की माँग प्रस्तुत की । इसी तरह फिर तीसरी, चौथी और पांचवी बार शीश की माँग की । हर बारी एक-एक सिक्ख ने अपना-अपना शीश भेंट किया और श्री गुरु जी वैसे ही तम्बू अन्दर जाकर झटकाते गये ।

आखिर छट्ठी बारी गुरु गोबिन्द सिंघ जी दीवान पर आये तो पाँचों शीश दानी भी शस्त्र-वस्त्र सजा कर गुरु जी के साथ ही शोभा पा रहे थे । यह अद्‌भुत कौतुक देखकर सारी संगत में से आवाज़ आने लगी-

'धन्य गुरु ! धन्य सिक्खी !!'

फिर गुरु जी ने ऊँची आवाज़ में कहा कि 'हमने सिक्खी की परख की थी । अब हमें विश्वास हो गया है कि खालसा तैयार-बर-तैयार होकर अडोल-अवस्था तक पहुँच चुका है । जब श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खी की परख की थी तो केवल एक सिक्ख ही पूरा उतरा था, परन्तु आज हमारी परख में पाँच सिक्ख पूरे उतरे हैं । आज से इनको 'पाँच प्यारो' की पदवी दी जाती है और अब इनको अमृत छका कर अमर कर दिया जायेगा ।'

इतने में कड़ाह प्रसाद की देग आ गई । गुरु जी ने सर्व लोहे के बाटे में सतलुज का स्वच्छ जल डालकर खण्डे से रगड़े लगा लगा कर पाँचों बाणियों (जपु, जापु, १० सवैये, चौपई और अनंदु साहिब) का पाठ किया । फिर माता जीतो जी आए, उन्होंने पतासे इस अमृत में डाल दिये । सतिगुरु जी कहने लगे-'अच्छा हुआ, जोश के साथ मिठास मिल गई है ।'

फिर महाराज ने बारी-बारी पाँचों प्यारो को स्वयं अमृत छकाया और उसी मर्यादा अनुसार फिर पांच प्यारो से अमृत स्वयं छका । पाँचों प्यारो के नाम के साथ 'सिंघ' शब्द लगा कर भाई दया सिंघ, भाई धर्म सिंघ, भाई मोहकम सिंघ, भाई हिम्मत सिंघ और भाई साहिब सिंघ रखा और स्वयं सतिगुरु जी गोबिन्द 'राय' से गोबिन्द 'सिंघ' बन गये ।

इस दिन से मसंद प्रणाली समाप्त करके पाँच प्यारो को मुखी थाप

कर कौम को लोकतंत्र लीहा पर चला दिया और फिर इस तरह अमृत प्रचार का प्रवाह चलाया कि एक महीने में ही 80 हज़ार सिक्खों ने अपने सिर गुरु को अर्पण करके अमृत छक लिया और तैयार-बर-तैयार सिंघ सज गये। इस तरह श्री दशमेश जी ने सिक्ख कौम की काया कल्प कर दी।

इस कौम का एक ही इष्ट अकाल माना गया, श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा केवल एक अकाल की पूजा होती है। गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने ज्योति ज्योत समाने के समय कहा था-

'पूजा अकाल दी पर्चा शब्द दा ते दीदार खालसे दा।'

अमृत किसी भी जाति का, किसी भी धर्म का छके, वह सिंघ बनकर बराबर दर्जे का बन जाता है। उसकी पिछली जाति समाप्त होकर नया जन्म धारण समझा जाता था। सिक्ख धर्म के बड़े चिन्ह (केश और दाढ़ी) प्रकृति की तरफ से पैदा हुए निश्चित किए गये, क्योंकि दूसरे धर्म इस रब्बी सौगात को तोड़-मरोड़ रहे थे। चार अवगुणों-कुंठा, तम्बाकू, केशों की बेअदबी और पराई-स्त्री के संग से सिंघ को वर्जित किया गया।

अमृत छकने के बाद

अमृत छकने के बाद यह बात बनी कि नई रूह फूँकी गई, अमृत छक-छक सब लोग सिंघ सजने लगे। कई दबे हुए लोग, जिनको कोई कुसकने नहीं देता था, वह अमृत छक घुड़सवार बन, दूर पास की जूहों में अकाल-अकाल करने लगे। हिन्दू पहाड़ी राजे, बजाय इसके कि ज़ालिम राज्य के मुकाबले पर ताकत खड़ी होने पर खुश होते, बल्कि उल्टा ईर्ष्या करने लग गए। सिंघों से लड़ा करते, परन्तु सिंघ आगे से एक की दो कर आते, अधिकतर से सिंघ डरते ही न, यदि पाँचों को सौ दुश्मन आ घेरता तो सिंघ इतनी दिलेरी दिखाता कि दस-बीस को मार कर, उनको ही बुला कर समझाता कि आप सिंघ सज जाओ और मिल कर ज़ालिम का मुकाबला करे, परन्तु राजा न माने।

पहाड़ी राजाओं से युद्ध

भीम चन्द को सतिगुरुों की यह नई नीति अच्छी न लगी। उसने और राजे इकट्ठे किए और कहा कि गुरु गोबिन्द सिंघ ताकत इकट्ठी कर रहा है और समय पाकर हमारे राज्य इसने छीन लेने हैं। इसलिए हम सभी को मिलकर इसका कोई हल सोचना चाहिए।

सम्वत 1757 में इन सब राजाओं ने सलाह मशविरा कर आनन्दपुर लड़ाई आकर छेड़ दी, परन्तु थोड़े समय में ही सारा ज़ोर लगा कर भारी जानी और माली नुक्सान उठा कर वापिस चले गए, परन्तु गुस्सा फिर भी नहीं निकला था।

सम्वत 1757 में ही रंगड़ों तथा और भारी सेना जोड़ कर यह पहाड़ी राजे फिर आनन्दपुर को आ पड़े। निकट बढ़कर लड़े, सिंघों के हमलों की झाल न झेलते हुए, पीछे हो गए। घेरा डाल लिया। फिर आनन्दगढ़ के किले का दरवाज़ा तोड़ने के लिए, शराब पिला कर मस्त हाथी भेजा, परन्तु भाई बचित्र सिंघ को सतिगुरुों ने थापी देकर मुकाबले पर भेजा, जिसने हाथी को मार भगाया और वहीं हाथी पहाड़ी फौजों को ही मारने और लताड़ने लगा। जब पेश न गई तब आटे की गाय बनाकर भेजी और कहा कि आप एक बार किला छोड़ दो हम आप को कुछ नहीं कहेंगे, ताकि हमारी भी इज्जत रह जाए। सतिगुरु जी ने उनकी सौगन्धों पर यकीन करके किला छोड़ दिया, परन्तु बे-पीरे पहाड़िये खाई सौगन्धों को भूल कर फिर सिंघों पर आ पड़े, सतिगुरु तो पहले ही तैयार थे। इसलिए सतिगुरु जी के तीरों और सिंघों की बंदूकों ने फिर भी जीत प्राप्त की और पहाड़ियों को मैदानी जंग में भी हार का मुँह देखना पड़ा।

इस समय सतिगुरुों ने बाहर खुले मैदान में (निर्मोहगढ़) दीवान लगा दिया, परन्तु पहाड़ी राजाओं ने चालाकी की और एक मुसलमान तोपची ने काफी दूर से सतिगुरुों की सेंध लेकर एक गोला छोड़ दिया, जो सतिगुरुों को चवर कर रहे सिंघ को आ लगा और सतिगुरु बच गए। यह देख गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने कमान संभाली और उस गोले के सामने तीर चला

दिया । दूसरा गोला चलने वाला था कि तोपची सतिगुरों के तीर का निशाना बन गया । तोपची का दूसरा भाई भाग कर तोप की तरफ आगे बढ़ा कि वह गोला छोड़े, परन्तु सतिगुरों ने उसी समय ही एक तीर और छोड़ दिया, जो उस दूसरे तोपची को भी भेद गया और पहाड़ी राजों की यह साजिश फेल हो गई ।

शाही सेना से युद्ध

दो तीन महीने बाहर रह कर सतिगुरु जी फिर वापिस आनंदपुर आ गये । पहाड़ी राजाओं ने अब सूबा सरहंद द्वारा बादशाह पास गुरु जी विरुद्ध शिकायतें भेजीं । बादशाह ने इनके कहने पर गुरु जी विरुद्ध सेना भेजी परन्तु वह भाग खड़ी हुई और फिर 1759 में बादशाह ने सैद खां को चढ़ाया । यह जरनैल सतिगुरों के नूरानी दर्शन करके इतना प्रभावित हुआ कि इलाही रंग में रंगा गया और सच्चा बैरागी, अतीत बन गया । इस तरह चार बार औरंगज़ेबी लश्कर को हार हुई और कई नामवर जरनैल मारे गए । आखिर सम्वत 1761 में औरंगज़ेब ने भारी लश्कर भेजा और सूबा लाहौर, कश्मीर, सरहंद और दिल्ली को भी अपनी सेना सहित आनंदपुर पर चढ़ाई करने का हुक्म भेजा । 10 लाख के बड़े लश्कर को दो चार दिन की चढ़ाई में ही जब भारी नुक्सान करवा कर बार-बार पीछे हटना पड़ा तो दूर-दूर तक घेरा डाल कर बैठ गए । राशन पानी बाहर से आना रुक गया । सिंघ भूखे पेट नौ महीने तक लड़ते रहे । वृक्षों के पत्ते भी खाते-खाते समाप्त हो गए । सिंघ तो वैसे ही अन्दर से बहुत तंग थे परन्तु बाहर दुश्मन भी बैठा-बैठा तंग हो गया था । उधर से बादशाह के संदेश आ रहे थे कि क्या बात है कि इतने बड़े लश्कर से अभी तक एक छोटा सा किला फतेह नहीं होता । इसलिए अब बाहरलिया ने ऐलची किले में भेज कर कसमें खायी कि एक बार किला छोड़ दो, हम आप को कुछ नहीं कहेंगे । भूखे सिंघ तो बहुत खुश हुए कि चलो मुसीबत समाप्त हुई, परन्तु अन्तर्यामी सतिगुरु जी कपटियों के कपट को जानते थे, इसलिए वह इस बात पर रजामंद नहीं होना चाहते थे, परन्तु माता गुजरी के बार-

बार कहने पर सतिगुरु जी ने 7 पौष को किला छोड़ दिया । बाहरले कसमें विसार कर विश्वासघाती बन गए और सतिगुरों को पकड़ने के लिए उनके पीछे लग गए । सरसा के दूसरी तरफ भारी लड़ाई हुई, जिसमें छोटे साहिबज़ादे और माता गुजरी जी बिछुड़ गए, जो गंगू रसोईये की नमक-हरामी के कारण सरहंद जाकर शहीद हुए और दोनों माता सुंदरी जी और साहिब कौर जी, भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली जा पहुंचीं । सतिगुरु जी केवल 40 सिक्खों और दो साहिबज़ादों सहित रोपड़ पहुंचे । रोपड़ से चमकौर पहुंचे और कच्ची गढ़ी में बैठ कर दुश्मन के टिड्डी दल का मुकाबला किया । दुश्मन के इस अरमान को दूर किया कि गुरु हमें एक बार मिल गए तो उसको कभी छोड़े ही न, परन्तु जब सतिगुरों के तीरों की वर्षा होने लगी तो वही पठान और गाज़ी जरनैल छिप-छिप कर अपनी जानें बचाने लगे । सारे दिन में लाखों की गिनती में दुश्मन गढ़ी के नज़दीक न पहुंच सका और इधर केवल तीस सिंघ और दो साहिबज़ादे शहीद हुए, वह भी गढ़ियों से बाहर निकल कर, दुश्मन में धंस कर, परन्तु दुश्मन हज़ारों मारे गए और गढ़ी के आस-पास दूर-दूर तक लाशों के अंबार लगे पड़े थे । शाम को सिंघों के बार-बार कहने पर सतिगुरु जी चमकौर से निकल कर माछीवाड़े पहुंचे । तीन सिंघ जो साथ लिये थे, वह भी आपको यहां ही मिले । यहां 'हाल मुरीदों का कहना' शब्द उच्चारा ।

कलगीधर पातशाह यहां 'ऊँच का पीर' बन कर हेरां पहुंचे । यहां से रायकले से माही हलकारा भेज कर छोटे साहिबज़ादों की शहीदी की खबर मंगवाई । फिर दीने पहुंचे और यहां पर 6 महीने विश्राम किया । यहां बहुत सारे सिंघ आप जी को आ मिले । 'जफरनामा' देकर भाई दया सिंघ जी को यहीं से ही सम्वत 1762 में औरंगज़ेब की तरफ भेजा । यहीं 'जफरनामा' पढ़ कर औरंगज़ेब मरा था, जिसमें बताया था कि तुम्हारे अमाल तुम्हें नरक में ले जाने वाले हैं और दोज़ख की आग से तुम बच नहीं सकोगे परन्तु इससे पहले जब सतिगुरु जी दीने से चले तो सूबा सरहंद ने फौजें लेकर सतिगुरों का पीछा किया और कोशिश की कि सतिगुरों को पकड़ ले परन्तु सतिगुरु जी कोटकपूरे से निकल कर खिदराने की

ढाब (मुक्तसर) के निकट पहुंच चुके थे । यहां सरहंदी फौजों से भारी जंग हुई और दुश्मन को नाकाम वापिस मुड़ना पड़ा । यहां ही पंजाब के मिलने गये सिक्खों की तरफ से लिखे बेदावे को भाई महा सिंघ और उसके 39 साथियों ने शहीदियां प्राप्त करके पढ़वाया था ।

इस लड़ाई के बाद कोई लड़ाई नहीं हुई । गुरु साहिब मुक्तसर से चलकर साबो की तलवंडी (दमदमे साहिब) भाई डल्ले के पास जा पहुंचे । यहां डल्ले ने सतिगुरुों को कहा कि आपने मुझे आनंदपुर की जंग के समय क्यों नहीं याद किया ? मैं यदि होता तो यहां तक नौबत आनी ही नहीं थी । सतिगुरु ने कौतुक रचा और बंदूक परखने के बहाने डल्ले को कहा-'डल्लिया, कोई आदमी दो, हमें बंदूक परखनी है ।' परन्तु अब डल्ले के जवानों ने इस बात के लिए आगे आने से इन्कार कर दिया । गुरु साहिब ने सिंघों की तरफ इशारा किया तो झट दो सिंघ भागे आये और एक दूसरे के होकर निशाना बनने के लिए झगड़ने लगे । सतिगुरु डल्ले को कहने लगे-'डल्लिया, इन दुबले पतले सिक्खों ने आनंदपुर में मेरा साथ निभाया है, तुम्हारे इन चौड़ी छाती वाले आदमियों ने वहां काम नहीं था आना ।

कलगीधर पातशाह सवा साल भाई डल्ले पास रहे । यहाँ ही भाई मनी सिंघ जी दिल्ली से दोनों माता को लेकर पहुंचे । यहाँ ही सतिगुरु ने भाई मनी सिंघ जी से बीड़ लिखवाई । यहां ही सतिगुरु को बादशाह की तरफ से दक्षिण आने का संदेश मिला । इसलिए सतिगुरु जी यहां से सम्वत 1763 के आखिर में दक्षिण को चल पड़े, रास्ते में ही थे कि आपको बादशाह के मरने की खबर मिली ।

सम्वत 1763 के अन्त में औरंगज़ेब अपने ज़ाबराना दिन पूरे करके इस दुनिया से झूरता हुआ ही गया, क्योंकि उसने सतिगुरु के ज़फरनामे में पढ़ा था-तू दीनी नहीं रहा, तू किये कौलों से हार गया और सेना ने कसमें खा कर हमारा पीछा किया परन्तु हमारा कुछ नहीं बिगड़ा । क्या हुआ अगर तुमने चार बच्चे मार दिये, परन्तु इससे तुम्हारा कुछ संवरा नहीं, बल्कि तुम कलंकित हो गये हो । जब तक मैं और मेरा खालसा मौजूद

है, तुम यह मत समझना कि मैंने आग की चिंगारी को बुझा लिया है, याद रख बल्कि तुमने लपटें जला ली है, जो तुम्हें और तुम्हारी बादशाही को खत्म कर देंगे ।'

औरंगज़ेब के बाद सतिगुरु की मदद से बहादुर शाह तख्त पर बैठा । सतिगुरु जी तीन महीने आगरे बहादुर शाह पास ठहरने के बाद सम्वत 1764 में नांदेड़ पहुंचे । वहाँ बंदा बहादुर को पंजाब की तरफ भेजने के बाद कलगीधर पातशाह 1765 में मघर शुदि पंचमी को ज्योति ज्योत समा गये ।

बंदा बहादुर के आने से पहले

इस समय पंजाब में कोई खास सरगर्मी नहीं थी । सिंघों को 'मार दो' की नीति कुछ समय के लिए ठहर गई थी । अब जब सतिगुरु के साथ बहादुरं शाह की तरफ से अच्छा तालमेल और सुलह सफाई का वायुमंडल पैदा करने का यत्न किया जा रहा था तो पंजाब के हाकिमों पर खास कर सरहंद के सूबे वजीद खां को भारी खतरा पड़ा हुआ था । उसको पता लग चुका था कि सतिगुरु ने मासूम साहिबज़ादों के कातिल को सज़ा देने की माँग की है और पता नहीं जहाँगीर के चंदू को सतिगुरु के हवाले करने की तरह उसको भी बहादुर शाह सतिगुरु के हवाले न कर दे । पंजाब में सिक्ख इस समय जत्थेबंदक तौर पर कहीं भी नहीं थे, परन्तु फिर भी सौ, सौ, दो-दो सौ के कई टोलों में कई दल इधर-उधर और अमृतसर के आसपास फिर रहे थे ।

कलगीधर पातशाह ने सम्वत 1765 के आरम्भ में बंदा बहादुर को अमृत छका कर पंजाब की तरफ भेजा । उधर से सतिगुरु ने बंदे को सिंघ सजा कर पंजाब के दुष्ट हाकिमों को दंडित करने के लिए भेजा क्योंकि बादशाह टाल-मटोल कर रहा था, तो इधर वजीद खां भी गुप्तचरों के द्वारा पल-पल की खबर मंगवा रहा था कि सतिगुरु इस समय कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं और ''पापी के मारने को पाप महांबली है'' के महांवाक्य अनुसार मासूम साहिबज़ादों के रक्त ने उसको ताप चढ़ाया हुआ

था। इसलिए उसी का भेजा हुआ कातिल पठान नांदेड़ पहुंचा, जिसने कई दिन मौके की तलाश करने के बाद आखिर गुरु जी पर वार किया और आप भी सतिगुरु के हाथों मारा गया था। इस हमलावर को सतिगुरु से क्या वैर था, इसके कारणों के बारे सभी ने अलग-अलग विचार पेश किए हैं परन्तु असली चीज़ यही है जिसको खाफी खां तथा और मुसलमान इतिहासकारों ने खूब छिपाने की कोशिश की और कई तरह की मनघड़ंत कहानियां घड़ कर इस मामले में चला दी कि गुरु साहिब ने उसको यह कहकर जोश दिलाया कि हमने तुम्हारे बाबा को मारा था, तुम अपना बदला क्यों नहीं लेता, तुम मर्द ही नहीं, परन्तु यह सब बातें झूठ प्रतीत होती हैं और असलियत यह निकलती है कि वह हमला करने वाला पठान न तो पैंदे खां का पोत्रा था और न ही ऐसे खानदान से था जिसका कोई बड़ा वडेरा सतिगुरु के हाथों मारा गया हो, बल्कि यह तो वजीद खां सूबा सरहंद का भेजा हुआ आदमी था जिसको उसके पाप दिन-रात डरा रहे थे।

पंजाब का सूबे इन दिनों में असलम खां था। सिंघों के ज़्यादातर जत्थे इस समय अमृतसर और लाहौर में फिर रहे थे और इनकी कई जगह झड़पें भी हुईं परन्तु इनका कोई खास ज़िक्र नहीं मिलता, परन्तु जब सतिगुरु पर हमला होने की खबर मिली तो सिंघों में निराशता और रोष भी फैला। यह खबर भी मिली हुई थी कि गुरु जी ने बंदा सिंघ बहादुर को पाँच सिंघ और पाँच तीर देकर पंजाब के दुष्ट हाकिमों को दंड देने के लिए भेजा हुआ है, जिसके पंजाब में दाखिल होने की खबर भी मिली थी, और इकट्ठे होने की योजनाएं बन रही थीं कि अमृतसर जिले में एक भारी टक्कर सिंघों की मुसलमान हाकिमों से हुई, जिसमें लाहौर के सूबे असलम खां को भी हार का मुँह देखना पड़ा।

इतिहासकारों ने बताया है कि अमृतसर के एक हिन्दू धनवान चूहड़ मल के जिले में बहुत सारे बाग थे। बताते हैं कि सिंघों के एक जत्थे ने रात्रि समय एक बाग में विश्राम करने के लिए उतारा कर लिया। शहतूतों का बाग था, कुछ सिंघों का शहतूत खाने पर बाग के रखवालों से झगड़ा

हो गया। मूल्य लेकर भी रखवालों ने झगड़ा रखने का यत्न किया और सिंघों को बाग से निकल जाने पर ज़ोर देने लगे। चूहड़ मल सिंघों का दुश्मन बना हुआ था, क्योंकि उसने अपने भाई की सारी जायदाद पर कब्ज़ा किया हुआ था, जो सिंघ बन चुका था। इसलिए उसके सिखाये हुए रखवाले जब सिंघों के गले पड़े तो सिंघ भी बहादुर हो गए। चूहड़ मल की जब पेश न गई तो उसने पट्टी के पठानों की तरफ मदद के लिए आदमी दौड़ाया। पट्टी का हिन्दू दीवान दिन चढ़ने से पहले ही पहुंच गया। सिंघ भी टकराव के लिए तैयार थे। आसपास के सिंघ भी खबर सुन कर सिंघों को आ मिले।

लाहौर खबर भेजी हुई थी, इसलिए उसकी प्रतीक्षा होने लगी। सिंघ भी अड़ गये। दोपहर तक लाहौर से कई हज़ार फौज पहुंच गई और अब हमला शुरू हो गया। सिंघों ने मोर्चे बनाए हुए थे और मार के नीचे आए हुए दुश्मन को अच्छे हाथ दिखाये। ताबड़-तोड़ हमले करने से हज़ारों मुसलमान मारे गये।

इस लड़ाई में पट्टी का हिन्दू दीवान मारा गया और असलम खां के भी कई नजदीकी मारे गये तो फिर उसको समझ पड़ी कि गुरु गोबिन्द सिंघ के सिंघों की बहादुरी और शूरवीरता में अभी भी कोई फर्क नहीं पड़ा। यह ख्याल करके वह जान बचा कर लाहौर को भाग गया।

बंदा सिंघ बहादुर

कलगीधर पातशाह महीना अस्सू सम्वत 1764 में नांदेड़ पहुंचे और गोदावरी के किनारे (तट) पर डेरा लगा लिया । इस नदी के किनारे ही कुछ दूर माधो दास बैरागी का डेरा था । इधर आते रास्ते में ही कलगीधर जी को दादू डेरे के महंत ने बताया था कि नांदेड़ में एक बैरागी साधू माधो दास रहता है जो करामाती होने के कारण आये गये साधुओं से बड़ा हँसी मज़ाक करता है और गुरु जी ने ज़ोर देकर कहा था–'महंत जी, चिंता क्यों करते हो, रास्ता भटके को, यदि गुरु नानक ने रास्ते पर नहीं लाना तो और किसने लाना है ? यदि बैरागी साधू के रास्ते में उसका मान पहाड़ बनकर उसको सीधे रास्ते की तरफ जाने से रोक रहा है तो हम उसके मान रूपी पहाड़ को दूर करके उसको सीधे रास्ते पर डालेंगे और उसके डेरे अवश्य जायेंगे । महंत जी ने बहुत कहा, परन्तु सतिगुरु अपने विश्वास और दृढ़ता पर अडिग थे ।

इसलिए सतिगुरु ने नांदेड़ पहुंच कर 10–15 दिन तो इस तरफ कोई ध्यान न दिया परन्तु फिर इलाके के लोगों की तरफ से भी इस बैरागी साधू की हरकतों का सतिगुरु जी के आगे ज़िक्र किया गया । सतिगुरु जी एक दिन उसी तरफ ही शिकार खेलने के लिए चले गये, जिस तरफ इस साधू का डेरा था । कलगीधर पातशाह इसके डेरे अन्दर चले गये और सीधे उस पलंग पर जा बैठे जिस ऊपर बैठा कर वह साधू-संतों का अपमान किया करता था । कुछ सिंघ भी साथ थे, उनको बकरे झटका कर देग चढ़ाने का हुकम दिया गया । इसलिए उसी डेरे के बकरे झटकाये गये और वहीं से पतीला लेकर चुल्हे पर बनना रख दिया गया । डेरे में जो माधो दास के आदमी थे, उन्होंने दौड़ कर निकट ही बैठे माधो दास को जाकर कहा कि आज आपके डेरे को किसी तेग धारी (तलवार) ने आकर पलीत कर दिया है, बकरे मार कर बनने रख दिये हैं । यह

भी बताया कि वह (सतिगुरु) अब आपके पलंग पर लेट कर आराम कर रहा है, आपका कोई अदब या डर उसने नहीं रखा ।

*माधो दास यह सुनकर आग बबूला हो गया । इसके वश में पाँच वीर थे । झटपट उसने मंत्र पढ़ा और एक वीर उसके आगे आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । माधो दास उसको कहने लगा, देर मत कर झटपट जाकर मेरे पलंग पर जो सोया हुआ है, उसको जाकर ऐसा उलटा कि जीवित न बचे । वीर तेज़ी से चला, आकर सोये हुए कलगीधर के चेहरे का तेज़ देखकर, समझ गया यह भी कोई चीज़ है, परन्तु माधो दास के हुक्म की पालना के लिए पलंग उलटाने लगा, तो झट कलगीधर पातशाह जाग गये और इतने भारी हो गये कि पलंग को उठाना तो कहीं रहा, वीर से एक पावा भी न हिला । सारा ज़ोर लाया और मुड़कर माधो दास को सारी हालत जा बताई । दो वीर भेजे, परन्तु वह भी ज़ोर लगा कर मुड़ गये । फिर उसने गुस्से से पाँचों को ही ताकीद करके भेजा । वे बड़ी डरावनी शक्लें बनाकर आये और पहले बाहर बैठे सिंघों को डराने लगे । कलगीधर पातशाह ने सिंघों को जैकारे और उनकी तरफ गोलियां और तीर छोड़ने का हुक्म दिया ।

सिंघ इस तरह करने लगे तो वीर भाग कर महाराज की तरफ आ गये । अब पाँचों ही मिलकर ज़ोर लगाने लगे । जब उनकी कोई पेश

* यह बैरागी साधू कौन था ? यह 39 वर्षों का साधू ब्रह्मचार्य में अद्‌भुत था, डील-डौल वाला और अच्छा हृष्ट-पुष्ट प्रभावशाली साधू था । यह पीछे से राजौरी (जम्मू) का निवासी था और नाम इसका लक्ष्मण दास था । भरी जवानी में अच्छा तीर अंदाज और शिकार खेलने का शौकीन था । परन्तु एक दिन हिरणी के शिकार के बाद जब बच्चा उसके पेट में से निकल कर तड़प-तड़प कर इसके सामने मर गया, तो इस दर्द भरी घटना ने इसके मन में बैराग पैदा किया और इसने हथियार फैंक दिये और तब से बैरागी बन गया । अहिंसा धारण करके शांति प्राप्त करने के लिए घर छोड़ कर ब्रह्मचार्य के पीछे लग गया । आखिर घूमता-घूमता नासिक पंचवटी पहुंचा और वहां इसका मिलाप एक डेरेदार महंत अमर दास से हुआ । उसने इसकी सेवा से प्रसन्न होकर अपने बाद डेरे का महंत इसको बना दिया । यह जादू-मंत्र भी उससे इसने सीखे । बाद में यह नासिक से नांदेड़ आ गया । अब यहाँ यह इन कामों में मस्त था ।

नहीं गई तो वीरों ने और यत्न किया । उन्होंने सोचा कि यदि उठाया नहीं जाता तो पलंग को भार डाल कर ज़मीन में धंसा दे । यह सलाह बना कर जब उन्होंने पलंग पर भार डाला तो पावे ज़मीन में धंसने लगे, क्योंकि सतिगुरु जी भी तो भार ही डाल कर बैठे थे । यह देख कर कलगीधर पातशाह कहने लगे, 'पलंग ! तुम्हें नहीं पता कि हम तेरे ऊपर बैठे हैं, और तुम धरती में क्यों चले जा रहे हो ?'

यह कहने को देर थी कि पलंग धरती की तरफ जाने से रुक गया । वीर सारा ज़ोर लगा कर वापिस चले गये ओर सारी बात जा बताई । अब माधो दास को समझ आई कि यह कोई अथाह-शक्तियों का मालिक मेरे डेरे में आ गया है । पिछली सब बातें फिल्म की तरह उसकी आँखों के आगे आईं कि किस तरह उसने डेरे में आये साधू-संतों का अपने वीरों से अपमान करवाया और फिर कैसे हँसी-मजाक करते हुए उनको धक्के मार कर बाहर निकाला । वह इसी में ही अपनी गौरवता और डेरे का बड़प्पन समझता था ।

अब माधो दास स्वयं डेरे की तरफ चल पड़ा कि मैं देखूं तो सही कि मेरे वीरों को हराने वाला कौन है ? दूर से ही उसने सिंघों के जैकारे सुने । बाहर खड़े सिंघों को देखकर दूर से ही अंदाजा लगाया कि यह पंजाबी हैं और पंजाब से आये सिक्खों के गुरु लगते हैं । पहले भी कहीं कहीं इसने कलगीधर पातशाह के युद्धों का हाल सुना था, परन्तु उनकी प्रत्यक्ष शक्ति देखकर उसका मन कुछ श्रद्धा वाला हो गया, परन्तु फिर विचार बनाया कि यदि मुझे भगवान राम रूप में दर्शन दें तो मैं जाते ही चरणों में ढह जाऊँगा । यह सोचता डेरे में आया और जब कलगीधर पातशाह की तरफ हुआ तो क्या देखता है कि सचमुच प्रत्यक्ष भगवान राम जी बैठे ही उसको नज़र आये । बस फिर क्या था, चरणों से जा लिपटा और कहने लगा-'बख्श लो, मुझे मेरी भूलों की माफी बख्शो ।'

कलगीधर जी ने बड़े प्यार से उसे उठाया और पूछा-'तुम कौन हो ?'

'जी मैं आपका बंदा गुलाम हूँ ।'

'तुम कहाँ फँसे बैठे हो, माधो दास !' दशमेश जी ने कहा, तुझे नहीं

पता, तेरी कौम पर कितनी मुसीबत आई हुई है ? देश में ज़ालिम ज़ुल्म का चक्र चला रहे हैं, गरीबों और मज़लूमों में हाहाकार मची हुई है, तुम यहाँ अपनी मौज-मस्ती में मग्न हो ।'

कलगीधर जी के तीर-वचन माधो दास के हृदय को भेद गये । गुरु जी ने फिर कहा-'तुम्हारी इन ताकतों और अज़मतों को ज़ुल्म के मुकाबले के लिए प्रयोग करना चाहिए, ज़ालिमों को सजा देने से ही तुम्हारा भला होगा ।'

माधो दास हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और कहने लगा-'जैसे हुक्म करो मैं हाज़िर हूँ ।'

उस समय अमृत तैयार किया गया । माधो दास को अमृत छका कर नाम गुरबख्श सिंघ रखा गया । परन्तु इतिहास में इसका नाम बंदा सिंघ बहादुर के तौर पर प्रसिद्ध हुआ पांच सिंघ व पांच तीर बंदा सिंघ की सहायता के लिए देकर दशमेश जी ने फरमाया-सिंघों से प्यार रखना, गुरु न बनना और विवाह न करवाना । मुश्किल समय हमारे तीर को छोड़ेगा तो शहीदी फौजें उसी समय तेरी मदद पर आ जाएंगी ।

बंदा सिंघ ने शीश झुकाया और पंजाब को चल पड़ा । सम्वत 1764 में यमुना पार कर तरावड़ी पहुंच कर उसने सिंघों को संदेश भेजे कि आओ मिलकर इन ज़ालिम हाकिमों को नष्ट करें । संदेशे मिलते ही मरजीवड़े सिंघ बंदा सिंघ को मिलने के लिए चल पड़े । इस खबर ने सरहंद के सूबे को चिन्ता डाल दी और सिंघों के समूह को रोकने के लिए उसने दरियाओं के पुलों, सड़कों पर विशेष जगहों पर फौजी दस्ते बिठा कर सिंघों के रास्ते घेर लिये । परन्तु मलवई सिंघ तथा और नज़दीकी इलाकों के सिंघ जल्दी ही बंदा सिंघ को आ मिले । परन्तु सतलुज की रोक ने मझैल सिंघों को कुछ समय के लिए रोक लिया । उधर बंदा सिंघ ने थोड़ी-सी मदद मिलने पर मुस्तफाबाद, साढौरा, छत्त बनूड़ आदि के मुस्लिम हाकिमों को फतेह करके सख्त सजाएं दीं । देश में भगदड़ मच गई । चोरों, डाकुओं को मौज लग गई और वह सारे ही बंदा सिंघ के दल में आ मिले । वह लोग भी बंदा सिंघ को आ मिले जो तुर्क हाकिमों के

अत्याचार से बहुत दु:खी थे और नितानेपन के वश होकर ज़ुल्मों का शिकार हो रहे थे। उनकी फरियादें करने पर बंदा सिंघ की उधर ही चढ़ाई हो जाती, जिधर वह कहते। इसलिए अब ज़ालिम और सरई मुसलमान हाकिमों को खूब सजाएं मिलने लगीं।

मझैल सिंघों को रुकावट के कारण देर हो रही थी, परन्तु बंदा सिंघ की जीत की खबरें सुनकर मझैल सिंघ भी आगे बढ़ चले और सतलुज पार कर कीरतपुर जा पहुंचे। वजीद खां सूबा सरहंद को पता लगा तो उसने सिंघों को रोकने के लिए रोपड़ के पठानों को लिखा और साथ ही मलेरीये मरदूद को भी सिंघों की रुकावट के लिए रोपड़ भेज दिया। सिंघों की गिनती इस समय केवल ११०० के लगभग ही थी, परन्तु रोपड़ पहुंच कर सिंघ ऐसी गर्म-जोशी से रोकने वालों पर टूट पड़े कि मार-काट करते हुए दुश्मन को चीर कर आगे निकल गए। दुश्मन दल पीछे लग गया और लुधियाने के करीब सिंघों को फिर रोकने का यत्न किया गया। परन्तु सिंघों ने कलगीधर का आसरा लेकर ऐसी तलवार (तेग) चलाई कि मलेरिया मरदूद मारा गया और भागती फौज को भी सिंघों ने अच्छे हाथ दिखाये। इस तरह मझैल सिंघ रास्ते की रुकावटों को दूर करके बंदा सिंघ को जा मिले। इस समय सिंघों को जो खुशियां हुईं, उसका क्या वर्णन किया जाये। सगे भाईयों की मिलनी भी इस मिलाप के आगे फीकी थी। बताते हैं कि सिंघ एक पहर के लगभग बंदा सिंघ को गर्मजोशी से गले लगा कर मिलते रहे और इसके बाद फिर ज़ालिमों और अत्याचारियों को सजा देने की विचारें होने लगीं।

इस समय सबसे बड़ा मामला सिंघों के सामने सरहंद फतेह करना और साहिबज़ादों के खूनी वजीद खां को सज़ा देने का था। इसलिए सरहंद पर चढ़ाई करने की सलाह बन गई और कूच कर दिया गया। वज़ीद खां को खबर मिली तो वह भारी फौज और तोपखाना लेकर सरहंद से 10-12 मील की दूरी पर सिंघों के रास्ते में आ बैठा। सिंघों की गिनती इस समय 10 हज़ार के लगभग थी, परन्तु डाकू बदमाशों की गिनती इससे भी अधिक थी। जब सिंघों का लश्कर सामने हुआ तो भारी जंग शुरू

हो गई। सरहंदी फौज के हज़ारों रैहकले और जंबूरे (छोटी तोपें) एकदम से ही सिंघों की तरफ चलने शुरू हो गये। पहले हमले में ही दुश्मन का हाथ ऊपर हो गया और केवल लूटों के ग्राहक खिसकने शुरू हो गये। बंदा सिंघ बहादुर इस समय पीछे समाधि लगाई बैठा था, प्रमुख सिंघ झट ही उसके पास पहुंचे और कहा-''बाबा जी यह समय बैठने का नहीं, माँगवे लुटेरे खिसक रहे हैं और दुश्मन का ज़ोर पड़ता जा रहा है, इसलिए उठो, देरी मत करो, आगे चलकर सिंघों की कमान संभालो।''

सिंघों के वचन सुनते ही बंदा सिंघ जी उठ खड़े हुए और घोड़े पर चढ़ कर सिंघों के साथ चल पड़े। आगे जा कर बंदा सिंघ ने देखा कि सिंघों की हालत बड़ी कमज़ोर थी। बंदा सिंघ जी ने दशमेश जी के वचनों को याद किया और वाहिगुरु कहकर पाँच तीरों में से एक तीर चला दिया। बस फिर क्या था, एक दम अंधेरी-सी आ गई, दुश्मनों के चलाये गोले दुश्मनों पर ही गिरने लगे। यह देख कर बंदा सिंघ ने देर न की और सिंघों को आगे बढ़ने का ललकारा दे कर स्वयं घोड़ा छोड़ कर तीर चलाता हुआ दुश्मन की फौजों में जा घुसा। सिंघ भी पीछे न रहे, सब दौड़ कर दुश्मन में जा घुसे और तेगों (तलवारों) की कटाई डाल दी। अब भागे जाते भी मुड़ पड़े और दुश्मन पर ऐसा हमला हुआ कि उसको लेने के देने पड़ गये। रक्त-मांस का घान मच गया और लाशों के ढेर लग गये। कुछ समय में ही सिंघों का हाथ ऊपर हो गया और दुश्मन के पैर हिन (उखड़) गये। लाखों की गिनती में तोपों और जंबूरों से लैस हो कर आई फौज अब आगे पीछे होकर जान बचा रही थी। आगे बढ़ने और बढ़ाने वाले सारे जरनैल सिक्खों की तलवारों के शिकार हो गये तो वज़ीद खां ने भी पेश न जाती देख कर अपने हाथी को पीछे मोड़ा कि अब किले में जा कर लड़ाई करनी चाहिए, परन्तु भविष्य को कुछ और ही मंजूर था।

वज़ीद खां जब हाथी को भगा कर दौड़ने लगा तो दुर्भाग्य से हाथी का पैर कब्र में धंस गया और घबराया हुआ वज़ीद खां ऊपर से ज़मीन पर धड़ाम से आ गिरा। कई सिंघ खास तौर पर इसका पीछा कर रहे

थे, इसलिए उन्होंने झट ही इसको गिरते ही पकड़ लिया । जब वज़ीद खां को पकड़े दूसरे मुसलमानों ने देखा तो उनके हौसले पस्त हो गये और सरहंद की तरफ जाने की बजाये, जिधर को रास्ता मिला उधर को दौड़ गये । सिंघों ने बड़ी तेज़ी की और शहर में जा घुसे । वहाँ जा कर सिंघों ने उस दुष्ट सुच्चा नंद को पकड़ लिया, जिसने कलगीधर के मासूम साहिबज़ादों को यह कहकर मार देने की सलाह दी कि–'साँपों के पुत्र साँप ही होते हैं, इन्हें छोड़ना नहीं चाहिए ।' इसलिए इन दोनों दोषियों को भारी सज़ाएं देकर खत्म किया गया । तीन दिन चोर धड़े वालों ने जी भर कर लूटा और शहर को खंडहर की शक्ल में बदल दिया गया । सिंघ किले को भी ढाह कर साफ कर देना चाहते थे, परन्तु बंदा सिंघ ने इसको "सिंघों" के प्रयोग के लिए कोई जगह होनी चाहिए, कह कर ढाहने से रोक दिया और 52 वर्ष तक इसकी आयु और बढ़ा दी । इसको बंदा सिंघ ने 1765 में फतेह किया, परन्तु 1820 में सिंघों ने सरहंद को फतेह करके किला ढाहा था ।

सरहंद की फतेह से तुर्कों के दिलों पर बंदा सिंघ का इतना भय पड़ा कि उसके नाम से काँपने लगे और जिधर उसकी चढ़ाई होती, आगे स्वयं नजराने (तोहफे) ले-ले कर मिलने लगे । अब बंदा सिंघ सतलुज से पार होकर इधर के हाकिमों को दंडित करने लगा और फिर आनंदपुर आ पहुंचा । यहाँ कई दिन फतेह की खुशियों में शादीयाने बजते और शुकराने होते रहे, परन्तु साथ ही पहाड़ी राजाओं को दंड देने की तैयारियां होती रहीं । पहाड़ी राजाओं को संदेशे भेजे गये, 'शरण आ जाओ या लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ । परन्तु पहाड़िये अकड़ गये कि गुरु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सका तो यह हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ।' ठीक इन्हीं दिनों में सतिगुरु पर हमला होने की खबर पंजाब में मिली और फिर ज्योति ज्योत समाने की खबर ने तो सिंघों के जोश को आग लगा दी । सिंघ कई दिन टिके ही नहीं, रात-दिन दुश्मनों को सजा देने में लगे रहे । सतलुज और ब्यास के बीच इलाके को दंडित कर बिलासपुर पर चढ़ाई की गई । सतिगुरु पर चढ़ाईयां करने वाले भीम चंद के पुत्र अजमेर चंद और उसकी

हिमायत पर आये कई और राजे भी यहाँ सिंघों के हाथों मारे गए । बिलासपुर की इस हालत ने फिर पहाड़ी राजाओं को कंपा दिया । बेटियां देकर स्वयं बचने वाले इन राजाओं ने बंदा सिंघ को काबू कर लिया और मंडी वाले राजा ने डोला देकर बंदा सिंघ को गुरु हुक्मों से बेप्रवाह कर दिया ।

सम्वत 1766 में बंदा सिंघ चम्बा चला गया और वहाँ के राजा ने उसको पिंजरे में बंद करके मुसलमान हाकिमों को खबर भेज दी । इसलिए झटपट दिल्ली व लाहौर की तरफ से तुर्कों की फौजें बंदा सिंघ को पकड़ने के लिए चढ़ आईं । यह देख कर सिंघ भी सारे फतेह किये इलाके छोड़-छोड़ कर पहाड़ की तरफ आ गये । लेकिन बंदा सिंघ पिंजरे समेत चम्बा से उड़ कर मंडी आ गया और मंडी के राजा ने उसको बाहर निकाल लिया । यहाँ से बंदा सिंघ, सिंघों के दलों को लेकर होशियारपुर की तरफ नीचे उतरा और तुर्क सेना से लड़ाई शुरू हो गई । दो पहर की घमासान लड़ाई में कोई पासा भी पीछे न हटा, यह तुर्क सेना बहुत भारी गिनती में थी और सिंघ थोड़े थे । यह देखकर बंदा सिंघ ने सतिगुरों क[illegible]शा एक तीर छोड़ा, जो दुश्मन के लिए अंधेरी और तूफान ले आया उधर सिंघ तेगें (तलवारें) घसीट कर दुश्मन के सिर चढ़ गये और पल में ही लाशों के ढेर लग गये, रक्त मांस का घान मच गया । यह देखकर तुर्क सिपाही तौबा-तौबा करते दौड़ गये और फतेह बंदा सिंघ की हुई ।

खाफी खां लिखता है कि बंदा सिंघ ने सम्वत 1767 में बहुत जीतें प्राप्त कीं । उसने सहारनपुर, जलालाबाद और यू.पी. के बेअंत मुसलमान हाकिम खत्म कर दिए । यह खबरें बहादुर शाह को पहुंचाई गईं और वह सुनकर बड़ा चिंतित हुआ, क्योंकि हर अहलकार और फौजी सरदार, बंदा सिंघ पर चढ़ाई करने से कांपता था जो दरबार में इस बारे ज़्यादा बातचीत ही चलने नहीं देते थे ।

बहादुर शाह को तब अच्छी तरह पता लगा जब इधर के मुसलमानों ने जाकर पंजाब की तबाही का हाल बताया । अब बहादुर शाह ने लाखों की गिनती में फौज चढ़ा दी, जिसने कई हिस्सों में बिखर कर सिंघों पर

हमला कर दिया । बंदा सिंघ भी घेरे में आया, परन्तु सतिगुरुों ने इस बार उसको हाथ देकर रक्षा की । वह दुश्मनों के घेरे में से निकलने में कामयाब हो गया और लौहगढ़ सिंघों को जा मिला । यहाँ से उसने फिर ऐसे हमले किए कि बादशाही लश्कर को भगदड़ मच गई । इस फतेह के बाद बंदा सिंघ ज़्यादा पहाड़ों में ही रहने लग पड़ा । जत संयम की गुरु शिक्षा भी उसने त्याग दी । यह खबर मुसलमान हाकिमों को लगी वह बंदा सिंघ जी की गैर-हाज़री से फायदा उठाते और सिंघों को दबा लेते थे । बंदा सिंघ ने चम्बे में अब एक और विवाह करवा लिया था, परन्तु जब उसको पता लगा कि मुस्लिम फौजें अब यहां भी आने वाली हैं तो बहुत गुस्सा खा कर नीचे उतर आया और ऐसा लड़ा कि मुस्लिम फौज की तौबा-तौबा करवा दी । बहादुर शाह दो वर्ष लगभग यह यत्न करता रहा, परन्तु आखिर इस दुःख में ही पागल होकर वह लाहौर में सम्वत 1770 में मर गया । इसके बाद पंजाब में सिंघों की एक तरह की बादशाही ही कायम हो गई, परन्तु अफसोस कि बंदा सिंघ का गुरु-वचनों पर कायम न रहने के कारण यह वातावरण जल्दी ही खत्म हो गया ।

बात ज़्यादा तब बिगड़ी जब बंदा बहादुर सिंघ तीसरा विवाह करवाने के बाद अपने चेले बालके बनाने लग पड़ा । यह खबरें माता सुंदरी के पास पहुंचीं तो उन्होंने बंदा सिंघ को इस बात से रोका और लिखा तो उसने माता जी विरुद्ध भी कई अपशब्द बोले और यह खींचातानी दो-तीन वर्ष तक जारी रही । आखिर माता जी की हिदायतों पर सिदकी सिंघ अलग हो गये । वह तत खालसे के नाम से मशहूर हो गये और बंदा सिंघ के पक्ष वाले बंदई कहलाने लगे और पंथ में भारी फूट पड़ गई । बंदा सिंघ को बिल्कुल उलट हुआ देख कर माता जी ने फिर उसको लिखा-'बंदा सिंघ, तुम अब गुरु के वचनों से साफ तौर पर नास्तिक हो गए हो, इसलिए याद रखो, गुरु की बख्शी ताकतें भी अब तेरे पास नहीं रहेंगी ।'

ठीक इन दिनों में ही बहादुर शाह के पुत्र को मार कर उसका भतीजा फरूखसियर दिल्ली के तख्त पर काबिज हो गया । उसके सामने भी इस समय सबसे बड़ा मसला पंजाब का ही था । उसने खालसे की फूट से

फायदा उठाया और माता सुंदरी को बीच डलवा कर तत-खालसे को बिल्कुल ही बंदई सिंघों से अलग करवा दिया । सम्वत 1772 के अंत में बंदा सिंघ भी तत-खालसे का विरोधी हो गया और अपनी जीतों का अहंकार दिखाने लग गया । विरोधता यहां तक बढ़ी कि बंदा सिंघ ने बाकायदा गुरु बनने के लिए श्री हरिमंदिर साहिब में आसन पर तकिया लगा कर बैठने और सिर पर चवर करवाने का प्रोग्राम बना लिया, तत खालसे को पता लगा तो उसने फैसला किया कि हम ऐसा हर्गिज नहीं होने देंगे, चाहे जीयें या मरें । चाहे हमारे दुश्मन को इसमें फायदा होगा, परन्तु क्या इस खतरे का मुकाबला करने से बचने के लिए, सिर देकर धारण की सिक्खी को ही गलत कर दें ? नहीं ऐसा नहीं होने देंगे । बंदा सिंघ जब इस नीयत से श्री हरिमंदिर साहिब में आ बैठा तो तत-खालसे के मुख्य सिंघों ने उसको ऐसा करने से रोक दिया और हरिमंदिर से बाहर निकाल दिया ।

बंदा सिंघ ने बाहर निकल कर तत-खालसे पर बड़े बुरे शब्द प्रयोग किये और कहा-'आप मेरे बिना चीज़ ही क्या हो ? मैंने दक्षिण से आकर आपकी सहायता की और आपको बचाया, परन्तु आपने मेरा किया नहीं जाना, इसलिए याद रखो, अब मैं लाहौर से दिल्ली फतेह करके आपको नौकर बना कर रखूँगा आदि ।' इसलिए बंदा सिंघ ने इस समय बहुत सारे तत-खालसे की निरादरी के शब्द प्रयोग किये । आगे सिंघों ने कहा-'तुमने सब कुछ गुरु की बख्शी हुई शक्ति से किया है, इसलिए यदि तुम शक्तियां बख्शने वाले गुरु की शिक्षा नहीं मानोगे तो यह शक्तियां गुरु जी ने तेरे पास नहीं रहने देनी, सब खालसे पास ही आ जाएंगी ।'

इसलिए तत-खालसे और बंदा सिंघ में ठन गई । कई जगह आपस में झड़प और मार-काट भी हुई, क्योंकि बंदई बंदा सिंघ को ग्यारहवां गुरु प्रकट करने लग पड़े थे और सिंघों के खिलाफ बोलते थे । पंथ प्रकाश में ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी लिखते है :- द्वैया छन्द ।।

जा दिन ते माता का लिखिआ, मान पंथ ने लीओ ।
बात बात मैं बंदईयन सो लड़न सिंघ थप लीओ ।

तब लौ मेले वैसाखी पर, अमृतसर सब आए।
गुर के मंदर अंदर बंदा, बैठा गद्दी लाये।
अपने सिर पर चवर करावे, अपने चरण पूजै हैं।
ठौर ठौर उस दे सिक्ख उसको गुरु ग्यारहवां कहै हैं।
रीति अनीति एहु पिख तिसकी रिसयो पथ समदायी।
मंदर ते अंदर है बंदा, दीनो जाए उडाई ॥

इसी तरह ही 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्ता भाई रतन सिंघ जी भंगु ने लिखा है कि बंदा सिंघ बहादुर ने जैसे ही गुरमति के विपरीत बात की और माता सुंदरी जी ने तत-खालसे को उसका साथ छोड़ देने के लिए कहा, तो इसके बाद तत-खालसे और बंदा सिंघ के पैरोकारों (बंदइयों) की आपस में काफी ठन गई और आखिर तुर्कों ने इस बात का फायदा उठाया, तत-खालसे को हाथ में कर लिया। फरुखसियर की फौजों ने बंदा सिंघ को गुरदास नंगल के किले में गिरफ्तार कर लिया और दिल्ली ले जाकर शहीद कर दिया गया।

इस तरह ही कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंघ जी ने भी लिखा है सो बात क्या बंदा सिंघ जी भी जिद्द में आ गये और तत-खालसा भी। इस तरह आपस में भारी फूट पड़ गई, और दुश्मन का सिक्खों की ताकत को समाप्त करने और बंदा सिंघ को शहीद करने का दांव लग गया। जिस पर सब इतिहासकारों ने शोक प्रकट क्रिया है, परन्तु किस्मत को कौन मिटा सकता है ? आखिर बंदा सिंघ अमृतसर से गुरदासपुर चला गया।

यह देखकर सम्वत 1773 में फरुखसियर ने तत खालसे को जागीरें देकर बिल्कुल हक में कर लिया और बंदा सिंघ विरुद्ध फौज चढ़ा दी। कई देर लड़ाईयां होती रहीं और बंदा सिंघ उनके काबू न आया। इससे पहले बंदा सिंघ ने लाहौर पर कब्जा करने की स्कीम बनाई और 10,000 साथियों सहित लाहौर जा पहुंचा। सूबा लाहौर की मदद के लिए बाबा मीरी सिंघ 3000 सिंघ लेकर अमृतसर से लाहौर पहुंचा। सिंघों को एक खास रकम देकर बुलाया गया था। इसलिए लाहौर के बाहर एक जंग

शुरू हो गई । दो पहर रक्त बहाती लड़ाई में जब बंदा सिंघ को कोई कामयाबी न हुई तो उसने कलगीधर जी के बख्शे तीर छोड़ कर जीत प्राप्त करने का यत्न किया, और वीरों को भी आगे झोंक दिया, परन्तु बाबा मीरी सिंघ के हमले को उसका कोई यत्न भी रोक न सका और बाबा बंदा सिंघ को पहली बार दौड़ कर जान बचानी पड़ी और वह बंदा सिंघ जिस से दुश्मन भय खाकर भाग जाता था, आज उसने लाहौर से दौड़ कर बटाले आकर दम लिया और समझ लिया कि गुरु ने मेरी शक्ति छीन ली है । बंदा सिंघ ने अब तत खालसे से मेल करना चाहा, परन्तु जवाब मिला कि तुम तन्खाहईए हो, पहले भूल मानो और अमृत छको; फिर तेरे से मेल होगा ।

बंदा सिंघ के पास गुटका और पोथी थे । जिसमें उसने अपने यंत्र मंत्र लिखे हुए थे, वह मंडी के राजा पास थे । जब उसने वह माँगे तो राजा मुकर गया । बंदा सिंघ अपने यंत्रों मंत्रों के सहारे अब बचना चाहता था, परन्तु जब इन की तरफ से भी जवाब मिल गया तो वह बहुत निराश हो गया और गुरदास नंगल के किले में चला गया ।

इन सब हालातों की फरुखसियर को पल-पल पर खबर मिल रही थी । अब उसी ने फौजों को बंदा सिंघ को अचानक घेरे में ले लेने का हुक्म दे दिया । गुरदास नंगल के किले में बैठे बंदा सिंघ को भी पता लगा और उसने भी तैयारी की, परन्तु उदासी में ही, क्योंकि अब उसका पहाड़ों को जाने का भी मन नहीं करता था । उसके दो पुत्र और दो पत्नियां भी उसके पास ही थीं । पहले तो थोड़ी फौज ही बाहर थी, जिसको मार पीट कर उसके सिक्ख बाहर भी चले जाते और समान ले भी आते थे, परन्तु इसके बाद शाही लश्कर ने इतना सख्त घेरा डाल दिया कि बाहर निकलने वाले को बच कर नहीं था आने दिया जाता और इस तरह बंदा सिंघ के लिए बड़े सख्त दिन आ गए । कलगीधर जी की बख्शी शक्ति तो उसी दिन ही समाप्त हो गई थी, जिस दिन गुरु बनने का ख्याल किया था, परन्तु अब भूतों-प्रेतों की फौज भी उसका साथ छोड़ गई, इसलिए बंदा सिंघ और उसके साथी बंदई सिंघ सख्त घेरे में आ गये । पहले हमले

का तो बंदई सिंघों ने ऐसे गुस्से से टाकरा किया कि हज़ारों दुश्मनों को धरती पर लिटा दिया, जिस के कारण उन्होंने फिर फौजदार के हुक्म अनुसार दूर होकर किले को घेरा डाल दिया। जो कई महीने रहा। तकरीबन छः महीने के घेरे समय कई सिंघ भूख के दुःख से मर गये और बाकी के ऐसे हो गये कि केवल हड्डियों के पिंजर ही रह गये। वृक्षों के पत्ते और मिट्टी खा-खा कर भी सिंघ अपने प्राणों को बचा कर रखने की कोशिश करते रहे परन्तु आखिर हिलने-जुलने से भी रह गये। यह देखकर बंदा सिंघ ने कहा कि अब दरवाज़ा खोल दो और गिरफ्तार हो जाओ। दरवाज़ा खुलने की देर थी कि दुश्मनों ने झटपट ही सब सिंघ जीवित पकड़ लिये और बंदा सिंघ को भी पकड़ लिया। बंदा सिंघ के पकड़े जाने की खुशी में बड़ी खुशियां मनाई, दुश्मनों की तरफ से जरदा और पलाव बांटे गये। कई जगह दीपमाला भी की गई।

बंदा सिंघ से मुसलमान अभी भी डरते थे, इसलिए उसको लोहे के पिंजरे में और बाकी सिंघों को संगलों से बाँध कर गाड़ियों में डाल कर दिल्ली की तरफ ले गए। रास्ते में जाते कई और सिंघों को पकड़ लिया गया। रास्ते में सिंघ 'साधो इह तन मिथिया जानो' आदि वैरागमयी शब्द पढ़ते और जैकारे लगाते बंदा सिंघ के साथी सिरड़ी सिंघ दिल्ली पहुंचे और वहां बाजारों में घुमा कर फिर कैद कर दिया गया। कुछ दिनों के बाद 40-50 सिंघों को रोज़ ही चांदनी चौक में लाकर कत्ल किया जाने लगा। सिंघ शब्द पढ़ते और जैकारे लगाते जाते और बड़ी निर्भयता से कत्ल होते।

माँ की तरफ से पुत्र को छुड़वाने का यत्न

ठीक इस समय जब सिंघ कत्ल हो रहे थे एक अचम्भित घटना हुई। रास्ते में आते ही एक विवाह करके डोली लेकर आता 19-20 वर्ष का नौजवान सिक्ख लड़का भी मुसलमान फौज़ियों ने पकड़ लिया था, जो बंदा सिंघ जी के साथ दिल्ली पहुंच गया था। यह एक मां का इकलौता पुत्र था। मां दिल्ली में पहुंची और उसने भारी यत्न किये, परन्तु उसको

कोई सफलता न मिली । आखिर किसी मुसलमान अहलकार ने इस रोती मां को बताया कि आज तेरे पुत्र के कत्ल होने की बारी है, यदि तुमने उसे बचाना है, तो जाओ आज फरुखसियर बादशाह के हाथी के आगे लेट कर पुकार करना, शायद तेरी सुनी ही जाए । मां ने जिस तरफ से बादशाह ने आना था, पता लिया और उसी तरफ चल पड़ी । जब बादशाह की सवारी आई तो उसने हाथी आगे लेट कर पुकार की और भारी विलाप किया । फरुखसियर ने हाथी रोक लिया और मां से पूछा, 'तुम क्यों रो रही हो ?'

'जहांपनाह, आज मेरे बेकसूर पुत्र ने कत्ल हो जाना है, वह सिक्ख नहीं हिन्दू है, उसको रास्ते में आप के फौजी ऐसे ही पकड़ लाये हैं ।' मां ने कहा–

'हमने तो सिक्खों को कत्ल करना है, हिन्दू को नहीं यदि तेरा पुत्र हिन्दू है, तो हम उसको कत्ल नहीं करेंगे ।' बादशाह ने उसी समय अपने पास खड़े सेवक को दौड़ाया कि जल्दी जा, उसको कहीं जल्लाद कत्ल न कर दे । जब बादशाह के भेजे दूत ने जाकर देखा तो वह लड़का कत्ल होने के लिए तैयार, कत्लगाह में खड़ा था । उस आदमी ने उसको बादशाह के हुक्म से छुड़ा लिया और बादशाह के पास ले आया । लड़के ने बहुत कहा, 'मुझे कहां ले चले हो, मुझे मेरे साथियों से क्यों बिछोड़ते हो' परन्तु किसी ने एक न सुनी । लड़के ने आते ही पूछा–'क्या कारण है बादशाह! मुझे मेरे भाईयों से बिछोड़ दिया गया है ।'

'तेरी मां ने कहा है कि तुम सिक्ख नहीं, इसलिए तुम्हें रहम करके छोड़ा जा रहा है ।' बादशाह ने कहा ।

'हैं ! कौन कहता है मैं सिक्ख नहीं ? मेरी मां झूठ कहती है, मैं कलगीधर का सिक्ख हूँ और कत्ल होने के लिए तैयार हूँ । इसलिए देर न करो मुझे वहां ही पहुँचा दो, ताकि मैं अपने सचखंड जा रहे वीरों से पीछे न रह जाऊं ।'

'तेरी मां झूठ नहीं कहती, साथ तुम सिक्खी के लिए कुमौत क्यों मरता है ? जाओ अभी तुम्हारी आयु खाने खेलने की है । मां को जाकर

सुख दो ।' बादशाह ने कहा-

न बादशाह खुदा तेरा भला करे, तुम मुझे वापिस कत्लगाह की तरफ ही भेज दो । चार दिनों के जीवन के लिए मेरी वैरन मां, मुझे मेरे सतिगुरुों से बिछोड़ रही है । जल्दी करो, मुझे मेरे भाईयों के पास ही भेज दो, मैं बेमुख नहीं होना चाहता । देर मत करो, मेरे रास्ते में रोक मत डालो । देखो मेरे कत्ल हो रहे साथियों के लिए आकाश में रथ खड़े हैं, वह उन पर चढ़ गुरुपुरी जा रहे हैं, हाय ! मुझे उनके साथ जाने से मत रोको ।'

सिदकी सिक्ख की बातों ने पत्थर-दिलों को भी मोम कर दिया । बादशाह के मन पर भी असर हुआ और वह कहने लगा, 'अच्छा जाओ, अब तुम मां के साथ जरूर जाओ, मैं तुम्हें सिक्ख होने पर भी छोड़ता हूँ ।'

बादशाह ने उसको छोड़ने का हुक्म दे दिया, परन्तु लड़का वहां से हिला ही न और आँखों नीर बहे और कहता जाए-जहांपनाह' मैं अकेला जीना नहीं चाहता । यदि मुझे छोड़ना है, तो मेरे साथ के बाकी सिंघों को भी छोड़ दें, तो मैं जाऊंगा ।'

फरुखसियर को सिक्ख लड़के की बातों ने मोम कर दिया था । उसने खुश होकर हुक्म दिया कि इस को भी छोड़ दो और बाकी सिंघों को भी छोड़ दिया जाए । इसलिए कत्ल होने से लगभग 60 सिंघों को इस लड़के के सिदक ने बचा लिया ।

बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी

अब बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी-वार्ता सुनो । जब से गिरफ्तार हुआ था, उसको गुरु वचनों से बेमुख होने पर अपनी दहती कला का पश्चाताप लगा हुआ था । हर समय चौकड़ी मार कर गुरु-ध्यान में मग्न रहता था । बाकी सिंघ जब शहीद हो गये तो बंदा सिंघ बारे विचार होने लगा कि इसको कैसे कत्ल किया जाए ? सबसे पहले उसके पुत्र को उसके सामने मारा गया और उसका मांस उसके मुँह में ठूंसा गया, जिस की इसने कोई

परवाह न की और अडिग रहा, परन्तु इसकी दोनों पत्नियां एक दीवार से टक्करें मार-मार कर मर गईं और एक धर्म हार कर कैद में से निकल गई ।

बंदा सिंघ ने धर्म तो क्या हारना था, बल्कि अडिग रह कर शहीदी प्राप्त करने का उसने निश्चय कर लिया था । इसलिए काज़ियों ने फतवा लाया कि यह बहुत बड़ा काफिर है, इसको ऐसी सज़ा दो कि यह तड़प-तड़प कर मरे, और इस तरह इससे मुगल पठानों को मारने का बदला लिया जाए । इस फैसले के बाद बंदा सिंघ बहादुर को चाँदनी चौक में लाया गया । बंदा सिंघ की शहीदी को दुनिया उमड़ कर देखने आई । काज़ियों के कहे अनुसार अंगीठी जला कर उसमें एक जंबूर को रखकर लाल सुर्ख किया गया । जल्लाद ने उस गर्म जंबूर से चौकड़ी मार कर बैठे बंदा सिंघ की जांघ में से बोटियां खींच लीं । जांघ में से रक्त की धारें बह निकलीं, परन्तु बंदा सिंघ ऐसा अडिग बैठा था, जैसे उसको किसी ने कुछ कहा ही नहीं । देखने वालों की ऊंगलियां मुँह में पड़ गई कि यह किस मिट्टी का घड़ा हुआ है ? सुनते थे कि बंदा सिंघ बहादुरी में आफत है, परन्तु अब तो मरने में भी कमाल कर दी । किसी ने दौड़कर बादशाह के दरबार में बात जा सुनाई कि बंदा सिंघ तो कमाल ही कर गया है । जिस तरह सुनते थे, वैसा ही देख लिया है । बादशाह ने तसल्ली करने के लिए वज़ीर भेजा और वज़ीर ने यह नज़ारा देखकर बंदा सिंघ से पूछा-

'बंदा सिंघ' क्या बात है तुम दर्द महसूस नहीं करते, जबकि तेरे शरीर की बोटियां जा रही हैं ।

बंदा सिंघ ने कहा-'इसीलिए तो आपको सिक्खों के सहनशीलता की समझ नहीं पड़ती कि गुरु ने उनको दृढ़ता और सिदक-दिली बख्शी हुई है । इसी कारण ही तो सिक्ख अपने मन को और तरफ से तोड़ कर गुरु चरणों से जोड़ लेता है । गुरु चरणों से जुड़े होने की ही यह निशानी है कि फानी शरीर को सिक्ख केवल एक रिहायश-गाह (मकान-कोठा) समझता है और यदि किसी कोठे या मकान की दीवार में से कोई दो चार

ईटें निकाल ले तो इस से उसमें रहने वाले को क्या दु:ख हो सकता है । इसी तरह हमारी आत्मा शरीर में रहकर शरीर के दु:खों-सुखों से निरलेप हो चुकी है, फिर इस निरलेप हुई आत्मा को शरीर के कटे-फटे जाने से दु:ख कैसे हो ?'

तुम तो सुने थे, बड़े करामाती हो फिर पकड़े कैसे गए और मुसलमानों पर इतने ज़ुल्म क्यों करते रहे हो ?

बंदा सिंघ कहने लगा-'तुम्हें मेरे ज़ुल्मों का ख्याल तो आ गया है, परन्तु अपने ज़ुल्मों का ख्याल क्यों नहीं आता ? क्या तुम्हारे ज़ुल्मों की सज़ा तुम्हें नहीं थी मिलनी ? वह परमात्मा बड़ा बेअंत है, वह हर ज़ालिम को सज़ा देने के लिए उस पर कहर डाल दिया करता है और ऐसा होता ही आया है, इसलिए मैंने ज़ुल्म नहीं किये, यह तो आप के किये कर्मो की ही सज़ा थी, परन्तु मैं सज़ा देता भूल कर गया और सतिगुरों की बख्शी हुई शक्ति का प्रताप भूल कर अपने आप को ही सब कुछ समझ लिया था, बस यहीं मेरी भूल है, जो मुझे आप की कैद में ले आई है, और यदि मैं यह भूल न करता, तो फिर आप की क्या ताकत थी कि मुझे पकड़ सकते ।

वज़ीर यह बातें सुनकर बादशाह के पास चला गया और सब हाल सुनाया । अब बादशाह ने संदेश भेजा कि बंदा सिंघ ! तुम्हें जैसे कहे, मारा जाये, बंदा सिंघ ने निर्भयता से जवाब दिया कि "मैं नहीं कहता हूँ, जैसे बादशाह को अपनी मृत्यु चाहिए, उसी तरह मुझे मार दे ।' यह सुनकर फरुखसियर को बड़ा गुस्सा आया और बंदा सिंघ को हाथी के पैर से बांध कर घसीट-घसीट कर मार डालने का हुक्म दे दिया । इसलिए इसी तरह किया गया । बंदा सिंघ फिर भी पुराना साधू था, जपी तपी था, श्वासों को दसवें द्वार तक चढ़ा लेने का उसने अभ्यास किया हुआ था, इसलिए उसने इस समय एकदम श्वास चढ़ा लिये । हाथी ने घसीट-घसीट कर बंदा सिंघ के शरीर रूपी ठीकरे को तोड़-फोड़ दिया । इस तरह बंदा सिंघ बहादुर सम्वत 1773 में सिक्खी को निभाते हुए शहीद हो गये ।

बंदा सिंघ की शहीदी के बाद

बाबा बंदा सिंघ बहादुर जब सम्वत 1773 में शहीद किये गये तो उस समय बंदई सिंघों के 4 जत्थे पंजाब में घूम रहे थे और वह कहीं-कहीं तुर्क हाकिमों से टक्कर ले रहे थे। यह ज़्यादा सिंघ वहीं थे, जिन्होंने बंदा सिंघ के समय नवाबी तथा हुक्मरानियां की थीं और उसके पीछे लग कर ही वह तत खालसे के विरोधी बन गये थे, परन्तु बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद इनकी शामत आ गई। शाही सेना रात-दिन इन का पीछा करने लगी। तत खालसा इस समय अमृतसर ठहरा हुआ था और नकद जागीर से उसका गुजारा चल रहा था। उधर सम्वत 1775 में फरुखसियर की वजीरों से बिगड़ गई और इसके साथ वहीं कांड हुआ जो इसने अपने चाचा बहादुर शाह के पुत्र से किया था। इसको भी अंधा करके जेल में डाल दिया गया और तख्त पर मुहम्मद शाह रंगीला बैठ गया। इसने तख्त पर बैठते ही तत खालसे की जागीर बंद करनी चाही, परन्तु बंदईयों की ताकत देखकर चुप रहा कि यदि ये दोनों दल इकट्ठे हो गए तो हमारे लिए फिर मुसीबत न खड़ी हो जाये, परन्तु वाहिगुरु को इन दलों का मेल मंजूर नहीं था। क्योंकि बंदई अभी भी बंदा सिंघ के चलाये अलग रास्ते पर ही चल रहे थे।

तत खालसे और बंदईयों का झगड़ा व युद्ध

सम्वत 1776 में बंदईयों और तत खालसे का झगड़ा बढ़ गया। इस साल दीपमाला के समय श्री अमृतसर सिंघों का भारी समूह एकत्र हुआ और बंदई भी भारी गिनती में पहुंचे। हरिमन्दिर में बेअंत चढ़ावा चढ़ा। बंदईयों ने मांग की कि इस धन में से आधा हिस्सा हमें दो। तत खालसे ने कहा कि आप तो गुरु घर से बे-मुख हो, फिर इस धन पर आप का क्या अधिकार है ? इसी बात से झगड़ा बढ़ गया और बंदईयों ने लड़ने की तैयारी कर ली। यह देखकर भाई मनी सिंघ और पुराने सिंघों ने यत्न किया, लड़ाई न हो। आखिर भाई मनी सिंघ जी ने हरि की पउड़ी पर

पर्चियां फैंकने की पेशकश की कि जिस के नाम की पर्ची निकल आये, वह हरिमन्दिर का प्रबन्ध संभाल ले। चार पर्चियां–तत खालसे की, बंदईयों की, दोनों की सांझी और गुरु अंग की। बंदई भी इस पेशकश को मान गये और पर्चियां डाली गईं। तत खालसे की पर्ची तैर गई और बाकी डूब गईं। यह देखकर तत खालसे को खुशियां चढ़ गई और बंदई भरे-पीते रह गए। बंदईयों का मुखी इस समय अमर सिंघ खेमकरण का था, इस लिए बंदे की जगह गुरु बना हुआ था और चवर फिराता था, उसको बहुत गुस्सा (तैश) आया। वह तत खालसे की जीत पर बहुत अकड़ा। तत खालसे ने उनको समझाया कि सतिगुरु को ऐसे ही मंजूर था जो हो गया है, इसलिए अब कोरा हठ मत करो और तत खालसे से मिल जाओ, परन्तु अमर सिंघ टला न। उसके और कम ज़्यादा बातें करने से दोनों तरफ से गुस्सा बढ़ गया और लड़ाई हो गई। झण्डे बुंगे के पास, अकाल तख्त के सामने जंग शुरू हो गई। अमर सिंघ भी अच्छा लड़ाका था, इसलिए उसने कई सिंघ मारे, परन्तु आखिर जब वह मारा गया तो बंदईयों को भगदड़ मच गई। सैंकड़े सिंघ दोनों तरफ से मारे गए। इस के बाद मुसलमान हाकिमों ने एक दूसरे को चूकने-चुकाने नारदमुनि का पार्ट किया और दोनों दलों को एक दूसरे के रक्त के प्यासे बना दिया। बतातें है कि ज़्यादा बंदई सिंघ इस पहली मुठभेड़ के बाद ही तत खालसे के साथ मिल कर सीधे रास्ते पर आ गए थे, परन्तु बाकी मुठभेड़ों में ही लग गए। कई जगहों पर सीधी टक्कर होने के बाद बंदईयों के जत्थे टूट गए। कुछ मारे गए कुछ तत खालसे से आ मिले। सो इस तरह इस फूट ने खालसे के रास्ते में कांटे बीज कर रख दिये।

हाकिमों का तत खालसे पर धावा

बंदा सिंघ की शहीदी के पश्चात 5-6 साल इस तरह ही गुजरे जब बंदईयों की ताकत बिल्कुल समाप्त हो गई तो अब तुर्क हाकिमों ने तत खालसे की जागीरें बन्द करके इन से वैर के बदले लेने की सोचे सोचनी शुरू कर दीं। लाहौर के सूबे अब्दुल समंद खां को बदल कर मुलतान

भेज दिया गया और लाहौर का सूबा उसके पुत्र खां बहादुर (जकरियां खां) को बना दिया गया था। इसने आते ही पहले सिंघों का रुज़ीना बंद कर दिया और फिर कुछ महीनों बाद जागीर भी जब्त कर ली। सिंघ अमन के चाहवान थे और वह गड़बड़ करने में पहल नहीं करते थे और जो कहते थे वह कर दिखाते थे, सिंघ हाकिमों के इस ज़ुल्म को सहन करके अपने-अपने इलाकों में चले गए और काम धंधों में लग गए। जत्थेबंदक तौर पर जब तत खालसा भी छिन्न-भिन्न गया तो मुसलमान हाकिम अब इस को भी खत्म करने की तरकीबें सोचने लगे।

यह तत खालसे से मीठी-मीठी बातें करके भ्रमाने वाले तुर्क हाकिम दिल के खोटे और तत खालसे के भी अन्दर से दुश्मन थे। इसलिए कुछ समय पश्चात अचानक ही सूबे खान बहादुर ने शहरों और गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिस किसी मुसलमान को बंदा सिंघ के समय किसी सिंघ ने दुःख दिया हो, वह थाने में उस के विरूद्ध रिपोर्ट लिखवाये, उसके विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी। यह सुनकर हज़ारों ही पत्र (अर्जियां) सिंघों के विरूद्ध हाकिमों को मिलने लगे। इन के आधार पर हाकिम सिंघों के घरों में छापे मारने लगे और कुर्कियों पर कुर्कियां होने लगीं। अकेले-अकेले की क्या पेश जानी थी, सिंघ पकड़ कर जेलों में डाले जाने लगे और घर-बार जब्त होने लगे। इसलिए सिंघों पर एक बार ही भारी मुसीबत आ गई। परन्तु वाहिगुरु के रंग न्यारे हैं, जिसको वह रखे, उसको कोई नहीं मार सकता। बंदा सिंघ के समय में ही कुछ सिंघों के जत्थे पंजाब से बाहर राजपूताने में नौकर जा हुए थे, जब उनको पंजाब की इस हालत की खबर मिली तो वे नौकरियां छोड़ पंजाब को अपने भाईयों की मदद के लिए वापिस आए। इनकी गिनती कोई 5000 के करीब इतिहास में लिखी है। इन सिंघों ने पंजाब में दाखिल होते ही तुर्कों के थाने और तहसीलों पर हमले कर दिये, सब बंदीवान सिंघों को छुड़ा कर अपने साथ मिला और कुछ और भी आ मिले, इसलिए उनकी गिनती 30,000 तक जा पहुंची। सूबे खां बहादुर ने भी सेना चढ़ा दी। कई महीने यह जंग लगी रही, देश सूना हो गया। आखिर निराश होकर सूबे को

पीछे हटना पड़ा और बातें बेशक मीठी-मीठी करने लगा, परन्तु दिल में खोट थी अहदनामा करने का वायदा किया और सिंघ एक बार फिर अमृतसर आ जुड़े ।

कई महीने गुजर गए, न अहदनामा न जंग, वाली नीति बनी रही वैसे आस-पास मुसलमान फौजियों की तरफ से इक्के-दुक्के सिंघों की पकड़ जारी रही । साल के बाद सूबे को जब सिंघों ने बातचीत करने के लिए कहा, तो उसने लिख भेजा, यदि जागीरें लेनी हैं, तो मुसलमान बन जाओ, नहीं तो सेना तैयार है, रोटी तभी खाएंगे, यदि आप को समाप्त कर लेंगे । यह सुनकर सिंघ डरे नहीं, आगे डट कर जवाब दिया कि "सूअर खाये जो हमें मारे बगैर रोटी खाये । जल्दी करो, देर मत लगाना । क्या हुआ, यदि आज हम बे-मुल्क है, या गरीब है, परन्तु याद रखो, हम उस अकाल पुरख के सहारे पर दिन काट रहे हैं जो सब का मालिक है और ज़ालिमों को मारने वाला और गरीबों की रक्षा करने वाला है ।"

फौज चढ़ आई तो सिंघ दिन में घने जंगलों में जा घुसते और रात को छापे मार-मार कर मुसलमानी फौज को आराम न करने देते । दिन-रात यही कार्रवाई रहे । सिंघों को केवल जंगल बेलों की ओट थी, सिंघों के घोड़े हिरणों की तरह छलांगें लगाते जंगलों में जा घुसते, परन्तु आराम-तलब मुसलमानों को कांटेदार जंगलों में एक कदम भी चलना मुश्किल था ।

भाई तारा सिंघ डलवां की शहीदी

ठीक इन दिनों में ही भाई तारा सिंघ जी डलवां बड़ी बहादुरी से शहीद हुए । नौशेहरे के चौधरी साहिब राय ने जी भर दुश्मनी निभाई । उस की घोड़ियां सिंघों के खेत चर जाती थी और सिंघों के कहने पर कि इनको बांध कर रखो, यह सरकारी टट्टू बड़ी आकड़ से बोला-"मेरी घोड़ियां खुली ही चरेंगी और यदि बांधनी हुई तो तुम्हारे सिरों के बाल काट कर उसके रस्से बना कर घोड़ियों को बांधूंगा ।" सिंघ यह बर्दाश्त न कर सके । दूसरे दिन चरने आई घोड़ियों को पकड़ कर सिंघ भाई तारा सिंघ

जी डलवां के पास पहुंच गए । साहिब राय को पता लगा तो वह भाई तारा सिंघ जी को आकर धमकाने लगा-'तुम मेरे चोर पकड़वा दो नहीं तो फौज आई समझ ।'

'सिंघों को चोर कहते हो, और तुम चोरों से कम हो, जो दूसरों के खेतों को तबाह (उजाड़ता) करता है ?''

'तारा सिंघ, फिक्र मत करो, तेरे बाल भी मैं जूते मार-मार कर उतरवाने हैं, फौज आई समझो ।' दुश्मन की सी. आई. डी. का काम करने वाले साहिब राय ने बड़े अहंकार में कहा-

सिंघों से बालों का ताना नहीं सुना जाता । भाई तारा सिंघ जी ने उसी समय साहिब राय को पकड़ लिया और खूब जूते टिकाये और कहा-'तुम तो जब करोगे, करोगे, पहले हम से तो अपनी नीयत मुराद ले जाओ ।'

साहिब राय रोता-चिल्लाता उस समय पट्टी के हाकिम ज़ाफर बेग पास पहुंचा । भाई तारा सिंघ के पास अधिक से अधिक 70-80 सिंघ थे, इसलिए ज़ाफर बेग 100 घुड़सवार और 200 पैदल सिपाही लेकर रातो-रात चल पड़ा कि दिन चढ़ने से पहले ही रात के 2-3 बजे के लगभग डलवां आ पहुंचे । आगे भाई तारा सिंघ जी का एक साथी बघेल सिंघ प्रात: काल उठकर शौच-स्नान करने के लिए बाहर जा रहा था कि उसने अंधेरे में आते दुश्मन को देख लिया । सिंघ ने सोचा कि डेरे भाई तारा सिंघ को खबर देने के लिए मुझे अब जाने की ज़रूरत नहीं है, मुझे अकेले ही इनके मुकाबले पर डट जाना चाहिए, और बंदूकों की आवाज़ सुनकर डेरे के सिंघों को स्वयं ही पता लग जाएगा । यह सोच कर भाई बघेल सिंघ ने ललकारा मारा-अरे चोरों, रात के अंधेरे में कहां चले जा रहे हो ? खड़े रहो ? सिंघ आपको छोड़ेगा नहीं । यह कह कर सिंघ दौड़कर इतनी तेज़ी से दुश्मनों में घुस गया कि उनकी चलाई गोलियों के वार निष्फल चले गए । सिंघ ने दो-चार घुड़सवारों को नीचे फैंक दिया । उधर डेरे के सिंघों ने आवाज़ सुनी तो वह भी बाहर निकल आये । ज़ाफर बेग तो इस हमले में सिंघों से बच गया, परन्तु उसके दो भतीजे और 25-30 सिपाही मारे गए, बाकी भाग कर पीछे दौड़ उठे । सिंघों की तरफ

से केवल बघेल सिंघ ही शहीद हुए। ज़ाफर बेग भतीजों की लाशें उठाकर पीछे हट गया और दिन निकलने से पहले ही मैदान छोड़कर लाहौर को चला गया। लाहौर जाकर सूबे के पास रोया पीटा। तब लाहौर से माने हुए जरनैल मोमन खां की 4000 सेना सहित भाई तारा सिंघ पर चढ़ाई हो गई।

इतनी भारी फौज के चढ़ने की खबर भाई तारा सिंघ जी को भी मिल गई। अब भाई तारा सिंघ जी ने सब सिंघों को मुखातिब करके कहा– 'भाई जिस ने जान बचानी है वह अभी ही चला जाये, और जिसने शहीदी लेनी है, वह हमारे पास रह जाए।' कोई भी न गया, जितने थे, सबको शहीदी का शौक चढ़ गया। इतिहास में इन सिंघों की गिनती केवल 52 लिखी है। इन्होंने मोर्चे बना लिये और टक्कर की सारी तैयारी कर ली। उधर मोमन खां ने निकट पहुंच कर पड़ाव कर लिया और रात को कुछ आराम करके सुबह ही हमला करके सिंघों को पकड़ लेने या मार देने का कार्यक्रम उसने बनाया। वह जब आगे बढ़े तो मोर्चे में बैठे सिंघों ने अच्छा जवाब दिया। दिन निकलने तक सैकड़ों दुश्मन मौत के घाट उतार दिये। जब तक दारू सिक्का रहा, तब तक तो सिंघ मोर्चों में रहे, परन्तु जब दारू सिक्का समाप्त हुआ तो तलवारें घसीट कर दुश्मनों में जा घुसे। सिंघ इकट्ठे रह कर ही दुश्मनों को मार रहे थे। यह हाल देखकर एक जरनैल तकी बेग आगे बढ़ा और उसने भाई तारा सिंघ को ललकारा। तारा सिंघ जी झट ही सिंघों से निकल कर तकी बेग के मुकाबले पर आ गए। तकी बेग लोहे से जड़ा पड़ा था। उसने तीर चलाया जिस से भाई तारा सिंघ जी बच गए, और तकी बेग और तीर चलाने ही लगा था कि भाई तारा सिंघ जी ने आँख के फेर में आगे बढ़ कर तलवार तकी बेग के मुँह में घुसा दी। तकी बेग जख्म खाकर भाग गया और सिंघ फिर जिधर दुश्मन ज़्यादा होते, उधर ही जोर-शोर से पड़ जाते थे। इस तरह अकेला-अकेला सिंघ दस-दस और पंद्रह-पंद्रह को मार कर शहीद होता गया। इस तरह 11-12 सौ दुश्मन को मार कर यह सिंघ शहीद हो गए। सिंघों के शहीद होने के बाद मोमन खां सिंघों के सिर काट कर

लाहौर ले गया । इस समय विक्रमी सम्वत 1782 थी ।

सिंघों का गुस्सा

जब यह खबर सिंघों को हुई तो भाई तारा सिंघ डलवां की बहादुरी पर खुश भी हुए और उनका बीर रस भी जाग पड़ा । फैसला किया गया कि दुश्मन को एक बार हाथों-पैरों की फिर सजा देनी चाहिए । इसलिए सिंघ फिर इन थानों पर हमले करने लगे । सिंघों की गुरिल्ला लड़ाई ने तुर्क फौजों का नाक में दम कर दिया । सिंघ तुर्कों के जवाबी हमले को टालने के लिए जंगलों में घुस जाते और रात-दिन ऐसे टूट पड़ते कि घोड़े, हथियार तथा और सामान लूट ले जाते और लाशों का ढेर लगाकर फिर जंगलों में जा घुसते । फौजें कई बार चढ़ाई और तंग आ कर सूबे को जाकर कहती कि सिंघ रहा ही कोई नहीं । फिर सिंघों ने कसूर से आते शाही खज़ाने को लूट लिया । बड़ा मशहूर सौदागर मुर्तजा खां काबुल से घोड़े ला कर दिल्ली को जा रहा था कि सिंघों ने उसके घोड़े छीन लिये । मुहम्मद शाह रंगीला का साला नवाब ज़ाफर खां दिल्ली को जा रहा था कि उसको गोईंदवाल के पुल पर सिंघों ने घेर लिया और कंगाल करके दिल्ली भेजा । उसके चिल्लाने पर बादशाह ने भारी फौज भेजी जो कई महीने सिंघों के पीछे लगी रही, परन्तु रात-दिन अचानक हमलों ने उसकी भी सुध भुला दी । देश को कुछ फौजों ने खा लिया, कुछ सिंघों ने लूट लिया । इस तरह देश बर्बाद करके शाही फौजें भी वापिस मुड़ गई । मारखोरे और धड़वैल लोग आ आ कर सिंघों में मिलते जाते थे । मुसलमानों व समाज के सताये हुए दुखियारे लोग जल्दी-जल्दी अमृत छक कर सिंघ सजते जाते और इस तरह जितने सिंघ शहीद होते उतने और नये आ बनते ।

इस समय गांव घरियाले एक आनंद कारज के मौके पर कुछ सिंघ इकट्ठे हुए थे कि मुसलमानों ने पता लगने पर गांव आ घेरा । सिंघ तलवारें घसीट कर पड़े और दुश्मनों का घेरा तोड़ कर निकल गए । बाद में सिंघनियां भी मार काट करती निकल गईं । इस हादसे के बाद ज़्यादा गिनती में

सिंघनियां भी सिंघों की तरह ही युद्ध-भूमि में सिंघों का साथ देने लगी ।

बादशाही खज़ाना लूटना

इस समय हालात ये थे कि जहाँ मुसलमान हाकिम सिक्खों को एक एक करके समाप्त कर देना चाहते थे, वहां सिक्खों की गुरिल्ला-लड़ाई ने उनका नाक में दम किया हुआ था । देश में हर समय भगदड़ मची रहती थी और खास कर चोर-डाकुओं के लिए तो यह समय सोने का काम दे रहा था ।

बंदा सिंघ की शहीदी के 15 साल बाद अर्थात 1787-88 तक सिक्ख चाहे शहरों में न रह सकते थे, परन्तु जब चाहते, जंगलों से निकल कर अच्छी मार-काट कर जाते और अनाज इत्यादि ले जाते, हथियार और घोड़ों की संभाल वह सबसे ज़्यादा करते थे, खाने को कुछ न मिले, तो वह घास और वृक्षों के पत्ते खाकर भी निर्वाह कर सकते थे, परन्तु हथियार और घोड़ों की प्राप्ति के लिए वह हर समय ध्यान रखते और जब भी कहीं शाही हथियारों के आने-जाने, या छोटे-मोटे किसी दस्ते से मुठभेड़ होती तो वह सबसे पहले इसी चीज़ की संभाल करते ।

अकेले-अकेले सिंघ की शहीदी के बाद गुस्से में आकर सिक्ख योद्धों ने कई जगह हमले करके मुसलमानों को हैरान कर दिया । समय ऐसा बन गया कि कुछ सिंघ लूट लेते, कुछ मुसलमान फौजें छीन लेती और ऐसे समय फसलें तो किसी ने क्या बीजनी थी जब हर समय ही युद्ध का खतरा सिर पर हो । यदि किसी ने बीजी भी हो तो वह वैसे ही खराब हो गई ।

हालत यह हुई कि पंजाब से कई साल दिल्ली वालों को कोई टैक्स न पहुंचा । बादशाह ने बहुत बार माँग भेजी, परन्तु भेजे कौन, यहाँ तो फौज के खर्चे ही पूरे नहीं होते थे । उधर मुहम्मद शाह रंगीला ने रुपया वसूलने के लिए दिल्ली से फौज भेजी, जो लाहौर आ गई । सूबेदार का और खर्च बढ़ गया । खज़ाने में उसके पास हज़ारों रुपये होते परन्तु यहाँ बिल दो करोड़ का बनता था ।

यह सूबा खां बहादुर बहुत चालाक था। इसने सिक्खों से कई वायदे किये और कई तोड़े और फिर लड़ा, और वह कई बार अहलकारों से झूरता भी कि हमने यह मीठी-सी दुश्मनी क्या गले डाल ली है। मारने से सिंघ मरते नहीं, हार गए हैं मारते-मारते, परन्तु पीछे भी नहीं हटता।

इसलिए ऐसे बेचारा झूरता, और कई अच्छे मुसलमान उसको सिक्खों से सुलह कर लेने के लिए कहते, परन्तु बुरे भी तो बीच में ही होते हैं, वे उस को दूसरी तरफ चलाते। इसलिए मौलवियों चुगलों की शह ने मुल्क का बुरा हाल कर दिया, और आज उसके पास बादशाह को भेजने के लिए रुपये नहीं थे और बागी होने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि दरवाज़े आगे फौज बैठी बादशाह की आधे से ज़्यादा अहलकार उसके साथ थे।

भाई सुबेग सिंघ जी की सूबे को सलाह

भाई सुबेग सिंघ सूबे खां बहादुर के पास नौकर था, परन्तु आज कल की तरह वह सरकारी नौकर होकर इतना खुशामदी नहीं था बना हुआ कि हर समय सिक्खों के खिलाफ ही बोलता, या सूबे को भड़काता रहता परन्तु वह पूर्ण गुरसिक्ख था, आखिर जब उससे भी सूबा बिगड़ा था, तो उसने कोई धर्म नहीं छोड़ा, बल्कि मर्दों की तरह सच्चे सिंघ की तरह शहीद हुआ था।

भाई सुबेग सिंघ बड़ा समझदार था, इसने सूबे को चिन्ता में डूबा देख कर कहा-'क्या बात है खां साहिब बड़े उदास हो ?'

सुबेग सिंघ उदासी का कारण तुम्हें नहीं पता लगा ! दरवाज़े पर फौज बैठी है, परन्तु खज़ाना खाली है, कहाँ से देंगें, कैसे करेंगे, यही चिन्ता खाई जा रही है।

'इसका इलाज तो है, परन्तु यदि हुक्म करें तो।'

'क्या ? जल्दी बता।'

'यदि एक बार सिंघों को मिलने की आज्ञा दो तो।'

'यह क्या इलाज हुआ ?'

'इलाज ऐसे होगा, यदि आप चाहेंगे तो।'

'मैं तो चाहता हूँ, परन्तु कोई बात भी बताओ ।'

'इलाज यही है कि कुछ पकड़ पकड़ा कर लाख–पौना लाख रुपया, इन फौजियों को खच्चरों पर लाद कर इनके हवाले करो और दिल्ली को रवाना कर दो । न गिनती करो न करवाओ, परन्तु यह लिखित ले लो कि खज़ाना इनकी सम्भाल में दे दिया है, बस बाकी बात आपकी सिंघ समेट देंगे ।

'कैसे ?'

सिंघ रास्ते में खज़ाना लूट लेंगे और फिर गिनती का क्या हिसाब होना, आप कह देना हमने सारे भेज दिये हैं ।'

अब खां बहादुर को समझ पड़ी कि सुबेग सिंघ का क्या मतलब है ? वह कहने लगा–सुबेग सिंघ बात तो तूने अच्छी बताई है । फिर अब जल्दी कर, सिंघों को जाकर सारी बात बता आ । यह रोज़ का जो पाँच हज़ार रुपया शाही फौज का खर्च पड़ रहा है, इससे बचा और खच्चरें लाद कर मैं तो कल ही इनको यहाँ से रवाना कर दूँगा । तुम अब सिंघों को तैयार कर जा कर ।'

भाई सुबेग सिंघ जी दूसरे दिन ही काहनूवान जा पहुंचे । सिंघों को संदेश भेजा कि मैंने आप से मिलना है । छंभ से बाहर वाले जासूस सिंघ ने अन्दर जत्थेदार को खबर दी । आज्ञा मिलने पर जासूस भाई सुबेग सिंघ जी को जंगल में जत्थेदार के पास ले गया ।

सुबेग सिंघ जी बारे सिंघों की नीयत देखो । तुर्कों के पास नौकर होने के कारण वह आपको तन्खाहीया कहते थे । जब भी यह सिंघों के पास जाते, पहले इनको तन्खाह लगाते, और धन्य भाई सुबेग सिंघ जी ! वह जो भी सिंघ तन्खाह लगाते, पहले पूरी करते, फिर कड़ाह प्रसाद की देग हाज़िर करते, अरदास करते, तो सिंघ में जाकर कहीं बैठते । खैर जो तन्खाह लगी, वह भाई सुबेग सिंघ जी ने पूरी की और फिर सिंघों को सारी बात कह सुनाई कि बादशाही खज़ाना जाना है, वह नहीं निकलने देना चाहिए, जैसे हो सके, ब्यास नहीं पार करने देना । सूबे ने भी चाहे साथ फौजें रक्षा के लिए भेजनी हैं, परन्तु वह छोटा–मोटा हमला कर पीछे

हट जायेंगी और आप ने अपना काम कर लेना ।

'अन्धा क्या ढूँढे ? दो आँखें ।' सिंघों को और क्या चाहिए था, उसी समय जैकारा छोड़ कर सिंघ जी को विदा कर दिया ।

बादशाही फौजों ने खज़ाना लेकर श्री गोईंदवाल के पास से ब्यास पार करना था, क्योंकि उस समय दिल्ली को जाने के लिए शाही रास्ता यही था । सिंघ जंगलों जंगली होते तीसरे दिन ब्यास के घने जंगलों में आ पहुंचे, उधर से बादशाही फौजें भी चल पड़ीं थी । पाँच-सात हज़ार की भीड़ भाड़ थी, साथ कुछ तोपें जंबूरचे भी थे । आगे-आगे सूबे की फौज थी और पीछे बादशाही फौज और बीच खज़ाना जा रहा था ।

जब यह दल ब्यास के पुल के पास पहुंचा और कुछ बादशाही फौजें पार हो गईं और खज़ाने को पार ले जाने ही लगे थे कि तुरंत जंगलों में से निकल सिंघ तलवारें घसीट कर टूट पड़े, हमला कर दिया । सिंघों की गिनती अढ़ाई-तीन हज़ार के करीब थी । खास गिनती के सिंघों के जिम्मे खज़ाना संभालने का काम था और बाकी फौजों के गले पड़ गये । सूबे की फौजें तय की गई बातचीत अनुसार शीघ्र पीछे हटने लग पड़ी, और बादशाही फौजों के आदमी वैसे ही मार न सहन कर सके, उन्होंने दौड़ कर जान बचाई, जो डटे रहे खत्म हो गये ।

बादशाही फौजें जो बचीं, वह दिल्ली पहुंच गईं और साथ ही सूबे के आदमी भी पहुंचे और सारा वृत्तांत बता कर सिंघों पर बात डाल दी गई । बादशाह पहले ही सिंघों को मारने के लिए कई बार फौज भेज चुका था, परन्तु अब क्या करता, मजबूर होकर सिंघों को दंडित करने की ताकीद ही करनी थी जो सूबे को कर भेजी ।

हैदरी झण्डा

जब दिल्ली की तरफ से सूबे को निश्चिंतता प्राप्त हो गई तो फिर मुसीबत से बचाने वाले सिंघों के ही गले पड़ने लगा । सिंघों को संदेश भेजा कि लूटे खज़ाने का आधा हिस्सा मुझे दे दो, परन्तु शेरों की दहाड़ों में से मांस कौन निकाल सकता है ?

सिंघों ने जवाब दिया-वह तो खाया-पिया गया है, अब हमारे पास क्या है, जो तुम्हें दें ?

परन्तु सूबेदार जिद पर आ गया कहने लगा-नहीं दोगे, तो तुम्हें मार कर प्राप्त करुंगा ।

सिंघ कहने लगे-देर मत करो, आ जाओ ।

लाहौर में हैदरी झण्डा खड़ा किया गया । मज़हब के नाम पर आम मुसलमानों में सिंघों के विरुद्ध प्रचार किया गया । इतिहास बताता है कि सिंघों के विरुद्ध हैदरी झण्डे के नीचे तीन लाख मुलखइयां इकट्ठा हो गया । सिंघ इस समय काहनूवान के छंभ में थे, इसलिए मुसलमानों की इस फौजी बाढ़ ने काहनूवान के छंभ को जा घेरा । जंगल ही उस समय सिंघों के किले थे । पहले दिन ही जब मुसलमानों की अभी थकावट भी दूर नहीं थी हुई कि सिंघ रात समय शेर की तरह टूट पड़े । घंटे-दो घंटे में ही ऐसी तलवार चलाई कि आँखें मलते दुश्मन को होश न लेने दी । दिन निकलने से पहले सिंघ फिर जंगलों में जा घुसे और लाशों के दूर तक अंबार लगे देख कर दुश्मन तौबा-तौबा कर उठा, कमजोर दिल वाले तो पहले दिन का नज़ारा देख कर ही वापिस घरों को लौट गये, परन्तु बाकी रात समय शक्तिशाली हो कर रहने को यत्न करने लगे । उधर सिंघों के जासूस जिधर ढीला हिस्सा बताते खालसा रात को उसी तरफ टूट पड़ता । घोड़े, हथियार और राशन, जिस पर भी दांव लगे सिंघ ले जाये । दुश्मन ने जब देखा कि इस तरह हमारी पेश नहीं जाती, तो उसने जंगल को आग लगा कर चारों तरफ से जलाना शुरू कर दिया । अब सिंघ आग के घेरे में आ कर बहुत तंग हो गये । जंगल में धुआं ही धुआं हो गया । बड़े यत्न से सिंघ इस जंगल में से दूसरे जंगल में जाने में कामयाब तो हुए परन्तु बहुत सारे सिंघ मारे गये, सो भी न सके, घोड़ों की पीठों पर बैठे ही कई महीने गुज़र गये । पशु, पक्षी और अलूना साग आदि खा कर ही दिन व्यतीत करते गये, किसी वृक्ष से लग कर किसी सिंघ की दो चार घंटे आँख लगी होगी, क्योंकि सिंघ जिस जंगल में जाते थे, दुश्मन पीछे-पीछे उसी जंगल को आग लगाई जाते थे । सिंघ रावी के घने जंगलों में

पहुंचने के यत्न करते आगे बढ़ रहे थे कि भगतु वाले गाँव की एक हवेली में कुछ सिंघ आकी हुए बैठ गये । उन्होंने आते हुए दुश्मन को रोक लिया और अच्छा लड़े । इस तरह बाकी सिंघ आगे जाने में कामयाब हो कर रावी के जंगलों में जा घुसे । उधर जब तक हवेली का दरवाज़ा न टूटा सिंघ दुश्मन को अच्छी तरह मारते रहे परन्तु दरवाज़ा टूटने पर बाहर निकल कर बराबर लड़ कर शहीदियां पा गये । हैदरी झण्डे को निकले चार महीने हो गये थे और वह भी इस विवाद से तंग आ चुके थे । इसलिए पांच-सात सौ सिंघों के सिर काट कर, परन्तु हज़ारों अपने साथियों को मरवा कर, यह ऐलान करके कि सिंघ अब कोई नहीं रहा, इस तरह वह फतेह के डंके बजाते बड़ी शान से लाहौर में दाखिल होना चाहते थे । यह सम्वत 1790 की बात है ।

इस तरह लाहौर से 8 मील की दूरी पर गांव भीलोवाल के पास इस हैदरी झण्डे वालों ने आखिरी पड़ाव डाला । जल्दी और पहले खबर पहुंचाने वाले कई पहले ही लाहौर पहुंच गये थे, परन्तु फिर भी भीलोवाल के पास कोई पचास हज़ार के लगभग भीड़ होगी, जो रात आराम करने के लिए ठहरी हुई थी । रावी का जंगल इस गाँव से कोई दो मील ही होगा । इत्तफाक से सिंघों का एक जत्था भी यहाँ घूम रहा था, कि कुछ और जत्थे भी इधर आ गये जो दूसरी तरफ से बाहर के जंगलों से आये थे उनको एक गुप्तचर ने खबर दी कि हैदरी झण्डे वाले भीलोवाल पड़ाव करके बैठे हुए हैं और बड़ी खुशी मना रहे हैं, हमने सिंघों को समाप्त कर दिया है । मांस, शराब और ज़रदे पलाऊ उड़ रहे हैं । यह सुन कर सिंघों को गुस्से और लाली चढ़ गई और कार्यक्रम बना लिया ।

गर्मियों के दिन थे, प्रातः चार बजे सिंघ इन आराम से सोये पड़े दुश्मनों पर टूट पड़े । वह बेखबर थे, और समझ रहे थे कि सिंघ रहा ही कोई नहीं, और यदि कोई रहा है, तो वह मुश्किल से हमसे बच कर निकला है, हम पर हमला किसने करना है ? परन्तु इस अचानक हमले ने उसको बहुत भगदड़ डाल दी । कई सोये और आँखें मलते उठते मारे गये । हथियार उठाने का सिंघ मौका ही नहीं देते थे,ऐसी फुर्ती कर रहे थे । 1000 सिंघ

बिखर कर चारों तरफ से पड़े थे पहले गोलियों से हमला किया और फिर तेगीं हो गये । मिनटों में लाशों के ढेर लग गये । सिंघों ने हैदरी झण्डे के सारे दुःखों की कसर निकाल ली । सिंघों के सिरों की लाहौर में जा कर नुमाइश करने वाले लोग अब भागने के लिए रास्ते ढूँढने लगे । सिंघों के सिर, हथियार, घोड़े और वह हैदरी झण्डा भी छोड़ गये, जिसके नीचे एकत्रित होकर वह सिंघों को समाप्त करने के लिए चढ़े थे । 8-10 हज़ार दुश्मन यहां सिंघों ने ले लिया और बाकी भागे जाते । पीछे देखते जाते थे कि कोई सिंघ उनके पीछे तो नहीं आ रहा ।

सूबा खां बहादुर सोचों में डूब गया

हैदरी झण्डे की भीलोवाल में हुई दुर्दशा ने मुसलमान हाकिमों को पिस्सु डाल दिये । अब फौजें भी झाग की तरह बैठ गईं तो सिंघ फिर खुलेआम अकाल-अकाल करते फिरने लग पड़े । अमृतसर की जूहें जैकारों और गुरबाणी की धुनों से गूँज उठीं ।

पहले भी सोचा करता था, परन्तु इस बार सूबा खां बहादुर सोचों में डूब ही गया । कई दिन वह सभा में ही न आया । आखिर अहलकारों से सलाह मशिवरा कर उसने यह सलाह बनाई कि बादशाह को लिख दिया जाये कि यदि इस समय सिंघों को किसी तरीके से काबू न किया गया तो इस समय मुस्लिम हकूमत के खत्म हो जाने का खतरा है । उस ने बादशाह को अपनी तरफ से सलाह लिख भेजी कि सिंघों को इस समय भारी जागीर देकर हाथ में करना ही फायदेमंद है । सूबे ने यह भी लिख भेजा कि यह काम अब आपके ही करने वाला है, मेरे कई बार वादा करने और तोड़ने से सिंघ अब मेरे ऊपर यकीन नहीं करते । इस तरह की और भी कई बातें लिख कर सूबे खां बहादुर ने एक प्रमुख आदमी को दिल्ली बादशाह के पास भेज दिया ।

बादशाह ने सिंघों की नकल देखनी

सूबे खां बहादुर का भेजा हुआ आदमी दिल्ली पहुंच गया । बादशाह

ने चिट्ठी भी पढ़ी और मौखिक भी उससे जब हैदरी झण्डे की हुई दुर्दशा का हाल सुना तो दंग रह गया। मुहम्मद शाह रंगीला बड़ा ऐय्याश और सुखों में रहने वाला बादशाह था। इसने कभी किसी मुहिम की अगुवाई नहीं की थी। परन्तु सिंघों की सरगर्मियों का वह रोज़ ही हाल सुनता था। अपने साले जाफर बेग से भी सिंघों की फुर्ती और बहादुरी की बातें सुनी थीं, इसलिए उसके मन में सिंघों को आँखों देखने का शौक पैदा हो गया। उसने हैरान-परेशान हो कर कहा-"मुझे दिखाओ तो सही कि सिंघ होते कैसे हैं ?"

निकट से अहलकार कहने लगे, "बादशाह सलामत, मैदानी-जंग में जाओ तो पता लगे न कि सिंघ कैसे होते हैं ? यहां आपको कौन बताये ?"

बादशाह कुछ सोच कर कहने लगा, 'भला नकलियों (भंडों) को पूछो, वह शायद नकल दिखा दें।'

भंडों को बुलाया गया। भंड कहने लगे, 'हम नकल तो सिंघों की दिखा देंगे, यदि हमारी बात मानो।'

'क्या ?' बादशाह ने कहा।

'यही, कि जो हमारे आदमी मरें, उनको इवज़ाना मिले और जिनके हाथों मरें, उनको सज़ा कोई न मिले।'

'मंजूर है' बादशाह ने कहा। दिल्ली के किले में भंडों ने सिंघों की नकल उतारनी शुरू कर दी। बड़े-बड़े अहलकार बादशाह सहित इस नकल को देखने के लिए आ जुड़े। एक नकली-सा जंगल बनाया गया जिसमें निर्बल और दिखने में मरियल से सिंघ आ घुसे। इनके पास टूटे-फूटे हथियार, परन्तु बोले और जैकारे चढ़दी कला वाले, फिक्र और चिन्ता का नाम नहीं। उधर जंगल से बाहर मोटे और कद-काठ वाले मुसलमान सिपाही, पक्के और मज़बूत हथियारों से लैस, परन्तु मुँह उनके उड़े हुए और वह मुसलमान जंगल की तरफ बढ़ते। जान बचा कर लड़ना चाहते हैं, परन्तु उधर मौत को मसखरियां (मजाक) करने वाले सिंघों की नकल में बने सिंघ देखते-देखते ही इन पर झपटते हैं, जैकारे छोड़ते हैं कि वह

बेचारे भंड नकलिए पठान मुसलमान नकल दिखाते-दिखाते ही मारे जाते हैं । कुछ घायल हो गए । यह काम कर वह नकलिये सिंघ सरदार झट हरण हो कर फिर जंगल में जा घुसे और देखने वाले चकित हो गए ।

बादशाह कहने लगा-'ऐसे सिंघों से हम ने शत्रुता डाली हुई है, जो मरने से नहीं डरते, फिर जंगलों में रहते हुए भी इतने साहस वाले हैं कि अपने आदर्श नहीं भूलते ।

दिल्ली के बादशाह ने सूबे खां बहादुर को सिंघों से सुलह करने के लिए लिख भेजा और साथ ही एक लाख की जागीर और नवाबी की उपाधि और कुछ तोहफे सिंघों को देने के लिए ताकीद कर भेजी ।

भाई कपूर सिंघ जी को नवाबी मिलनी

जब लाहौर में बादशाह की तरफ से यह हुक्म पहुंचा, तो सूबे खां बहादुर ने नवाबी की उपाधि और जागीर का पट्टा लिख कर भाई सुबेग सिंघ जी के हाथ सिंघों के पास अमृतसर भेजा और कहा कि जैसे भी हो, एक बार सिंघों को विश्वास में ले आओ ।

जब भाई सुबेग सिंघ जी अमृतसर पहुंचे, तो श्री अकाल तख्त साहिब की हजूरी में दीवान सजा हुआ था । भाई सुबेग सिंघ जी ने दीवान में पहुंच कर सिंघों के पास बादशाह की तरफ से भेजी गई जागीर का पट्टा और नवाबी की उपाधि खालसे सामने रख दी और 101 का कड़ाह प्रसाद महाराज के हजूर में ला रखा ।

जत्थेदार जी कहने लगे, 'खालसा जी, बादशाही की भेजी नवाबी हम ने नहीं लेनी, हम ने तो सतिगुरों की बख्शी हुई तेग से स्वयं लेनी है, तुर्क की दी हुई क्यों लें ? हम कोई भिखारी तो नहीं, जो किसी से खैरात लें, हम ने यह नवाबी नहीं लेनी ।'

जब बड़े जत्थेदार ने नवाबी की पेशाकश ठुकरा दी तो अब और सब जत्थेदारों ने, जिसको भी यह लेने के लिए कहा गया, सबने यही जवाब दिया । अब नवाबी तो मिलती थी, परन्तु लेता कोई नहीं था । यह देखकर भाई सुबेग सिंघ जी कहने लगे-'खालसा जी, मेरा विचार

तो यह है कि यह आई हुई चीज़ मोड़ो मत । यदि जत्थेदार साहिब इसको नहीं लेना चाहते, तो खालसा पंथ अपने किसी सेवक को यह बख्शिश के तौर पर दे दे ।'

कहते हैं कि उस समय स. कपूर सिंघ जी पंखे की सेवा कर रहे थे और यह इतने बड़े सेवक थे कि हर समय ही किसी न किसी सेवा में लगे रहते थे । घोड़ों की सेवा, दाना पानी देना आदि यह ज़्यादा कपूर सिंघ जी ही करते थे । फिर आप चिकित्सक भी कमाल के थे । मरहम-पट्टी वाला ज़ख्म बड़ी जल्दी ही आराम पाता था । इसीलिए सिक्ख पंथ में आपका बड़ा सत्कार था । जब भाई सुबेग सिंघ ने वह नवाबी की उपाधि किसी को बख्शिश देने के लिए कहा तो जत्थेदार ने स. कपूर सिंघ जी की तरफ उंगली कर दी । भाई सुबेग सिंघ जी ने नवाबी की उपाधि स. कपूर सिंघ जी के आगे ला रखी ।

नवाब कपूर सिंघ जी सिक्ख पंथ में बड़े समझदार और आलम जत्थेदार हुए हैं और दोनों घल्लूघारे आपकी जत्थेदारी में ही सिक्ख पंथ ने लड़े । स. कपूर सिंघ जी कहने लगे, 'जत्थेदार जी हक तो मेरा कोई नहीं, और मुसलमानों की दी नवाबी को तो मैं कभी मंजूर नहीं कर सकता, परन्तु यह अब आप (सिंघ) मुझे सेवक जान कर बख्श रहे हों और गुरु पंथ की बख्श समझ कर मैं इसको मंजूर कर लेता हूँ । परन्तु एक प्रार्थना मेरी भी गुरु पंथ ज़रूर माने कि मेरी सेवा का हक भी मेरे पास ही रहने दिया जाये, मुझे इसी तरह ही सेवक और टहिलूए की नज़र से सत्कारा जाये, जैसे अब सत्कारते हो, तो मैं गुरु पंथ का बहुत ही धन्यवादी हूँगा ।' फिर सति श्री अकाल के जैकारों में स. कपूर सिंघ जी नवाब बनाये गये और भाई सुबेग सिंघ जी वापिस लाहौर को चले गये ।

सिंघों के साथ फिर विश्वासघात

एक लाख की जागीर से सिंघों के अच्छे दिन निकलने लगे । इस तरह कुछ वर्ष सिंघों के सुख और आराम से भरपूर गुज़र गए । परन्तु इतिहास में लिखा है कि सूबे के मन की खटास अभी कायम थी । सिंघ

जब बिल्कुल आराम से बैठ गये । देश में बिल्कुल अमन-चैन हो गया और धीरे-धीरे सिंघ भी काम धंधों के बहाने दूर-दूर बिखर गये, तब सूबे खां बहादुर ने सिंघों के साथ बड़ा विश्वासघात किया । सिंघ निरवैर थे और वह मुल्क में अमन चाहते थे, परन्तु बेईमान हाकिम जब हाथ धो कर उनके पीछे पड़ जाते थे, तो सिंघ भी कम नहीं गुजारते थे और इस तरह मुल्क में गड़बड़ बढ़ जाती थी । आप दुःख और मुसीबतें तो सिंघ सहारते, परन्तु दुश्मन को भी जितना हो सकता हाथों पैरों की डाली रखते थे ।

परन्तु इस बार अचानक हमला सिंघों को पकड़ कर कत्ल करने के लिए हरेक अहलकार को हुक्म दे दिया गया । पकड़-पकड़ कर किरत करते सिक्ख को कत्ल किया जाने लगा । सिंघ इस समय बेशक पाँच जत्थों में बांटे जा चुके थे, परन्तु बड़े दल दो ही थे । तरना दल और बुड्ढा दल । अस्सू का महीना था, इसलिए बुड्ढा दल इन दिनों में ही दीपमाला का मेला श्री हरिमंदिर साहिब में मनाने के लिए अमृतसर की तरफ आ रहा था कि बाबा बुड्ढा की बीड़ के पास मारो-मार करती दुश्मन की फौज से टाकरा हो गया । दुश्मन की ज़्यादा गिनती होने के कारण सिंघों को कुछ पीछे हटना पड़ा । दुश्मन और ज़ोर पकड़ गया और सिंघ लड़ते भिड़ते रावी के जंगलों में जा घुसे । तरना दल उस समय सांदल बार के जंगलों में घूम रहा था । जब उसको खबर मिली तो वह भी बड़ी शीघ्र बुड्ढे दल की मदद के लिए आ पहुंचा । दोनों दल मिलकर फिर दुश्मन पर टूट पड़े और एक बार फिर सिंघों ने मैदान मार लिया, परन्तु गांवों में रहने वाले बहुत सारे सिंघ मारे गये और बचे-खुचे इस जत्थे के सिंघों से आ मिले ।

सिंघ जीत कर अमृतसर पहुंच तो गये लेकिन दुश्मन पूरे बल से सिंघों को मार मुकाना चाहते थे । जब सिंघ दूर निकल गये तो सूबे ने सिंघों को पकड़ने के लिए इनाम देने का ढिंढोरा पिटवा दिया । 25, 50, और 80 रुपये सिक्ख का सिर पेश करने वाले को इनाम मिलने लगे । अमृतसर के सब नाके बन्द कर दिये गये और अत्याचार की हद हो गई । लोभी

लालची इनामों की खातिर सिंघों को पकड़वाने और मरवाने पर हो गये। यह दिन सिंघों के लिए मुसीबतों के पहाड़ बन गये। जंगलों से बाहर निकलना दुश्वार हो गया। जंगलों से बाहर दुश्मन दलों के तांते बंधे रहते थे। सिंघ इस विपदा से बचते-बचाते दूर रेगिस्तानी इलाके बीकानेर की तरफ निकल गये।

भाई मनी सिंघ जी

भाई मनी सिंघ जी गुरु पंथ के महान विद्वानों में से एक थे। आप बचपन में ही श्री आनन्दपुर साहिब और फिर किला छोड़ने तक वहां ही रहे। जब श्री दशमेश जी ने किला छोड़ा तो आप साथ ही थे और सरसा पार करके श्री दशमेश जी के हुक्म से दोनों माताओं (माता सुंदरी जी और साहिब देवां) को लेकर दिल्ली जा ठहरे। इधर से जब श्री दशमेश जी चमकौर, माछीवाड़े, दीने आदि से होते हुए, मुक्तसर की जंग के बाद जब साबो की तलवंडी भाई डल्ले पास पहुँचे, तो दस महीने बाद मनी सिंघ जी यहां से माताओं को साथ लेकर सतिगुरु जी पास पहुंचे तो यहाँ जब सतिगुरु जी दक्षिण की तरफ गये तो भाई मनी सिंघ जी को फिर दिल्ली में माता सुंदरी जी के पास रहने का हुक्म दिया गया। भाई मनी सिंघ जी दिल्ली में माता जी पास बहुत देर रहे, परन्तु जब पंजाब में बंदईयां और तत खालसे का झगड़ा शुरू हुआ तो माता जी ने आप को सिक्खी के प्रचार के लिए और श्री हरिमंदिर साहिब का प्रबंध संभालने के लिए श्री अमृतसर भेज दिया। यहाँ पहुंच कर आप ने बहुत प्रचार किया। आपने कथा का प्रवाह चला दिया। इस के बाद समय ने कई रंग बदले, परन्तु आपने हरिमंदिर की सेवा और हरि यश को अंतिम दम तक जारी रखा।

वह समय आया जब सिंघों की पकड़-पकड़ाई शुरू हुई तो आपने विचित्र नीति धारण की। ऐसा माहौल बनाया कि हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान फकीरों का आपने अमृतसर को गढ़ बना दिया था, क्योंकि भाई साहिब हर आये हिन्दू-मुसलमान को बिना भेद-भाव प्रेम से लंगर छकाते थे। आप हरि-कथा को ऐसे जादूगरी के ढंग से बयान करते कि

हर सुनने वाले पर सोये ही आप का असर पड़ जाता था। फिर लंगर की सेवा भी आप ही गुरबाणी पढ़ते-पढ़ते करते और यह सब कुछ लंगर आदि सिंघों की कार भेटों से ही चलते, परन्तु इनकी कथा से धन्य होकर कई हिन्दू और मुसलमान भी इसमें हिस्सा डाल जाते थे। इस समय जब भी कोई मुसलमान अफसर फौज लेकर सिंघों की तलाश करता यहाँ पहुंचता तो आगे फकीरों के समूह में बैठे और रब्बी-राह (भगवान) की बातें कर रहे भाई मनी सिंघ जी की मीठी और प्यार भरी बातें सुनकर ऐसा प्रसन्न होता कि उसको ख्याल उपज पड़ता कि इस राही-खुदा पर चलने वाले फकीर को कुछ नहीं कहना चाहिए। कई शरई काज़ी और मौलवियों के कहने पर कई समझदार मुसलमान भी इस बात का भेद लेने के लिए अमृतसर पहुँचते कि भाई मनी सिंघ यहाँ बैठा कहीं सिंघों की मदद तो नहीं कर रहा या यह स्वयं तो कोई ऐसा काम नहीं कर रहा, जो हमारे या मज़हब के विरुद्ध हो, परन्तु यहां पहुँच कर भाई मनी सिंघ जी के नीतिवान और उच्च-दार्शनिक होने की बातें सुनकर भाई साहिब को कुछ न कहते और वापिस चले जाते। इस तरह कठिन समय में भाई साहिब मनी सिंघ जी बड़े प्रेम-पूर्वक श्री हरिमंदिर साहिब की सेवा करते चले गये।

इतने विद्वान और श्रद्धावान थे भाई मनी सिंघ जी। परन्तु इस समय आप जी से महान गलती हो गई। आज कल तो मंगलाचरण का ही नीचे ऊपर का झगड़ा है, परन्तु भाई साहिब का मन आप को किसी और तरफ ही ले गया। भाई साहिब को यह ख्याल ही न आया कि शांति के पुंज श्री गुरु अर्जुन देव जी ने जिस महान उद्देश्य को मुख्य रखकर गुरबाणी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज की है वह महान व सर्वोच्च है, सिक्ख को इसके आगे पीछे करने का कोई अधिकार नहीं, बल्कि ऐसा करना तो कहीं रहा, सोचना भी पाप है। इसलिए भाई साहिब के मन में विचार आया कि गुरबाणी इस तरीके से लिखनी चाहिए कि सब गुरु साहिबों की बाणी पहले की जाये और फिर भक्तों की। इस ख्याल अनुसार आपने एक गुरु ग्रंथ साहिब की जिल्द उखाड़ ली और पन्नों को अपनी बनाई स्कीम

अनुसार कर दिया। किसी समय जब आम सिंघ जत्थे श्री हरिमंदिर साहिब पहुँचे तो आप ने अपनी तरकीब अनुसार की बीड़ के दर्शन सिंघों को कराये, तो सिंघ देखकर भाई साहिब की अक्ल पर हैरान और हक्के-बक्के रह गये। सिंघों ने कहा, 'आप ने ऐसा करके भारी भूल की है। इससे बड़ी बेअदबी गुरु महाराज की और क्या हो सकती है ?'

भाई साहिब ने कहा, मैंने तो अर्थो की आसानी और गुरु साहिबों की प्रशंसा के लिए ऐसा किया है कि भक्तों की बाणी को बीच से निकाल कर एक तरफ कर दिया है।'

यह सुनकर सिंघों ने कहा, 'भाई जी, ध्यान करो, क्यों कुराहे पड़ गये जो कि गुरु साहिब आप से अनजाने थे।

सिंघों के इतनी बात कहने की देर थी कि भाई साहिब ने चौंक कर कहा-'नहीं !' और साथ ही भाई साहिब को समझ आ गई कि मैं क्या कर बैठा हूँ।

सिंघों ने भाई मनी सिंघ जी को कहा, आप ने घोर बेअदबी की है और आप को भी इसकी सज़ा मिलेगी।

अब भाई मनी सिंघ जी चुप हो गये।

फिर भरे दरबार (दीवान) में सिंघों ने यह फैसला कर दिया कि भाई मनी सिंघ जी को इस अपराध की सज़ा मिलनी चाहिए। सज़ा यहीं कि इनके ऐसे ही रोम-रोम अलग कर दिये जाये जैसे इन्होंने महाराज के पन्नों के किये हैं। यह सुनकर तो भाई मनी सिंघ जी कांप गये। बाणी को एक सार करने की लगन में उनका ख्याल इस तरफ से बे-ध्यान हो चुका था, परन्तु सिंघों के फैसले ने झट ही उनको असली टिकाने पर ले आया। इस समय भाई मनी सिंघ जी गहरे वैराग में आये और खड़े होकर प्रार्थना की-

"प्यारे गुरु पंथ ! आप का कहना ठीक है, मुझ से बड़ी अवज्ञा हो गई है। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज स्वयं अपने पंथ में प्रत्यक्ष बसर रहे हैं इसलिए ही ज़ालिम और ज़रवाने सारा ज़ोर लगा कर थक-हार गये और बल्कि नवाबियां गुरु पंथ को पेश कर चुके हैं। इसलिए आपके

हुक्म को मैं गुरु का हुक्म समझता हुआ सिर माथे पर प्रवान करता हूँ। परन्तु मुझे पर एक कृपा करो, क्योंकि समर्थ गुरु आप में विराजमान है और आप का हुक्म टल नहीं सकता। गुरु पंथ की सज़ा के साथ-साथ मुझ पर उपकार भी करें। गुरु पंथ अरदास करे कि यह सज़ा मुझे मिले, परन्तु इसका रंग शहीदी के रूप में बदल जाए और अंत समय मैं सिदक और भरोसे में शहीदी प्राप्त करूं।"

भाई साहिब के नम्रता भरे शब्दों और अधीनगी ने वातावरण ही बदल दिया। गुस्से ने अपना रूप प्रेम में बदल लिया। वैराग ने सबके नेत्रों को सजल कर दिया। कितना रस होगा भाई साहिब के नम्रता और प्रेम भरे शब्दों में जिसने सब सिंघों को मोह लिया।

भाई मनी सिंघ जी के कथन अनुसार सिंघों ने अरदास की- 'पातशाह! इस जुल्मी राज समय सिक्ख के रक्षक आप ही हो। सतिगुरु जी भाई मनी सिंघ जी की भी सहायता करना। शहीदी समय अंग अंग सहाई होकर सिक्खी सिदक का अथाह बल बख्शना।'

भाई साहिब ने शहीदी के पहले ही सिंघों से शहीदी की अरदास करवा ली।

अमृतसर घेरे में

सिंघ इस घटना के बाद चले गये, भाई जी सेवा में जुटे रहे। कपूर साहिब के नवाब बनने के बाद जब सूबा फिर सिंघों से बिगड़ा, तो सिंघों के लिए अब बहुत मुसीबत के दिन आ गये। सम्वत 1792 में यह गड़बड़ शुरू हुई जो कई वर्ष चालू रही। सिंघ गुरिल्ला युद्ध लड़ने के माहिर हो चुके थे, इसलिए महीनों तक वह सिंघों का कुछ न बिगाड़ सके। यदि एक सिंघ को वह मारते तो सिंघ दांव लगा कर उनके चार मार देते। सम्वत 1792 में सूबा जकरीयां खां उल्टे हथियारों पर उतर आया। उसने पीर मुल्ले शाह के कहने लग कर अमृत सरोवर को पूर देने की सलाह बनाई। पीर ने कहा था कि यह सरोवर सिक्खों की ज़िंदगी का स्रोत है। जब तक यह सरोवर कायम है, सिक्ख आप से नहीं मरेंगे। सूबे ने

अमृत सरोवर को पूरने के लिए उस समय सिंघों के खास दुश्मन काज़ी अब्दुल रहमान को फौज देकर अमृतसर भेज दिया। उसने आते ही अमृत सरोवर के इर्द-गिर्द पहरे लगवा दिये कि कोई सिंघ स्नान न कर सके।

भाई मनी सिंघ इस समय भी सेवा कर रहे थे, हरिमंदिर की मर्यादा को निभाते गये। 8-9 महीने बीत गये। एक-एक- दो-दो आते कई सिंघ मारे गये। परन्तु बड़ा जत्था सिंघों का अमृतसर कोई भी न पहुँच सका। यह देखकर काज़ी ने अहंकार में आकर कहा-सिंघों की क्या ताकत है, जो मेरे होते यहां आ सके। सूबे को तो कह भेजा, परन्तु साथ ही सिंघों को भी जंगलों में संदेश भेजा कि-'मैंने तो सुना था कि सिंघ बहुत बहादुर हैं परन्तु आप तो बड़े गीदड़ हो। पहले आ जाते थे, परन्तु अब आओ तो मैं बहादुर मानूं।'

इस संदेश का जवाब सिंघों ने भी भेज दिया-'काज़ी साहिब बलशाली हो जाओ, हम आ रहे हैं।' काज़ी ने और फौज मंगवा ली। दो सिंघ भाई महताब सिंघ जिसने मस्से रंघड़ का सिर काटा था और भाई मनी सिंघ का भतीजा भाई अघड़ सिंघ भेष बदल कर आगे बढ़े और पचास सिंघों को मील सवा मील दूर पीछे झाड़ियों में बिठा आए। वह आकर मुसलमान फौज़ियों से बातचीत करने लगे और बातें करते ही अमृत सरोवर में से कई घूंट अमृत के उन्होंने पी लिये। फिर बातचीत में ही उन्होंने वस्त्र उतार कर स्नान भी कर लिया। स्नान करते ही घोड़ों पर सवार हो सति श्री अकाल के जैकारे जब उन्होंने गुंजाये तो मुसलमान फौज़ियों को पता लगा कि यह तो सिंघ आ गये है। चार मुसलमान दौड़कर उनको पकड़ने लगे तो सिंघों ने भी देर न लगाई, झट ही जरा-सा अटक कर उन्होंने तलवार के वार किये, कि चारों मार मुकाये। यह दोनों सिंघ, जहां बाकी 50 सिंघ छिपा आये थे, वहां जल्दी ही पहुंच गये, पीछे और बहुत सारे मुसलमान फौजी उनके पीछे लगे वहां आ पहुंचे परन्तु वहां के पचास सिंघों ने आगे आए को मौत के घाट उतार दिया। सिंघों के और जत्थे इस मौके की तलाश में थे, इसलिए उन्होंने अमृत सरोवर के किनारे घूमते काज़ी अब्दुल रहमान पर अचानक हमला किया, पलों में ही दो तीन सौ

के करीब सरोवर के इर्द-गिर्द पहरा दे रहे मुगल सिपाहियों को तलवार की धार से लंघा दिया गया, बीच में ही जब काज़ी भी मारा गया तो दूर बिखरे सिपाही यह देखकर वैसे ही सिर पर पैर रखकर भाग उठे । इसलिए ऐसे 8-9 महीनों से इस घेरे को सिंघों ने तोड़ दिया और फिर सरोवर के आस-पास दूर-दूर तक सिंघों के डेरे लग गये ।

सूबे ने काज़ी रहमान को सरोवर पूरने के लिए भेजा था, परन्तु उसने सिंघों से ज़ोर अजमायश की और मारा गया । अब सूबे को फिर यह सलाह दी गई कि सरोवर पूर देना चाहिए, फिर ही सिंघ आपके वश में आएंगे । इन सलाहों पर अमल करने के लिए सम्वत 1794 के चैत्र में लाहौर से भारी फौज श्री अमृतसर को भेजी गई । हज़ारों फौजी तथा और मुसलमान मिलकर सरोवर में मिट्टी डालने लग पड़े । अब भाई मनी सिंघ जी दिल पर पत्थर रखकर सब कुछ देखने लगे अकेले क्या कर सकते थे ।

भाई मनी सिंघ जी अब तक सब कुछ सहते चले आए और हर हालत में प्रभु के शुक्र गुजार रहते थे । परन्तु अब की हालत ने उनको गहरी चिंता में डाल दिया । वह हर समय उदासीन और गमगीन रहने लगे । अफसोस ज़्यादा यह था कि वह अकेले इस बेअदबी को रोक नहीं सकते थे, परन्तु अंदर मर्यादा में उन्होंने अभी भी विघ्न नहीं पड़ने दिया था । दूसरी तरफ दुश्मनों की कार्यवाही इतनी तेज़ हो गई कि सिंघों के लिए जंगलों से बाहर निकलना मुश्किल था । चुगलों और इनामखोरों के लालच ने सिंघों के विरुद्ध अंधेरी ला छोड़ी थी । परन्तु अब सरोवर की मिट्टी कैसे निकले, भाई साहिब हर समय इन विचारों में ही डूबे रहते थे ।

भाई मनी सिंघ जी की शहीदी

आखिर भाई मनी सिंघ जी के मन में आया कि जब तक सारा पंथ एक बार अमृतसर न आ जाये, बात नहीं बन सकती । इसलिए भाई साहिब ने यह सोचकर निकट के हाकिम से यह सलाह बना ली कि वह लाहौर से सूबे खां बहादुर से इस बात की उनको इजाजत ले दे । सूबे ने पांच हज़ार रुपया लेने का वायदा करने के लिए कहा । भाई साहिब ने यह

बात मान ली । उनको पता था काफी भेटा आ जायेगी, उस में से पांच हज़ार रुपया दे दूँगा और बाकी लंगर आदि पर लगा देंगे ।

यह फैसला करके भाई साहिब ने सिंघों को 1785 की दीवाली पर इकट्ठे होने के संदेश भेज दिये । उधर खां बहादुर के मन में खटास एकदम भड़क उठी और उसने सिंघों को काबू करने का यह सबसे गनीमत मौका जाना । उसने बहुत भारी फौज दीवाली से महीना ही पहले अमृतसर के इर्द-गिर्द ला फैंकी । सब रास्ते नाके लगा कर रोक लिये गये । मुसलमान फौज़ियों की इस कार्यवाही ने झट ही भाई साहिब के दिमाग में यह बात सुलझा दी कि यह तो गुरु-पंथ से दगा हो रही है । क्या मैं यह दगा होती देखकर चुप कर रहूँ ? नहीं, मैं नहीं कर सकता । उन्होंने मुसलमान हाकिमों को बहुत कहा कि आप वायदा-खिलाफी कर रहे हो, परन्तु आगे से जवाब मिलता कि हम नवाब साहिब के हुक्म से मेले का प्रबंध करने के लिए आये हैं, और हमारा कोई मनोरथ नहीं ।

अब भाई साहिब रह न सके । उन्होंने फिर पछताने से पहले संभल जाना ठीक समझा । उन्होंने तुर्क हाकिमों की बद-नीयत को पहचान कर सिंघों को पत्र भेज दिए कि कोई न आये । यह संदेश मिलते ही कई आते सिंघ भी मुड़ गये और तुर्कों की स्कीमें बीच में ही रह गई और मेला खाली निकल गया । अब सूबे को भाई साहिब पर गुस्सा आया और रुपये की मांग की गई, परन्तु भाई साहिब रुपये क्यों देते, जबकि मेला लगा ही नहीं था ।

जब भाई साहिब ने रुपया देने से इन्कार किया, तो आप को गिरफ्तार करके लाहौर ले जाया गया । सूबे ने जब रुपया न देने का कारण पूछा तो भाई साहिब ने कहा, "आपकी अपनी नीयत रुपया लेने की नहीं थी । आप सिंघों को पकड़ना चाहते थे । इसलिए मेला नहीं लगा, तो रुपया आप को कहां से मिलना था ? यह तो सारा काम आपकी ही बदनीयत के कारण खराब हुआ है ।"

सूबे ने पास बैठे काज़ी को कहा-'इसने वायदा-खिलाफी की है, बताओ इसको क्या सज़ा दी जाये ?

काज़ी ने किताब पलटी और पलट-पलट कर कहने लगा, 'यह मनी सिंघ सिक्खों का काज़ी है । इसने सिंघों को ऐसी तालीम दी है कि वह मुसलमानों के भारी दुश्मन बन गये हैं, इसलिए यह मुसलमानों का बड़ा कातिल है । शरहा ऐसे दोषी पर फतवा लगाती है कि या तो यह अपने मजहब को लाहनत डाले या इसके रोम-रोम (बंद-बंद) काट दिये जाएं।'

जैसे ही भाई मनी सिंघ जी ने काज़ी का फतवा सुना, उनका तन-मन खिल गया । सिर झुका कर सतिगुरु का धन्यवाद किया कि सिंघों का वचन सफल होने लगा है । काज़ी ने यह सज़ा देकर मेरे मन की हालत को ठीक कर दिया है । यह विचार करते भाई साहिब ने मुँह काज़ी की तरफ किया और कहा, 'काज़ी साहिब ! मैं अपने धर्म की जगह तुम्हारे दीन पर ही लाहनतें डालता हूँ । मैं अपने धर्म पर जान देने के लिए तैयार हूँ, इसलिए रोम-रोम कटवाना मुझे मंजूर है ।

अपने दीन पर लाहनत पड़ती सुनकर भाई साहिब की दिलेरी देखकर काज़ी और खां बहादुर जल-भुन गये । उसी समय जल्लाद बुलाये गये और हुक्म दिया गया कि 'इसको अभी किले से बाहर ले जाओ, और निखास चौक में (आज कल यह जगह लाल कुएँ के नाम से मशहूर है) बिठा कर सब लोगों के सामने इसका रोम-रोम काट कर इसको मार दो ।'

हुक्म मिलते ही जल्लादों ने भाई साहिब को पकड़ लिया और किले से बाहर को चल पड़े । इस समय बताते हैं कि रूहानीयत ने आप के चेहरे को जगमगा दिया और हृदय में ऐसा उल्लास उत्पन्न हुआ कि वह भूल ही गये कि उनको जल्लाद कत्ल करने के लिए ले जा रहे हैं । बड़ी खुशी और भारी प्रसन्नता से सतिगुरों के शब्द पढ़ते जल्लादों के साथ जा रहे थे ।

भाई साहिब की गिरफ्तारी का शहर लाहौर वालों को पहले ही पता था, परन्तु कत्ल होने की खबर अब बिजली की तेज़ी की तरह फैल गई । क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, हज़ारों की गिनती में लोग दौड़-दौड़ कर भाई साहिब की शहीदी को देखने के लिए आ गये ।

जब भाई साहिब को कत्ल करने के लिए जल्लादों ने बिठा दिया और भीड़भाड़ देखकर ख्याल किया कि झटपट बाजू, टांगें आदि काट कर इस को मार दिया जाए तो जल्लादों की इस रुचि को देखकर भाई साहिब कहने लगे–

'देखो भाई ! आप मेरी भी प्रार्थना मानो और अपने मालिक का हुक्म भी पूरा करो । आप को कहा गया है कि मेरे अंग-अंग काट कर मुझे मारो । उंगली के तीन जोड़ हैं, इसलिए आप इसके तीन हिस्से करो और इस तरह और अंगों को काटो ।'

जल्लाद भी आज पहली बार हैरान हुए कि हम कैसे आदमी को कत्ल करने लगे हैं । अब भाई साहिब मनी सिंघ ने जपुजी साहिब का पाठ शुरू कर लिया और दाई बाजू जल्लाद के आगे कर दी । जल्लाद आप के शरीर को ऐसे काटने लगा, जैसे गन्ने की पोरियां काटी जाती हैं । परन्तु भाई साहिब ऐसे पाठ में मग्न थे कि जैसे उनको पता ही नहीं कि क्या हो रहा है । पहले दाई बाजू के अंग काटे और फिर बाई के । देखने वाले हैरान हो होकर आँखों से नीर बहा रहे थे । सब देखने वालों की आँखें सजल थीं और कई तो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे और कहने लगे कि यह सिक्ख तो सब वलियों और अवतारों को भी मात दे गया है, ईसा से बढ़ गया है मन्सूर से भी बाज़ी ले गया है । अंत में सारे अंग काटे जाने के बाद आखिर में जल्लाद ने सिर काट दिया । कटे हुए सिर ने जपुजी साहिब का भोग पाया और फतेह बुलाकर (गूंज) गुरुपुरी को चले गये ।

सिंघों में रोष की लहर

भाई मनी सिंघ जी की इस महान शहीदी की खबर सिंघों को जंगलों में पहुंच गई । ज़ालिम हाकिमों के इस खूनी-कांड पर सिंघों में भारी रोष जागा और वे इसका बदला लेने की युक्तियां सोचने लगे । एक चलते फिरते दो हज़ार सिंघों के जत्थे ने रावी के घने जंगल के पास-पास लाहौर की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया । दिन डूबने से पहले पहले यह जत्था

लाहौर के करीब आ पहुंचा और गुप्तचर, जो पहले लाहौर पहुंच कर, शहर में चल फिर कर सारी सूचना ले गया था कि फतवा लाने वाले शाही काज़ी का घर कहां है, बाकी आम काज़ी कहा हैं, जिन के फतवों से सिंघ शहीद किए जाते हैं ।

इसलिए इस घुसमुसे समय, जिस समय सूर्य अस्त होकर अंधेरा छा रहा था, भरे-पिए सिंघों का जत्था तुरंत लाहौर के बाज़ारों में आ घुसा और तलवारें (तेगें) सूत कर बदले लेने लगे । जत्थे के कुछ सिंघ तुरंत ही शाही काज़ी के घर जा घुसे और मिनटों में ही सब घर वालों के सिर धड़ों से अलग करके रख दिये । सिंघों की एक ही झपट ने लाहौर में हाहाकार मचा दी । उन काज़ियों के सब गली-मोहल्ले खून से लथपथ हो गये । किले में खबर भेजी गई कि सिंघ तो लाहौर का कुछ भी नहीं छोड़ने लगे, यदि अभी फौज मुकाबले के लिए न भेजी गई । उसी समय रौशनी के गोले छोड़े गये और फौज को झटपट जाने के लिए हुक्म दिया गया ।

सिंघ कौन-सा कब्जा करने आये थे, उन्होंने फौज आने से पहले ही अपना काम किया और घंटे-दो घंटे में ही जो शत्रु मार्ग में आया उसका खात्मा करके वापिस जंगलों में ही जा घुसे ।

श्री दरबार साहिब की घोर बेअदबी

जैसे काम, क्रोध और अहंकार मनुष्य की सूरत को हटा कर ईश्वर से बेमुख कर देते हैं, इसी तरह पक्षपात और तबस्सुम की लहर भी मनुष्य की सत्य और धर्म दोनों से कोसों दूर ले जा फैंकती है । यहीं हालत इस समय मुसलमान हाकिमों की थी : सरोवर की बेअदबी, भाई मनी सिंघ जी के शहीद करने और उसके पीछे सिंघों की रोष-मयी कत्लेआम के कारण यह सिंघों के और भी शत्रु बन गये । गांव-गांव और आम शहरों कस्बों में ढिंढोरा फेरा गया कि सिंघ का पता देने वाले को 25, जीवित पकड़वाने वाले को 50 और कत्ल करके सिक्ख का सिर लाने वाले को 80 रुपये इनाम मिलेंगे । इस लालच ने सारी दुनिया को ही सिंघों के पीछे

लगा दिया । रोज़ ही लाहौर में सिंघों के सिरों की नुमाइश होने लगी । अकेला दुकेला जहां भी कोई सिक्ख नज़र आता, झट पकड़ा जाता या मारा जाता था । अब जंगलों से बाहर निकलना दुश्वार हो गया । चप्पे-चप्पे पर चुगलों और इनाम-खोरों की निगरानी लग गई । इस मुश्किल समय में सिंघों के ज़्यादा जत्थे पंजाब से दूर, रेगिस्तानी इलाकों (जहां आजकल गंगानगर का शहर है) की तरफ निकल गये ।

ठीक इसी समय लाहौर के सूबे जकरीयां खां ने अमृतसर के इलाके का कोतवाल, जंडियाले के महान नीच मस्सा रंघड़ नामी दुष्ट को मुकरर कर दिया । यह बड़ा अहंकारी और हठधर्मी मनुष्य था । हकूमत के नशे में अंधे हुए इस पापी ने श्री हरिमंदिर साहिब की महान बेअदबी करने का बीड़ा उठा लिया । इसने अमृतसर के इर्द-गिर्द दूर-दूर तक सब रास्तों पर फौजी बिठा दिये और शहर के चारों तरफ वृक्षों पर सिंघों के सिर लटकाये ताकि देखने वालों पर डर पड़ जाए । पावन हरिमंदिर साहिब के अस्थान को इस पापी ने अपनी रिहायश-गाह बना लिया और बाकी गुरुद्वारे घोड़ों के तबेले बना दिये । हरिमंदिर साहिब में शराब नाच-मुजरों के दौर चला दिए पापी जी भर कर बेअदबी करने लग पड़ा ।

इस घोर बेअदबी की खबरों को सुन कर सारे इलाके में हलचल मच गई, सब बुद्धिमानों ने इस बात का बुरा मनाया, परन्तु दुश्मनों ने जान लिया कि सिक्ख खत्म हो गये हैं । परन्तु कहीं-कहीं छिप कर दिन-गुजार कर रहे किसी सिंघ को जब यह खबर मिलने लगी, तो उनके हृदय फट जाते और तन बदन को आग लग जाती और गुस्से में आये कई सिंघ प्रकट होकर शहीदियां पा गये, परन्तु कई सिंघों ने विचारा कि इस बेअदबी को दूर करना, अब अकेले-दुकेले सिंघ का काम तो नहीं, यह तो खालसी दलों के आने से काम बनना है । इसलिए यह बात विचार कर एक सिंघ खालसा दलों को खबर पहुंचाने के लिए बीकानेर की तरफ चल पड़ा । ब्यास और सतलुज को पार कर यह मालवे मे पहुंचा, परन्तु इस ने देखा कि यहां पर सिंघों का कोई छोटा-मोटा जत्था भी नहीं था । अब यह सिंघ सफर करता सीधा दल में जा पहुंचा । सिंघों के पास पहुंच कर

इसकी बांछे खिल गई और यह दुःखदायी खबर इसने रो-रो कर सिंघों को सुनाई ।

सिंघ इस हृदय-वेधक खबर को सुनकर तड़प उठे । कईयों के नेत्र आँसू बहाने लगे और कईयों के चेहरे फड़क उठे और नेत्र लाल हो गये । बहुत सोच-विचार बाद जत्थेदार जी ने उठकर कहा कि यह अपमान अब और नहीं सहा जा सकता । हमारे जीवन की क्या आवश्यकता है, यदि गुरु धामों की बेअदबी न हटा सके ।

मस्से पापी को सज़ा

सब सिंघ इन विचारों में जुड़ गये कि कैसे इस पापी को मार कर बेअदबी को रोका जाये । यह सलाह हो ही रही थी कि स. महताब सिंघ जी मीरां कोट वाले कुछ सोच कर उठे और कहने लगे-'खालसा जी, यह समय बड़ा कठिन आ बना है । हम सब यदि मिलकर भी चढ़ाई करे, तो पता नहीं फतेह हो कि न, दुश्मनों के पास बेअंत फौजें और हथियार हैं, इसलिए समय दांव लगाकर काम करने का है । आप बचे और इस पापी को मारे । इसलिए इस सेवा की आज्ञा मुझे दी जाये । गुरु महाराज की कृपा से यह कार्य मैं अकेला ही कर आऊंगा ।'

'इतने में स. सुक्खा सिंघ जी माड़ी कंबोकी वाले उठे और जत्थेदार को कहा कि इस सेवा में मुझे भी हिस्सा पाने की आज्ञा दी जाये । दोनों मिलकर सलाह मशवरे करते जाएंगे और गुरु कृपा से फतेह ले कर आएंगे ।'

सबने यह सलाह मान ली । सब के मन ने ठीक जाना कि यह काम चतुरता से ही जल्दी हो सकता है, जंग करने से नहीं । इस सलाह को पूर्ण रुप देकर अरदास करने के लिए पहले देग तैयार की गई । श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में दीवान सजा कर सबने वैराग-मयी और बीर-रसी कीर्तन सुना । सिंघों के दुखित हृदय गुरबाणी के रस में रंगे गये । फिर सतिगुरु के हजूर सब खड़े हुए और जत्थेदार जी ने इस तरह प्रार्थना की-

सतिगुरु जी, प्रभु जी, यह क्या खेल रचा दिया है ! यह क्या भाना

वरता दिये आपने ! हे सतिगुरुों, यह हरिमंदिर तो आपने हरि कीर्तन के लिए बनाया था, परन्तु आज वहां किस कुकर्मी का कब्जा करवा दिया यदि (गला रुक गया आंसू बह निकले......दुष्ट दमन पिता, शमशेर बहादुर सतिगुरु ! यदि वहां यह भाना वरताया है, तो इधर फिर अपने खालसे को शक्ति बख्शो, अपने नाम-लेवा शूरवीर बहादुरों को बल बख्शो, कि वे ऐसे ज़ालिमों अहंकारियों और गमानियों को किये का फल भुगता दे । सतिगुरु कृपा करो, अब यह उपद्रव और नहीं सहा जाता । सतिगुरु जी, हमारी कमज़ोरियों और भूलों को क्षमाकर दो और अपने सेवकों के सिर पर हाथ रखो-इन सेवकों के सिर पर हाथ रखकर इस महान काम में सफलता बख्शो......।'

जैकारों की धुनें उठीं । बरेते के बीच एक ढाब के निकट यह छोटा सा जंगल था, जहां सिंघ कई दिन की धूप और प्यास झेल कर पहुंचते थे, वहां स. महताब सिंघ और सुक्खा सिंघ जी को जैकारों की गूंज में विदा किया गया । इसी अस्थान के नज़दीक ही ज़िला गंगानगर है, इस अस्थान पर हर साल मेला लगता है ।

इतिहास बताता है कि रेत-थल निकलने तक तो स. महताब सिंघ और सुक्खा सिंघ जी दिन में भी चले आये परन्तु आगे दुश्मन और गुप्तचरों का मुकाबला रास्ते में ही हो जाने का खतरा था, यह सोच कर अब रात सफर करने और दिन में आराम करने लगे । इसी तरह पग मारते वह श्री तरनतारन साहिब आ पहुंचे । यहां पहुंच कर प्रातः काल ही सरोवर में स्नान किया और सतिगुरु जी आगे अरदास की 'हे सतिगुरु आप सर्व-कला समर्थ हो, सब विधियों के मालिक हो, इसलिए ऐसा समय बनाओ कि हम सफलता से दुष्ट को मार सकें ।'

ज्येष्ठ का महीना था । इन दिनों में टैक्स एकत्रित कर नंबरदार इलाके के हाकिमों पास पहुँचते थे । मस्सा रंघड़ इस इलाके का हाकिम था । सारा राज्य कर इनके पास ही एकत्र होता था, यह आगे लाहौर सूबे पास पहुंचाता था ।

निकट ही एक थेह थी । दोनों ने सलाह करके थेह पर बैठ कर

ठीकरीयां तोड़-तोड़ कर इस तरह थैले भर लिये जैसे रुपयों के उस समय भरते थे । इतने में अच्छा दिन निकल गया । प्रकृति ने उस समय सिंघों की मदद की । अंधेरी आई और इतनी मिट्टी उड़ी कि सब की आँखें मिट्टी ने बन्द कर दी । सम्वत 1797 और दो भाद्रों का दिन था, कोई 11 बजे का समय होगा । जब अंधेरी आई । अब सिंघों ने मुँह सिर लपेटा और अमृतसर को चल पड़े । कुछ समय में ही गोहलवड़ पार कर गये । अब उन्होंने थैलियां घोड़ों के हन्नों से बांध ली ।

दोपहर का समय था । धूप भी कड़ाके की और अंधेरी की घटा ने तो वैसे ही सब लोगों को कोने लगा छोड़ा था । पहरों पर खड़े फौजी भी एक आधे के सिवाये डयूटी पर खड़ा नहीं था । जो एक आधा डयूटी पर था, वह भी मुँह-सिर लपेटी और आँखों को बन्द किये खड़ा था । इसलिए ठीक ऐसे समय महताब सिंघ और स. सुक्खा सिंघ अमृतसर पहुंच गये । गुरु की नगरी नज़र पड़ी और दोनों ने दूर से नमस्कार किया और लाची बेरी के पास आकर घोड़ों से उतर गए ।

अभी भी अंधेरी रुकी नहीं थी, इसलिए सरोवर के इर्द-गिर्द पहरा देने वाले सिपाही दूर अपने तम्बुओं में बैठे और कुछ लेटे हुए थे । दर्शनी ड्योढी आगे एक पहरेदार ज़रूर खड़ा था । सिंघों ने झटपट चौगिर्दा देखकर घोड़े लाची-बेरी से बांध दिये । देर से बिछड़े सिंघों ने सरोवर में से जी भर कर अमृत पहले स्वयं छका और फिर घोड़ों को छकाया, इधर से हटकर अब सिंघों ने बड़ी फुर्ती की । श्री साहिबां कुर्तों के नीचे करके अच्छी तरह छिपा ली, बरछे घोड़ों के पास रख दिये और थैले पकड़ कर दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ आ गये । पहरेदार को हाथ से ही सलाम करके पूछा 'खां साहिब अंदर ही हैं ? हमने टैक्स पहुंचाना है ।

हाथ में थैले पकड़ देख कर उसको क्या शक होना था, उसने भी इशारा कर दिया कि अंदर ही है ले जाओ ।

सिंघ जल्दी-जल्दी लम्बे कदम भरते सामने दरवाज़े के निकट पहुंचे तो अंदर से सारंगी के बजने और घुंघरुओं के छनकने की आवाज़ आई । सिंघों के सीने जले तो पहले ही पड़े थे, घुंघरुओं की छन-छन ने तेल

का काम किया । दिल में लपटें मच गईं और चेहरे फड़क पड़े, माथे पर बल पड़ गए ।

अंदर घुसे तो क्या देखते हैं कि बाकी के तीन दरवाज़े बन्द हुए हैं और हरि की पउड़ी की तरफ के दरवाज़े के निकट मस्सा पलंग पर बैठा हुक्का पी रहा था । सामने वेश्या हरि कीर्तन की जगह गन्दे और इश्की तराने रागों में अलाप रही थी । एक तबले वाला, एक मस्से को पंखा करने वाला और एक और वेश्या और उनके हमज़ोली भी शराब में मस्त थे । यह घोर बेअदबी प्रत्यक्ष देखकर तो सिंघों की आँखों में खून उतर आया । परन्तु थैलियां उन्होंने आगे की हुई थी ।

मस्सा अभी पहला पैग पी कर ही हटा था कि सिंघों को थैलियां लिये उसने आते देखा । अंदर घुसते ही इशारा किया कि थैलियां उसके पास लाकर रखो । भरे पिए सिंघों ने वह थैलियां ले जाकर मस्से के निकट नीचे रख दीं । शराब के नशे में मस्त मस्सा अभी थैली की तरफ नीचे झुकने ही लगा था कि सिंघ अपने कार्य में तत्पर हो गये जैसे ही उसका सिर थैली की तरफ झुक गया और हाथ ठीकरियों को छूने ही लगा कि स. महताब सिंघ वीर–बहादुर के एक ही वार ने उसका सिर धड़ से जुदा कर दिया और स. सुक्खा सिंघ ने आगे बैठे दोनों–तीनों हमजोलियों को उठने न दिया और वहीं ही खत्म कर दिया । फिर नृत्य करने वालों को तरले लेते देखकर उनको मारा नहीं, परन्तु उनके गहने उतार लिये । सिंघ तबला, सारंगी और पंखा करने वाले सब को समेट कर मस्से का सिर लेकर बाहर निकल आये । जब बाहरले पहरेदार ने शोर मचाया तो उसको भी झटका दिया गया ।

बाहर निकलते ही सिंघ घोड़े संभालने लगे । तलवारों को मज़बूत करके हाथों में संभाला और पापी मस्से के सिर को नेज़े पर टांगा । ज़ोर से जैकारा छोड़ कर सिंघों ने घोड़ों को एड़ी लगा दी ।

इतनी देर में शोर मच गया कि सिंघ मस्से को मार गये । गर्मी और अंधेरी से दुबके बैठी मुसलमान सेना में भगदड़ मच गई । परन्तु इतनी देर में सिंघों के घोड़े हवा से बातें करने लगे । बड़ा ज़ोर लगाया गया

कि सिंघों को किसी तरह पकड़ ले या मार ही दे परन्तु सिंघों के घोड़े इतना सरपट भागे कि उन्होंने ब्यास के घने जंगल में ही जा कर सांस ली। मुसलमान मायूस होकर वापिस मुड़ आये।

सिंघों की फुर्ती और साहस ने सब को हैरान कर दिया और विशेष कर सिंघों से दुश्मनी रखने वालों को तो कंपकपी छिड़ गई। अब वह मुसलमान जिन्होंने मस्से को रोका था अपने कुकर्मों से बाज आ जा, इस पीरों-फकीरों के अस्थान की बेअदबी मत कर। तो वह आगे अहंकार से हंस कर कहता था कि पीरों-फकीरों के दिन गये अब यहां मस्से खां रंघड़ का कब्जा है, यहां कौन घुस सकता है। सिक्ख सब खत्म कर लिये गये हैं और यदि कोई है तो उसको भी नहीं छोड़ूंगा। वहीं मुसलमान कहने लगे कि 'देखा, चार महीने नहीं हुए अभी इसको हाकिम बने कि सिक्खों के हाथों मारा गया है। खुदा अहंकारी और ज़ालिम की कभी मदद नहीं करता।

इस खबर से एक तो यह बात प्रकट हो गई कि सिक्ख अभी समाप्त नहीं हुए, मौजूद हैं और इसके साथ ही धर्मी पुरुषों के हौंसले बढ़े और शत्रु डर-डर कर इस तरह आपस में बातें करने लगे, 'यह सिक्ख कैसे हैं, कोई हवा के बुल्ले हैं, देखो कैसे देखते ही देखते पलों में मस्से का सिर उतार कर ले गये हैं।'

मस्से रंघड़ की मौत से हलचल

मस्से रंघड़ की मौत ने हलचल मचा दी। मस्से के सगे-सम्बंधी उसकी मौत के बाद लाहौर के सूबे के पास गये और बड़ा विलाप किया। खां बहादुर स्वयं अमृतसर पहुंचा और बिना सिर से धड़ को देखकर बड़ा हैरान हुआ। वेश्याओं के बयान लिए। इस पड़ताल के बाद इसने हरिमंदिर साहिब को बन्द करके ताले लगवा कर पहरा बैठा दिया। गश्ती फौज की सरगर्मियां बढ़ा दी और गांव के नंबरदारों को बुला-बुला कर कातिलों का पता लगाने की ताकीद की। कातिलों का पता देने वालों को 10 हज़ार रुपये इनाम देने का ऐलान किया गया।

इतिहास बताता है कि सूबा खां बहादुर कई दिन अमृतसर रह कर फौजों को ताकीद करके वापिस लाहौर चला गया । जंडियाले के एक चुगल ने हाकिमों के पास चुगली लगाई कि यह काम महताब सिंघ मीरां कोटिये का ही है उसी की इस इलाके में धूम है, वह बहुत फुर्तीला और बेखौफ़ सिंघ है । कानों में भनक पड़ने की देर थी, कि दो सौ सिपाहियों के एक दस्ते ने मीरां कोट आ घेरा । वहां के चौधरी नत्थे से पूछा गया तो उसने कहा कि महताब सिंघ तो यहां कभी आया ही नहीं, कई महीने हो गये हैं उसको किसी ने नहीं देखा ।

चौधरी की यह बात सुनकर अफसर मुड़ने लगा था कि उस जंडियाले के जासूस ने कहा कि आप उसके लड़के राय सिंघ को ही पकड़ लो, वह तो यही है । तब अफसर ने नंबरदार को लड़का लाने के लिए कहा ।

चौधरी नत्था सिंघ घर को चल पड़ा । घर में उसके दो लड़के थे एक भतीजा और एक नौकर था । जब घर पहुंचा तो उसको ख्याल आया कि जाते समय महताब सिंघ अपने लड़के की बाजू उसके हाथ में पकड़ा गया था और कह गया था कि नंबरदार जी, यह लड़का अब आपके हवाले है । यह बात याद आने पर नंबरदार सोच में पड़ गया । सोचने लगा कि क्या यह लड़का उसी हाथ से, जिस हाथ से मैंने इसकी बाजू इसके बाप के हाथों पकड़ी थी, आज इन ज़ालिमों के हाथ पकड़ा दूँ ? क्या यह इन्सानियत है, क्या यह मर्दानगी है ? नहीं, यह नहीं होना चाहिए । मर्द की जुबान पूरी चाहिए, वायदे का पक्का होना चाहिए, अंत में मर तो जाना है, फिर मरने से डर कर यह पाप मैं अपने सिर क्यों लूं ? मैं यह लड़का इन ज़ालिमों के हाथ नहीं दूंगा । यह सब ध्यान कर उसने अपने पुत्र और भतीजे सामने रखे । उन्होंने नंबरदार की इस बात की तायीद की ।

जब यह सलाह हुई तो चौधरी कहने लगा फिर अब यहां से चल पड़े तो ठीक है । नंबरदार भाई महताब सिंघ मीरा कोटिये के लड़के राय सिंघ को साथ लेकर पुत्रों, भतीजों और नौकरों सहित, गांव के दूसरी तरफ से बाहर को निकल गया । अफसोस कि उस समय घोड़े साथ न ले जा सके, नहीं तो जल्दी ही दूर निकल जाते, परन्तु पैदल होने के कारण ज़्यादा

दूर नहीं जा सके थे कि पीछे से फौज़ियों ने आ घेरा। चौधरी ने दुश्मन को सिर पर खड़ा देख कर पुत्रों को लड़ने के लिए ललकारा। राय सिंघ को उसने एक झाड़ी के पीछे चुपकर के बैठ जाने को कहा, और आप भी तलवार लेकर टाकरे पर खड़ा हो गया। इन पाँचों ने दुश्मन से अच्छी टक्कर ली पर थोड़े थे, सामने जूझ कर शहीद हो गये, 20-25 इन्होंने मार दिये। राय सिंघ की आयु उस समय 7 वर्ष की थी, वह झाड़ पीछे बैठा सब कुछ देखता रहा और किसी की बात से घबराया न, परन्तु जब उस का असल सहायक चौधरी नत्था सिंघ भी कट-कट गिर पड़ा तो राय सिंघ सहम गया। चीखे मारता झाड़ी में से निकल कर उठ दौड़ा। फौज़ियों ने देखा कि वह महताब सिंघ का लड़का जा रहा है तो झट भाग कर पकड़ लिया और कोई स्थान ज़ालिमों ने ऐसा न छोड़ा जो मार न दिया हो। परन्तु प्रभु की खेल को कौन जानता है ?

"प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥"

फौजी उसको अपनी तरफ से मर गया जान कर छोड़ कर चले गये। तीन-चार घंटे वह वैसे ही खेतों में पड़ा रहा। रक्त पता नहीं कितना बह गया। संध्या समय उसी गांव की एक साग बेचने वाली माई वहां से निकली। उसने पहले देखा कि गांव के नंबरदार की लाश पड़ी है, सहम गई, परन्तु साथ ही उसके पुत्रों, भतीजे और नौकर की लाश भी पड़ी देखी, और थोड़ी दूरी पर राय सिंघ बालक की। उसने ध्यान से देखा तो राय सिंघ सहक रहा था। पता नहीं क्या ख्याल आया था, उसने साग को वहां ही फैंक दिया और साग वाले टोकरे में राय सिंघ को लपेट कर रख लिया और उसको उसकी ताई के पास गुमटाले ले आई और सारी बात भी बताई। ताई ने राय सिंघ को संभाला मल्हम-पट्टी की व ज़राह की हिम्मत और सतिगुरु की कृपा से वह गहरा जख्मी राय सिंघ स्वस्थ हो गया।

स्वस्थ होने के बाद राय सिंघ ने सब घल्लुघारों की लड़ाई में हिस्सा लिया। इसी राय सिंघ के सपुत्र भाई रतन सिंघ भंगू ने यह सब हालात 'पंथ प्रकाश' में लिखकर भारी सेवा की और यह सब कुछ घटित महान

घटनाओं का हमें पता दिया, जिससे आज हम अपने इतिहास की चमक देख रहे हैं ।

भाई बोता सिंघ जी की शहीदी

मस्से की मौत ने ज़ालिमों को भयभीत कर दिया था, परन्तु फिर भी गश्ती फौजों में दिन-ब-दिन बढ़ौतरी हो रही थी, और सिंघों की पंजाब के कोने-कोने, गांवों और शहरों में तलाश चल रही थी । कहीं नीच और कमीने छोटी लड़कियों के सिर काट लेते और बाल दिखाकर सिक्खों का सिर कह कर इनाम ले लेते । कहते हैं कि लड़कियों के कानों और नाकों में मुर्कियां और कांटे पहनने का रिवाज़ तब ही चालू हुआ । इन दिनों में ही भाई बोता सिंघ जी जंगल में थे कि किसी ने आप को देख लिया, और कहने लगा, 'सिक्ख अब पंजाब में कोई नहीं रहा सिक्ख होता तो ऐसे छिप कर नहीं रहता ।' भाई बोता सिंघ जी के दिल को यह बात सुनकर गहरी चोट लगी और उन्होंने हाथ दिखाने का फैसला कर लिया ।

इन्होंने नूरदी के कुछ फासले पर सड़क पर डेरा डाल लिया । एक सिंघ इनके साथ और था । इन्होंने गुजरने वालों से महसूल लेना शुरू कर दिया । गड्डे का आना और गधे का एक पैसा वसूलने लगे । जो अटकते (अड़ते) उन से दो हाथ भी करते । सूबे को पता लगा तो उसने सौ सवार इन दोनों की गिरफ्तारी के लिए भेज दिए । सवारों ने इनको घेरा डाल कर जीवित पकड़ने की कोशिश की । बताया जाता है इन दोनों ने पीठे जोड़ कर सौ के घेरे में आ, वह तलवार चलाई कि 20-25 आदमी मरवा कर दुश्मन पीछे हट गये और दूर से बंदूकें चला कर मुश्किल से ही इनको शहीद कर सके । इस हादसे ने भी मुसलमानों को हैरान कर दिया ।

गुरुद्वारा थम्म साहिब की बेअदबी

इस समय जब कि सिंघ जंगलों में थे, कई जगह गांवों में सिंघों के बाल बच्चे रह रहे थे । सबसे पहले जालन्धर के सूबे कुतुब खां ने यह ज़ुल्म किया कि सिंघनियों को बाल बच्चों सहित पकड़-पकड़ कर कत्ल

करने लगा । उसकी नज़र करतारपुर पर पड़ी । यहां ही गुरुद्वारा थम्म साहिब था और धीरमली-सोढ़ियों के अधिकतर परिवार रहते थे । सूबे ने करतारपुर पर कुछ फौजी दस्तों से चढ़ाई की और आते ही गुरुद्वारा थम्म साहिब को ढहा दिया और वहां गायें मरवा कर सारी धरती को गायों के रक्त से भर दिया । इसने औरतों को जबरदस्ती पकड़-पकड़ कर जेलों में बन्द किया और मुसलमान बनाया । उस समय धीरमल के खानदान से बाबा भगवान सिंघ जी भाग कर पहाड़ी पर जा चढ़े ।

स. बाघ सिंघ हलवालिया सिंघों के छोटे से जत्थे के साथ इन्हीं दिनों पहाड़ी इलाकों में दिन-काट रहे थे । बाबा वडभाग सिंघ जी ऊपर की तरफ चढ़ रहे थे कि रास्ते में स. बाघ सिंघ जी मिल गये । उन्होंने जब पंजाब की हालत पूछी तो बाबा वडभाग सिंघ जी ने दुःखी हृदय से सारी दर्द भरी व्यथा सुना दी । गुरुद्वारा थम्म साहिब की बेअदबी की खबर सुनकर स. बाघ सिंघ की आँखों में खून उतर आया । कहने लगे, यह और मस्सा जन्म लेकर कहां से आ गया है, इसे भी दंड अवश्य देना चाहिए ।

स. बाघ सिंघ पहाड़ की ढाल को छोड़कर ब्यास के जंगल में आ गये । वहां ठहर कर वह मौके की ताक में लग गये । कुतुब खां आमतौर पर शिकार खेलने इस जंगल में ही जाता था, इसलिए थोड़े दिन के बाद ही यह सिंघों को वहां मिल गया । सिंघों की ललकार ने इसको चौकस तो कर दिया; परन्तु स. बाघ सिंघ ने झट समय की संभाल की और दौड़ रहे कुतुब खां को घेरे में ले लिया । थम्म साहिब की बेअदबी करने वाले पापी ! अब तुम बचकर नहीं जा सकते । यह कहकर बंदूक का घोड़ा दबा दिया । निशाना ठीक बैठा और कुतुब खां धड़ाम करता घोड़े से नीचे आ गिरा ।

अभी मस्से खां की मौत की चर्चा समाप्त नहीं हुई थी कि सूबे जालंधर की मौत ने दुनिया को हैरान कर दिया । लाहौर खबर पहुंची तो फौज को आदेश हुआ कि आप सिंघों को पकड़ो । हुक्म पहुंचने की देर थी कि फौजों ने अंधेर मचा दी । जिसको चाहा पकड़ कर कत्ल कर दिया ।

जिसकी तरफ उंगली की उस को पकड़ लिया। यह समय भी काफी कठिन था। पत्ता पत्ता सिंघों के खून का प्यासा बना हुआ था। कई निर्दोष हिन्दू भी जबरन लूटे गए और मुसलमान बना लिये गये।

नादिर शाह का हमला

मुसलमान हाकिमों, बे-रहम और निर्दयी फौज़ियों के आतंक के ज़ुल्म से देश में हाहाकार मची हुई थी और खासकर सिंघों के लिए भारी मुसीबत बन रही थी। जंगलों से बाहर पैर रखना उनके लिए मुश्किल बन गया था। इस समय सिंघों ने चाहे बहुत प्रयत्न किये, मस्सा भी मारा गया, परन्तु अकेले-अकेले सिंघ पकड़े जाने और मारे जाने के कारण कुछ तो सिंघों की गिनती भी कम हो गई थी और लाचारी भी बढ़ गई थी, इसलिए ठीक इस समय सिंघों ने हाथ जोड़ कर दुःखी हृदय से सतिगुरु और निरंकार आगे पुकार की। भजनीक सिंघ हर समय ही इसी काम में लगे रहने लगे।

अरदास सुनी गई। सृजनहार अकाल पुरख ने काबुल के बादशाह नादिर शाह के मन में यह इच्छा पैदा कर दी कि वह हिन्दुस्तान पर हमला करे और धन-दौलत लूट कर लाये।

नादिर ने चढ़ाई का पक्का इरादा कर लिया। कार्यक्रमानुसार उसने लाख से अधिक फौज इकट्ठी करके हिन्दुस्तान पर धावा बोल दिया। इसके हमले ने सिंघों के दुश्मनों को हाथों पैरों की डाल दी। सूबे ने झटपट सब सिंघों के पीछे लगी फौजों को वापिस बुला लिया और नादिर शाह को रोकने की स्कीमें सोचने लगा। नादिर शाह की फौज गाँवों के गाँव नष्ट करती हुई लाहौर को चली आई। सूबा चाहे तैयारी कर रहा था, परन्तु नादिर की धूमों ने ही उसकी जान निकाल छोड़ी थी। जब नादिर शाह शाहदरे पहुंचा तो सूबे ने मुकाबला करने की जगह 13 लाख नकद तथा कई कुछ भेंटे देकर नादिर शाह का स्वागत किया तथा तरले मिन्नतें करके छुटकारा पाया। यह सम्वत 1797 के आखिर की बात है। 1798 चढ़ने वाला था।

नादिर लाहौर से आगे दिल्ली को चल पड़ा। बहादुर शाह को खबर मिल चुकी थी, उसने मुकाबले के लिए फौज इकट्ठी की और करनाल के करीब टाकरा हुआ। सिंघों को भी इस हलचल की खबरें मिल गईं और वे भी जंगलों जंगली इन फौजों के नज़दीक आ पहुंचे। ख्याल तो यह था कि पता नहीं कितनी देर लड़ाई रहे, परन्तु दिल्ली वाली फौज जल्दी ही हिल खड़ी हुई। दुरानी और अब्दाली पठानों के हमलों को यह सुख-रहनी फौज कितनी देर डरा सकती थी; एक दो लड़ाके सरदारों के मरने से ही दिल्ली की फौजों में भगदड़ मच गई, परन्तु एक दो बुद्धिमान अहलकारों ने उस समय सुलह-नामा लिख कर नादिर को भेज दिया और दो करोड़ हर्जाना देना मान कर नादिर शाह को मना लिया।

दिल्ली में कत्ले-आम

नादिर और मुहम्मद शाह इकट्ठे दिल्ली पहुंचे। अच्छी मेहमान नवाजी की और दिन सुख से गुजर गया। दूसरे दिन ईद थी। खूब रंग रौनकें और खुशियां होने लगीं। सब सुन्दर स्थल नादिर को दिखाए गए। परन्तु इस खुशी के दिन कुछ भंगड़ों की बकवास ने मनहूस दिन में बदल दिया। भंगड़ों ने शोर मचाया हुआ था कि हमारे बादशाह ने नादिर को कत्ल कर दिया है और काबुल की बादशाही भी अब हमारे बादशाह ने संभाल लेनी है।

भंगड़ों ने बात की और सुनने वालों ने कई औरों को कह सुनाई। खुशी का दिन था इसलिए लोग भी मचल गये और अकेले-दुकेले नादिर के सिपाही को लोगों ने जहां देखा वहीं मार दिया। नादिर को खबर हुई तो वह स्वयं घोड़े पर चढ़ कर बाजारों में आया और लोगों को मौज-मस्तियां बंद करने के लिए कहा, परन्तु मचले हुए लोग उसको भी ईंट-पत्थर मारने लगे और कहा कि तुम नादिर नहीं नादिर तो मारा गया है।

नादिर को यह देखकर सख्त गुस्सा आ गया। उसने एक दम तलवार निकाल ली और दिल्ली में अपने फौजी सरदारों को कत्ले-आम करने का हुक्म दे दिया। टूट कर गिलजे और पठान पड़ गये। जहां कोई मिलता

कत्ल कर देते । बाज़ारों में लाशों के ढेर लग गए । वजीरों ने रो-रो कर सारी हालत मुहम्मद शाह को जा बताई । मुहम्मद शाह भी आगे से रो पड़ा और कहने लगा-'यह हमारे ही अमलों का नतीजा है नादिर हमारे लि९ मुसीबत बनकर आया है ।'

एक वृद्ध वज़ीर नादिर शाह के पास पहुंचा । गले में पल्लु डाल कर आँखों में नीर बहाने लगा । नादिर उसको देखकर बोला-'बाबा, तुम क्या चाहते हो ?'

'जहांपनाह, क्षमा करें खुदा की खलकत कत्लेआम बन्द कर दें अब ।'

नादिर के मन में रहम आ गया और कत्लेआम बन्द करवा दिया । 1 लाख और 33 हज़ार के करीब कत्ल होने के बाद यह विपदा समाप्त हुई ।

इसके बाद 5 दिन नादिर दिल्ली में रहा । जो चाहा किया, जिसको चाहा पकड़ लिया, जिसको चाहा मार दिया । आस-पास दुरानियों ने खूब लूटपाट मचाई । आखिर शाहजहां वाला तख्त-ए-ताउस जो करोड़ों रुपयों का था, कोहिनूर हीरा जो अण्डे जितना बड़ा था और रात्रि समय जिसकी दीये जितनी रौशनी होती थी । (आजकल यह कोहिनूर हीरा महारानी एलिजाबेथ के ताज में चार टुकड़े करके जुड़ा हुआ है) और बेगमों के गहने, दरियाई घोड़े, जो कुछ मिला सब ले लिया । पचास हज़ार लड़के-लड़कियों को लौंडियों का काम लेने के लिए पकड़ लिया और उनको बांध कर अपने देश काबुल की तरफ चल पड़ा ।

नादिर की सेना पर सिंघों के हमले

नादिर शाह जब दिल्ली को जा रहा था तो सिंघ उस समय दूर-दूर सें आकर निकट ब्यास और रावी के जंगलों में इकट्ठे हो रहे थे और नादिर के दिल्ली से मुड़ने तक वह सब इकट्ठे हो गये । इन दो-तीन महीनों में उन्होंने कुछ सुख की सांस भी ले ली थी, क्योंकि मुल्क के हाकिमों को इस समय अपनी पड़ी थी, कुछ समय के लिए सिंघों के पीछे से वे हट

गये थे । नादिर पीछे मुड़ता गांवों के गांव लूटता जा रहा था । कुछ पकड़ी मुटियारों की कुरलाहट और कुछ फौजों का शोर-शराबा, दूर-दूर तक ज़मीन कांप रही थी और शोर पड़ रहा था । सिंघों का इस समय यही कर्त्तव्य था कि वे अपने हितों का ख्याल न रखते हुए भी मज़लूमों की खातिर कट कर मर जाये ।

जब सिंघों को पता लगा कि नादिर यहां से लड़कियों को पकड़ कर ले जा रहा है तो सिंघ भी सावधान हो गये । उनकी देश और धर्म के प्रति आन जाग पड़ी, नहीं तो नादिर शाह की फौजों पर हमला कोई आसान बात नहीं थी । अपने आप को शाही लश्कर से काफी दूरी पर रख कर जांबाज और लड़ाके सिंघ दुरानियों की फौज को जा पड़ते, जहां पड़ते सफाई कर जाते और उस जगह मदद आने से पहले 'हरण' हो जाते । जंगलों में सिंघों की फौजें और बाहर दुरानी फौजें, परन्तु दुरानी फौजों को सिंघों की खबर किसी ने नहीं थी बताई । इसलिए सिंघ रात-दिन आ कर टूट पड़ते, मार काट भी करते, छीना झपटी भी । ऊंट और गड्डों पर लदी हुई माया के इर्द-गिर्द चाहे काफी लश्कर था, परन्तु सिंघ अंधेरे की ओट में ऐसे पड़ते कि सथर उतार जाते । फौजें दौड़कर पीछा तो करे परन्तु आगे गहरे जंगलों में किसे जा कर ढूंढ़े । सिंघों के लिए जंगल घर की तरह था, परन्तु दुरानी कांटे चुभवा कर, कपड़े फटवा कर वापिस आये । इस तरह सिंघों ने नादिर शाह के लश्कर के साथ खलबली मचा दी । देश से बाहर जा रही आधी दौलत को सिंघों ने छीन लिया और कई लड़के-लड़कियों को भी मुक्त करवा लिया जो बाद में उनके पहुंचा दिये । नादिर की कोई पेश न जाए, दाँत पीसता रह गया ।

सूबे का नादिर शाह को सिंघों का रहन-सहन बताना

आखिर ऐसे हालत में नादिर लाहौर पहुंचा और सूबे को कहने लगा :- "मेरे आगे तो अड़ा कोई नहीं, परन्तु यह जो कोई रात दिन पड़ कर मुझे लूटते रहे हैं, यह कौन हैं, इन का कोई मुझे पता बताओ ।"

सूबा दिलों सिंघों की बहादुरी पर खुश भी बहुत हुआ, परन्तु ऊपर

से मुँह बना कर कहने लगा, "जहांपनाह, क्या बताएं, यह सिंघ ही होंगे, और कौन हो सकता है आप को लूटने वाला ।"

"कोई पता बता फिर मुझे यह कहां रहते हैं ? मैं ठीक कर देता हूँ इनको ।"

सूबे ने सोचा कि यदि सिंघों के पीछे मैंने इनको लगा दिया तो शायद कितनी देर यह और इसकी फौजें यहां डेरे डाल रखे । सिंघों का तो कुछ बिगड़े या न बिगड़े, परन्तु मेरी जान यह कब छोड़ने लगे । यह सोच कर वह कहने लगा–

'जहांपनाह हम ठीक करते–करते ही मर चले हैं, परन्तु यह ठीक नहीं होते । यह सिंघ गुरु गोबिन्द सिंघ के पैरोकार हैं, जो बड़ा बहादुर और आदरणीय हुआ है । इन के बड़े नौ गुरु हुए हैं, उनकी जीवन शैली तो फकीराना ही रही थी, परन्तु गुरु गोबिन्द जी ने आबिहयात (अमृत) पिला कर इनको शेर बना लिया और लड़ना मरना सिखा दिया है । यह हिन्दू–मुसलमानों से अलग हैं । इनको कोई ऐसा मंत्र दिया है इन के वाली (गुरु गोबिन्द सिंघ जी) ने कि यह जहां चाहे, वहां ही वे अपने गुरुओं की बताई हुई कलाम पढ़कर आबिहयात (अमृत) तैयार कर लेते हैं और उसको जो भी छक लेता है, निडर और बहादुर सूरमा हो जाता है । यह दसों गुरुओं को एक–सा मानते हैं और किसी को नहीं मानते और अब पूजा गुरु ग्रंथ की करते हैं, उसी को पढ़ते हैं । सचमुच उस में रब्बी बातें ही हैं, यह उसी के आगे झुकते हैं । रज़ा में राज़ी रहना, यह इन की गुड़ती है और जंग करने में बहुत बहादुर और मौत की भी परवाह नहीं करते । इन के इस अमृत में गहरा करिश्मा देखा है, लड़ाई से थर–थर कांपने वाले आदमियों को हमने गहरी निडरता से लड़ते देखा है । सौ–सौ से अकेला ही सिंघ मुकाबले को खड़ा होता है । यह सिंघ मैंने कभी दिल हारते नहीं देखे, सब ही सरदारी पदवी रखते हैं, कोई सरदार से कम नहीं कहलाता । एक और मज़ेदार बात यह कि हर सिंघ सेवादार भी बन जाता है और सरदार भी होता है ।

"फिर और कमाल की बात है बादशाह सलामत, इनका नगर कोई

नहीं, मुकाम कोई नहीं, रात-दिन फिरते ही रहते हैं । घोड़ों की काठी ही इन का ठिकाना है, इन का कोई ठिकाना हो तो आप को बताएं । यह रहते तो जंगलों में हैं, परन्तु दावे बादशाही के रखते है ।''

नादिर ने सब बातें सुनीं और उसके मन का गुस्सा गिला सुनकर ही दूर हो गया । कहने लगा-'सचमुच यदि सिंघ ऐसे ही हैं, जैसे कि तुमने बताये हैं, तो ठीक जान लो कि एक दिन जरूर ही आप से राज्य छीन लेंगे । आपने ऐसी बहादुर कौम से बिगाड़ कर कौन-सी भलाई की हुई है ?'

इसलिए ऐसे नादिर 1798 में हिन्द को लूट कर चला गया, परन्तु आधी लूट सिंघों ने उससे वापिस ले ही ली और अबलाओं को भी छुड़ा लिया । जेहलम तक वह नादिर के पीछे जाकर अपने काम में लगे रहे । अपने फर्ज की पालना करते रहे ।

भाई सुबेग सिंघ जी

नादिर के चले जाने के बाद सूबा खां बहादुर फिर सिंघों से वैसे ही लग पड़ा । चार-छः महीने, जो नादिर ने हिन्दुस्तान में गुजारे, बस वह सिंघों ने अच्छे गुजारे । हथियार-घोड़े और धन आदि अच्छे हाथ लग गये, परन्तु अब जंगलों से बाहर निकलना भी मुश्किल था । जगह-जगह चुगल और इनाम लेने वाले सिंघों की तलाश करते रहते थे । इसलिए जंगी सिंघ कोई जख्मी हुआ या कहीं घर में आया चाहे पकड़ा जाता, परन्तु आसानी से हाथ न आता । फिर भी कई ऐसे सिंघ थे, जो कहीं कहीं गांवों में शहरों से दूर रहकर कोई काम-धंधा करते बचे थे, पकड़े जाते । भाई तारू सिंघ जी की शहीदी इस समय बड़ी मशहूर है । आप पूहले गांव के रहने वाले थे और खेतीबाड़ी करके जीवन व्यतीत कर रहे थे । आये गये सिक्ख की सेवा करते थे और आम करके लड़ाकू को राशन आदि जंगल में ही पहुंचाते थे । ऐसा कार्य करने वाले सिक्ख की चुगली भले कैसे न लगती । इसलिए जंडियाले से गुप्तचर हरि भगत निरंजनिये ने सूबे को भाई तारू सिंघ जी की खबर दी कि यह सिंघों की मदद करता है । सिंघों को अनाज देता व पनाह देता है और रोटियां पका-

पका कर जंगल जाकर खिला आता है ।

इस बात से कुछ दिन पहले भाई सुबेग सिंघ और शाहबाज़ सिंघ से भी सूबा बिगाड़ बैठा था । भले ही सुबेग सिंघ ने सिंघ होने पर भी सूबे को कई जगह मदद दिलाई और बचाया था और सूबे ने भी भाई साहिब को कई बार इनाम और जागीरें दी थीं, परन्तु जब मज़हबी जनून सिर पर आ चढ़े तो बुद्धि मारी जाती है और विशेष कर मुसलमान का मज़हबी जनून तो अति का हुआ ।

कहते हैं कि सुबेग सिंघ जी स्वयं भी फारसी के अच्छे विद्वान थे और उनका लड़का शाहबाज सिंघ भी बड़ा होनहार और कुशल था । एक बार उसकी किसी बात पर अपने उस्ताद मौलवी से बहस हुई, बहस में मौलवी जी हार गये । इस बात से खीझ कर उसने सूबे पास शिकायत जा लगाई और सूबे को भड़काया कि आपका नौकर हो और फिर काफिर होकर हमारे मज़हब की निंदा करे, यह बहुत बुरी बात है । यह सुनकर सूबा गुस्से में आ गया । उसने सुबेग सिंघ को बुलाकर कहा–'सुबेग सिंघा! तेरी बुद्धि को क्या हो गया ?'

'क्या हुआ खां साहिब ?'

'तुम्हारे पुत्र ने हमारे मज़हब विरुद्ध बकवास की है ।'

'मुझे तो पता नहीं परन्तु बहस मुबाहिसे में कोई बात कम ज्यादा निकल ही जाती है ।'

(नवाब गुस्से से पीला होकर)– 'सुबेग सिंघ, अब यह बात और नहीं चल सकती । या मुसलमान बनो या मौत के लिए तैयार हो जाओ ।'

भाई सुबेग सिंघ जी कौन से इस बात से अनजान थे, अनेकों सिंघ उन्होंने शहीदियां प्राप्त करते देखे थे और उनको इस बात का एहसास पहले ही था कि हमारे साथ भी यही हाल होना है । वह मुस्करा कर कहने लगे, आपके वश की बात नहीं खां बहादुर । यह प्राकृतिक बात है कि जब किसी का अन्त होना होता है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । वहीं हाल आप का है । आप काज़ियों और मौलवियों के कहने लग कर इन्साफ का गला घोंट रहे हो । खां बहादुर ! जिस मृत्यु का आप

हमें डरावा देते हो, हमें इस मृत्यु की कोई चिन्ता नहीं ।

'मुसलमान बन जाओ, ऐसे ही बेवजह जान से हाथ गंवाओगे ।'

'नहीं खां साहिब बेवजह नहीं, हम यदि इस तरह मरे तो हमारी जिंदगी लेखे लग जाती है और यश प्राप्त करके यहां से जाते हैं ।'

'ऐसे ही जिद्द मत करो, सारी उम्र हमारे साथ रहे हो अब क्यों बिगाड़ रहे हो ।'

'खां बहादुर कुछ समझो, सिक्खी हमने नहीं छोड़नी ।'

सूबे ने जान लिया कि यह सीधे हाथों नहीं मानने लगे, उसने पिता-पुत्र दोनों को चरखड़ी पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया ।

चरखड़ी पर चढ़ाने वालों ने उसी समय भाई सुबेग सिंघ और शाहबाज सिंघ को चरखड़ी पर जा बांधा और घुमाने लग पड़े । इस तरह पिता पुत्र वाहिगुरु सतिनाम की धुनी में जुट गये । शरीर भले ही छलनी हो गया, रक्त बहने लगा, परन्तु उफ तक न उच्चारा ।

सूबे ने शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी से उतरवा लिया । दूर ले जाकर बहुत लालच दिये, परन्तु शाहबाज़ सिंघ सिर फेरी गया । फिर कोड़े मारने का हुक्म दिया गया, कोड़ों की मार से शाहबाज़ सिंघ दुःखी होकर बहुत चिल्लाया और सूबे को रहम करने के लिए कहने लगा । सूबे ने झट मीठी-मीठी बातें शुरू कर ली और शाहबाज़ सिंघ को मना लिया ।

सूबे को बहुत खुशी हुई और वह भाई सुबेग सिंघ के पास आकर कहने लगा, 'सुबेग सिंघ तुम भी जिद्द छोड़ कर मेरा कहना मान लो । शाहबाज़ सिंघ को तो मैंने मना लिया है ।'

'क्या ! शाहबाज़ सिंघ मुसलमान बनने के लिए मान गया है ?'

'हां ।'

'यह मैं नहीं मान सकता, मेरे सामने लाओ ।'

सूबे ने उस समय शाहबाज़ सिंघ को बुलाया । पास आते ही शाहबाज़ सिंघ को भाई सुबेग सिंघ जी ने बड़ा ध्यान से देखा । बैठने का इशारा करके शाहबाज़ सिंघ को अपने पास बैठा लिया । फिर उन्होंने धरती से दो उंगलों को ज़रा-सी मिट्टी लगाई और सतिनाम-वाहिगुरु कह कर

शाहबाज़ सिंघ के माथे की एक उभरी रेखा को ज़ोर से रगड़ दिया। कुछ पल के लिए आँखें मूँद कर सतिगुरु कलगी वाले के पास प्रार्थना की। फिर आँखें खोल लीं और सूबे को कहा, 'खां साहिब, शाहबाज़ सिंघ धर्म को छोड़ कर मेरे नाम को कलंकित नहीं कर सकता।'

'परन्तु यह तो मेरे सामने मान चुका है, तेरी बात तो गलत है।' सूबे ने कहा–

'पहली बात छोड़ो, अब पूछो।'

सूबे के पूछने पर शाहबाज़ सिंघ ने इन्कार कर दिया। फिर चरखड़ी पर चढ़ाया तथा कोड़े भी मरवाये, शरीर से रक्त बहने लग पड़ा और शाहबाज़ सिंघ बेहोश हो गया। होश आने पर सूबे के पूछने पर उसने सिर फेर दिया। सूबा हैरान होकर भाई सुबेग सिंघ को पूछने लगा, सुबेग सिंघा ! क्या कर दिया तुमने इसे ? पहले तो मान गया था, परन्तु अब क्यों नहीं मानता यह ?

'खां बहादुर, सतिगुरु की कृपा से, वह जो कोई गलत रेखा इसके माथे पर उभरी थी, वह मिट गई है, इसलिए अब यह शहीद हो जायेगा, परन्तु मुसलमान नहीं बन सकता।'

सूबा हंस कर कहने लगा–'तब तो तुम ज्योतिषी भी हो।' उस समय उसने एक घोड़ी मंगवाई, जिस को बच्चा होने वाला था। कहने लगा– 'बता इसको क्या जन्म लेगा ? और किस रंग का होगा ? यदि तुम ने ठीक बताया, तो आप दोनों पिता–पुत्र को मैं छोड़ दूँगा।'

'इसमें सफेद और चितरे रंग का बछेरा होगा।' भाई सुबेग सिंघ जी ने घोड़ी बड़े ध्यान से देखने के बाद कहा। दूसरे–तीसरे दिन भाई साहिब के कहे अनुसार उसी रंग का बछेरा जन्मा। सब देखने वाले हैरान रह गये और भाई साहिब का यश फैल गया। सूबे के मन में पता नहीं इस समय क्या आई, वह भाई सुबेग सिंघ जी को पूछने लगा–'मेरी आयु बताओ तो भला और कितनी है ?'

'सिर्फ 31 दिन बाकी है, खां साहिब।'

सूबे के पैरों नीचे ज़मीन निकल गई। 'अच्छा, देखता हूँ।' कह

कर दोनों पिता-पुत्रों को फिर ज़ेल में भेज दिया ।

भाई तारू सिंघ जी की शहीदी और सूबे की मृत्यु

वहीं बात हुई । भाई तारू सिंघ जी पूहले गांव से दो-चार दिन बाद ही पकड़ कर लाहौर लाये गये । भाई तारू सिंघ जी को इसलिए पकड़ा गया था कि वह सिंघों को लंगर पका कर खिलाते थे और जंगल में ही पहुंचाते थे । भाई तारू सिंघ जी उस समय 25 वर्ष की आयु के नौजवान थे परन्तु करनी के पूर्ण गुरसिक्ख गुरबाणी के प्रेमी, बांट कर छकने वाले और धर्मी-कर्मी सिंघ थे । कचहरी में आते ही भाई तारू सिंघ जी ने सूबे को गर्ज कर फतेह बुलाई और कहा, खां बहादुर । मुझे किस लिए पकड़ कर लाया गया है, मैंने कोई चोरी नहीं की, डाका नहीं मारा, न ही किसी का कुछ बिगाड़ा है, फिर क्या बात है ।

फतेह सुनकर ही सूबे को गुस्सा चढ़ गया था, कहने लगा, 'तुम कहते हो कि तुम्हे किस लिए पकड़ा है ? इसीलिए कि तुम्हें मेरा डर नहीं । तुम सिंघों को, मेरे दुश्मनों को मदद पहुंचाता है, इसलिए यदि भला चाहते हो तो मुसलमान बन जा ।'

खां बहादुर ! हाकिम होकर इन्साफ न करना, यह तो सीधी नरक में जाने वाली बात है । तुम्हे पता है कि यहां से तेरे जैसे आगे कई चले गये हैं, और तुम किस बात का मान करके यह ज़ुल्म कर रहे हो ?'

सूबे को और गुस्सा आ गया, उसी समय जल्लादों को हुक्म दिया कि इस को चरखी पर चढ़ा दो । पत्थर दिल जल्लाद को क्या तरस था, उस समय भाई तारू सिंघ जी को चरखी पर चढ़ा दिया । पक्षी की तरह शरीर को टेड़ा-मेड़ा करके हड्डियों के कड़ाके निकाल दिये गये, परन्तु धन्य भाई सिंघ जी अडिग मन, मुख से उफ तक नहीं निकली, बल्कि वाहिगुरु-वाहिगुरु की धुनी में मग्न हो गये । जल्लादों ने चरखड़ी से उतार कर फिर जेल में ला फैंका । सिंघ जी अपनी धुनी में मस्त थे ।

दूसरे दिन सूबे ने फिर भाई साहिब को अपनी सभा में बुलाया । मुसलमान होने के लिए कहा गया तो आपने फिर पहले दिन की तरह

न कर दी और कहा, 'खां बहादुर ! तुम हकूमत के मद में हो और धर्मांधता ने तुम्हें अन्धा किया हुआ है, और याद रख ले, इन जुल्मों का हिसाब तुम्हें देना पड़ना है । परन्तु हमारी सिक्खी की आप को अभी तक समझ नहीं पड़ी । हमारी सिक्खी तो केशों स्वासों के साथ निभने वाली सिक्खी है।'

सच्ची बातें सुनकर सूबे को गहरी चिढ़ चढ़ी । उसने जल्लादों को कहा-'इस की मुश्कें बांध दो । नाई को बुला कर इसके बाल कटवा दो। देखते हैं, भला इसकी सिक्खी फिर कैसे केशों स्वासों के साथ निभती है।

उसी समय मुश्कें बंध गईं और नाई आ गया । परन्तु नाई के जब सारा ज़ोर लगाने पर भी बाल न काटे गये, न कुतरे गये, तो सब हैरान और दंग हो गये । परन्तु ज़ालिम जिद्दी बल्कि और चिढ़ा । सूबे ने कहा यदि बाल नहीं उतरते तो खोपड़ी ही उतार दो ।'

सूबे का यह खूनी हुक्म सुनकर भाई तारू सिंघ जी कहने लगे-'सूबे ! यह हुक्म दिया है, तो फिर तुम भी तैयारी कर लो । हमने गुरुपुरी जाना है, परन्तु तुम्हें पहले यमपुरी भेज कर जाएंगे ।

परन्तु घमंडी पर इसका क्या असर होना था । जल्लाद ने माथे के पास से खोपड़ी उतारनी शुरू कर दी । बड़ा ही दर्दनाक दृश्य बन गया । जैसे-जैसे रंबी खोपड़ी में धंसे, रक्त के फव्वारे बहने लगे । मिनटों में ही सिंघ जी के कपड़े और सारा शरीर रक्त से लालो-लाल हो गये । परन्तु उफ न ही किया सिदकी सिक्ख ने, मुँह से वाहिगुरु और सतिनाम की झड़ी लग गई । अभी आधी खोपड़ी उतरी थी कि नरम और रहम-दिल लोग सभा में से उठने शुरू हो गये और सूबा भी घबरा गया । कहने लगा- 'बस अब इसको यहां से ले जाओ ।'

जल्लादों ने जहां भाई तारू सिंघ जी का शहीद गंज है यहां लहू-लुहान हुए भाई साहिब को ला कर बिठा दिया । भाई साहिब ने अन्न-जल त्याग दिया ।

उधर से जब सूबा घबराया हुआ उठ कर घर को आया, तो निरंकार ने अचम्भित कौतुक रचा दिया । कुछ देर बाद ही भयानक दर्द हुई

और फिर पेशाब बन्द हो गया । अब सूबे को भाई तारू सिंघ जी के वचन याद आये और झट उस पर किये ज़ुल्मों की याद ने उसे तड़पा दिया । उसी समय आदमी भेज कर भाई तारू सिंघ जी से माफी मांगनी चाही, परन्तु भाई साहिब ने जवाब दे दिया । कहा-'माफी का समय नहीं रहा, अब चलने की तैयारी करे, और हमने उसे आगे लगाकर ले जाना है ।'

अब तो सूबे को प्रत्यक्ष मौत नज़र आ गई और जेल में डाले हुए भाई सुबेग सिंघ के यह शब्द याद आ गये-'खां बहादुर । तुम 31 दिन तक मर जाओगे ।' उस समय पिता-पुत्र को जेल से निकलवा कर अपने पास बुलाया और कहने लगा-'सुबेग सिंघा, ठीक है, मैं 31 दिनों तक मर जाऊंगा परन्तु इस दु:ख और पीड़ा से मुझे किसी तरह बचा लो, मैं इतना दु:ख 19-20 दिन कैसे काटूंगा । गुरु का वास्ता है, मुझे किसी तरह तारू सिंघ से एक बार बख्शा दे, मैं आगे से कभी किसी सिक्ख को दु:ख नहीं दूँगा, बल्कि सेवा करुंगा ।

भाई सुबेग सिंघ जी देखो कितने पूर्ण गुरसिक्ख हैं कि 'गुरु का वास्ता' सुनकर झट अपने विरोधी की मदद के लिए चल पड़े । सूबे के दु:ख-दर्द की कहानी भाई तारू सिंघ जी को आ सुनाई और कहा-'अब तो ज़ालिम माफी मांग रहा है, यदि योग्य समझो तो बख्श दें ।

भाई तारू सिंघ जी कहने लगे-'सुबेग सिंघ जी, इस ज़ालिम की सिफारिश लेकर मेरे पास आये हो ? आपको नहीं पता इसने कितने ज़ुल्म किये हैं ?'

'भाई साहिब, सब पता है । परन्तु क्या करूँ, गुरु का वास्ता पाया है, इसलिए आया हूँ ।'

देखना, सुबेग सिंघ जी कहीं मुझे भी गुरु के वास्ते न कह दिया । इस ज़ालिम का इलाज यही है कि इसको अब यमपुरी जाना पड़ेगा ।'

भाई सुबेग सिंघ जी वापिस आ गए और सारी बातचीत बता दी । यह सुनकर सूबा बहुत घबराया कि अब क्या होगा । दर्द उसकी चीखे निकलवा रही थी । शाही हकीम और वैद्य ज़ोर लगा-लगा कर हार गये

थे । सूबे के दिमाग में तड़पते-तड़पते इस समय एक सोच आई । वह खालसे की सच्चाई और बहादुरी का दिलों कायल था, इसलिए भाई सुबेग सिंघ को निकट बुला कर कहने लगा-'सुबेग सिंघा ! तुम एक और काम करो । तुम गुरु पंथ (तत खालसे) के पास जाओ ! चाहे मैंने कितनी उनसे दुश्मनी की है, परन्तु मेरा यकीन है कि खालसा घृणा नहीं रखता, और वे जो भी दण्ड लगाएंगे मैं भर दूँगा, परन्तु एक बार मेरी इस दर्द को हटा दे ।'

उस समय सूबे ने 5000 रुपये खालसे की दर्शन भेट और 101 रुपये कड़ाह प्रसाद के लिए सुबेग सिंघ के हवाले किये और जल्दी जाने के लिए कहा । साथ ही इसी दिन से सूबे ने भाई सुबेग सिंघ जी को अपने एक खास हुक्म से लाहौर कोतवाल नियुक्त कर दिया ।

भाई सुबेग सिंघ जी जंगल में खालसे पास पहुंचे और सारी बात बताई । खालसा भी शरण-पालक गुरु का पैरोकार था, परन्तु बीच में कई गर्म तबीयत वाले सिंघ कहने लगे कि हमने इस पापी की अरदास नहीं होने देनी, परन्तु बुद्धिमान सिंघों के समझाने पर कि खालसे को अपने कर्त्तव्य की लाज रखनी चाहिए, सब समझ गये । फैसला किया गया कि अरदास जरूर करनी है । परन्तु भाई तारू सिंघ जी के छोड़े हुए तीर को भी नहीं रोकना । इसलिए कड़ाह प्रसाद की देगें बनाकर खूब जैकारे छोड़े गये और गुरु महाराज के हजूर में अरदास की गई-'हे पंथ के वाली सतिगुरु जी, तेरे पंथ के बड़े दोषी सूबे को इस समय तेरा सिंघ आगे लगाकर ले जाने का वचन कर चुका है, उसको सफल करना, सिंघों का कहा वचन सच करना, परन्तु पिता गुरु जी, एक अरदास प्रार्थना है कि इस दर्द को कम कर दो । यह दर्द तब हटे और पेशाब उसको तब आये 'यदि तेरे सिक्ख भाई तारू सिंघ जी की जूती उसके सिर पर लगे ।

इसलिए इसी तरह किया गया । भाई साहिब जी की जूती जब सूबे खां बहादुर के सिर में लगी तो कुछ देर के लिए दर्द भी कम हुआ और पेशाब भी आने लगा । परन्तु कुछ देर बाद फिर दर्द होनी तो उसको दूर करने के लिए फिर जूती मरवानी । इसलिए इसी तरह जूतियां मरवाता 22 वें दिन

सूबा खां बहादुर चल बसा । उधर भाई तारू सिंघ जी ने इस खबर को सुनकर कड़ाह प्रसाद की देग मंगवाई, जपुजी साहिब का पाठ किया, अरदास की, और फिर इस नश्वर शरीर को त्याग कर गुरुपुरी को चले गये ।

भाई सुबेग सिंघ और शाहबाज़ सिंघ की शहीदी

भाई सुबेग सिंघ जी ने कोतवाल बनने के बाद भारी सेवा की । कई कुएं सिंघों के सिरों से भरे हुए थे, आपने वे कुएं साफ करवाये और सिंघों के सिरों का संस्कार किया । टूटे-फूटे गुरुद्वारों की सेवा की और दब कर रहने वाले गुरु नानक देव का सिमरन करने वाले लोगों को हौंसला दिया और कई जगह सत्संग का रास्ता चला दिया । इस तरह इतिहास बताता है कि सूबा खां बहादुर की मौत के बाद भाई सुबेग सिंघ जी दो साल लाहौर के कोतवाल बने रहे ।

इस समय लाहौर का सूबा खां बहादुर का पुत्र बिजै खां, अपने दो भाईयों को मार कर और एक को कैद करके बना था । यह हलचल कोई 7-8 महीने ज़ारी रही थी । नया दीवान लखपत राय बना था । अन्य मुफ्ती-काज़ी सलाहकार वहीं रहे, जो पहले थे ।

लाहौर के कोतवाल भाई सुबेग सिंघ जी थे इसलिए साल-डेढ़ साल में ही लाहौर स्वर्ग बन गया । शहर का मुख्य प्रबन्धक उन दिनों कोतवाल ही हुआ करता था, इसलिए भाई जी ने शहर में घूम कर लोगों के दुःख तकलीफें देखने और निवृत करने । शहर के लोगों को आप की कोतवाली समय जितना आराम मिला वह कथन से बाहर है । चोरी डाका किसने मारना था, आम लुटेरे डाकू जो मुल्क में थे, सिंघों से डरते थे । सिंघों ने भी भाई साहिब की कोतवाली के समय कभी लाहौर की तरफ मुँह नहीं किया था । वह लाहौर जिसके आसपास हर समय दहक मची रहती थी, वहां शांति हो गई ।

परन्तु मुसलमानी राज्य में किसी ऐसे सिक्ख का अफसर होना, जो सच्चाई के बल से उनको नीचा दिखा चुका हो, इसको ईर्ष्या की आग से झुलसे काज़ी और मौलवी कैसे बर्दाश्त कर सकते थे, इसलिए भाई

साहिब विरुद्ध शिकायतें होने लगी, लखपत राय दीवान भी भाई साहिब के विरुद्ध हो गया। बिजै खां सूबे को यहां तक कहा गया कि यह सिंघों का जासूस है।

बस बहाना ही बनना था। इसलिए भाई साहिब को इस इल्ज़ाम में दो साल बाद फिर पकड़ लिया गया कि तुमने सिंघों के सिरों को कुंओं से निकाल कर संस्कार क्यों किया है ? इसकी सज़ा यह है कि या मुसलमान बनो या मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। परन्तु पूर्ण और गुरु के सिदकी सिक्ख भला मुसलमान कैसे बन सकते थे। उन पिता-पुत्रों ने शहीद होना स्वीकार किया। यह खबर शहर में बिजली की तरह फैल गई। कई अमन पसन्द शहरियों ने आकर सूबे को यह ज़ुल्म करने से रोका, परन्तु बे-फायदा। दोनों बाणी पढ़ते पिता-पुत्रों के सिरों को जल्लाद की तेग ने अलग कर दिया।

सिंघों का लाहौर पर हमला

इन सिदकी पिता-पुत्रों के शहीद होने की खबर सिंघों को दूसरे दिन जा पहुंची। सिंघों में इस विरुद्ध भारी रोष जाग पड़ा। सब सिंघों का समूह इकट्ठा करके फैसला किया गया कि इन मुफ्ती-काजियों को एक बार फिर अच्छी सज़ा दी जाये, और भाई साहिब की शहीदी का प्रतिशोध लिया जाये। इसलिए इस घुसमुसे समय सिंघ प्रण करके लाहौर में आ घुसे। चमकती तलवारों ने रक्त में नहाना शुरू कर दिया। डेढ़ दो घण्टे में निचली ऊपर ला दी। चार-पाँच हज़ार तलवार, अकाल-अकाल की गूँज से चली और फिर सिंघों के हरण होने से म्यानों में छिप गई।

दिन निकलते ही बिजै खां ने घूम कर शहर को खून से लथपथ हुआ देख लखपत राय को सिंघों पर चढ़ाई का हुक्म दिया। यह सम्वत 1802 की बात है कि जब लखपत ने सिंघों के विरुद्ध अंधेरी उठा ली। फिर दिन-रात फौजों को इधर उधर भागते ही रहने का हुक्म हो गया। सिंघ भी अपने कार्य व्यवहार पर हो गए। इस तरह देश में 3-4 साल अमन के बाद फिर गड़बड़ मच गई।

अहमद शाह अब्दाली

अहमद शाह के आरम्भिक हालात बड़े दिलचस्प हैं । इतिहासकारों ने लिखा है कि यह गरीब माता-पिता का पुत्र था । इसकी आयु अभी सात वर्ष की थी कि पिता चल बसा तथा मां इसका पालन-पोषण करती रही । इसके गांव के बाहर एक साबरशाह नामक फकीर की कुटिया थी, यह खेलने गया आमतौर पर उसके पास जा बैठा करता था । कोई काम भी इसने कहना, इसने झट कर देना । फकीर ने प्यार से इसको 'अहमद शाह' कह कर आवाज़ मारनी ।

एक दिन उस फकीर के मन में पता नहीं क्या आई कि उसने लम्बा-लम्बा घास तोड़ कर एक सिंघासन-सा बनाया । उस पर बालक अहमद शाह को बैठा कर, कुछ लम्बे घास के तिनके पकड़ कर चवर करने लगा । कुदरती, उसी समय, नादिर शाह घोड़े पर बैठा उधर आ निकला । फकीर को ऐसे करता देखकर पूछने लगा, 'साईं जी, यह क्या कर रहे हो ?'

'खुदा ने अहमद शाह को बादशाही दी है, इसलिए मैं इसको चवर कर रहा हूँ ।' फकीर ने कहा ।

नादिर हैरान होकर कहने लगा, 'कोई सेवा मुझे भी बताओ ।'

'तेरी सेवा इतनी है कि इसको फौज में किसी अच्छे पद पर लगा दे ।' नादिर ने उसी समय यह बात मान ली ।

नादिर शाह ने जब हिन्दुस्तान पर हमला किया, तो उस समय तक अहमद शाह अच्छा फौजी जरनैल बन चुका था, आज उसकी चतुरता करके नादिर की फौज अंदर अब्दाली पठानों का भारी ज़ोर बढ़ चुका था । नादिर के साले को यह बात अच्छी न लगी । उसने नादिर शाह को मना कर अब्दाली पठानों को नादिर की फौज से निकाल दिया । फिर क्या था अब्दाली पठानों में नादिर विरुद्ध जज्बा उठ खड़ा हुआ, उन्होंने नादिर के शिविर पर हमला कर दिया । कलह की जड़ ने नादिर के साले को भी मार दिया और नादिर शाह भी मारा गया । इसके उपरांत अब्दालियों ने अहमद शाह को काबुल के तख्त पर बैठा दिया ।

अहमद शाह का पहला हमला

बिजै खां के हुक्म से लखपत राय सिंघों के लिए दु:खदायी बन रहा था कि वाहिगुरु ने काबुल के तख्त पर नये बैठे शासक अहमद शाह के मन में हिन्दुस्तान पर हमला करने का ख्याल पैदा कर दिया। इसलिए सम्वत 1802 में अहमद शाह ने अब्दाली पठानों की भारी फौज लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दी। इस चढ़ाई की खबर सुनकर लाहौर के सूबे बिजै खां को भारी फिक्र पड़ गया। उसने सिंघों के पीछे लगी सब फौजों को लाहौर मुड़ने के संदेश भेज दिये। जब सब फौजें वापिस मुड़ आई तो लखपत राय तथा और सब अहलकार मिलकर सलाहें करने लगे कि अब क्या करें।

सलाह-मशविरा करके तैयारी तो जंग की गई, परन्तु अहमद शाह का भारी ज़ोर देखकर लड़ने से बिना ही दिल छोड़ दिया। आये अहमद शाह का स्वागत कर उसको लाहौर किले में ले आया गया। अहमद शाह ने स्वयं किले में घूम कर अच्छी तरह देखा और जिस वस्तु को चाहा, कब्जे में ले लिया, परन्तु एक चीज़ पर कब्जा करके उसने अपनी जीती बाज़ी हार ली। वह चीज़ क्या थी, किले के बीच कुछ ऐसे तीरों के गुच्छे बने हुए पड़े थे जो बारूदी थे और आग लगाये चलते थे। बिना पूरी जानकारी किये ही अहमद शाह ने इन को चुका कर अपने हथियारों के खज़ाने में रखने के लिए भेज दिया।

इधर यह हुआ और उधर सिंघ जंगलों-जंगली सड़कों व रास्तों के निकट पहुंच गये। उनको हथियारों, घोड़ों तथा और आवश्यक सामान की जरूरत थी, इसलिए वे भी मार पर बैठ गय। अहमद शाह कुछ आराम और तैयारी करके दिल्ली की तरफ चल पड़ा। वह नादिर के साथ पहले दिल्ली हो आया था, इसलिए दिल्ली के तख्त पर कब्जा करने की उसकी भारी लालसा थी, इसलिए वह इधर को फौजें लेकर चल पड़ा। दिल्ली वालों को खबर हुई तो वह भी फौजें लेकर निकल आये। सिंघों ने भी इस समय कम न की, अपना खूब दांव लगाया। युद्ध होने पर अहमद शाह ने लाहौर से लाये बारूदी बाणों को चलाने का हुक्म दिया, परन्तु

नासमझी के कारण यह बारूदी बाण उसकी हार का कारण बन गये। नावाकिफ होने के कारण उन तीरों का मुँह उसने अपनी फौज की तरफ कर लिया, इसलिए जब तीरों को चलाने के लिए बारूद को आग लगाई गई तो वह उनको ही आ पड़े। फिर क्या था, आँख फड़कने में ही हज़ारों अब्दाली मारे गये। अहमद शाह स्वयं बड़ी मुश्किल से बचकर पीछे मुड़ा।

सिंघों की तरफ से दोषियों को दंड

सिंघों को इस समय अच्छा मौका हाथ लगा। हाकिम लोग अहमद शाह से डरे बैठे थे। सिंघों ने राह जाते फौजों से आवश्यक सामान प्राप्त कर लिया। जब देश के हाकिम अब्दाली की मार नीचे थे तो सिंघों ने इस समय चुगलखोरों को सज़ा देने का फैसला किया, जो रिपोर्टें दे-दे कर सिंघों को पकड़वाते और मरवाते थे। सिंघों ने पहला हमला नौशहरे पर किया और साहिब चंद को जा मारा, जो भाई तारा सिंघ डलवां पर 5000 फौज चढ़ा लाया था। इधर से हट कर दुष्ट हरि भगत निरंजनिये को यमपुरी पहुंचाया जिसकी शिकायत पर मुसलमानी फौज ने मस्सा रंघड़ को मारने वाले भाई महताब सिंघ के गांव मीरा कोट को जा घेरा था और चौधरी नत्था सिंघ और उसके पुत्र-भतीजे आदि भाई महताब सिंघ के पुत्र राय सिंघ को बचाने के लिए वहां लड़ते शहीद हो गये थे। इस चुगल निरंजनिये ने कहर मचाया हुआ था। इसने सिंघों को पकड़ा-पकड़ा कर सूबे खां बहादुर से बड़े-बड़े इनाम प्राप्त किये थे। इसी के बताने पर भाई तारू सिंघ पकड़ा गया था। यह दुष्ट जंडियाले में था कि सिंघ इसको प्रण करके पड़ गये और सहित परिवार तलवार की धार से गुजार दिये। इसी तरह और भी कई चुगलों को सिंघों ने अच्छी तरह समाप्त किया और इस बात की धाक जमा दी कि सिंघ अपने दोषियों को छोड़ेंगे नहीं। काफी पहले के आदि हुए भागे-भागे लाहौर गये, परन्तु इस समय इनकी मदद कौन करता, जबकि उनको अपना ही खतरा पड़ा हुआ था। परन्तु जब अहमद शाह लाहौर से वापिस गया तो सिंघों के पीछे फिर फौजें लगा दी गईं।

जसपत की मौत

इसी तरह लड़ते-भिड़ते दिन निकल रहे थे कि सिंघों का एक जत्था सियालकोट के निकट जंगलों में भ्रमण कर रहा था। सम्वत 1805 निकल चुका था और बैसाखी निकट होने के कारण इन जत्थे वाले सिंघों के मन में विचार आया कि इस बार बैसाखी ऐमनाबाद गुरुद्वारा रोड़ी साहिब में मनाते हैं। यह गुरुद्वारा नगर से बाहर था और एकांत होने के कारण सिंघों की मनपसन्द जगह थी। यहां का ही दीवान लखपत राय था, जो बिजै खां का वज़ीर था और इसका भाई जसपत राय ऐमनाबाद में ही रहता था। इसलिए सिंघों के रोड़ी साहिब में पहुंचने की खबर इस दुष्ट को किसी ने जा बताई। इसने क्या किया ? सिंघों को अपना दबदबा दिखाने के लिए हाथी पर चढ़कर साथ दो सौ सवार ले कर झट सिंघों के पास आ पहुंचा। सिंघों ने भी दूर से ही देख लिया कि दीवान लखपत राय का अहंकारी भाई उनकी तरफ आ रहा है, वह भी चौकस हो गये। निकट पहुंच कर वह अहंकारी सिंघों को कहने लगा, ओए सिखों ! तुम्हें पता नहीं कि यह हकूमत के दीवान का शहर है और आप हकूमत के बागी हो, इसलिए यहां क्यों आये हो ? मैं आपको यही कहने ही आया हूँ कि अभी यहां से निकल जाओ।'

सिंघों ने कहा, 'दीवान साहिब ! परसों बैसाखी है, हम उसी दिन सुबह स्नान करके यहां से चले जायेंगे, बहुत देर हमने यहां नहीं रहना।'

परन्तु जसपत को तो दीवानी का घमंड था और सिंघों को हकीर समझता था, कहने लगा-'मैंने तो तुम्हें अभी निकालना है। सीधी तरह चले जाओ तो ठीक है, नहीं तो जूतियां मार कर निकालूँगा।'

हाथी पर बैठे जसपत को और सब चीटियां ही नज़र आते थे। अहंकार में आये हुए जसपत ने और भी कई बकवासी बातें कर मारीं। सिंघों के केशों में हुक्के का पानी डालने का तीर भी छोड़ दिया, बर्दाश्त की भी कोई सीमा होती है, आखिर एक अनखीले सिंघ ने दुगाड़े का मुँह हाथी पर बैठे जसपत की तरफ करके दबा दिया जो ठीक निशाने पर पड़ा

और अहंकारी धड़ाम से हाथी से नीचे गिर गया। अन्य सिंघ उसी समय जैकारे छोड़ कर जसपत के साथ के हिमायतियों पर टूट कर पड़ गये। सिंघों ने आंख-फड़क में ही 10-15 सिर उतार दिये तो वह झट ही पीछे को उठ दौड़े। सिंघों ने भी देर न लगाई, झट घोड़े दौड़ाये और ऐमनाबाद में जा घुसे। दीवानों के महलों को खास कर लूटा तथा और भी जो कुछ माल हाथ लगा, लेकर हरण हो गये।

लखपत की सिंघों से शत्रुता

सिंघ तो जसपत को मार कर जंगल में चले गये, परन्तु जब लाहौर में लखपत दीवान को भाई के मरने की खबर मिली तो उसमें क्रोध अग्नि जल पड़ी। ऐमनाबाद पहुंचा तो उसने भाई के प्रतिशोध की सिंघों को समाप्त करने की सौगन्ध उठा ली। लाहौर पहुंच कर उसने अपनी पगड़ी उतार कर बिजै खां के आगे फैंक दी और कहने लगा-'खां साहिब आज मैं आपके सामने कसम खा कर कहता हूँ कि यह पगड़ी अब तब ही सिर पर रखूँगा यदि सिक्ख समाप्त कर दूँगा।'

सूबे को और क्या चाहिए था, वह कहने लगा-'मैं दीवान साहिब, इस काम के लिए आपकी हर प्रकार से मदद करूंगा, यह सिंघ तो हमारे दुश्मन हैं। यदि आप इनको समाप्त करने की मुहिम पर जाओ तो मुझे आपसे अच्छा कौन है ? जितना भी अधिक से अधिक दारू सिक्का और फौजों की आवश्यकता हो लो और इन काफिरों को मारने के लिए पूरा ज़ोर लगाओ, मैं आप पर बहुत खुश हूँ।' यह कह कर लखपत राय की जागीर और बढ़ा दी।

सूबे का उत्तर सुनकर उसके मन को धैर्य आया, परन्तु अहंकार उसका इतना बढ़ा कि सीमा कोई न रही, अहंकार से अन्धा होकर कहने लगा, यह सिक्ख पंथ एक क्षत्रिय (गुरु गोबिन्द सिंघ) का चलाया हुआ है और मैं भी क्षत्रिय हूँ, मेरे हाथों अब इस पंथ का खात्मा हो जायेगा, यह मेरा अपना यकीन है।'

म्बे तथा निकट बैठे मुफ्तियों-काज़ियों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की

और बातें कर-कर, जोश दिलाया, इसका पारा एक नंबर पर कर दिया।

इस दीवान लखपत (जिसको इतिहास में लक्खू भस्सू करके लिखा है) ने सबसे पहला काम यह किया कि लाहौर में ढिंढोरा पिटवाया कि कोई गुरु नानक की बाणी न पढ़े, जो पढ़ेगा उसका खानदान नष्ट कर दिया जायेगा।

ढिंढोरा फिरने की देर थी कि गुरु नानक देव के नाम लेवा सहजधारी भी पकड़े गये। मृत्यु से डरते जो मुसलमान बन गये, वही बचे बाकी सब मृत्यु के घाट उतार दिये गये। लखपत के ज़ुल्मों से देश में हाहाकार मच गई। सिंघों के लिए जंगलों से बाहर निकलना मुश्किल हो गया और धीरे-धीरे सब सिंघ काहनूवान के जंगलों में एकत्रित होने लगे।

इस समय बिजै खां ने आम मुसलमानों में भी सिंघों के विरुद्ध भारी प्रचार किया और आम मुसलमानों को सिंघों के विरुद्ध जत्थेबंद करने के लिए लाहौर में शिविर खोल दिया। इसलिए महीने-डेढ़ महीने में ही लाहौर में 2-3 लाख के करीब मुल्खईयां इकट्ठा हो गया। अब सूबे ने जासूसों द्वारा खबर मंगवाई तो पता लगा कि सिंघ भारी गिनती में काहनूवान के छंभ में इकट्ठे हुए हैं। इतिहासकारों का कहना है कि इस समय सिंघों की गिनती 20 हज़ार से अधिक नहीं थी। लखपत ने सिंघों की समाप्ति के लिए भारी तैयारी की। बेअंत तोपें, जंबूरचे और बारूद आदि भारी सामान लेकर और अढ़ाई तीन लाख का लश्कर इकट्ठा करके काहनूवान के छंभ की तरफ कूच कर दिया। बिजै खां ने इस भारी तुर्कानी दल की कमान लखपत राय के हाथ में दे दी। इसलिए यह लश्कर पड़ाव पर पड़ाव करता काहनूवान के निकट आ पहुंचा। 7-8 मील के बीच इस फौज का फैलाव था। यह सब फौजें जंगल के इर्द-गिर्द आ उतरीं।

छोटा घल्लूघारा

यह काहनूवान छम्भ का जंगल जिसको सिंघ अपना किला समझते थे, यह छम्भ (पानी का ढाब) के चारों तरफ दो-दो, तीन-तीन मीलों तक फैला हुआ था। यह जंगल इतना घना और कांटेदार था कि इसमें

एक फ्लांग तक भी जाना मुश्किल काम था, परन्तु धन्य सिंघ और धन्य सिंघों के घोड़े, जो हिरणों की तरह छलांगें मारते इसमें जा दौड़ते। सिंघों को जब जंगलों के बीच दुश्मन के पहुंचने की खबर मिली तो झट सिंघों के दीवान लग गये। मुकाबले और बचाव के विचार सबने प्रकट किये। सबसे बड़े जत्थेदार नवाब कपूर सिंघ जी ने कहा–हमें बचाव की और छापेमार लड़ाई करनी चाहिए। दुश्मन इतनी गिनती में है कि अंदाज़ा कोई नहीं।'

आखिर बचाव वाली लड़ाई लड़ने का फैसला हुआ और यहां से आगे बड़े जंगलों की तरफ निकल जाने का प्रोग्राम भी बनाया गया। सिंघ प्रातः काल जागे और दुश्मन आराम से सोया पड़ा था। जिधर कम फौज थी, सिंघ उधर से बाहर निकले और लूट–मार वाली नीति पर चलते तलवारें भी खून से रंगी और सब अड़ने वालों को झाड़ते बढ़े और दिन निकलने पर अगले जंगल में जा घुसे। साथ ही हज़ारों दुश्मन मारे गये और साथ ही आवश्यक सामान भी ले गये।

दिन निकलते जब लखपत ने अपनी फौज की हालत देखी तो बड़ा पछताया। उसने अब सिंघों के छापों से बचने के लिए आगे–पीछे तोपखाना और बीच में फौज कर दी। अब सिंघ जो अगले जंगल में गये थे, उनको घेर लिया गया। दूर निकट इलाके के सब लोगों को इकट्ठा करके बादशाही फौजों के लिए अन्न–जल पहुंचाने तथा और सहायता के लिए हुक्म दिया गया। जब लखपत की जंगलों में सिंघों से पेश न जाये तो उसने जंगल के इर्द–गिर्द अपनी सारी फौज का घेरा डलवा कर हज़ारों लोगों को जंगल काटने पर लगा दिया। जंगल काटने पर भी जब सिंघ उसको काबू आते न दिखे, तो उसने जंगल को चारों तरफ आग लगा दी। इस कारस्तानी ने सिंघों को जंगल छोड़ने पर मजबूर कर दिया। आगे पहाड़ थे। लखपत ने पहाड़ी राजाओं को संदेश भेज कर सिंघों को आगे से रोकने को कह भेजा था। इसलिए जब आगे जंगल को छोड़कर पहाड़ों की तरफ बढ़ने लगे तो आगे पहाड़ी फौजें खड़ी देख हैरान हो गए। सिंघ यहां गहरे घेरे में आ गये। आगे पहाड़ी और पीछे लखपत

की फौजें, एक तरफ दरिया और दूसरी तरफ गड्ढे ही गड्ढे थे ।

कुछ सिंघ दरिया तैर कर पार निकल गए, परन्तु आधे भी बच कर पार न निकल सके । उधर दुश्मन के तीर और बंदूकों के वार सिंघों को लग रहे थे । यह देख कर मुख्य सिंघों ने विचार किया कि अब क्या होगा । झटपट यह फैसला किया गया कि मर्दों की मौत मरना चाहिए, जान बचा कर लड़ने का समय अब निकल गया है । फैसला हुआ कि दुश्मन की फौज में घुस कर हल्ला मचा दो । ठीक इस फैसले अनुसार एकदम तलवारें चलाते कई मीलों में फैले हुए दुश्मन में सिंघ घुस गये । बीच घुसते ही सब सिंघ पैंतरे अनुसार हो गये । लगभग पाँच हज़ार सिंघ फौज को चीर-चीर आगे बढ़ने का रास्ता बनाने लगे, बाकी 15 हज़ार ने दो-तरफ पीठें जोड़ लीं और दुश्मन के घेरे में रहते भी अपने मकसद को पक्के कर लड़ने लगे ।

5 हज़ार सिंघ दुश्मन की फौज को चीर-चीर कर आगे बढ़ रहे थे और बाकी के सिंघ अपने पैंतरे अनुसार लड़ भी रहे थे और आगे भी बढ़ रहे थे । इस समय नवाब कपूर सिंघ तथा और जत्थेदार, सिंघों को चमकौर और छोटे साहिबज़ादों की याद दिलवा दिलवा कर लड़ने के लिए वंगार रहे थे । इस तरह यह भयानक युद्ध शुरू हो गया । सारा दिन भारी घमासान युद्ध हुआ । हज़ारों ही दुश्मन और हज़ारों ही सिंघ शहीद हो गये । इस घमासान में भाई सुक्खा सिंघ माड़ी कम्बोकी वालों की टांग तोप का गोला लगने से टूट गई । आपने टांग को काठी से बांध लिया और घोड़े से नीचे न उतरे कि शायद मुड़ कर चढ़ना हो कि न । गोला उस समय लगा, जब आप जंग में दुश्मन की फौज में बढ़-बढ़ कर कह रहे थे-'ओए लक्खू ताजीया ! स्वयं आगे आओ, इन फौज़ियों को बेकार क्यों मरवाई जा रहे हो ।' और सिंघ भी बड़ी बहादुरी से लड़ रहे थे । लखपत का पुत्र और बिजै खां का पुत्र भी इसी दिन लड़ाई में मारा गया ।

अंधेरा होने तक सिंघ धीरे-धीरे दुश्मन की फौज को चीर गये और दो मील की दूरी पर जा रुके । किसी को एक, किसी को दो और किसी को पांच-पांच, दस-दस ज़ख्म लगे और खून से सारे ही लथ-पथ थे।

मुसलमानों को तो पीछे भोजन पानी आ गया था और वे वहां ही डेरा लगा कर खाने पीने में लग पड़े थे परन्तु सिंघ दो मील दूर जा कर सिर्फ बाणी पढ़ने और रज़ा मानने के बिना और क्या करते ? ज़ख्मी सारे ही थे । जैसे-जैसे ज़ख्म ठण्डे होने, शरीर अकड़ने लग पड़े और घुटने जवाब देने लगे । यह देख भाई सुक्खा सिंघ कहने लगे- 'खालसा जी, यह तो अकाल पुरख की मर्जी है कि हमें फेल करे या पास, परन्तु रज़ा को मीठा करके मानना, यही हमारे सतिगुरुओं की शिक्षा है । इस समय यदि हम यहां इसी तरह खड़े रहे, तो सुबह को हिल नहीं सकेंगे । इसलिए आओ हौंसला रखें और आराम से रोटी और पलाव खाते दुश्मनों को कुछ तो अपना दु:ख बांट आयें । छापा मारो, जो कुछ मिले छीन लो और फिर आगे किसी घने जंगल में पहुंच कर हमें ठिकाना चाहिए, यहां अब और नहीं खड़े होना चाहिए ।'

सचमुच, यही कुछ करना ही इस समय सिंघों के लिए ठीक था । यदि यहां ही अटक जाते, तो सुबह तक ज़ख्मों की पीड़ा ने इनको पैर ही नहीं रखने देना था और दुश्मन ने सहज ही फतेह हासिल कर लेनी थी । सभी सिंघों ने इस सलाह को ठीक माना । उधर दुश्मन अभी टिका ही था और उसे यह सपने में भी ख्याल नहीं था कि सिंघ इतनी लड़ाई लड़ने के बाद भी फिर अचानक आ पड़ेंगे ।

वाह ! साबर और शाकर खालसा ! तुम धन्य हो । सारा दिन जीवन मौत की लड़ाई के बाद फिर दुश्मन पर हमला कर दिया । जिसको घोड़ा चाहिए था, उसने घोड़ा और तलवार की आवश्यकता वाले ने तलवार संभाल ली । अंधेरे में इतनी मार-काट की कि सिंघों ने सारे दिन की कसर निकाल ली । सिदक भरोसा रखने वाले सिंघों ने अनहोनी बात को होनी कर दिखलाया । मुसलमान तौबा करते कहने लगे, या खुदा ! यह बला हमें कहां से डाल दी !अंधेरे में !कुछ पता नहीं था लगता कि कौन किसे मार रहा है । कईयों का जिधर मुँह आया, दौड़ निकले ।

मुसलमानी फौज के अफसरों के मन में भी नहीं आ सकता था कि जो सिंघ दिन भर जंग करते, मुश्किल से हमारे घेरे में से बच कर निकले

हैं, वह भूखे पेट अब किसी जंगल में तो चाहे जा कर छिप कर बच जायें, परन्तु मुड़ कर हम पर हमला नहीं कर सकते । इसीलिए वह बिना तैयारी निश्चित हो कर लेट गये थे, परन्तु जब आसमान में रोशनी करने वाले गोले छोड़े तो उन्होंने देखा, तो हैरान हो कर कहने लगे, 'ओह यह तो मरते-मरते सिंघ ही हमें आ पड़े हैं ।' उधर रौशनी देखकर सिंघ जत्थेदारों को हरण का इशारा किया । देखते-देखते सिंघों के घोड़े हरण हो गये, तो उन्होंने घने जंगल में घुस कर ही सांस ली ।

दिन निकलते लखपत ने फौजों की संभाल की । फौजों के हौंसले टूट गये, इसलिए 10-15 दिन लखपत बेशक ढूँढता भी फिरा, परन्तु सिंघ मरहम पट्टी करते, ज़्यादा ज़ख्मियों के आराम में लगे । ताज़ा घास और जंगली जानवरों का शिकार करके सिंघ अपनी उदर (पेट) पूर्णा करते रहे । लखपत ने और कोई पेश न चलती देख कर फिर उस जंगल को आग लगवा दी । यह देख कर सिंघ अब जंगलो-जंगली पठानकोट को निकले-रावी पर फिर ब्यास के घने जंगलों में आ घुसे । लखपत ने ब्यास के सारे पुल रोक लेने के लिए अगले हाकिमों को संदेशे भेजे और सिंघों को घेर लेने के लिए उसने एक बार फिर सारा ज़ोर लगाया, परन्तु सिंघ श्री हरिगोबिन्दपुरे के पुल पर दरिया पार करने में कामयाब हो गये । पुल पर खड़ी थोड़ी-सी फौज को सिंघों ने मार भगाने में देर न लगाई । पार खड़े दुश्मनों ने रुकावट डाली परन्तु सिर को हथेली पर रखी बैठे सिंघों के हमले को वह भी सहार न सके । सिंघों ने पार होकर सब नावें बहा दीं ताकि पार का दुश्मन पीछा न कर सके । करतारपुर के निकट पहुंच कर उन्होंने रोटी पानी का प्रबन्ध किया, परन्तु उधर जालन्धर का सूबा फौजें लेकर आ पड़ा । सिंघ रोटियां बीच छोड़ कर, फिर तैयार-बर-तैयार हो गये । सिंघों को जालन्धर के सूबे ने बहुत रोकने की कोशिश की, परन्तु सिंघ उसकी फौजों को चीरते-चीरते आगे निकल गये । फिल्लौर पास आकर उन्होंने सतलुज पार कर लिया और आगे सैंकड़ों मीलों के बड़े जंगली इलाके मालवे में आ पहुंचे । कई महीने यहां रहकर सिंघों ने कुछ सुख की सांस ली ।

लखपत राय ने जब देखा कि सारे सिंघों को तो वह नहीं मार सका तो शहीद हुए सिंघों के सिर काट कर वह ब्यास से वापिस लाहौर चला गया। तीन-चार महीने वह सिंघों के पीछे फिरता रहा और अपने 20-25 हज़ार आदमी मरवा कर 8-9 हज़ार सिंघों को मार सका। फिर भी वह फतेह के डंके बजाता 8-9 हज़ार सिंघों के सिर गड्डों पर लदवा कर साथ ले गया, जो लाहौर पहुंच कर उसने शहर के सब दरवाजों पर लटका दिये।

लाहौर जा कर लखपत ने ऐलान किया कि सिंघों को मार कर समाप्त कर दिया गया है। इतना सिंघों से ज़ुल्म कर शत्रुता कमा कर भी यह रुका न। इसके बाद इसने अमृतसर हरिमंदिर के सरोवर को पूर देने के लिए इलाके के लोगों को हुक्म भेज दिए। कहते हैं कि पाप का बेड़ा भर कर डूबता है।

बिजै खां और लखपत राय कैद में

बिजै खां सूबे जब से सूबा बना था, अपने भाई शाह नवाज़ को कैद किया हुआ था। शाह नवाज ने कैद रहते ही अहलकारों को अपने साथ जोड़ लिया, और झट अब मौका पा कर उसने बिजै खां को अपनी जगह कैद करके आप उसकी जगह सूबा बन गया। लखपत को भी बिजै खां के साथ कैद कर लिया। समय पा कर बिजै खां जेल में से भाग कर दिल्ली भागने में सफल हो गया तथा बादशाह ने शाह नवाज के विरुद्ध फौज भेजी। शाह नवाज ने अहमद शाह को मदद के लिए संदेश भेजा। दिल्ली के बादशाह को यह खबर पहुंची तो उसने फिर शाह नवाज को अपनी तरफ कर लिया, परन्तु अहमद शाह की तरफ से मुकरने के कारण उसको काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

अहमद शाह का दूसरा हमला

'आपे फाथड़ीये तैनू कौन छुडावे' के कथन अनुसार शाह नवाज़ अहमद शाह के हमले का गहरा शिकार हुआ। अहमद शाह को उसने बहुत संदेशे भेजे कि अब तुम्हारी मदद की मुझे आवश्यकता नहीं, परन्तु

अहमद शाह को तो लूटने का स्वाद पड़ा हुआ था, इसलिए वह रुकता कैसे ? सम्वत 1806 में उसने फिर चढ़ाई कर दी । यह सुन शाह नवाज़ दिल्ली के भरोसे मुकाबले की तैयारियां करने लग पड़ा । इतनी देर में सिंघ भी शक्तिशाली हो गए और वह फिर पंजाब में आ घुसे । जितने ही शहीदियां पा गये, उतने ही और नये अमृत छक सिंघ सज गये । अहमद शाह के आने से उनको फिर मौका मिल गया और उन्होंने गुरु पंथ के दोषियों को यमलोक पहुंचाना शुरू कर दिया ।

अहमद शाह और शाह नवाज की जंग लग गई । लखपत के रिश्तेदार और शाह नवाज के कुछ विरोधियों ने अहमद शाह की मदद की, जिस कारण शाह नवाज की हार हो गई । गिलजियां पठानों ने लाहौर को खूब लूटा । लखपत को अहमद शाह ने फिर दीवान बना दिया । 17 दिन अहमद शाह लाहौर रहा और अपने सारे प्रबन्ध को ठीक करके दिल्ली की तरफ चल पड़ा । सरहंद के पास दिल्ली की फौजें पहुंच गईं और मुकाबला शुरू हो गया ।

सिंघों के दोनों ही दुश्मन थे, इसलिए जिसको मार नीचे देखते उसी की सफाई कर जाते । इस बार भी दिल्ली वाली फौजों का दांव लग गया और गिलजे पठानों को भगदड़ मच गई । दिल्ली की फौजों का ज़ोर पड़ गया और उन्होंने गिलजों को लाहौर से दूर निकाल दिया । आगे ज़ेहलम तक सिंघों ने उसे टिकने न दिया । इसके बाद बैसाखी के मौके पर सब सिंघ अमृतसर आकर इकट्ठे हुए ।

लखपत को किये की सज़ा

अब उधर की सुनो । दिल्ली वालों ने लखपत को गदार समझ कर दीवानी छीन ली और ज़ेल में डाल दिया । अहमद शाह की मदद करने के बदले उसको 30 लाख जुर्माना किया गया । लखपत की सारी जायदाद जुर्माना वसूल करने के लिए बेच दी गई, परन्तु 8 लाख कम वसूल हुआ । इस आठ लाख के बदले में इसको बादशाह के हुक्म से ज़ेल में बन्द कर दिया गया ।

दिल्ली के बादशाह की तरफ से मीर मन्नू जो दिल्ली के वज़ीर का पुत्र था और जिसकी समझदारी से इस बार अहमद शाह की हार हुई थी, को लाहौर का सूबेदार बना दिया । उसने आते ही लखपत की जगह दीवान कौड़ा मल को नियत कर दिया । दीवान कौड़ा मल सिंघों का भारी हितैषी था और लखपत की तरफ से सिंघों से किये जा रहे ज़ुल्मों पर उसने उसको कई बार रोका था, परन्तु जिसके दिमाग में अहंकार शैतान का रूप बन कर बैठ जाये, वह कब किसी की नेक सलाह को मानता है ? सिंघों ने अभी मुश्किल से ही थोड़ी देर पहले ही हरिमंदिर के सरोवर में पाई मिट्टी को साफ किया था, परन्तु उसके इरादे अभी पूरे नहीं थे होने पाये कि अकाल पुरख ने अब्दाली के हमलों का चक्र चला दिया था । सिंघों को इस पर भारी गुस्सा था । इसलिए अब जब दीवान कौड़ा मल वज़ीर बन गया तो सिंघों ने उसको अपना हितैषी जान कर अपने आदमी भेज कर उससे मांग की कि 'दीवान साहिब ! इस लक्खू भस्सू को हमारे हवाले कर दो । इसने हम पर बड़े-बड़े वार किये हैं, इसलिए समय मांग करता है कि इसको इसके किये कर्मों का फल मिलना चाहिए । इसके बदले जो भी काम कहोगे, हम करेंगे ।'

दीवान कौड़ा मल लखपत के कारनामों से परिचित था । वह लखपत को हिन्दुओं का गदार समझता था इसलिए उसने भी देर न लगाई । मीर मन्नू को लखपत के जिम्मे निकलता 8 लाख रुपया अपने पास से देकर उसको पहले अपने कब्ज़े में रखा और फिर सिंघों के हवाले कर दिया ।

जब यह सिंघों का बड़ा दोषी सिंघों के हाथ आ गया, तो सिंघों ने इसको चंदू की तरह किये कर्मों का फल देने का फैसला किया और पहले दो-चार दिन अच्छे थप्पड़ छकाये परन्तु बाद में जंगल के अन्दर एक छोटा-सा कोठा बना कर उसमें इसको नज़रबन्द कर दिया गया । अन्दर ही मल-मूत्र करता था । वहां ही एक रोटी इसको खाने के लिए दी जाती । बाहर कुछ सिंघों का पहरा लगा दिया गया । बस इसी तरह छः महीने इस कोठे में यह पापी बन्द रह कर मर गया और इसके किये की इसको भारी सज़ा मिली ।

सिंघों ने किला बनाना

कौड़ा मल के दीवान बनने से लखपत जैसी बला सिंघों के गले से उतर गई और उन्होंने फिर कुछ सुख की सांस ली। हरिमंदिर, पवित्र सरोवर तथा और गुरुद्वारों की सेवा की गई।

इस समय सिंघों के मनों में प्रबल इच्छा हो गई कि खालसे की कोई जगह होनी चाहिए। सिंघों को हर समय भगदड़ रहने के कारण भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। यह विचार सबके मन में था। सिंघों ने किला बनाने की सलाह बना ली और रामसर के पास 'निचली जगह' जगह पसन्द कर ली।

सब सिंघ सहित जत्थेदारों के हाथों इस काम में जुट पड़े। अरदास की और किले का नाम रामगढ़ रख लिया। कोई आधे पौने मील के घेरे के बाहर चारों तरफ खाई खोदी और उसी खोदी मिट्टी को खाई के चारों तरफ नहर के किनारे (बनेरों) की तरह ऊँचा उठा दिया गया। फिर अन्दर बाहर चार-पाँच गज के करीब अच्छी टेढ़ी दो फुट चौड़ी पक्की दीवार खड़ी कर ली, पक्की दीवार बनने से किले के लिए अच्छा मज़बूत आधार बन गया। इसके बनने में कोई दो महीने का समय लग गया।

किले की रक्षा के लिए चार-पांच सौ सिंघ रह गये, बाकी 100-100 के टोले बन कर दूर-दूर निकल गये और अनाज, हथियार तथा और ज़रूरी सामान इकट्ठा करने में जुट गये। किसी ने हथियार लाये, किसी ने अनाज लाया। सिंघों का ऐसे करते 7-8 महीने निकल गये थे कि धीरे-धीरे सिंघों के किला बनाने और उसमें स्टाक जमा करके जंगी तैयारी करने की खबरें लाहौर मीर मन्नू को जा पहुंचीं। अब मीर मन्नू की तरफ से दीवान कौड़ा मल को हुक्म दिया गया कि वह फौजें ले जाये और हमला करके किले को अपने अधिकार में कर ले। इस काम के लिए भारी तैयारी की गई। दूर-पास के मुसलमान हाकिमों को भी इस मुहिम में शामिल होने के लिए विशेष तौर पर संदेशे दिये गये।

इसलिए इस योजना अनुसार लाहौर से दीवान कौड़ा मल, जालन्धर

से सूबा अदीना बेग तथा और कई जगहों से छोटे-मोटे हाकिम अपनी-अपनी फौजें लेकर अमृतसर की तरफ चल पड़े । निश्चित दिन पर यह निकट-निकट पहुंच गये । सिंघों को खबर लग चुकी थी । इसलिए जब यह बिल्कुल निकट हो कर हमला करने लगे, तो सिंघों ने मार नीचे आया देख कर एक बार में ही बंदूकें चला दीं । पहले झटके से ही हज़ारों दुश्मन धड़ाम करते गिर पड़े तो झट ही पीछे दौड़ पड़े । इस पहले हमले में ही बाहरी फौजों का भारी नुक्सान हुआ और वह पीछे हटने पर मजबूर हो गई और सिंघों का ज़रा नुक्सान न हुआ । लाहौर की फौजें पीछे हट कर किले को घेरा डाल कर बैठ गई ।

चार महीने जब घेरा डाले हो गये तो अन्दर से सिंघों का अनाज खत्म हो गया । रात समय सिंघों ने बाहर दुश्मन की फौज पर हमला कर दिया । अनाज-दाने के स्टोर को पड़ गये और ज़ोर लगते जितना ले जा सके ले गये । इससे कुछ दिन और निकल गये । बाहर वाले अब अपना स्टोर फौजों से दूर ले गये । सिंघों ने फिर एक दो बार हिम्मत की, परन्तु कुछ हाथ न लगा । जब भूख ज़्यादा सताने लगी तो सिंघों ने फैसला किया कि भूख के दुःख से नहीं मरना चाहिए बाहर निकल कर सम्मुख शहीदियां प्राप्त करनी चाहिएं । यदि घेरा तोड़ कर निकल गये, तो फिर किसी जंगल की ओट लेकर बचाव कर लेंगे ।

स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया

अदीना बेग जालन्धर की फौजों में स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया भी बाहरी फौजों में था । यह किसी बात से गुस्से राज़ी हो कर सिंघों से अलग हो कर अपने लगभग सौ साथियों सहित जालन्धर के सूबे अदीना बेग पास जा रहे थे । जब किले के अन्दर वाले सिंघों के बाहर निकल कर शहीद होने की खबर स. जस्सा सिंघ को मिली तो इनका मन तड़प उठा । इन्होंने बाकी साथियों से सलाह करके फैसला किया कि हमें भी सिंघों के साथ ही मरना या जीना चाहिए । यह मुसलमान हाकिम जो बाकी सिंघों के दुश्मन हैं, तो हमारे कब सज्जन बनने लगे हैं । भाई सुबेग सिंघ

सारी उम्र इनके पास रहे और बड़े-बड़े अटके काम इनके उन्होंने ही संवारे, उनका इन ज़ालिमों ने लिहाज न किया तो हमारे साथ कितनी देर बनी रहेगी ? यह सोच कर स. जस्सा सिंघ जी ने एक चिट्ठी लिखी और किले अन्दर तीर बांध कर भेज दी । "खालसा जी ! मैं भी आपका साथी हूँ । जीवन मृत्यु हमारा बराबर है । इसलिए आज्ञा दो और किले का दरवाजा खोल दो ताकि राशन उठाते आएं ।"

अंदर वाले सिंघों ने चिट्ठी पढ़कर सतिगुरों का धन्यवाद किया और तीर से चिट्ठी भेज कर जवाब दिया, "आधी रात को दरवाजा खोलेंगे तैयार रहना ।"

चिट्ठी मिलते ही स. जस्सा सिंघ जी ने तैयारी कर ली और अधिक से अधिक अनाज, हथियार और गोली सिक्का ले कर, जब रात को दरवाजा खुला, सब कुछ लेकर किले में आ घुसे । बिछुड़े वीर मिले, खुशियां हो गईं ।

अहमद शाह का तीसरा हमला

जो राशन पानी किले के अन्दर गया, उससे सिंघों ने दो-तीन महीने और गुजार लिये । इतनी देर में अहमद शाह ने फिर चढ़ाई कर दी । यह सुनकर मीर मन्नू को फिक्र लग गया । उसने अमृतसर गई हुई फौजों को झटपट लाहौर पहुंचने का हुक्म भेज दिया । इसलिए 7-8 महीने बाद घेरा उठने पर सिंघ फिर आज़ाद हो गये । अब सम्वत 1808 विक्रमी निकल पड़ा था ।

फौज के लाहौर पहुंचने पर मीर मन्नू ने देखा और फौजी सरदारों ने भी यही राय दी कि लड़ाई न लड़ी जाये, इसलिए मीर मन्नू ने 15 लाख नज़राना दे कर आगे के लिए उसके मताहित रहने का इकरार करके अहमद शाह को गुजरात शहर से ही वापिस कर दिया ।

दिल्ली बादशाह को जब यह खबर मिली तो वह मन्नू पर गहरा नाराज़ हो गया । उसने शाह नवाज को दिल्ली से फौज दे कर मुलतान पर कब्ज़ा करने के लिए भेज दिया । शाह नवाज ने दीपालपुर के रास्ते अचानक

ही आकर मन्नू के आदमियों पर हमला कर दिया और मुलतान पर कब्ज़ा कर लिया ।

सिंघों ने कौड़ा मल की मदद करनी

मन्नू को इस बात ने फिक्र में डाल दिया । उसने सलाह बना ली कि मुलतान शाह निवाज़ के पास नहीं रहने देना चाहिए । उसने दीवान कौड़ा मल और अदीना बेग सूबा जालन्धर को मुलतान पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया । इस समय दीवान कौड़ा मल ने मीर मन्नू को सलाह दी कि यदि इस काम में सिंघों को अपना साथी बना लिया जाये, तो फतेह ज़रूर हमारी होगी ।

'परन्तु वे मानेंगे कैसे ?'

'यह काम मेरे जिम्मे छोड़ो ।' दीवान ने कहा ।

मन्नू मान गया तो कौड़ा मल अमृतसर पहुंचा । नाम चाहे इसका कौड़ा मल था, परन्तु सिंघ इसको प्यार से मीठा मल कहकर बुलाते थे । कौड़ा मल हुक्का पीता था, इसलिए वह जब भी सिंघों के पास आता सिंघ उसको तन्खाह लगाते थे और फिर उसको अपने पास बैठने देते थे । उसूलों का सत्कार करने वाले दीवान कौड़ा मल को सिंघों ने जो तन्खाह लगानी भर देनी । इसलिए अब भी तन्खाह भर कर सिंघों को मुलतान पर चढ़ाई करने के लिए मना लिया । 10 हज़ार सिंघ दीवान जी के साथ मुलतान की तरफ चल पड़े ।

बताते हैं कि मुलतान की लड़ाई कोई छ: महीने लगी रही, परन्तु सिंघ अभी तक आगे हो कर नहीं लड़े थे और लाहौरी फौजों की कोई पेश नहीं जा रही थी । शाह नवाज खुले मैदान में लाहौरी फौजों को आगे लगाई बढ़ता आ रहा था कि दीवान कौड़ा मल के ललकारने पर सिंघ एकदम तेगी हो कर मुसलमानों पर टूट पड़े और एक पहर की लड़ाई में ही शाह नवाज की फौजों के पैर हिला दिये ।

शाह नवाज हाथी पर चढ़ कर फौजों को लड़ा रहा था । अपनी फौज में भगदड़ पड़ती देख कर, शाह नवाज भी पीछे को मुड़ पड़ा । यह देख

तेज़ घोड़ों वाले सिंघ भी घोड़ों को एड़ी लगा उस तरफ बढ़ने लगे । कहते हैं कि एक भीम सिंघ नामक सिंघ ने उसके हाथी के निकट हो कर ऐसी ज़ोर से तलवार चलाई कि हाथी की एक टांग ही कट गई और हाथी सहित शाह नवाज धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा । सिंघ की तेज़ तलवार ने गिरते शाह नवाज का सिर धड़ से अलग कर दिया ।

सिंघों की बहादुरी पर कौड़ा मल तो पहले ही मोहित था, परन्तु इस बहादुरी ने मीर मन्नू को भी चकित कर दिया । इस समय सम्वत 1809 था।

अब सिंघों के लिए भी कुछ सुख के दिन आये । शिकार मारने के लिए दूर-दूर के इलाकों में फिरते रहे । मीर मन्नू ने इस समय दिल्ली को कमजोर देख कर सरहंद पर भी कब्ज़ा कर लिया ।

अहमद शाह का चौथा हमला

अहमद शाह ने जब पिछली बार हमला किया था तो उसको मीर मन्नू ने हर साल कुछ देना ठहरा कर गुजरात से ही वापिस भेज दिया था, परन्तु इधर जब मुलतान और सरहंद पर मीर मन्नू का कब्ज़ा हो गया तो अहमद शाह को उसने कोई रकम न भेजी और सलाह बनाई कि यदि अब अहमद आये तो उसे मजा चखाया जाए । उधर अहमद शाह को जब रकम न पहुंची तो उसने मन्नू पास अपना वकील भेजा और हिसाब करके 35 लाख की मांग की जो मीर मन्नू ने देने से इन्कार कर दिया । यह सुन कर अहमद शाह 1 लाख फौज ले कर बड़े गुस्से से धावा करने आया । यह 1810 का साल था । इधर मीर मन्नू ने लड़ाई की तैयारी की । कौड़ा मल दीवान के कहने पर सिंघ भी पहुंच गये । मन्नू की सेना ने दरिया पार हो कर शाहदरे के मैदान में टक्कर ली, परन्तु अहमद शाह का ज़ोर पड़ता देख कर फिर किले में आ घुसी और अहमद शाह बाहर से मोर्चे बना कर लड़ने लगा ।

दीवान कौड़ा मल की मृत्यु

कहते हैं कि यह लड़ाई पाँच महीने होती रही, परन्तु अपने-अपने

मोर्चों में बैठ कर, जिसके कारण अन्दर वालों का अन्न-जल कम हो गया । आखिर मन्नू ने सलाह करके मारो-मारी की नीति बनाई और प्रातः काल ही किले में से निकल कर मन्नू की फौजें अहमद शाह की फौजों पर जा पड़ी । दोपहर तक अच्छी जंग हुई । मन्नू, कौड़ा मल, अदीना बेग आदि अच्छे हौंसले से लड़े और इनके पैर आगे बढ़ रहे थे । बेशक अहमद शाहिये कुछ हिल खड़े थे परन्तु कुदरत को यह मंजूर नहीं था । ऐन उस समय जब कि अहमद शाहिये दौड़ खड़े हुए थे और मन्नू की फौज आगे बढ़ रही थी, उस वक्त दीवान कौड़ा मल के हाथी का नरम ज़मीन में पैर धंस जाने के कारण वह गिर पड़ा । कौड़ा मल को गिरे देख कर अहमद शाह की फौज के एक सरदार शाह ज़मीन ने अपने फौजी दस्ते साथ लेकर दीवान पर हमला कर दिया और उसका सिर काट लिया । बस दीवान कौड़ा मल की मौत से ही जीती बाज़ी हार में बदल गई । दुरानी जाते-जाते फिर मुड़ कर मन्नू की फौजों पर टूट पड़े और दीवान कौड़ा मल की मौत देख कर बाकी सरदार भी दिल हार कर तितर बितर हो गये । मन्नू दौड़ कर किले अन्दर जा घुसा और फिर अहमद शाह के सामने पेश हो कर उसकी शरण में आ गया । इस समय सिंघ कुछ अड़े परन्तु समय की नज़ाकत को समझ कर वह भी मोर्चो को छोड़ कर हरण हो गये और जंगलों में जा घुसे ।

पाठक पढ़ चुके हैं कि अहमद शाह के चौथे हमले के समय जो लड़ाई हुई, उस समय सिक्ख पंथ का बड़ा सत्कार करने वाला दीवान कौड़ा मल भी शहीद हो गया था । इसलिए स्वभाविक बात थी कि मुसलमान हाकिम सिंघों से वैर कमाते । दीवान कौड़ा मल के समय में सिंघों के कोई दो तीन साल अच्छे निकल गये थे, परन्तु अब फिर सिंघों के चुगलखोरों का ज़ोर पड़ गया और साथ लगते अहमद शाह के फौजी जहान खां की कमान के नीचे पाँच हज़ार जवान थे, जिनको अहमद शाह काबुल जाते समय लाहौर में मीर मन्नू की खबरदारी रखने के लिए छोड़ गया था । इस सरदार को जब अहमद शाह लाहौरी फौजों से लड़ रहा था तो सिंघों के छापे मार दस्तों ने गहरा हैरान किया था । इसलिए फैसला किया गया कि या तो

सिंघों को खत्म कर दिया जाये, या दासतां मनवा ली जाये।

सिंघों को कहा गया कि वे शर्तें मान कर मताहित हो जाये। परन्तु स्वाभिमानी और सिदकी सिंघों ने जवाब दिया कि यह बात नहीं मानी जाएगी आप जो चाहो कर लो।

सिंघों ने धर्म युद्ध करके दिखाने

इस पर मोमन खां और जहान खां 50-60 हज़ार फौज लेकर सिंघों को मारने के लिए निकल चले। सिंघ यह देख कर सब कुछ छोड़ कर फिर जंगलों में जा घुसे और रात दिन लगे छापे मार कर उनको हैरान करने। सिंघों ने कई जत्थे बना लिये थे और वे कई मीलों में बिखर कर कभी इधर से कभी दूसरी तरफ से दुश्मन पर आ पड़ते थे, जिस कारण इन फौजों का कोई वश न चल सका।

अहमद शाह का वह फौजी सरदार जहान खां भी इस मुहिम में था, उसको सिंघों ने गहरा हैरान किया और उधर मोमन खां, जिसको मुहिम का इंचार्ज बना कर भेजा गया था, वह किसी और को फौज दे कर, स्वयं कोई बहाना बना कर लाहौर आ गया। जहान खां ने सोचा कि यदि सिंघ सामने आये तो लड़ाई का स्वाद भी कुछ आये। ऐसे तो हमारी पेश कोई नहीं जानी। इसलिए उसने कसूर से पहले जहां सतलुज और ब्यास मिलते हैं, यहां से अपने आदमी को भेजा और सिंघों की तरफ चिट्ठी लिखी कि सुना है कि आप बहादुर हो आपका नाम सिंघ (शेर) है और हम भी अफगान बड़े बहादुर कहलवाते हैं, इसलिए आओ धर्म युद्ध करें, अकेले से अकेला लड़ कर देख लो, हमारी यह इच्छा है। ऐसे इस तरह खराब न हो। और यदि आप हमारी यह बात न मानो तो हम आपको समझेंगे कि आप चोर डाकू ही हो, लुटेरे ही हो, सिंघ (शेर) नहीं हो और इस तरह और भी बहुत कुछ लिखा और आखिर में यह भी लिख भेजा कि आपको अपने गुरु की कसम है, इसलिए एक बार हमारे साथ इस तरह न लड़ो, हमारे साथ धर्म युद्ध करे, अकेले से अकेला लड़ो, तीर, बंदूक नहीं चलाना, सिर्फ तलवार से लड़ाई लड़नी है।

गुरु की कसम और फिर ताने, यह कौन झेलेगा ? सिंघों को यह बोल तीर की तरह लगे और सामने आ जैकारे छोड़े। कहने लगे-"आओ, जिसको आना है, खालसा तैयार है, और यदि अब आप न आए, तो तुम्हें भी तुम्हारी कुरान की कसम है।"

खालसे का जवाब सुनकर एक लोहे से जड़ा दैत्य-कद का गिलजा पठान किलकारियां मारता दरिया के बीच आ खड़ा हुआ और ललकारने लगा कि आओ कोई सिंघ मुकाबला करने वाला। उधर कसूर के किनारे की तरफ मुसलमान खड़े थे और फिरोज़पुर के किनारे की तरफ खालसा दल खड़ा था। बीच में मील पौने मील का चौड़ाव था, जिसमें दरिया बहता था, परन्तु इस समय सूखा पड़ा था। उस बरेते में एक टिब्बे पर खड़ा वह पठान किलकारियां मार ललकार रहा था।

स. चढ़त सिंघ जी उस समय चढ़ती जवानी में था। यह कहने लगे मुझे भेज दें, इस पठान का मुकाबला मैं करूंगा। यह सुन नवाब कपूर सिंघ जी कहने लगे, चढ़त सिंघ ! देखता नहीं कैसे दुश्मन लोहे से जड़ा पड़ा है ? तुम ने अभी लड़ाई के दांव पेच सीखने हैं। इसका मुकाबला करने के लिए किसी लड़ाई भिड़ाई के माहिर सिंघ को भेजा जायेगा।

यह भी भारी इम्तिहान था। मुकाबले पर जाने वाले सिंघ की हार, सिक्ख-पंथ की हार बनती थी। नवाब कपूर सिंघ जी यह सोचते-सोचते सिंघों की तरफ देख रहे थे और उनकी नज़र भाई सुक्खा सिंघ जी माड़ी कम्बोकी वालों पर जा टिकी, जिनकी टांग पिछले घल्लूघारे में तोप का गोला लगने से टूट गई थी और आप टूटी टांग से ही कई दिन दुश्मनों से लड़ते रहे थे। अब इस मुकाबले के लिए इनकी डयूटी लग गई। फिर सारे सिंघों ने मिल कर अरदास की-

'सतिगुरु कलगियों वाले पातशाह ! अब तक आप स्वयं ही अंग संग हो कर अपने पंथ की रक्षा करते आ रहे हो और अब भी आप ने ही रक्षा करनी है। इन ज़ालिमों, दुष्टों और अहंकारियों को आपकी मेहर से ही हम हरा (संहार) सकते हैं। इसलिए कृपा करो, अब इस मौके भी अपने पंथ की फतेह करो।'

अरदास करने के बाद नवाब साहिब ने भाई सुक्खा सिंघ के कन्धे पर थापी दी और बाकी सिंघों ने जैकारों की घनघोर लगा दी ।

भाई सुक्खा सिंघ जी जैकारे छोड़ते पठान की तरफ चल पड़े। हाथो-पाई के दोनों बड़े उस्ताद थे । इसलिए हाथो-पाई में ही ढालें बेचारी चकनाचूर हो गईं और दोनों की तलवारें भी टूट गईं । जब हाथ खाली हो गये तो फिर हाथो-हाथ सूरमे जफ्फो-जफ्फी हो गये और इतना लड़े कि दोनों ही हांफ कर गिर पड़े ।

कुछ समय तो दोनों ही न उठे, परन्तु थोड़ी देर बाद ही सिंघ जी को होश आ गई । पठान को बेहोश देख कर फुर्ती की और कटार से पठान की संजो (लोहे की कवच) उठा कर उसका काम किया और स्वयं जैकारे छोड़ते सिंघों के पास पहुंच गये ।

फिर दो पठान और आये तथा सिंघ भी दो ही गये। फिर और दो तथा इस तरह ही कहते हैं कि 12 पठान और चार सिंघ शहीद हो गये । यह देख कर पठान बर्दाश्त न कर सके और खाई कसमों को बीच में ही फैंक कर एक बार ही सिंघों पर आ पड़े । परन्तु सिंघ कौन से आगे सुस्त थे, बड़ी घमासान की जंग हुई जोश में आये सिंघ जब दुश्मन के दल में घुसकर जत्थेबन्दक तौर पर लड़ने लगे, तो वही किलकारियां मारने वाले पठान आगे लग कर भाग उठे और इस मैदान में भी सिंघों की फतेह हो गई ।

मीर मन्नू के ज़ुल्म

जब आमने-सामने मुकाबले की लड़ाईयों में मुसलमान फौजें सिंघों का कुछ न बिगाड़ सकी तो फिर मुस्लिम हाकिमों ने खोटी चालें चलनी शुरू कर दीं, सिंघों के गाँवों में आराम से रह रहे बाल-बच्चों को पकड़ना शुरू कर दिया । चुगलखोरों की फिर पाँचों उंगलियां घी में हो गईं । पहले सिंघ पकड़वाते थे, अब पते बता-बता सिंघनियों और बच्चों को पकड़वाने लग पड़े । मुसलमान फौज द्वारा सिंघों के घर लूटने, बाल-बच्चों को पकड़ने और घरों को ध्वस्त कर देने के इस भारी ज़ुल्म से देश में हाहाकार मच गई । कई सिंघनियां अपने बाल-बच्चों को ले-ले दौड़ने-भागने

लगीं । कई तो फौज़ियों से मुकाबला करतीं रास्ते में ही शहीद हो जातीं और कई बेचारी लाहौर पकड़ी पहुंचने लगीं । कई दौड़ कर जंगलों में सिंघों के पास भी जा पहुंचतीं और ज़ालिमों के इस ज़ुल्मी कारनामे की सिंघों को जा खबर बताई ।

वृद्ध औरतों को तो रास्ते में ही मुसलमान फौजी मार छोड़ते, परन्तु जवान औरतों को हिफाज़त से लाहौर पहुंचाते कि सूबे की खुशी के पात्र बन सकें ।

लाहौर, यहां कि आजकल सिंघनियों का शहीद गंज है, यहां भोरों में सब सिंघनियों को बन्द कर दिया गया । कई दिन खाने के लिए ही कुछ न दिया गया । छोटे-छोटे बच्चे दूध पीने वाले, मां को रो-रो कर चिपकते, परन्तु मां कुछ खाये तो उनको दूध पिलाये ? सब्र-शुक्र के घेरे में से बाहर नहीं निकलती थीं, बच्चों को बाणी के पाठ से लोरियां दे-दे कर चुप कराती थीं । चक्की पीसने के लिए मिलती थी तो मन-मन दाने पीसने का हुक्म मिलता था । कई दिनों बाद आधी-आधी रोटी और पानी का प्याला सब को पीने के लिए मिला । श्री गुरु अर्जुन देव और गुरु तेग बहादुर के प्रसंगों को याद कर-कर वे जीवन के पल बिता रही थीं । अपने दुःखों और तकलीफों को सब्र-शुक्र की ठोकरों से दूर करने का यत्न करती थीं ।

जब कई महीने इसी तरह भूखी-प्यासी आधी-आधी रोटी पर गुज़ारा करते बीत गये, तो एक दिन मीर मन्नू स्वयं आ कर सिंघनियों को कहने लगा, 'किसके लिए आप कष्ट झेल रही हो ? जिन सिंघों के पीछे आप अपनी जवानी बर्बाद कर रही हो, उन्होंने आपको क्या सुख देना है, वह तो स्वयं जंगलों में भटकते फिरने हैं ।'

सिंघनियां कहने लगीं, 'सूबे तुम्हें वहम है, हम सुखों के लिए कुछ नहीं करतीं, हम तो कलगीधर के अमृत पिये की खातिर यह कुछ कर रही हैं और इस जीवन को तुम दुःख और मुसीबतें कह-कह कर हमें डोलाने के लिए ज़ोर लगाता है । यह तो हमारे धर्म को पक्का कर रहे हैं । सिक्खी की तो परीक्षा ही दुःख में है । जिस इस्लाम के लिए तुम

कहते हो, वह हमें मंजूर नहीं हो सकता ।' जान चाहे रहे या न रहे, इसकी हमें परवाह नहीं । सिक्खी तो हमने पहले ही सिर दे कर ली है, जब अमृत छका था । यह सिर गुरु का है, यह तो सिक्खी के लिए ही लगेगा, जीवन के सुखों के लिए यह सतिगुरु की तरफ से बेमुख नहीं होगा ।'

मन्नू ज़ालिम ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इन सबके बच्चे छीन लो और इनके सामने ही टुकड़े-टुकड़े कर दो । देखता हूँ कि कैसे मेरा हुक्म नहीं मानतीं ।

बस फिर क्या था, ज़ालिमों ने बच्चे छीन लिये । रोते-चिल्लाते बच्चे, जैसे मन आया, छीन कर मार दिये गये । कोई नेज़ों से, कोई तलवारों से । धन्य थी वे माताऐं, जो सामने बच्चों को मारते देखकर, धन्य सतिगुरु ! धन्य वाहिगुरु ! कह रही थीं और कई सिंघनियों ने उस समय यह भी कहा, 'हे पातशाह ! यह भी अच्छा हुआ, जो हमारे बच्चे शहीदी की खातिर शहीद हो रहे हैं । सिक्ख होने के कारण मारे जा रहे हैं । यदि ये ज़ालिम हमें मार कर हमारे बच्चों को पाल ले, तो बड़े होकर इन्होंने मुसलमान बन जाना था, इसलिए शुक्र है तुम्हारा वाहिगुरु जी ! आपने ज़ालिमों को पाप करने से नहीं रोका और हमारी कोख को दाग नहीं लगने दिया

ज़ालिम इतना ज़ुल्म करके भी नहीं पसीजा । इसने कई सिंघनियों की आँखों में आंसू निकलते देख कर समझा कि अब शायद मेरा हुक्म मान जाएंगी । वह कहने लगा-

"अभी भी समय है कि मेरा कहना मान कर इस्लाम कबूल कर लो ।"

उसने सिंघनियों को सुखों के लालच भी दिये । परन्तु सिंघनियां कहने लगीं-'ओए ज़ालिम ! जिस मज़हब के लोग इतने ज़ालिम, निर्दयी और नीच हो कर मासूमों को भी मारने से न झिझके, ऐसे मज़हब को धारण कौन करेगा ? नरक की आग तुम्हारे जैसे पापियों को जलाने के लिए ही तो लट लट जल रही है । तूने और भी जो ज़ुल्म करना है, बेशक जी भरकर कर लो, परन्तु यह आशा छोड़ दो कि हम मुसलमानियां बन

जायेंगी । चाहे कुछ भी हो और हमारे टुकड़े-टुकड़े भी क्यों न हो जायें, हम धर्म नहीं छोड़ेंगी ।'

यह सुन कर मन्नू पापी ने सिंघनियों को कोड़े मरवा कर निढाल कर दिया, परन्तु किसी ने उसकी बात न मानी । फिर वह यह ख्याल करके कि कल तक शायद इनके ख्याल बदल जाए, वह इस बात को कल पर डाल कर बाहर को चला गया ।

सिंघनियों की अरदास और मन्नू की मृत्यु

जब मन्नू चला गया तो सिंघनियों ने बाद में अति दुःखद हृदय से सतिगुरु जी के पास अरदास की और एक मन होकर सतिगुरु के चरणों तक आवाज़ पहुंचाई, 'हे पातशाह क्षमा करो, हमारी भूलों को बख्शो और इस समय अपने नाम की लाज रखो ।' फिर फरीद जी के श्लोक को सभी ने मिल कर पढ़ा-

फरीदा चिंत खटोला वाणु दुःखु बिरहि विछावण लेफु ।।
ऐहु हमारा जीवणा तू साहिब सच्चे वेखु ।।३५।।

इधर सिंघनियां सतिगुरों के चरणों से जुड़ बैठीं और उधर क्या हुआ ? मन्नू जाते ही घोड़े पर सवार होकर कुछ फौज लेकर शिकार को चल पड़ा । वह काफी दूर निकल गया । किसी कारण उसका घोड़ा इस तरह हिल गया कि वह एकदम उछला और मन्नू घोड़े से नीचे उलट पड़ा, परन्तु पापी ने मरना बुरी मौत था, इसलिए उसका एक पैर रकाब में अड़ गया । घोडा काफी कांपा और वह बहुत दौड़ा । मन्नू साथ ही घसीटा जाने लगा । उसके हाथ, मुँह, बाजू सब टूट-फूट गईं और कई घण्टे घोड़ा दौड़-दौड़ कर आखिर लाहौर की तरफ ही मुड़ पड़ा । उधर सिंघों को भी सिंघनियों के पकड़े जाने की खबर थी, वे लाहौर के इर्द-गिर्द जंगलों में फिरते हुए समय तलाश रहे थे कि उनको मन्नू के मरने की खबर मिल गई । सिंघ मन्नू की लाश लाहौर पहुंचने से पहले-पहले ही लाहौर में दाखिल हो गये और गुस्से से भरे हुए मार-काट करने लग पड़े । मन्नू के मरने से फौज वैसे ही जान बचाने लगी और सिंघ अंधेरे की ओट में

लाहौर में दाखिल हो कर सिंघनियों को ज़ेल से निकालने में कामयाब हो गये और इस तरह सिंघनियों की सतिगुरु ने लाज रख ली और ज़ालिम को एक दम ही किये का फल मिल गया ।

कहते हैं कि उस समय फौज की कई महीनों की तन्खाहें रहती थीं, इसलिए फौज ने समय का फायदा उठा कर मन्नू की लाश पर कब्ज़ा कर लिया, फौज़ियों ने कहा-जब तक वेतन नहीं मिलता, हमने लाश को दफनाने नहीं देना । इसलिए उसकी बेगम ने मुश्किल से फौज़ियों को कुछ दे दिलवा कर पांच दिनों बाद मन्नू की लाश को दफनाया ।

अहमद शाह का पाँचवां हमला

मन्नू के मरने के बाद उसकी बेगम और मीर मोमन ने सिंघों का पीछा न छोड़ा परन्तु जल्दी ही मुराद बेगम की मनमर्जी ने सब अहलकारों को दु:खी कर दिया । मीर मोमन सिंघों से मन्नू वाला बर्ताव ही कर रहा था । जब नवाब कपूर सिंघ के यह कहने पर कि कोई सिंघ इसके शिकार के लिए निकले, तब भाई अघड़ सिंघ (शहीद भाई मनी सिंघ का भतीजा) लाहौर भेष बदल कर गया और मीर मोमन का सिर काट कर ले आया । इसकी मौत के बाद मुराद बेगम कमजोर हो गई और जब बात उसके वश से बाहर हुई तो वह झट अहमद शाह के पास गई और उसको आक्रमण के लिए लाई ।

यह कोई 1812 की बात है और यह अहमद शाह का पाँचवां हमला था । सिंघों ने भी इस समय का पूरा फायदा उठा कर दोषियों को खूब सजायें दीं । अहमद शाह ने इस हमले में दिल्ली तक चढ़ाई की । लाहौर में तो पहले ही उसी की हकूमत थी, परन्तु इस बार उसने जालन्धर और सरहंद को भी कब्ज़े में कर लिया । अब सिंघों का माथा सीधा काबुली हकूमत से लग गया ।

अहमद शाह ने सिंघों की बहादुरी देखनी

जब अहमद शाह दिल्ली से मुड़ा, तो इस समय कोई बीस सिंघ पकड़

कर अहमद शाह के सामने पेश किये गये । इनमें भाई तारू सिंघ, बाघ सिंघ आदि नाम के प्रमुख और बहादुर सिंघ थे । अहमद शाह ने कहा, 'तुम अपने आपको सिंघ क्यों कहलवाते हो ? सिंघ का अर्थ तो शेर होता है । आप यदि शेर कहलवाते हो, तो सचमुच के शेर से लड़कर दिखाओ ।'

सिंघों ने अहमद शाह की यह चुनौती मंजूर की । इस समय भाई बाघ सिंघ जी उतरे । उन्होंने खाली हाथों ही भूखे शेर से मुकाबला किया । बड़ी फुर्ती से शेर के मुँह में हाथ डाल कर उसकी ज़ुबान को इतने ज़ोर से खींचा कि दांत तो उसने क्या मारने थे, बल्कि ज़मीन पर गिर गया और दो घंटे की भिड़ंत के बाद बहादुर सिंघ की बाजू तो बेशाक साबित न रही, परन्तु शेर को मार कर दिखा दिया । अहमद शाह देख कर दंग रह गया । फिर अहमद शाह ने अकेले से अकेला और अकेले से दो और अकेले से अपने पाँच फौजी छोड़ कर देखे परन्तु हथेली पर सिर रख कर लड़ने वाले सिंघ ऐसी लड़ाई में भी अव्वल रहे । सिंघों की बहादुरी पर अहमद शाह बड़ा खुश हुआ और उसने बाकी 15 सिंघों को उसी समय छोड़ दिया । उसने देखा कि इस तरह अकेले लड़ाई में सिंघ तो सिर्फ पाँच मरे, परन्तु मेरे फौजी 17 मारे गये हैं ।

गुरुद्वारा थम्म साहिब (करतारपुर) की बेअदबी का बदला

इतिहास में ज़िक्र आता है कि मुसलमान हाकिमों ने हिन्दुओं के धर्म-अस्थानों की बेअदबी करने के बाद सिक्ख धर्म अस्थानों को भी ध्वस्त करने में फर्क नहीं किया था । हिन्दुओं के बड़े-बड़े मंदिर ध्वस्त किए गये, परन्तु उसके बदले में मुसलमानों से किसी ने टक्कर नहीं थी ली, हालांकि बड़े-बड़े राजपूत, मराठे तथा और कई लड़ाकी कौम के हिन्दू उस समय मौजूद थे और इतिहास बताता है कि सिवाय सिक्ख शूरवीरों के और किसी ने धर्म अस्थानों की बेअदबी का प्रतिशोध नहीं लिया और सिक्ख धर्म अस्थानों की बेअदबी का बदला मुसलमानों को बड़ी जल्दी अच्छी तरह चुकाना पड़ा ।

मीर मन्नू के मरने के बाद उसकी औरत मुराद बेगम ने अपनी

चालाकी के कारण बहुत सारे अहलकारों से बिगाड़ ली थी, जिसके कारण ज़्यादा मुसलमान हाकिम और खास कर जालन्धर का सूबा अदीना बेग सिंघों का घनिष्ठ मित्र बन गया था और मुराद बेगम ने बेशक साल-डेढ़ साल हकूमत की, परन्तु फिर उसको अहमद शाह की शरण लेनी पड़ी। सम्वत 1812 को पाँचवीं बार अहमद शाह अब्दाली ने मुराद बेगम के कहने पर जब हिन्दुस्तान पर हमला किया तो इस बार वह बिना रोक-टोक दिल्ली तक जा पहुंचा था। दिल्ली से मुड़ता वह सरहंद, जालन्धर और लाहौर को अपने कब्ज़े करके अपने आदमियों को सूबेदार बना गया था।

अहमद शाह अब्दाली के हमले समय ही जालन्धर का सूबेदार अदीना बेग जालन्धर को छोड़ कर पहाड़ी में जा घुसा था और अहमद शाह के नियुक्त किये सूबेदार नासिर दीन ने सिंघों पर ज़ुल्मों का कहर मचाया हुआ था। लाहौर में अहमद शाह अपने पुत्र तैमूर शाह को सूबा बना गया था, उसने भी नासिर दीन को मदद भेजी।

करतारपुर जालन्धर से बिल्कुल निकट होने के कारण नासिर दीन का इधर ध्यान शीघ्र पड़ गया। आगे कुतुबदीन जालन्धर के सूबे ने इस पावन अस्थान की बेअदबी की थी और गुरुद्वारा ध्वस्त कर दिया था। यह कुतुबदीन तो थोड़े दिनों बाद ही स. बाघ सिंघ हलोवालिये के हाथों मारा गया था। समय पा कर सिंघों ने गुरुद्वारा फिर नवर्निमित कर लिया था। धीर मलीयां के खानदान में से इस समय बाबा वडभाग सिंघ जी थे, इन्होंने अमृत छक कर सिंघों से मेल-मिलाप कर लिया हुआ था। सिंघ बे-खटके यहां आते और ठहरते थे। नासिर दीन को जालन्धर के निकट श्री करतारपुर में सिंघों की यह सरगर्मियां कैसे अच्छी लग सकती थीं ? उसने फौज लेकर करतारपुर पर चढ़ाई कर दी। सोढ़ियों तथा और सिंघों ने काफी मुकाबला किया, परन्तु बेशुमार दुश्मन के आगे थोड़ों की क्या पेश जानी थी, आखिर लड़ते-भिड़ते करतारपुर से निकल गये। बाबा वडभाग सिंघ जी ऊपर पहाड़ों को चले गये और यहां आजकल डेरा वडभाग सिंघ है, वहां जा टिके।

इधर नासिर दीन ने करतारपुर में दाखिल हो कर भारी उपद्रव किया। गुरुद्वारा थम्म साहिब को ध्वस्त कर दिया गया और वहां गायों की हत्या की गई। हिन्दू औरतों को पकड़-पकड़ कर जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया। पूरे 16 वर्ष बाद सम्वत 1812 विक्रमी में गुरुद्वारा थम्म साहिब की यह दूसरी बार बेअदबी हुई।

इस समय सिंघों का ठिकाना केवल जंगल थे। जिस पहाड़ की चोटी पर बाबा वडभाग सिंघ जी ठहरे हुए थे, इसी तरफ अदीना बेग सूबा जालन्धर अहमद शाह से डरता दौड़ गया था। इसलिए फिरते-फिरते अदीना बेग और बाबा वडभाग सिंघ जी मिल गये। अदीना बेग का पिछले दो सालों से सिंघों से अच्छा मेल-मिलाप हो चुका था। इसलिए यह जब बाबा वडभाग सिंघ जी को मिला तो बातचीत करते कहने लगा, बाबा जी, आप यहां एकांत में बैठ हुए हैं, सिंघों की मदद से नासिर दीन को किये की सज़ा क्यों नहीं दिलाते ?

'अपने सुख के लिए किसी को क्या कष्ट देना हुआ ?'

'बाबा जी, आपके सुख का यहां कोई सवाल नहीं, यहां तो ज़ालिम को सज़ा और गुरुद्वारे की बेअदबी का प्रतिशोध लेने का सवाल है।'

दरअसल अदीना बेग खुद भी चाहता था कि कैसे अहमद शाही फौजों को जालन्धर से मार कर निकाला जाये, परन्तु उसके अकेले अपने में इतनी ताकत नहीं थी कि दुश्मन से लड़ सकता, इसलिए सिंघों की मदद से यह अपने इस मनोरथ में कामयाब होना चाहता था। इसने बाबा वडभाग सिंघ द्वारा इस काम में सफलता प्राप्त कर ली। हथियार और दारू सिक्के का सारा खर्च इसने अपने जिम्मे ले लिया और सिंघों को बुलाने के लिए बाबा जी ने चिट्ठी लिख दी।

सिंघ, बाबा जी का भारी सतिकार करते थे, क्योंकि कठिन समय बाबा जी सिंघों की भारी मदद किया करते थे। आये गये की संभाल किया करते थे। उन्होंने चिट्ठी लिख कर अदीना बेग की सारी सलाह सिंघों की तरफ लिख भेजी। उन्होंने अपनी तरफ से कह भेजा कि इस इलाके की तरफ दर्शन दो, तो इकट्ठे हो कर सलाह मशविरा कर लें।

यह संदेश पहुंचा तो सब सिंघ धीरे-धीरे इस तरफ चल पड़े। जब लगभग सभी सिंघ पहुंच गये तो सोच विचार किया गया। सबने इस सलाह पर रज़ामंदी प्रकट की कि जालन्धर पर हमला करके नासिर दीन को किये की सज़ा अवश्य दिलाई जाये। इस समय जंगी सिंघों की गिनती कोई 20-25 हज़ार के करीब थी और अदीना बेग के पास भी 8-10 हज़ार के करीब फौज थी। धन और दारू सिक्का अदीना बेग पास बेअंत था, इसलिए सब सिंघों को उसके कहने पर तसल्ली हो गई।

सब कुछ करके फिर सिंघों ने कड़ाह प्रसाद तैयार किया और सतिगुरु के अर्पण करके अरदास की गई-'हे फौजों के वाली, कलगीधर पातशाह! तेरा खालसा पंथ धर्म के दोषी ज़ालिमों पर चढ़ाई करने लगा है। यही आप ने स्वयं किया और हमें करना सिखाया। इसलिए कृपा करो, अंग संग हो कर अपने पंथ की फतेह करनी है।

कहते हैं कि अरदास के बाद जब हमले के लिए तैयारी करके सिंघ चलने लगे, तो स. जस्सा सिंघ ने कहा-'अदीना बेग ! एक बात का भारी खतरा है कि तुम्हारी फौज और दुश्मन की फौज की वर्दी का रंग एक जैसा है, कहीं ऐसा न हो, भ्रम में आकर सिंघ तेरे आदमियों पर हमला कर दें और हमारी की कराई पर पानी ही फिर जाए।'

"बात तो आपकी ठीक है", अदीना बेग ने कहा परन्तु इस समय तो इतना समय ही नहीं कि शीघ्र से वर्दी में कोई बदलाव लाया जाये। साथ ही अरदास की जा चुकी है, अब क्या बन सकता है ?

स. जस्सा सिंघ जी को भी इस समय खूब सूझी। एक गेहूं की फसल निकट ही थी, जहां पाँच चार तिनके उखाड़ कर अदीना बेग के सिर पर अड़ा दिये और कहा-"बस इतना अन्तर काफी है। जिसके सिर पर यह निशानी होगी, सिंघ समझ लेंगे कि वह हमारा सिपाही है।"

अदीना बेग कहने लगा-"सरदार जी, यह तो फतेह की निशानी है। शगुन अच्छा हुआ है।" इसके बाद अदीना बेग ने अपने सब सिपाहियों को तिनके लगाने के लिए कहा और साथ ही कहा कि पगड़ी को लांगड़ छोड़ कर बांधो, ताकि वर्दी में और भी अन्तर आ जाये। कहते हैं कि

तुर्ले और लांगड़ वाली पगड़ी बांधने का रिवाज पंजाब में तभी से ही आरम्भ हो कर प्रचलित हुआ है ।

उधर से नासिर दीन को भी सिंघों के आक्रमण का पता लग चुका था, उसने भी खूब तैयारी कर ली । तैमूर शाह (अहमद शाह अब्दाली के पुत्र) ने लाहौर से उसकी मदद के लिए फौज भेज दी । उधर रोपड़ के पठान भी नासिर दीन की मदद के लिए आ गये तथा और इलाकों की सब मुसलमानी फौज भी जालन्धर आ पहुंची । जालन्धर वालों ने शहर से दूर जिधर से सिंघ बढ़ कर आ रहे थे, मोर्चे बना लिये, तोपें-जंबूरचे सब सामान ले जा कर खूब तैयारी कर ली ।

सिंघों और अदीना बेग की फौजों ने आगे से एक पहर मोर्चे में ही बैठ कर लड़ाई की, परन्तु यह लड़ाई सिंघों के लिए नुक्सानदेह थी । साथ ही दुश्मन का तोपखाना भी मज़बूत था । सिंघों ने पैंतरा बदल कर योजना अनुसार एक बार ही श्री साहिब लेकर दुश्मन के मोर्चों को कूद कर उनकी फौजों में जा घुसने का फैसला किया । इसलिए योजना अनुसार जब वे दुश्मनों में जा घुसे तो फिर भला सिंघों की झाल कौन झेले, जब सिंघ तेगीं उतर आये । कहते हैं कि पहर भर इस तरह की लड़ाई भी घमासान हुई और मैदान में लाशों के ढेर लग गये । नये-नये अब्दाली अपने गुमान में आये हुए सिंघों से खूब अड़े और सिंघ भी खूब जूझ गये, परन्तु धीरे-धीरे सिंघों के पैर आगे बढ़ने लगे और दुश्मन के पीछे को । यह देख सिंघ 'अकाल' 'अकाल' कहते दुश्मन को ऐसे पड़े कि बिजली को भी मात कर गये । इधर से सिंघ बढ़े तो अदीना बेग ने भी कम न की, वह भी सिंघों के अनुसार चलने लगा । अब गिलजे पठान तौबा-तौबा करते हुए भागने लगे । तैमूर का भेजा हुआ फौजी जरनैल तथा और कई इलाके के प्रमुख मुसलमान सिंघों ने मार दिये । मैदान छोड़ भागता दुश्मन तो वैसे ही आधा मुर्दा होता है, इसलिए सिंघों ने इन भगौड़ों में भी काफी मार दिये और बाकी पीछे जालन्धर में आ घुसे । सिंघ एक दम जालन्धर को आ झपटे और अपना काम करने लगे, जो अड़े सो झड़े, परन्तु जो शरण पड़ गया उसकी जान बख्शी गई । उस पापी नासिर दीन को जीवित

ही पकड़ लिया गया ।

नासिर दीन जीवित को पकड़ कर सोढी वडभाग सिंघ जी के आगे पेश किया गया और कहा कि इसको बताएं क्या सज़ा दें ?

बाबा जी ने कहा–'जैसे इसने धर्म अस्थानों और अबला की बेइज्जती की है, उसी तरह इसका फल इसको दिया जाये ।' सिंघों ने भी मुगलों की मुगलानियों और पठानियों को पकड़ लिया, परन्तु उनको आज़ादी दी गई कि वह जिस सिंघ को प्रवान करे उनसे शादी करवा ले । इसलिए ज़्यादा को अमृत छका कर सिंघनियां सजा लिया गया और बाकी को गैर सिक्खों के हवाले कर दिया और सिंघों ने जबरदस्ती किसी का भी धर्म तबदील न किया ।

नासिर दीन ने गुरुद्वारा साहिब को जलाकर वहां गाय हत्या करवाई थीं, परन्तु सिंघों ने जालन्धर की बड़ी मस्जिद को ध्वस्त या आग लगाने की जगह केवल इतना किया कि उसमें बेअंत सूअरों को झटका कर वहां ही उनका मांस पकाया गया । ज़ालिम और निर्दयी नासिर दीन को जीवित जलाने का फैसला हुआ और उसे जीवित ही मस्जिद में जला दिया गया । इसके बाद खालसा तो अपने निवास अस्थानों जंगलों की तरफ चला गया और अदीना बेग ने जालन्धर की सूबेदारी को फिर अपने अधीन कर लिया । सिंघों ने यह प्रतिशोध सम्वत 1813 विक्रमी में लिया ।

मुसलमान लेखक खाफी खां सिंघों की इस कार्यवाही को ज़ालिमाना और बुरे शब्दों से लिखते हैं, परन्तु मुगल और पठानी हाकिमों की निर्दयता और राक्षस बुद्धि वाले कामों को भूल जाते हैं । सिंघ तो केवल ज़ालिमों को मारते, और किसी को कुछ नहीं कहते थे ।

मराठों ने पंजाब पर कब्ज़ा करना

जब अहमद शाह का नियुक्त किया सूबा भारी फौजों सहित सिंघों से लड़ाई लड़ता मारा गया तो बाकी सूबे भी चौकन्ने हो गये, परन्तु जालन्धर की तरफ मुँह करने का किसी का हौंसला न पड़ा । अदीना बेग की मदद के लिए सिंघ हर समय इसके इर्द-गिर्द ही रहते थे ।

इस समय उधर हिन्दुस्तान के दक्षिण में मराठों व भरतपुरिये जाटों का भारी ज़ोर बढ़ गया था। दिल्ली वालों को कमजोर देख कर यह दोनों ताकतें धीरे-धीरे दिल्ली की तरफ बढ़ रही थीं। इधर तैमूर ने लाहौर से पंजाब की सारी हालत अहमद शाह को काबुल लिख भेजी। अदीना बेग जालन्धरीये को बेशक सिंघों की मदद का पूरा भरोसा था, परन्तु अहमद शाह के हमले की चिन्ता उसको गहरा रोग हो कर लगी हुई थी। वह इसका इलाज किसी और बड़ी ताकत से सांठगांठ कर करना चाहता था। उसकी आँखें कमजोर दिल्ली पर न खड़ी हुईं, मराठों पर जा टिकीं। मराठे भी दक्षिण की तरफ से बढ़कर कई इलाकों पर कब्ज़ा कर चुके थे। इसलिए अदीना बेग ने उनको पंजाब की कमज़ोर हालत बता कर इस पर कब्ज़ा कर लेने का संदेश दिया और अपनी पूरी मदद देने का विश्वास दिलाया।

थोड़ी देर बाद ही मराठों ने तैयारी करके दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। वह समझते थे कि दिल्ली फतेह किये बिना हम पंजाब पर काबिज़ नहीं हो सकते। परन्तु मराठों की शक्ति देख कर दिल्ली के वज़ीर गाज़ी दीन ने उनसे सुलह कर ली। उसने अपनी फौजें साथ देकर मराठों को सरहंद फतेह करने के लिए भेज दिया, क्योंकि उस समय पंजाब में सबसे बड़ी जगह सरहंद ही थी और यहां से किले की धूमें दूर-दूर तक मची हुई थीं। सिंघों ने बंदा बहादुर की फतेह समय इस किले को ध्वस्त कर देने का प्रोग्राम बनाया था, परन्तु बन्दा बहादुर के रोक देने पर सिंघ इसको तबाह और बर्बाद करने से हट गये थे। अब जब मराठों ने इस किले पर हमला किया तो यहां अहमद शाह के नियुक्त किये सूबे ने इनको निकट न फटकने दिया। अदीना बेग जालन्धर वाला भी इस समय इनकी मदद को यहां आ पहुंचा था।

सिंघों ने सरहंद की लड़ाई में आना

यह हालत होती देख बाहर वाले घबरा गये। अदीना बेग ने इस समय मराठों को सलाह दी कि यदि फतेह चाहते हो तो सिंघों की मदद हासिल करो। वे आ जाये तो यकीन जानो, हमारी ज़रूर फतेह हो जायेगी। मराठे

इस समय फिक्रमंद थे, उन्होंने झट यह बात मान ली और संदेश भेज दिया, 'सिंघ जी ! आप प्रतिदिन सरहंद को नष्ट करने की सलाहें करते हो, आओ मिल कर आज इस सरहंद को नष्ट कर ही लें ।'

बहादुर सिंघों को सरहंद नष्ट करने का संदेश क्या पहुंचा, चाव ही चढ़ गये । सिंघ एक दो दिनों में ही सरहंद के निकट आ पहुंचे । लड़ाई के माहिर सिंघों ने जब लड़ाई का मैदान देखा तो झट कह दिया कि इस किले को इस तरह की लड़ाई से फतेह नहीं किया जा सकता । उसी समय कुछ बहादुर सिंघों ने तोपों की मार से बच कर सीढ़ियां ले ले कर किले की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया और दस-पंद्रह मिनटों में ही ज़्यादा सिंघ किले की दीवारों पर पहुंच गये । बस पहुंचने की देर थी, इस बाही के तोपें चलाने वाले तोपचियों को तह-तेग करके तोपें चुप करा दीं फिर तो सारे सिंघ ही हमला करके किले को हो गये ।

इतनी देर में सिंघों ने अंदर का दरवाज़ा खोल दिया । बाहर वाले सिंघ झट अंदर आ घुसे । पलों में ही तेगें चलाते, आवश्यक सामान दारू सिक्के की संभाल करने लगे । जितनी देर को मराठे तथा और फौजी किले अंदर दाखिल हुए, सिंघ 'अकाल-अकाल' करते बाहर निकल गये और जंगलों में जा घुसे ।

जब यह धमाका पड़ा तो अहमदशाही के पैर सारे पंजाब में ही हिल गये तैमूर तथा और सारे इलाकों के काबुल हाकिम बिना लड़ाई अपने-अपने इलाके छोड़ कर काबुल को चल पड़े । मराठों ने बिना देर अटक सारे पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया । अदीना बेग भी निश्चिंत तो हुआ परन्तु अहमद शाह से फिर भी बच न सका ।

अहमद शाह अब्दाली का छठा हमला

अहमद शाह अब्दाली को जब यह खबरें मिली तो उसको और क्रोध आ गया । वह तो हिन्दुस्तान पर कब्ज़े का चाहवान था, परन्तु यह तो अभी पंजाब में ही उसके पैर नहीं टिक सके थे । इसलिए मराठों से बड़ी टक्कर लेने की तैयारी शुरू कर दी ।

हिन्दुस्तान की बड़ी ताकत से टक्कर लेने के लिए अहमद शाह अब्दाली ने इस बार भारी तैयारी की। पंजाब को तो वह समझता ही अपना था और उसको अपने राज्य में गिनता था, इसलिए कम से कम पंजाब को हमेशा के लिए अपने प्रबन्ध में रखने की लालसा उसके मन में प्रबल थी। इसलिए सम्वत विक्रमी 1814 में भारी तैयारी करके उसने हिन्दुस्तान पर छठी बार चढ़ाई कर दी। पंजाब में अटक तक कब्ज़ा कर बैठे मराठों को जब यह खबर मिली तो वे भी बिना लड़े ही इलाके छोड़-छोड़ दिल्ली के निकट इकट्ठे आ हुए और बड़ी टक्कर के लिए तैयारियां करने लगे। आज़ाद फिरते सिंघों को जब यह खबर मिली तो वे भी अपने किलों जंगलों में जा टिके। यह देख कर बेचारा अदीना बेग अकेला कैसे ठहरता, वह भी जालन्धर को खाली छोड़ गया। अहमद शाह ने खुले दरवाज़े, अटक, जेहलम, लाहौर, मुलतान और सरहंद पर कब्ज़ा कर लिया। अहमद शाह को उस समय इतनी जगहों पर ही कब्ज़ा रखने के लिए बहुत सारी फौज बिखेरनी पड़ी थी, इसलिए वह अब दिल्ली की तरफ आगे बढ़ने से रुक गया। उसको आगे मराठों की तैयारी की खबर मिल चुकी थी, इसलिए वह यहां ही इन इलाकों पर अपने सूबे नियुक्त करके वापिस काबुल की तरफ मुड़ गया।

अहमद शाह का सातवां हमला और मराठों से मुकाबला

अहमद शाह पंजाब का प्रबन्ध अपने आदमियों के हवाले करके अभी काबुल पहुंचा ही था कि मराठे फिर मौका पा कर पंजाब की तरफ बढ़ आये। दिल्ली राज्य रस्मी तौर पर अभी अहमद शाह के प्रबन्ध के नीचे ही था, इसलिए मराठों ने पहल दिल्ली से ही की। उन्होंने अहमद शाह के मुकरर वज़ीर को मार कर दिल्ली को खूब लूटा। सिंघ भी इस समय पूर्व में पहुंच कर अच्छी मार धाड़ करने में लगे रहे, परन्तु वापिस आते रास्ते में मेरठ का मुकाबला करते हुए बेअंत सिंघ शहीदियां प्राप्त कर गये।

उधर जब मराठे पंजाब में फिर आ घुसे तो अहमद शाह को भी खबर हो गई। उसने दो वर्ष बाद डेढ़ लाख घुड़सवार लेकर फिर चढ़ाई कर

दी । लाहौर पहुंच कर उसने सब पंजाबी मुसलमान नवाबों तथा और दूर-दूर लखनऊ, नज़ीबगढ़ आदि कई हिन्दुस्तानी इलाकों के मुसलमान नवाबों को भी संदेश दे कर बुला लिया । इस तरह अहमद शाह की फौज की संख्या कोई तीन या साढ़े तीन लाख के करीब हो गई ।

इधर मराठे, जब अहमद शाह ने हमला किया, तो फिर सब कुछ पहले की तरह छोड़ कर दिल्ली के पास आकर ठहर गये और अहमद शाह से टक्कर लेने की तैयारियां करने लगे । अहमद शाह जब लाहौर में बैठा तैयारी कर रहा था, तो मराठे भी दिल्ली निकट बैठ कर उसी तरह भारी जंगी तैयारियां कर रहे थे । इन्होंने दक्षिण से और कुमक (फौज) मंगवाई और कई हिन्दू राजाओं और खास करके भरतपुरी जाटों को उन्होंने अपना साथी बनाने का यत्न किया, परन्तु इस बात में वे कामयाब न हो सके । हिन्दू राजाओं की इसी कमज़ोरी ने उन्हें आगे गुलाम बनाया था, परन्तु अब फिर इस मौके को इनकी कमज़ोरी ने खो दिया । परन्तु फिर भी मराठों की कोई तीन लाख के करीब फौजी गिनती पहुंच गई । जंगी सामान भी उन्होंने भारी गिनती में एकत्रित कर लिया । अब उन्होंने दिल्ली निकल कर पानीपत और करनाल के मैदान में लड़ाई के मोर्चे बना लिये, मराठे भी लड़ाई पर हिन्दुओं में मानी हुई बहादुर कौम थी । इसलिए अब मराठे भी बड़ी चढ़ती कला में थे और अपने ऊपर उनको पूरा भरोसा था । इस तरह तैयारी करके वे अहमद शाह की प्रतीक्षा करने लगे ।

दोनों दलों का मुकाबला और सिंघों के छापे

ठीक उस समय जब अहमद शाह अब्दाली लाहौर से चला, सिंघों को भी इस सारे मामले की खबर लग गई, वे भी अपनी तैयारी छोड़ कर छापे मार जंग के लिए तैयार हो गये । अच्छे दांव भी लगाये । अहमद शाह के मैदान में पहुंचते ही भारी लड़ाई शुरू हो गई । सिंघ भी मैदानी जंग समय अपना काम करते गये । उधर पंजाब इस समय मुसलमान हाकिमों से खाली था क्योंकि सारे हाकिम अपनी-अपनी फौजें ले कर

अहमद शाह के साथ गये हुए थे और सिंघों को रोकने वाला कोई नहीं था, इसलिए सिंघों ने इस समय चुगलों को सोधने में से भी फर्क न रखा।

मराठों की हार

मराठों और अहमद शाह अब्दाली का संग्राम कोई तीन महीने तक लगा रहा और किसी ने भी पैर पीछे न किया। इस समय हिन्दुस्तान में मराठों से उतरकर राजपूत राजाओं की अच्छी ताकत थी परन्तु मराठों से अहमद शाह की लड़ाई में उन्होंने हिस्सा न लिया, क्योंकि उनको किसी ने बुलाया ही नहीं था और न ही एक दूसरे की मदद करने की इनमें परम्परा ही थी। अैपर मुसलमान लखनऊ तक के अहमद शाह के साथ शामिल थे। कहते हैं कि जब राशन खत्म होता है तो दोनों तरफ की फौज़ों में घबराहट फैल जाती है। ऐसे समय में फौजों को संभालना और लड़ाई के ढंगों पर कंट्रोल रखना कोई आसान बात नहीं होती। मराठे भी बेशक माने हुए लड़ाकू थे, परन्तु इस समय दिल छोड़ गये। उधर अहमद शाह स्वयं भुने दाने लेकर फौज़ियों में बांटता, उनके दिल बढ़ाता और हौंसला देता फिरता था इसलिए वह इस नाजुक मौके पर दिल रख गया परन्तु इस तरह लड़ते मराठों के पैर हिल गये और उनका मुख्य नायक बाज़ी राव इस लड़ाई में मारा गया। इस तरह 3-4 महीने की बड़ी लड़ाई के बाद अहमद शाह जीत गया और मराठों का इतना नुक्सान हो गया कि वे दोबारा उठ न सके। उनका सब सामान अहमद शाह के कब्ज़े में आ गया। जो बताते हैं कि कई करोड़ों का था।

इतिहास बताता है कि इस एक मराठों पर फतेह ने अहमद शाह को बड़ा घमंडी बना दिया था। उसको साफ दिखाई पड़ा कि इस समय हिन्द में अब उसको रोकने वाला कौन है ? उसने झट ही आगे बढ़ कर दिल्ली लूटी और आस-पास सौ-सौ मीलों तक उसके फौज़ियों ने लूट मचा दी। जो मन में आया किया बहुत सारे हिन्दू लड़के, लड़कियों को पकड़ लिया गया, जिनको गुलाम बना कर सिरों पर भार चुका कर वापिस ले गया।

अहमद शाह सिंघों के पीछे

इधर अहमद शाह ने अपनी मनमर्जी की और उधर सिंघों ने भी मन भाते छापे मार कर अहमद शाह की रसद, सामान आदि खूब लूटा । जो चीखती-चिल्ला रही जाने, धक्के मार-मार आगे काबुल की तरफ जा रही थी, इनको सिंघों के बिना इस समय छुड़वाने वाला और कौन था । इसलिए इनके लिए सिंघों ने विशेष कर सराहनीय कार्य किया । ब्यास की घाटों को ऐसा घेरा कि दूर तक फैला हुआ यह भारी लाम-लश्कर सिंघों का कुछ भी न बिगाड़ सका और सिंघ अपना काम करते गये ।

लाहौर पहुंच कर अहमद शाह ने विचारा कि मैंने इतनी बड़ी मराठों की ताकत को मार दिया है, परन्तु यह मुट्ठी भर सिंघ मेरा खौफ नहीं खाते । परन्तु अब सिंघ मेरे आगे हैं क्या ? उसने स्वयं लाहौर बैठ कर अपने एक नामी जरनैल बुलंद खां को 7 हज़ार अब्दाली फौज दे कर सिंघों को मारने के लिए भेजा । इस समय सिंघ भी बार की जूहों में जा इकट्ठे हुए थे जो कि सैंकड़ों मीलों में फैला हुआ जंगल था । दुरानी फौजें सिंघों की तलाश करती-करती इसी तरफ जा पहुंची । सिंघ रात-दिन छापे मार जाते और दुरानियों के लाख यत्न करने पर भी उनके हाथ न आते । सिंघों के पीछे कचीची खा-खा गिलजे पठान जंगलों में जाते तो कांटों से लहू-लुहान हो, कपड़े फटवा-फटवा मुड़ आते, यह आधे मील जंगल में मुश्किल से जाते, परन्तु सिंघों के घोड़े तो हिरणों की तरह कई-कई मील सरपट दौड़ते अंदर घुस जाते थे ।

सिंघों का फिर धर्म-युद्ध करना

बुलंद खां की इस तरह लड़ाई में जब पेश न गई तो उसने सिंघों को संदेश भेजा कि आप इस तरह हमें खराब न करो, आओ धर्म युद्ध लड़े, दो या चार हज़ार आप निकलो और इतने ही हम निकलते हैं, बाकी फौजें पीछे रहे बहादुरों की तरह सामने आ कर लड़ो और जो हार जाये

वह पंजाब छोड़ जाये । इस शर्त पर आओ, धर्म युद्ध करें । सिंघ कोई कायर तो हैं ही नहीं थे । इसलिए दो हज़ार जंगी सिंघों को आगे भेज दिया गया और बाकी खालसा दल पीछे रहा । दुरानी भी दो हज़ार आगे बढ़ा और लगा लोहे से लोहा टकराने । याह अली और सति श्री अकाल के बोलों से मैदान गूँज उठा । दुरानियों को अपनी ताकत का बड़ा अहंकार था, परन्तु इस तरह सम्मुख हो कर सिंघों के हाथ भी उन्होंने आगे कभी देखे नहीं थे । इसलिए आधे-पौने घण्टे की लड़ाई में ही आधे दुरानी सिंघों ने मार निकाले बाकी तौबा-तौबा करते भाग निकले । सिंघों ने मैदान छोड़ते दुरानियों को अच्छा मजा चखाया ।

अपनी फौज की भारी हार देख कर बुलन्द खां जुबान से मुकर गया । कसम भी खाई थी कि मैं दगा नहीं करूंगा, वह भी भूल गया और एकदम सारी फौज को हमला करने का हुक्म दे दिया, परन्तु बाकी खालसा पीछे आलसी थोड़े ही खड़ा था, इसलिए आते दुरानियों को सिंघ भी आगे से झपट कर पड़े और ऐसा हमला किया कि बुलंद खां की सारी फौज भी हार गई और बुलंद खां पीछे हट गया ।

बुलंद खां ने जुबान से फिरना और फौज मंगवानी

अहमद शाह अभी लाहौर बैठा था कि बुलंद खां ने और फौज मंगवा ली । सिंघों ने जब और मुसलमानी फौज आई देखी तो वही गुरिल्ला लड़ाई शुरू कर दी । दुरानी जंगलों में सिंघों के पीछे घुसे तो अवश्य, परन्तु रास्ते से नावाकफी और कांटों की बाड़ें, पानी की कमी, उनको काफी दुःखी करने लगी, और सिंघ तो है ही जंगल के बसने वाले थे, उनका यह रोज़ का करतब था वे घोड़े दौड़ाते, हिरणों की तरह जंगल में जा घुसते थे । इसलिए इस तरह डेढ़ महीना खराब हो कर बुलंद खां वापिस लाहौर मुड़ गया । अहमद शाह को खबर दे दी कि सिंघ मेरे काबू नहीं आ सकते ।

कहते हैं कि इतनी देर को लड़के-लड़कियों का और समूह जिनको भार की गांठें चुका कर अहमद शाह के फौजी साथ ले जा रहे थे और

जिनको सिंघ ब्यास के किनारे पर न छुड़ा सके उनको लाहौर कुछ दिन ठहरने के बाद फिर आगे को चला गया । सिंघों को भी इसकी खबर मिल गई । अहमद शाह सिंघों का पीछा जारी रखने का हुक्म दे कर काबुल को चला गया । सिंघों ने इस समूह को चिनाब की घाट पर जा घेरा और अहमद शाह के फौज़ियों को तेग से मार कर उन सभी को मुक्त करवा लिया । उनको खालसे ने खर्च दे कर उनके घर बार का पूरा पता ले कर घरों को पहुंचाया ।

सिंघों ने और किला बनाना

सिंघ भले जंगलों में ही रह सकते थे, परन्तु उनकी ताकत में दिन-ब-दिन वृद्धि हो रही थी । अहमद शाह के नियुक्त किये हाकिम जो सियालकोट और लाहौर आदि में थे, को सिंघों ने खूब सज़ा दी । सियालकोट वाला तो हाकिम मर गया परन्तु लाहौर वाले ने डरते सुलह कर ली, जिसको अहमद शाह ने बर्खास्त कर दिया और उसकी जगह पर और आदमी काबुल से सात हज़ार फौज दे कर भेज दिया ।

इस समय 1816 में दूसरा किला सिंघों ने गुजरां वाले बनाया, जिसका प्रबंध स. चढ़त सिंघ के हवाले किया गया । यह वही किला था जिसमें स. महां सिंघ और महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म हुआ, और किला काफी देर कायम रहा । अहमद शाह के नये बन कर आये सूबे को सिंघों ने ज़ेहलम के घाट पर जा घेरा । उसकी मदद पर इलाके के मुसलमान हाकिम आ गये, परन्तु आखिर लाहौर से जा कर फौज ने उनकी मदद की तो जा कर वे लाहौर पहुंचे । इस नये सूबे ने स. चढ़त सिंघ के किले को जा घेरा । स. चढ़त सिंघ के पास बहुत कम सिंघ थे, परन्तु वे मुकाबले पर डटे रहे और 13 दिन दुश्मन का अंदर से मुकाबला करते रहे, उधर 13वें दिन बाहरले खालसे को खबर हुई तो जो बाहर जंगलों में थे तो वे बाहर से दुश्मन को आ पड़े, जिस कारण मुसलमानों में भगदड़ मच गई । बेशुमार जंगी सामान, तोपें आदि खालसे के हाथ लगीं जो सब किले में टिका दीं ।

जैन खां के ज़ुल्म

अहमद शाह को यह सुन कर बहुत फिक्र हो रहा था। उसने मुलतान के सूबे बुलंद खां और सरहंद के सूबे जैन खां को लाहौर के सूबे की मदद करने के लिए हुक्म भेज दिया। अहमद शाह ने 20 हज़ार और फौज भी भेजी। जब यह फौज लाहौर पहुंच गई तो एक बार फिर सिंघों पर भारी विपदा आ गई। जैन खां ने पट्टी हैड क्वार्टर बना लिया और हुक्म दे दिया कि तीस-तीस सवार हर गांव में रहें और गांवों के नंबरदार को कह दें कि जिस गांव में कोई सिंघ रात-दिन रहा मालूम होगा, उसको लूट लिया जायेगा और सब को कत्ल कर दिया जायेगा। इसलिए इस तरह कुल पंजाब के गांवों ताज़ीरी चौकियां बैठ गईं। कई गांवों में रहने वाले सिंघ और कई पकड़-पकड़ कर कत्ल होने लगे।

सिंघनियों पर जैन खां के ज़ुल्म

सिंघ तो इस समय कहीं दूर जंगल में निकल गये परन्तु पीछे सिंघों के घरों को ध्वस्त कर साफ किया जाने लगा। सिंघों के बच्चे और सिंघनियों को कत्ल किया जाने लगा, कई तो गांवों में ही कत्ल कर दिये गये, परन्तु ज़्यादा पकड़-पकड़ कर पट्टी भेज दिये गये, जहां तीन सौ सिंघनियां बाल-बच्चों सहित पकड़ कर पहुंच गईं। दो तीन दिन तो उन्होंने खाने के लिए ही कुछ न दिया गया, परन्तु तीसरे दिन बाद उनको जैन खां ने कहा या तो मुसलमानियां बन जाओ या कत्ल कर दी जाओगी। सिंघनियां भी सिंघनियां थीं, उनको यदि एक बात कही गई तो उनको आगे से दो सुनाई। फिर ज़्यादा बोलने वाली और करारे जवाब देने वाली को चाबुकें मरवाई गईं परन्तु वे तो धार्मिक थी, गुरु अर्जुन देव जी और गुरु तेग बहादुर जी की कुर्बानियों को याद करके सब दु:खों को खिले-माथे सहार कर भी वाहिगुरु का शुक्र कर रही थी। जब सिंघनियां न मानी तो जैन खां कहने लगा कि कल फिर इनको पूछेंगे, आज इनको छोड़ दो, परन्तु चक्कियां इनके आगे ला रखो और सवा-सवा मन दाने

पिसवायो । जो न पीसे उसके शरीर पर चाबुकें मारो ।

चौथे दिन बाद फिर एक-एक रोटी और एक-एक प्याला पानी सिंघनियों को दिया गया । नवजात शिशु दूध मांगते थे, परन्तु दूध कहां से आये भूखों को बच्चे रो-रो कर नीचे ज़मीन पर ही सो गये । दाने पीसने को मिले तो सिंघनियां दाने पीसती है और गुरु के भाने को मीठा करके मानने का आदर्श याद करती हैं-

तेरा कीआ मीठा लागै ॥

हरि नामु पदार्थु नानकु मांगै ॥

दिन उदय हुआ तो जैन खां ने फिर धर्म (दीन) मानने के लिए सिंघनियों को कहा, दु:खों के डरावे दिये, परन्तु उन्होंने एक न मानी । तब उसने सिपाहियों को सिंघनियों के नवजात शिशु जबरदस्ती छीन लेने को कहा । जल्लादों को कहा, बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करके इनकी झोलियों में डाल दो ।

कहते हैं कि इस ज़ुल्मी कार्य को देख कर कई रहम-दिल मुसलमान भी रो पड़े, परन्तु इस ज़ुल्म को रोकने की शक्ति किसी में न थी । बच्चों के टुकड़ों को देख कर सिंघनियों को दु:ख तो गहरा हुआ, परन्तु अंदर ही अंदर पी गई । आगे जवाब देने वालों के गलों में वह बच्चों के टुकड़े हार बना कर बांध दिये गये । इस समय यदि उनके मुँह से निकला तो केवल वाहिगुरु शब्द ही निकला । ऐसे करके सिंघनियों ने भी इस कुर्बानी की लहर में अपना हिस्सा पूरा-पूरा डाल दिया ।

सिंघों का पट्टी पर हमला

उधर सिंघों को जब इस ज़ुल्मी कार्य की खबरें पहुंची तो उनकी आँखों में खून उतर आया । वे रौब और गुस्से में आ कर पट्टी के इर्द-गिर्द जंगलों में इकट्ठे होने लगे । इस ज़ुल्मी कार्य के छठे दिन बाद (प्रात:) अमृत समय सिंघ पट्टी पर हमलावर हो गये, फौज तो गांवों में बिखरी पड़ी थी, इसलिए सिंघों के इस भारी हमले को किस ने रोकना था । दो-चार हज़ार ने जब सिंघों से मुकाबला किया तो कुछ भी न बिगाड़ सके,

सिंघ बढ़ कर पट्टी में आ घुसे। कायर और मज़लूमों को मारने वाला जैन खां इस समय भागने में कामयाब हो गया और उसने सरहंद जा कर सांस ली। बाकी लाहौर का सूबा मुहम्मद खां और मोमन खां को सिंघों ने घेरे में ले कर जीवित ही पकड़ लिया और इन ज़ालिमों को जीवित ही जलाया गया।

उन धन्यशाली व धैर्यवान सिंघनियों को सिंघों ने छुड़ा लिया। बच्चों के टुकड़ों को देखकर सिंघ भी आग बबूला हो गए। सिंघ गांवों में चौकियां लगाए रुहेले पठानों से भी निपटने लगे और थाने चौकियों को तबाह करने लगे। जब मुसलमान फौज़ियों ने यह हालत देखी तो उनको अपनी जान के लाले पड़ गये। कई चौकियों वाले रातो-रात ही भाग गये। गांवों में रहने का किसी ने भी साहस न किया।

बाबा दीप सिंघ जी का युद्ध

जब अहमद शाह के फौज़ियों को सिंघों ने फिर एक बार मार भगाया तो काबुल बैठा ही अहमद शाह दाँत पीसने लगा। वह कहने लगा–यह पंजाब में हमारी राह में भारी रुकावट साबित हो रहे हैं। यह हमारे पैरों को पंजाब में लगने नहीं देंगे, जब तक इनको खत्म नहीं कर दिया जाता। बहुत बार इन से टक्कर ली है, परन्तु 'मक्खन में से बाल की तरह' दांव नीचे से निकल जाते हैं। जितनी देर तक यह पंजाब के बागी ही नहीं समाप्त होते, मैं आगे दिल्ली आदि पर अधिकार कैसे कायम रख सकता हूँ।

यह सोच-सोच कर अहमद शाह ने अच्छा फौजी लश्कर पंजाब को भेज दिया। कुछ आगे भी फौजें है ही थीं, इसलिए अब लाखों दुरानी फौज सिंघों को मारने के लिए निकल आई।

सिंघ भी भारी मौका सनाश थे, झट घने जंगलों की तरफ निकल गये। कुछ पहाड़ी और कुछ मालवे को निकल गये थे तो अहमद शाह के एक फौजी जरनैल जहान खां ने सात हज़ार फौज ले कर अमृतसर आ छावनी डाली। यहां पहुँच कर उसने यह कुरीति की कि अमृत सरोवर

को पुरवाने लग पड़ा । उसके मन में चुगलों और दोषियों ने यह बात कह कह कर बिठा दी थी कि इस सरोवर के अमृत को पी पीकर ही सिंघ बहादुर और लड़ाके बनते हैं ।

25 साल के बाद मुसलमान हाकिमों का यह पावन श्री हरिमंदिर पर दूसरा हमला था । पहले मस्सा रंघड़ था और अब जहान खां इस काम के लिए आगे बढ़ा ।

सिंघ दूर बैठे थे, परन्तु सिंघों को खबरें मिल ही गईं । इस समय मिसलें लगभग बन चुकी थीं, जिसके जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी थे, जो दमदमे, गुरु की कांशी में ठहरे हुए थे । आप जी ने दशमेश पिता से अमृत छका था । फिर आप साहिबां के हुक्म अनुसार अपने गांव में रहते रहे और आनंदपुर की किसी लड़ाई में आप ने हिस्सा नहीं लिया था । जब सारे युद्ध समाप्त कर कलगीधर जी दमदमे साहिब पहुंचे तो यहां से बाबा जी को साहिबां ने यहां ठहर कर सेवा करने का हुक्म दिया । यहां से श्री दशमेश जी दक्षिण को चले गये और आप उनके हुक्म अनुसार दमदमे ही ठहरे हुए थे ।

बाबा जी जहां शूरवीर योद्धा थे, वहां विद्वान भी थे । इन्होंने अपने हाथ से चार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बीड़ों की लिखाई की, जो बाद में चारों तख्तों पर प्रकाश करने के लिए भेज दी गईं । आजकल जो बीड़ गुरुपर्व के समय समारोह वाले दिन हरिमंदिर साहिब अमृतसर में प्रकाश की जाती है, वह बाबा जी के हाथों की लिखी हुई है । उसकी जिल्द पर सोने से मीनाकारी की हुई है ।

इतिहास में ज़िक्र आया है कि जब बाबा जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की लिखाई शुरू की तो एक कोठा पहले उन्होंने कलमों का घड़-घड़ कर भर लिया । फिर लिखने बैठ गये । जब लिखते-लिखते कलम कुछ घिस कर मोटी हो जाती तो आप ने उस कलम को सरोवर में डाल देना तथा और कलम ले लेनी । यह देख निकट एक सिंघ ने कहा, 'बाबा जी ! कलम तो अभी अच्छी होती है और आप उसको फैंक देते हैं, चाकू से ज़रा साफ हो जाये, तो कितना ही उससे और

लिखा जा सकता है ।'

'सिंघ जी ! आप ने मेरे भाव को नहीं समझा । बाबा जी कहने लगे, 'जो कलम महाराज जी की पवित्र बाणी को लिखती है क्या उस बाणी की पवित्र छो से पावन हुई कलम के मुँह को चाकू से छीलूँ ? उसका सम्मान करने की बजाय उसका अपमान करूं ? नहीं यह मुझ से नहीं हो सकता ।'

पाठक जी, यह उस सिर हथेली पर रख कर लड़ने वाले बाबे की महान श्रेष्ठता की एक मिसाल है । ऐसी ऊँची सूरत वाले शूरवीर बहादुर बाबा जी को जब अहमद शाह के फौज़ियों की तरफ से खरमस्तियों की खबर पहुंची तो आप के मन को तीर सा लग गया, हृदय छलनी-छलनी हो गया । श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर में बैठे अपने साथ के साथी सिंघ को कहने लगे, 'बस अब और जीना की जरूरत नहीं । सेवा करते बड़ा समय व्यतीत हो गया है बहुत हो गई है, अब यह शरीर इस सेवा नमित लगाने का समय आ गया है । यदि जीना है तो श्री हरिमंदिर साहिब जो की इज्जत को कायम रख कर जीना है । सिक्ख की सिक्खी कैसी हुई यदि उसके जीते उसके धर्म-अस्थानों की बेअदबी हो रही हो । इसलिए आओ, जिसने शहीदी पानी है वो हमारे साथ तैयार हो जाये ।'

बाबा जी की बात सुन कर साथ के सिंघ भी तैयार हो गए । अखंड पाठका भोग डाल कर नगारे पर चोट लगा कर बाबा जी चल पड़े । लक्खी जंगल (मालवे) में से और सिंघ भी बाबा जी के साथ चल पड़े । हरी के पतन के रास्ते यह सिंघ श्री तरनतारन आ पहुंचे, यहां कई और सिंघ भी आ मिले और सारे सिंघ कोई दस हज़ार हो गये । यहां सिंघों ने स्नान किये महाराज के हजूर अरदास की गई और कड़ाह प्रसाद के भोग लगाए गये कहते हैं कि केसर छिड़क कर शहीदी दूल्हे बन कर सिंघ घोड़ों पर चढ़ कर जैकारे छोड़ते अमृतसर की तरफ चढ़ पड़े ।

सिंघों की चढ़ाई की खबर मुसलमानों को मिल गई और वे अब्दाली, जो समझते थे कि यह सिंघ हमारे आगे क्या हैं जो सामने हो कर कभी लड़े हैं नहीं, हम झट इनको भगा देंगे, या मार देंगे, वे भी लड़ने की

तैयारियां करने लगे । इसलिए बख्शी जहान खां अपने सात हज़ार जवान ले कर सिंघों को आगे से रोकने के लिए गोहलवड़ आ पहुंचा और लाहौर से कुमक मंगवा भेजी । जब सिंघ भी गोहलवड़ पहुंच गये तो फटाफट एक दूसरे की तरफ तीर और गोलियां चलने लगीं और सूरमे खूब ज़ोर दिखाने लगे । सिंघ तो मरने-मारने सोच कर आये थे वे एकदम दुश्मन के ऊपर चढ़ गये ।

कहते हैं कि जहां जहान खां नामक एक फौजी सरदार हाथी पर चढ़ कर फौज को लड़ा रहा था, सिंघ फौज़ पर टूट गई, उस तक बढ़ गये । जहान खां ऊपर बैठा तीर चला रहा था । शहीद दयाल सिंघ जी ने इस समय कमाल कर दी । घोड़े को टपाते और नचाते जहान खां के सामने चले गये और घोड़ा भी कोई कमाल ही होगा । उस ने भाई साहिब के इशारे को समझते कमाल कर दिया अपने पैरों को ऊँचा खड़ा कर हाथी के माथे पर टिका दिया और शहीद सिंघ जी की फुर्ती देखो कि इतनी तेज़ी से रकाबों में खड़े हो कर तेग चलाई कि जहान खां का सिर कद्दू की तरह नीचे आ गिरा और हाथी धड़ को लेकर पीछे मुड़ गया । सबसे बड़ा सरदार जब सिंघों ने इस दिलेरी से मार लिया तो सिंघों के हौंसले बढ़ गये और बाकी मुसलमान सरदार आग बबूला होकर लड़ने लगे । बड़ा घमासान युद्ध हुआ । इतने में लाहौर से और फौज आ गई परन्तु सिंघ तो आये ही शहीदियां लेने थे इसलिए उनको फौज के आने का क्या डर था । सिंघों का पैर आगे ही पड़े, शहीदी पाने वाला सिंघ पुर्जा-पुर्जा होकर गिरता । दो चार घावों की तो सिंघ परवाह ही न करता । और इसी कारणदस-दस दुश्मनों को मार कर एक-एक सिंघ शहीद हो रहा था ।

बाबा जी के धड़ ने लड़ना

सिंघ दो ढ़ाई मील मुसलमानों को धक कर ले गये, परन्तु ब्बे से दूसरी तरफ एक मुसलमान पाँच हज़ारी सरदार से बाबा दीप ंघि जी का द्वंद युद्ध हो गया । अकेले से अकेला लड़ने लगा और बाकी खड़े हो गये । संयोग से दोनों शूरवीरों के सिर एक ही बार उतर गए। बाबा

जी का सिर उतर गया तो निकट से एक सिंघ ने आवाज़ दी, बाबा जी ! आप तो श्री अमृतसर पहुंचने का प्रण करके चले थे, परन्तु अमृतसर से दो मील पहले ही क्यों ठहर गए हो ?'

आत्मिक-मंडल तक पहुंच न रखने वाले गुरमुख तो चाहे इस बात को धर्मांधता (तअसब) की निगाह से ही देखेंगे, परन्तु जो समझते हैं कि जन (गुरमुख-भक्त) की ज़िन्दगी चौथे पद में होती है, वे हैरान नहीं हो सकते ।

उनको विश्वास है :-

'चऊथे पद महि जन की जिंद ॥'

इसलिए कहते हैं कि उस सिंघ की बात सुनते ही बाबा जी का धड़ सिर के बगैर उठ खड़ा हुआ । धड़ ने बायें हाथ पर सिर को रख लिया और दायें हाथ में खंडा पकड़ कर फिर दुश्मन पर धावा बोल दिया । पहले की तरह ही दुश्मन को मारने और ललकारने लगे । हाथ पर रखा सिर ही-सिंघों, पकड़ लो इन ज़ालिमों को, हरिमंदिर की बेअदबी का बदला ले लो । ओए दुष्टो ! आओ, मेरे साथ, युद्ध करो, अब मैं तुम्हें जीवित काबुल नहीं जाने दूँगा ।'

यह अलौकिक दृश्य कि सिर के बिना धड़ लड़-लड़ कर जीवित को मारता जाये, दुश्मनों के लिए बहुत डरावना दृश्य बन गया और अब दुश्म्न हैरान हो गया । परन्तु सिंघ यह देख कर पहले से दुगुने-चौगुने होकर लड़ने लगे । इस समय और भी कई सिंघ इतने जोश से लड़ते चले जा रहे थे । दुश्मन के लिए अब लड़ना तो क्या आगे खड़े रहना भी मुश्किल हो गया । सिंघ भागतों को भगाते अमृतसर आ पहुंचे ।

यहां पहुंच कर फिर भारी युद्ध हुआ । बाबा जी तो सुधासर के किनारे तक पहुंच कर अपना वचन पूरा करके गुरुपुरी को सिधार गये परन्तु दुश्मन के एक दैत्य कद जरनैल 20 हज़ारी ने सिंघों से, जहां गुरु का बाग अमृतसर में आजकल शहीद गंज बना हुआ है, भारी लड़ाई की । सिंघ भी बड़े शहीद हो गये, परन्तु इस दैत्य कद जरनैल को भी जब सिंघों ने मार लिया तो फिर अब्दाली झट अमृतसर के क्षेत्र को छोड़ गये और अटारी के पास

जा कर उन्होंने फिर हमला करने की तैयारी शुरू कर दी ।

बाबा गुरबख्श सिंघ जी की शहीदी

ऐसे लगता है कि जब बाबा दीप सिंघ जी दमदमा साहिब से चले तो उन्होंने सभी तरफ सिंघों को संदेश भेजे थे कि आओ जिस ने युद्ध में शामिल होना है, वह हमारे साथ आ मिलें । बाबा गुरबख्श सिंघ जी भी शहीदों की मिसल के ही जत्थेदार थे और यह चार हज़ार सिंघों सहित इस समय श्री आनंदपुर साहिब रुके हुए थे । इन को बाबा दीप सिंघ जी का संदेश मिल गया था । इन्होंने भी चढ़ाई की तैयारी की और अमृतसर की तरफ चल पड़े । रास्ते के फर्क कारण आप बाबा दीप सिंघ जी के जत्थे के साथ न मिल सके । आप बाबा दीप सिंघ की शहीदी से 4-5 दिन बाद अमृतसर पहुंचे । यहां आगे जो सिंघ शहीद हो चुके थे, बचे हुए अभी उनके संस्कार ही कर सके थे, बाकी हरिमन्दिर की सेवा अभी सारी होने वाली थी । पवित्र सरोवर में मिट्टी डाल कर सारा ही भरा पड़ा था । बाबा जी के आने पर नये आये सिंघों ने यह सेवा बड़ी जल्दी खत्म की ।

उधर दुश्मन गिलजे और पठान अटारी के पास पीछे से और कुमक की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उन को ओर सिंघों के पहुंचने की खबर निल गई । वह अब अटारी को छोड़ कर लाहौर चले गए ।

अहमद शाह को जब यह खबर मिली तो उसने फिर ताड़ना करके भेजी कि 50-60 हज़ार फौज़ के यहां मौजूद होते हुए भी आप थंड़े से सिंघों को काबू नहीं कर सकते ? आगे तो कहते थे कि सिंघ जंगलों में चले गए, इसलिए हमारे काबू नहीं आते, पर अब तो बाहर फित्ते को भी आप नहीं संभाल सकते ? जल्दी करो और हमला करके सिंों को अमृतसर में से निकाल दें । यह हुक्म मिलते ही 20 हज़ार दुरानी फौज़ यहां की ढेर सारी ओर मुसलमानी फौज़ सिंघों को मारने के लिए अृतसर को चल पड़ी ।

इधर अमृतसर जब यह खबर सिंघों को मिली तो बाबा गुरबख्श सिंघ जी ने उसी समय सब सिंघों को एकत्रित करके सुना दिया कि जेस ने

सिर देना हो, वहीं यहां रहे जिस ने रणभूमि में से खिसकना है, वह अभी चला जाए। हमने यह साबित करना है कि सिंघ जब शहीदियां लेने की खातिर लड़े। फिर वह मैदान में से नहीं भागते। कुछ सिंघनियां थीं, उन्होंने भी बाबा जी को भेज दिया। इसलिए खिसकने वाले और नकली सिंघ जल्दी से खिसकते हुए और पांच हज़ार सिंघ यहां रह गए जो मरने मारने के लिए डट कर खड़े हुए।

सिंघों ने भी मोर्चे बंदी कर ली और आते दुश्मन पर सभी ने गोली चला दी और दुश्मन को खबरदार किया कि ज़रा ध्यान से आगे बढ़ें।

इस बार भी घमासान युद्ध मचा। दारू सिक्का खत्म होता देखकर सिंघों ने मोर्चों में से निकल कर दुश्मन पर हमला कर दिया, दुश्मन ज़्यादा थे, परन्तु सिंघ तो शहीदियां लेने की खातिर ही लड़ रहे थे, इसलिए गोलियों, तीरों को झेलते हुए सिंघ दुश्मन दल के बीच चले गए और बड़े-बड़े सरदार, सिंघों की तेग की भेट हो गए।

इतिहास बताता है कि बाबा गुरबख्श सिंघ जी भी सिर गिरने के बाद चार घड़ियों तक (सवा घंटा) लड़ते रहे, दुश्मन तो जीवित से ही भाग रहा था, सिंघ के धड़ से कौन लड़े ? इसलिए सब मुसलमान यह दृश्य देख, डर कर भागने लगे और धीरे-धीरे वह मैदान छोड़ गए। इस के बाद फिर कभी भी दुश्मन का अमृतसर की तरफ मुँह करने का हौंसला न पड़ा और शहीदों की मिसल ने असली शहीदों वाला कारनामा करके दुनिया को बताता दिया कि हमारा नाम ही 'शहीद' नहीं बल्कि असली और अमली तौर पर हम शहीद हैं। बाबा जी का शहीदी अस्थान श्री अकाल तख्त साहिब के पिछली तरफ है। जो अभी तक इस स्थान की शाहदी भर रहा है कि निरोल गुरु आसरे हो जाने वाले और मन को गुरबाणी से जोड़ने वाले कितने उच्च अस्थानों के मालिक बन जाते हैं।

इसलिए इस सिरलब बहादुरों की लड़ाई के बाद पंथ फिर सुधासर के किनारे आ एकत्रित हुआ, और दुरानी भाग कर लाहौर चले गए। उन्होंने माझे के गांवों में रहने का सबब भी सिंघों ने एक बार खत्म कर दिया। यह साका 1817 के शुरू का है।

खालसे ने कसूर फतेह करना

बाबा दीप सिंघ और बाबा गुरबख्श सिंघ की लड़ाई ने दुरानियों के हौंसले पस्त कर दिये। फिर किसी मुसलमानी फौज ने अमृतसर की तरफ मुँह न किया। सिंघ अब इलाकों पर कब्ज़ा करने लग पड़े। कई गांवों और खास कर दोआबे के इलाके में सिंघों ने बहुत सारे गांवों पर कब्ज़ा कर लिया।

1818 की वैसाखी को सब मिसलें और जत्थों ने श्री अमृतसर पहुंचने का फैसला कर लिया। दूर-दूर से सिंघों और जत्थों को इस मौके पर अमृतसर पहुंचने के लिए संदेश भेजे गये। देश के हाकिम चाहे अभी मुसलमान ही थे, परन्तु अब उनका वह दब-दबा नहीं था, जो वह अपनी हर मनमर्जी चला सके। परन्तु फिर भी देश के कुछ हिस्से ऐसे थे, जिनमें वह अपने घोड़े इस तरह दौड़ा रहे थे।

जब दोआबे देश के बहुत सारे क्षेत्र पर सिंघों ने कब्ज़ा किया था तो उस समय से ही सिंघ मज़लूम जनता की पुकार सुन कर ज़ालिमों को दंडित करने के लिए चढ़ाईयां करने लग पड़े थे। इस दौरान दोआबे के कई नवाब जो नौजवान हिन्दू लड़कियों को छीन ले जाना आदत ही बना बैठे थे, सिंघों ने उनकी खूब धुनाई की, जिस कारण फिर दबी हुई जनता में भी कुछ जान आ गई थी।

समय अनुसार इस बार वैसाखी पर खालसे का बहुत भारी समारोह हुआ। दूर-दूर खबर हो गई। निंदक और चुगल तो डरते इलाके में से भाग गये कि कहीं हमारी ही शामत न आ जाये। इतिहास बताता है कि इस समय कसूर के कुछ दुखी ब्राह्मणों ने, जिन्होंने हिन्दू राजों-महाराजों और बड़े-बड़े नवाबों और बादशाह के पास जा कर भी प्रार्थना की पर किसी ने उनको मदद नहीं की थी। उन्होंने और सब तरफ निराश होकर खालसा जी के पास बेनती की और कसूर के हाकिमों की ज़्यादतियों का बयान किया कैसे उनकी बहू-बेटियों की इज्ज्त लूटने के ज़ुल्म दिन दिहाड़े ही किये जा रहे थे।

इन पुकार करने वाले पंडितों में एक ऐसा ब्राह्मण था, जिसकी नई नवेली दुल्हन को कसूर के हाकिम उसमान खां ने डोली में से निकलते ही अपने कब्ज़े में ले लिया था, और ब्राह्मण के शोर मचाने पर उसको मार-मार कर शहर में से ही बाहर निकाल दिया गया था। इस दुःखी ब्राह्मण ने फिर भारी यत्न और सफर करके अपनी आपबीती की कहानी बड़े-बड़े हिन्दू राजपूतों और राठौर राजाओं को सुनाई, पर किसी ने भी उसकी बाजू न पकड़ी, इसलिए उसको यह भूल जाने का उपदेश ही सब स्थानों से मिला।

कसूरी पठानों के घमण्ड और ताकत की उस समय सारे देश में धूम मची हुई थी। कसूर शहर के इर्द-गिर्द बारह किले बड़ी-बड़ी खाईयां वाले बने हुए थे, जिसमें तोपें, जंबूरचे तथा और जंगी सामान इतना था कि जिसका शुमार हिसाब ही कोई नहीं था। यह पठान बाबर के समय से जहां जम कर बैठे हुए थे और 70 लाख की जागीर का भारी इलाका इनको बाबर ने ही दिया था। इलाके की प्रजा खास कर हिन्दुओं पर नवाबों की तरफ से जज़िया कर और मौलवी साहिबानों के फतवे हर समय ही सादर होते रहते थे। यही कारण थे कि कसूरी पठानों की इस भारी ताकत के कारण कोई नवाब और महाराजा डरता मारा इधर मुँह नही करता था, और इनकी मज़हबी शरहा ने इनको खुली छूट दी हुई थी। यह पठान हमाकती यहां तक दिलेर हो गये थे कि दिन-दिहाड़े ज़ुल्म कर कर लोगों की बहू-बेटियों की *इज्जत लूट रहे थे। और ताकत इनको रोकने वाली है कोई नहीं थी।

---

* इखलाक की पवित्रता ही मनुष्यता का असल धुरा है परन्तु राज्य के नशे में चूर हो कर मनुष्य इस मनुष्यता के ऊँचे और सच्चे आदर्श से गिर पड़ता है। तारीख बताती है कि मुस्लिम हाकिम इस अनर्थ में सबसे आगे बढ़ गये थे। अकबर की हकूमत समय यह काम आम हुआ, जहाँगीर राजा मान सिंघ की बहन के पेट से पैदा हुआ था।

दरअसल मुसलमानों में तो किसी औरत या मर्द को ज़बरन अपने मज़हब में दाखिल करना सवाब माना जाता है परन्तु सिक्ख धर्म इसको पाप और ज़ुल्म मानता है।

ठीक इस समय राजे, महाराजे और देवी-देवताओं की तरफ से निराश हुए ब्राह्मणों को किसी ने सलाह दी तुम खालसे के पास अमृतसर जाकर अपनी आपबीती सुना, वही मरना मारना प्रण कर तेरी मदद कर सकते हैं और किसी की आशा मत करो। ब्राह्मण को जब श्री गुरु तेग बहादुर जी की सहायता का कारनामा याद आया तो उसने खालसे पास पहुंचने का उद्यम आरम्भ दिया। उसने अपने कुछ साथी ब्राह्मणों को साथ लिया और यह सारे श्री अमृतसर आ पहुंचे। आगे श्री अकाल तख्त साहिब की हज़ूरी में सिंघों का भारी दीवान लगा हुआ था। इन्होंने दीवान के निकट पहुंच कर ऊँची-ऊँची रोना और कुरलाना शुरू कर दिया-हे गुरु के सिंघो ! हम लूटे मारे गये। आओ, हमारी मदद करो।'

एक सिंघ ने निकट आ कर इनको कहा-ब्राह्मणो ! धैर्य करो, आराम से हमें बताओ, तुम्हें किसने दुःखी किया है, लूटा या मारा है ?'

यह सुन कर उस स्त्री को खो चुके ब्राह्मण ने आगे हो कर रो-रो कर अपनी आपबीती कह सुनाई और फिर कहा-हे गुरु तेग बहादुर और गुरु गोबिन्द सिंघ जी के पैरोकार परोपकारी खालसा जी ! हमारी मदद करो, हमें इन ज़ालिमों के ज़ुल्मों से बचा लो।'

तब बड़े जत्थेदार जी ने उनको हौंसला देकर एक तरफ बिठा दिया। अब दीवान में इस बात पर विचार होने लगा कि इनकी मदद कैसे की जाये। परन्तु किसी फैसले पर पहुंचने से पहले ही श्री हरी सिंघ भंगियां की मिसल वाले के मन में पता नहीं क्या आया कि वह अकेले ही जा कर ब्राह्मण को कह आये कि खालसा पंथ तुम्हारी मदद करेगा और दुष्टों के कब्ज़े में आई ब्राह्मणी को खालसा ज़रूर छुड़ायेगा।

जब बाकी मिसलों के जत्थेदारों ने यह बात सुनी तो वह कहने लगे-स. हरी सिंघ जी, आपने बिना सोचे यह बात क्यों कहनी थी। पता है कि वहां कितनी ताकत है ? कितने किले हैं ? कितनी फौजें और तोपें हैं ? कुछ सोच समझ कर बात करनी थी।

सरदार हरी सिंघ जी कहने लगे-'मैं यह नहीं जानता कि ठीक क्या है या गलत, परन्तु गुरु पंथ का हुक्म ऐसा करने के लिए कहता है। देखिए

मज़लूम की मदद करनी, यही मेरे पंथ का हुक्म है । बाकी वहां किले बड़े हैं और तोपें तथा फौजें बड़ी हैं, इस विचार में खालसे को नहीं पड़ना चाहिए, पंथ का वाली अपने काम स्वयं करने वाला है । बाकी यदि आप न जाओगे, तो हरी सिंघ अकेला ही जायेगा । दुष्टों को फतेह करेंगे या शहीदियां लेंगे । मैं इस बात से अब पीछे नहीं हटूँगा ।'

स. हरी सिंघ यह कह कर पीछे हटे थे कि स. चढ़त सिंघ जी उठ कर खड़े हो गये । कहने लगे-'खालसा जी, सिंघ का वचन हो गया है, इसलिए चढ़ाई ज़रूर करनी चाहिए । यदि कोई शंका है तो चलो अब हरिमंदिर साहिब चल कर गुरु महाराज के आगे अरदास करें और फिर उनका जो फरमान आये, उसी तरह कर लेना ।'

यह सलाह सबको पसंद आ गई । उसी समय कड़ाह प्रसाद की देगें तैयार की गईं । फिर बड़े प्रेम से अरदास हुई । इसके बाद सिंघ साहिब ग्रंथी सिंघ जी ने सुखह अटल......का दोहरा पढ़ कर वाक लिया तो यह हुक्म आया-

सलोकु ॥

'फाहे काटे मिटे गवन फतहि भई मनि जीत ॥'

यह वचन सुनकर अटूट भरोसा रखने वाले सिंघों ने जैकारों की घनघोर लगा दी । कहने लगे-कसूर तो फतेह ही हुई पड़ी है । यह फतेह तो हमें महाराज ने दिलानी है इसलिए ढील नहीं करनी चाहिए और नगारों पर चोट अभी ही लग जानी चाहिए । इसलिए इस तरह फैसला हुआ और कसूर पर चढ़ाई कर दी गई ।

सिंघों ने अमृतसर से चलकर पहला पड़ाव पिपली साहिब किया और दूसरा अटारी राजा के तालाब के पास । यहां से जासूस भेज कर खबर मंगवाई गई । कसूर के उच्च पठानों को यह सपने में भी याद नहीं था कि उन पर सफेद दिन कोई चढ़ाई कर देगा । वे बदमस्त इसलिए भी थे कि वे शाही रास्ते से कुछ दूर ही थे और किलेबंदी मजबूत होने के कारण किसी विदेशी हमलावर ने भी इधर मुंह नहीं किया था । नादिर तो एक बार आया, परन्तु अहमद शाह कई बार आ चुका था । इसी कारण

ही कसूर की आबादी बढ़ रही थी और लोग उसको बचाव वाली जगह समझ कर वहीं आ बसे थे ।

जब सिंघों की चढ़ाई की खबर लोगों को लगी तो उन्होंने सिंघों की चढ़ाई पर बड़ा अचम्भा प्रकट किया, कई लोगों ने तो सिंघों को चढ़ाई न करने की सलाह दी, परन्तु गुरु और गुरु के हुक्मों पर अटूट भरोसा रखने वाला खालसा भला अब कैसे इस बात को मान सकता था ? सिदकी सिंघों ने आगे कहा–'दुनिया की किसी चीज़ पर शक या भ्रम हो सकता है, परन्तु गुरु महाराज के वचनों पर भरोसा न करना महान गलती है । गुरु महाराज के वचन सति है, अटल हैं और अटल ही रहेंगे ।'

जब दूसरे पड़ाव से सिंघ चलने लगे थे कि जासूस भी आ गया । उसने खबर दी कि पठान बिल्कुल निश्चित मौज़ों से सोये हुए हैं । उनको अहमद शाह के हमले के बिना और किसी का डर ही नहीं । वह गर्मी से बचने के लिए दिन समय ठंडे भोरों से बाहर ही नहीं निकलते । साथ ही जासूस ने सलाह दी कि खालसे को दोपहर समय हमला करना चाहिए ।

यह खबर सुनकर खालसे ने चाल तेज़ कर दी और सिंघ सारी रात ही चलते गये और प्रातः काल तक कसूर से पहले 10 मील सतलुज किनारे जा डेरा लगाया । कुछ आराम किया और फिर नितनेम किया । दिन निकलते खान–पान करके सूर्य निकल जाने पर दस बजे के बाद सिंघ चल पड़े । सतलुज के किनारे–किनारे गये और ठीक आधी दोपहर कसूर पर जा पड़े । गर्मी कारण पठान भोरों में घुसे ठण्ड का आनन्द ले रहे थे । किले के पहरेदार भी इधर–उधर कोनों में गर्मी से छिप कर गप्पें मार रहे थे । इसलिए सिंघ चुपचाप ही खुले दरवाज़े जा पड़े । एकदम बांट अनुसार सब किलों में दाखिल हो गये और तलवारें चलाने लगे । सिंघों ने इस समय ऐसी फुर्ती दिखाई कि कोई सम्मुख हो ही न सका । लेटा या बैठा उठा, जैसे भी थे, सिंघों ने उसी तरह दबोच लिया । खासकर उसमान खां के किले में तो सिंघों से एक भी पठान सिपाही न बच सका । भोरे में घुस कर बैठे उसमान खां को सिंघों ने पकड़ लिया और उसको किये की खूब सज़ा दी । बेचारी ब्राह्मणी ब्राह्मण के हवाले कर दी गई ।

इस तरह सिंघों ने कुछ घण्टों में ही सारी गढ़ियों पर कब्जा कर लिया। सिंघ तो इसी दिन ही दोषियों और दुष्टों को सजाएं देकर शाम को वापिस चल पड़े, परन्तु बताते हैं कि बाद में तीन दिन तक चोरों-डाकुओं ने यहां आम तौर पर लूटपाट मचाई रखी और पठानों की लाशों से कसूर की गली और बाज़ार भर गये।

कसूर की फतेह बहुत भारी फतेह थी। सिंघों को इस फतेह से यश और धन भी बहुत मिला और घोड़े, गोली-सिक्का, हथियारों आदि से सिंघ मिसलों की हालत पुख्ता और पक्की हो गई।

सिंघों की जीते, उनका और इलाकों पर कब्ज़ा

सिंघों ने कसूर से मुड़ते ही गुरदासपुर, बटाला और पठानकोट के बीच के सारे इलाकों पर कब्जा कर लिया। यह देखकर जालन्धर, पसरुर और कलानौर के मुसलमान हाकिम घबरा गये। उन्होंने अपना लश्कर जोड़ कर सिंघों को आगे से आ रोका और लड़ाई छेड़ ली। यहां भी भयंकर घमासान युद्ध मच गया, क्योंकि दुश्मन की गिनती बहुत अधिक थी। सिंघ सोचने लगे कि यदि इनसे इस समय हम हार गये तो फिर पंजाब में हमारे पैर लगने कठिन हो जाएंगे। इसलिए सिंघों ने अरदास की और जैकारे छोड़े और करो-मरो वाली जंग लड़ने लगे। कलानौर और पसरुर वाले हाकिम तो मारे गये, परन्तु जालन्धर वाला भाग गया और इस तरह यह फतेह भी सिंघों को मिल गई।

इस फतेह ने सिंघों के हौंसले और बढ़ा दिये। इसके बाद सिंघों ने दोआबे और माझे के बहुत सारे इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया। अब बाकी मुसलमान हाकिम हर समय फिक्र करने लगे कि सिंघ कहीं हमारे इलाके की तरफ न बढ़ आएं। परन्तु सिंघ अब लाहौर पर कब्ज़ा करने के लिए विचार कर रहे थे।

लाहौर को सब सरदार मारना चाहते थे, परन्तु आगे वहीं लगना चाहते थे, जिसने वहां कब्ज़ा रखना हो। इसलिए आखिर इस मुहिम के लिए स. जस्सा सिंघ रामगढ़िये ने अगुवाई करनी मान ली तथा और सरदारों

ने मदद देनी । स. हरी सिंघ भंगी मिसल वाला भी साथ हो गया और इस तरह सिंघों का रुझान अब लाहौर की तरफ हो गया ।

सिंघों ने लाहौर पर हमला करने की बजाये पहले लाहौर के आस-पास आक्रमण कर मुसलमान अबादियों को लूट कर मार भगाया । लाहौर का सूबा यह देखकर किले-बंद हो बैठा । उसके पास इतनी शक्ति नहीं थी कि खुले मैदान में आकर सिंघों से मुकाबला करता । हालत यह हुई कि शहर वाले बेचारे तंग आ गये । सिंघ कोई चीज़ बाहर से शहर में नहीं आने देते थे । यह देखकर शहर के लोगों ने स. जस्सा सिंघ से सुलह कर ली और लूट मार से डरते शहर को चुपचाप ही सिंघों के कब्ज़े में दे दिया । इस तरह करके लोगों ने सुख की सांस ली, परन्तु सूबा किले में कैद हो गया । यह घटनाक्रम सम्वत 1818 के शुरू के हैं ।

इधर यह बात हुई और उधर मालवे में स. दयाल सिंघ बराड़ ने सरहंद के आसपास ऐसे छापे मारे कि उस फरेबी और ज़ालिम जैन खां सूबा सरहंद की जान कंदल कर दी, जिसने पट्टी में सिंघनियों पर भारी ज़ुल्म किये थे । मुसलमान हाकिम अहमद शाह को याद करने लगे । संदेश भेजने लगे कि जल्दी आएं ।

अहमद शाह का आठवां हमला

जब सिंघों ने लाहौर को कब्ज़े में ले लिया तो केवल किला ही अहमद शाह के सूबे के पास रह गया तो वह बहुत दुःखी हुआ । वह अंदर से ही अहमद शाह को संदेशे भेजने लग पड़ा कि मुझे आकर बचाओ । उधर सिंघों ने गुरु के जंडियाले को जा घेरा, क्योंकि यहां का हरि भगत निरंजनियां सिंघों का बड़ा अपराधी और चुगल था । उसने बड़े सिंघ मरवाये और पकड़वाये थे । सिंघनियों के पकड़वाने में भी उसका प्रमुख हाथ था । इसी कारण ही सूबा लाहौर की तरफ से यहां उसको बड़ी भारी जागीर इनाम के तौर पर मिली हुई थी । इनके बड़े भाई हिंदाल को सेवा करने के कारण गुरु घर से बड़ा मान और मंजी मिली थी, परन्तु उसकी औलाद ने सिंघों से विपरीत बड़ा भारी वैर कमाना शुरू कर दिया था ।

इन चुगलों ने एक नकली जन्म साखी बना कर कई ऊट-पटांग कहानियां भी गुरु जी की शान के विरुद्ध उस में लिख मारी थीं । इसलिए सिक्ख उन पर हर समय दांत पीसते रहते थे । अब जब पंजाब के दोषी हाकिमों को सिंघों ने एक बार मार कर समाप्त कर दिया या घेरे में ले लिया तो फिर इधर से हट कर उन्होंने सिंघों के बड़े दुश्मन निरंजनीये को शोधने के लिए गुरु के जंडियाले जा घेरा । उधर अहमद शाह अब्दाली बड़ा खिझा हुआ था । जब निरंजनीये ने अपने आप को सिंघों के घेरे में देखा तो उसने अपनी छोटी सी हवेली-किले में घुस कर अपने थोड़े से आदमियों को साथ लेकर लड़ाई शुरू कर दी । साथ ही उसने कई लाख रुपये देने का वायदा करके अहमद शाह पास अपने आदमी को भेज दिया कि कैसे वह चोरी आ जाये ।

जब अहमद शाह को हरि भगत निरंजनीये का यह निवेदन भरा मदद के लिए संदेश पत्र मिला, जिस में कई लाख देने का वायदा किया हुआ था, तो उसने तैयारी तो पहले ही की हुई थी, उसने झटपट डेढ लाख सवार लेकर आठवीं बार हिन्द पर आक्रमण कर दिया । इस बार उसको सिंघों की ही शिकायतें मिली थीं और विशेष कर वह सिंघों से ही एक-दो-एक करने के इरादे से चढ़ आया था । सिंघ उसके सूबों तथा और हाकिमों को पंजाब में टिकने नहीं देते थे और यहीं बात उसको बहुत खटकती थी । जब हिन्दुस्तान के राजपूत और मराठे उसके आगे बोलते नहीं, उसके डर को मानते और उसको भेटें और नज़राने ले ले कर आगे आ आ कर मिलते हैं और मेरी जी हजूरी करते हैं, तो यह मुठ्ठी भर सिंघ उसके रास्ते का रोड़ा क्यों बने हुए हैं ? इसलिए इन बातों के कारण उसको सिंघों पर बड़ा गुस्सा था और इन विचारों के कारण ही वह अब धावा करने आया । उधर सिंघों को भी खबर मिल गई ।

दूसरा बड़ा घल्लूघारा

जब सिंघों ने यह खबर सुनी कि अहमद शाह फिर आक्रमण करने आ गया है, तो वे सब इलाके पर घेरे डाले छोड़ कर अमृतसर आ एकत्रित

हुए, क्योंकि पीछे सिंघों के बाल-बच्चों को दुश्मन बहुत तंग करता था, इसलिए इस बार सिंघों ने अपने बाल-बच्चे पहले ही संभाल कर अपने साथ ले लिये । कहते हैं कि इस समय तीस हज़ार जंगी सिंघ इकट्ठे हो गये । गुरमत्ता करके उन्होंने बाल-बच्चों को कुछ सिंघों के साथ मालवे की तरफ रवाना कर दिया ।

अहमद शाह ने अपने आगे-आगे फौज देकर एक फौजी सरदार को भेजा कि तुम जाकर सिंघों को आगे से रोको परन्तु सिंघ फौज आने से पहले ही जंगलों में आ घुसे और लगे अपनी पहली चाल चलने । सिंघों की ताकत अब पहले से अधिक थी और वे कुछ समय जम कर भी लड़ सकते थे, परन्तु क्योंकि इलाके के मुसलमान भी सिंघों के शत्रु थे और वह भी सिंघों से ईर्ष्या करते थे, इसलिए जंगल ही सिंघों के सच्चे सहायक थे । जब सिंघ जंगलों में से निकल-निकल कर आगे अचानक छापे मारे तो उनका हमला कौन सहन करे ? जिस तरफ से सिंघ छापा मारते, जब दुश्मन उस तरफ साहस करता तो सिंघ 10 मील दूर और तरफ से जा छापा मारते, मार-काट और छीना-झपटी कर जाते । कई दिन ही अहमद शाही फौज सिंघों को मारने के लिए पीछे-पीछे फिरती रही, परन्तु कोई पेश न जाती देखकर वापिस अहमद शाह को रुहतास के पास खबर दी गई कि सिंघ हमारे काबू नहीं आते । यह सुन कर अहमद शाह अपने लश्कर सहित लाहौर आ पहुंचा । यहां उसको बड़े फौजदार ने बताया कि सिंघों से लड़ने की हमारी कोई पेश नहीं है । सिंघ घने जंगलों में है, जहां हाथ-हाथ जितने लम्बे कांटे और शूलों जैसे सरकंडे खड़े हैं, वे हमें तो एक पैर भी चलने नहीं देते, परन्तु सिंघ उसमें ऐसे भागे-फिरते हैं जैसे कांटे होते ही नहीं और सिंघों के अचानक हमलों ने हमारी जान कठिन कर दी है इसलिए हम वापिस आ गये हैं ।

यह सुनकर अहमद शाह और रिसा तथा चमका । अब उसने फौज की कमान स्वयं संभाल ली । सभी देशी मुसलमान हाकिमों को भी बुला कर साथ ले लिया और सिंघों पर हमला कर दिया । ऐसा लग रहा था कि सारा जहान ही सिंघों को मारने के लिए निकल पड़ा । उधर सिदकी

सिंघ गुरु के भरोसे बेखौफ इस फौज से भी टकराने लगे । छापे मारते बेशक स्वयं भी कई जगह घेरे में आकर शहीदियां पाने लगें, परन्तु दुश्मन को भी चैन न लेने देते । यह हालत देख कर अहमद शाह ने जंगलों को आग लगानी शुरू कर दी । सिंघ यह खेल पहले कई बार देख चुके थे । इसलिए वे बड़ी सफाई से उस जंगल को छोड़ दूसरे जंगल में जा घुसते, अहमदशाहिये देखते ही रह जाते । जिस जंगल में सिंघ जाते, अहमद शाह फिर उस जंगल को जा घेरता और इस तरह अहमद शाह भी दो महीने सिंघों के पीछे पड़ा रहा । सिंघ भी इस दौरान चाहे काफी तंग हुए, परन्तु मजबूरी तौर पर अब्दाली सिंघों का कुछ भी न बिगाड़ सका । आखिर अहमद शाह जालन्धर से आगे कुछ थकावट महसूस करने लग पड़ा और आराम करने के लिए वापिस लाहौर आ गया । सिंघ सतलुज पार कर आगे निकल गये ।

सिंघों ने यहां पहुंच कर मालेकोटला, रायकोट, सरहंद तथा और मुसलमान हाकिमों के इर्द-गिर्द धूम मचा दी और उनका काफिया बहुत तंग करके रख दिया । उन्होंने दु:खी होकर यह खबर अहमद शाह पास भेजी । यह सुनकर अहमद शाह फौज सहित पट्टी आ गया और नई स्कीमें सोचने लगा कि कैसे वह सिंघों पर कामयाब हमला कर सके । वह यह स्कीमें सोचता था कि उधर से मलेरिया नवाब, सरहंद का सूबा तथा और मुसलमान हाकिम अहमद शाह के पास पहुँचे और सहायता की मांग की कि हम लूटे जा रहे हैं । सिंघ हमें तबाह कर रहे हैं । अहमद शाह गुस्से में आ गया और दांत पीसने लगा कि यह मुठ्ठी भर सिंघ हमारे काबू नहीं आते, मुगल इनको मारते-मारते स्वयं मर गये, परन्तु जीवित तैसे ही आकी फिर रहे हैं । अब मैंने सारा ज़ोर लगाया है, मेरे कई फौजी सरदार इनके हाथों मारे जा चुके हैं और फौज का अंत ही कोई नहीं कि कितनी मर चुकी है । परन्तु यह तो हज़ारों की गिनती में ही सुने गए हैं, फिर वैसे के वैसे हज़ारों की गिनती में ही कायम हैं ।

ऐसी झूरने वाली बातें करके अहमद शाह ने उन हाकिमों को कहा कि आप जाकर अपने इलाके में लड़ाई छेड़ कर सिंघों को वहां व्यस्त

रखो और जंग जारी रखो, और यत्न करो कि मेरा आप की मदद पर आने का उनको पता न लगे । मैं तीसरे दिन सुबह लाली निकलते, अचानक सिंघों को खुले मैदान में आ घेरुंगा ताकि यह जीवित बचकर न निकल सकें और यह रोज़ की मुसीबत समाप्त हो जाये ।

सूबा सरहंद जैन खां, मलेरिया हाकिम और रायकोटिया नवाब अपनी-अपनी फौजें जोड़ कर वहां सिंघों से फिर आ जुड़े । इनकी साज़िश का सिंघों को पता न लग सका, इसलिए वह बेफिक्र रहे कि यह मामूली फौजों वाले हाकिम हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं । इस समय सिंघों के बाल-बच्चे भी साथ ही थे जो कुछ दिन पहले मालवे की तरफ रवाना किए गए थे । यह जत्था भी दस हजार का होगा ।

अहमद शाह ने सिंघ घेर लेने और सिंघों का सिरों की बाजी लगा कर लड़ना

उधर तय प्रोग्राम अनुसार अहमद शाह सिर पर आ पहुंचा । सूर्य की लाली फूटते ही कोई 3 लाख के करीब मुसलमान लगभग तीस हज़ार सिंघों पर हमलावर हो गये । सिंघों ने जब यह देखा तो झटपट तैयार हो गये और यह समझ लिया कि समय अब "जब आव की अऊध निधान बनै" वाला समय बन गया है । इस समय सिंघों ने झटपट हमले का जवाब दिया और कुछ समय के लिए इस आई बाढ़ को रोक लिया, परन्तु इस बाढ़ को ज़्यादा देर के लिए रोक रखना असम्भव जानकर मुखिया सिंघों ने झटपट लड़ने की यह युक्ति बनाई कि वहीर को आगे लगा कर बाकी के तीन तरफ आप जत्थे बनाकर, पैर बांध कर लड़ते हैं । इसलिए 10-15 मिनटों में ही सिंघों ने लड़ाई ऐसे ढंग की बना ली, साथ ही सिंघ लड़ते रहे और साथ ही चलते भी जाये । दुरानी हमले करे और जिधर उनका ज़ोर पड़े, सिंघ भी एक बार अकाल-अकाल करते उसी तरफ पड़ जाये और ऐसी सिर धड़ की बाज़ी लगाये कि दुश्मन को पीछे हटा कर ही दम ले ।

इस तरह सिंघ लड़ते-भिड़ते दो मील आगे निकल गये । यह देखकर

अहमद शाह उन दोषी मुसलमानों मलेरिये आदि को खीझ कर पड़ा कि आप मेरे आदमियों को मरवाते जा रहे हो, आप आगे क्यों नहीं होते ? और यह कह कर उसने एक बार फिर सिंघों पर फिर भारी हमला करवाया। कहते हैं कि इस समय सिंघ कोई चार मील के दायरे में बिखर कर लड़ रहे थे। इस हमले में दुश्मन सिंघों के इस बिखराव में दाखिल हो गया। यह देखकर जत्थेदार नवाब कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया तथा और मिसलों के सरदारों ने एकदम सलाह करके अपने बिखराव को झटपट कम किया और इन्होंने सिंघों का एक गोल दायरा बना कर सारे वहीर को बीच ले लिया। पीछे रामगढ़िया सरदार, आगे आहलूवालिया, दाएं स. चढ़त सिंघ और बाएं शहीदों की मिसल वाले हो गये, लगे सिर धड़ की बाजी लगाकर लड़ने। बाकी मिसलों वाले सिंघ रिजर्व में खड़े हो गये कि जहां दरार पड़े वहां जा डटे, इसलिए जिस तरफ सिंघों का घेरा कहीं टूटता नज़र आता, उधर यह रिजर्व झट उस टूटती दरार को पूरा करने के लिए दुश्मन पर टूट पड़ते और इस तरह दूर-दूर तक दुश्मन को पीछे धकेलते, उसकी फौजों में घुस कर मरना-मारना प्रण कर सिंघ लड़ने लगे। इस समय सिंघ सरदार सिंघों को इस तरह कह-कह कर लड़ा रहे थे-

'खालसा जी ! सिक्खी को लाज़ न लगाना आप पैर पीछे न करना, फिर अमृत छके की लाज स्वयं गुरु रखेगा। सिंघों, हम उस गुरु गोबिन्द सिंघ के सिंघ हैं, जिसने केवल 40 सिंघों को साथ ले कर दस लाख का मुकाबला किया था, हम तो फिर भी 30 हजार हैं। बहादुर बनो, हौसला रखकर दुश्मन को मार कर शहीदियां प्राप्त करो, परन्तु देखना पैर पीछे न पड़े। सिंघों ! यह सिदक और यकीन रखो कि वह कलगियों वाला हमारे अंग संग है और उसके पंथ को कोई मार नहीं सकता। आगे भी वह हर विपदा से पंथ को बचाता आया है और अब भी बचायेगा।'

इसलिए सिंघ इस तरह लड़ते-भिड़ते वहीर को बचाते हुए आगे हो बढ़ रहे थे। सिंघों के इस गोल-दायरा किले में बढ़कर आने वाला कोई भी पठान या अफगान किसी हालत में बच न सकता। इस तरह लड़ते

तीन चार घण्टे बीत गये । सिंघ बीर रस में मस्त अपने शरीरों की सुध भूल कर लड़ रहे थे । स. चढ़त सिंघ को कहते हैं कि इस समय तक 16 घाव लग चुके थे, इस तरह और कई सरदार जो घोड़े दौड़ा-दौड़ा कभी आगे कभी पीछे, जिधर दुश्मन बढ़ता सिंघों को लड़ाते और हल्लाशेरी देते फिर रहे थे । एक सिंघ ने इस समय स. चढ़त सिंघ को इस तरह कह दिया, 'सरदार जी, आप कहते थे कि यदि अहमद शाह सामने आये तो एक बारी उसको तेग का मज़ा चखाये और अब क्या देखते हो, अब तो अहमद शाह सिर पर चढ़ आया है, बलशाली हो, लो टक्कर अब ।' यह शब्द स. चढ़त सिंघ को गोली की तरह लगे । वह इस बोली को सह न सका और झट घेरे में से बाहर निकल दुरानियों की फौज में जा घुसे । साथ कुछ और सिंघ भी मिल गये और लगे आवाज़ें देने, 'ओए अहमद शाह आ बहादुर बन कर हमारे साथ युद्ध कर, बेचारी फौज को क्यों ऐसे ही मरवा रहा है ।' परन्तु अहमद शाह तो कहीं फौज के पीछे था और सरदार चढ़त सिंघ की तरफ देखकर और भी सरदार बढ़-बढ़ कर दुरानियों की फौज में घुस घुस कर मार-काट कर रहे थे । सिंघ आगे बढ़-बढ़ कर अहमद शाह को आवाज़ें भी मार रहे थे । जब सिंघ इस तरह करने लगे तो अहमद शाह को भी खबर हो गई । उसने स्वयं तो क्या लड़ना था, परन्तु वह उन हाकिमों जैन खां और भीखन खां मलेरिये को लताड़ कर कहने लगा, 'ओए, तुम अब जानें क्यों बचाते छिपते फिरते हो, मेरी फौज को सिंघ कैसे मार रहे हैं, देख नहीं रहे आप ? जाओ सिंघों को आगे जाकर रोको, नहीं तो फिर सिंघों की तरफ से हट कर तुम से ही हाथ न करने पड़ जाएं ।'

अहमद शाह की यह धमकियां सुनकर वे बेचारे बहुत घबराये । उसी समय अपनी फौजों के घोड़े भगा-भगा कर सिंघों पर एकदम हमला करने के लिए ललकारने लग पड़े । सिंघों के अगली तरफ वहीर थी और उस के साथ थोड़े से सिंघ थे, यह सारे इकट्ठे होकर उनसे पूरा ज़ोर लगा कर लड़ने लग पड़े । यह खबर जब पिछले सिंघों को लगी, तो सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया झट अपनी मिसल के सिंघों को साथ लेकर उनकी मदद

के लिए पहुंच गये । इधर अहमद शाह के जरनैल बुलंद खां और जहान खां ने आगे बढ़ कर सिंघों पर हमला कर दिया और सिंघ भी आगे कौन से कम थे । जीत या शहीदी का उसूल बना कर लड़ रहे सिंघ बढ़ रहे दुश्मन को एकदम घोड़े दौड़ा कर आगे हो कर पड़ गये । बड़ा घमासान मचा, इस समय घोड़ों के सुम्मों से उड़ी धूल और बारूद के धुएं ने आसमान में चमक रहे सूर्य की किरणों को घेरे में ले लिया । इस गहरे घमासान समय सिंघ सरदारों ने सिंघों को इस तरह ललकारा–

'हे सिंघों, यह समय हमारे लिए परीक्षा का बना गया है, देखना फेल न हो, यह जानें कलगीधर पातशाह को अर्पण कर दो और वैरियों के मार–मार अंग उतार दो ।'

इस समय स. चढ़त सिंघ तो बुलंद खां की तरफ हुआ और स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया जहान खां की तरफ । पलों में शूरवीर लथ–पथ हो गये । धरती को रक्त ने सींच दिया और धूल रक्त में समा गई । इस घमासान युद्ध में सिंघों के हाथों बुलंद खां और जहान खां दोनों मारे गये । उधर जैन खां जख्मी होकर आप तो पीछे हट गया, परन्तु और फौज दे कर बाकी सरदारों को आगे कर दिया । इस समय इतिहासकारों के कथन अनुसार दस–दस बीस–बीस और कई तीस तक को मार–मार कर सिंघ शहीद हो रहे थे । कुछ देर ऐसी जम कर लड़ाई हुई कि मील डेढ़ मील में रक्त का तालाब लग गया ।

सिंघों का इरादा था कि वहीर तक दुश्मन न पहुंचने दिया जाये, इसलिए सिंघों ने इस रणभूमि में पतंगों को भी मात कर दिया । सिंघों को इस बहादुरी से लड़ता देख कई सरदार तो ऊँची–ऊँची कहने लगे, धन्य खालसा, धन्य सिक्खी, शाबाश खालसा जी ! एक बार ऐसी तलवार चलाओ कि इन ज़ालिम दुरानियों के अहंकार को तोड़ कर रख दो, यदि इस बार हम जीत गये तो फिर यह गिलज इस धरती पर ठहरना क्या मुड़ कर पैर नहीं रख सकेंगे ।' सचमुच ही इस समय सिंघों ने इस तरीके से लड़ाई लड़ी कि गिलज़ों के लड़ने का अहंकार टूट गया । सिंघों की इस नीति को ज़रा देखो कि वह स्वयं लड़ रहे थे, परन्तु वहीर को आगे

बढ़ा रहे थे, जो दो मील तक आगे थोड़े से सिंघों की हिफाजत में चला गया था । अहमद शाह को इस बात का पता लगा तो उसने इस रण-भूमि में पीछे से और फौज ले जाकर उस वहीर पर हमला कर दिया और कई बच्चे, बूढे और सिंघनियों को कत्ल कर दिया ।

सुबह की लड़ाई हो रही थी और ऐसे जंग के समय सिंघों ने खाना क्या था और पीना क्या था ? जीवन मृत्यु की यह जंग थी । सिंघों को जब वहीर पर हमले की खबर हुई तो पांच-सात हज़ार सिंघों ने घोड़ों को दौड़ा कर वहीर को जाकर संभाला और वहीर के बालक, स्त्रियों और बूढ़ों को कत्ल कर रहे अहमद शाह दुरानी पर सिंघ ऐसे जोश से पड़े कि कुछ मिनटों में ही अहमद शाहियों से आगे निकलने का रास्ता बना लिया । अब धीरे-धीरे लड़ते-भिड़ते सिंघ फिर आगे को चल पड़े । सिंघों के नेत्र इस समय लाल हुए पड़े थे और अहमद शाह पूरा ज़ोर लगा कर भी सिंघों को आगे बढ़ने से रोक न सका ।

सिंघों ने अहमद शाह के घेरे में से निकल जाना

रोटी तो क्या सुबह का किसी ने पानी तक नहीं पिया था । दोनों दल पानी के बिना प्यासे थे । सिंघों को यहां एक पानी की ढाब का पता था, इसलिए एकदम इन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया । कठूर की ढाब रोक कर सब सिंघों ने स्वयं पानी पिया और घोड़ों को भी पिलाया । उधर दुरानियों को पता लगा तो वे पानी लेने के लिए बड़े उतावले थे, इसलिए फिर यहां भयानक युद्ध शुरू हुआ । दुरानियों ने बड़े हमले किये, परन्तु सिंघों को भी ख्याल था कि यदि इन्होंने पानी पी लिया तो यह रात तक हमारे पीछे पड़े रहेंगे । इसलिए सिंघ भी बड़े साहस से लड़े और ऐसा पैर जमा कर लड़े कि दुश्मन के जम कर लड़ने के गुमान को भी तोड़ दिया । हार कर दुरानी पीछे हट गये और प्यास ने उनको ऐसा सताया कि एक दम खुश्क हो गये । रात तक मुश्किल ही किसी पानी वाली जगह पर पहुंचे । सिंघ रात होने पर जंगली इलाके मालवे में जा ठहरे । यहां पहुँच कर आराम करने लगे । इस इलाके के सिंघों ने इस समय

खालसे की भारी सेवा की ।

अहमद शाह ने चिढ़ कर हरिमंदिर साहिब को बारूद से उड़ाना

रात व्यतीत करके दुरानी प्रातः काल वापिस मुड़ गए । बहुत सारे सिंघों के सिर कटवा लिये गये । परन्तु फिर भी अहमद शाह हैरान था कि इस जंग में भारी नुक्सान करवा कर जा रहा हूं । 25-30 हज़ार अपने फौज़ियों को मरवा कर मुश्किल से 10-12 हज़ार सिंघ मार सका हूं और इतनी जंग करके भी मैं सिंघों को हरा नहीं सका । इन्हीं बातों में ही अहमद शाह अमृतसर आ पहुंचा । यहां उसे चुगलों ने बहका कर और गलती करवा दी । उसके मन में हरिमंदिर को गिरा देने का इरादा घुसा दिया । इसलिए इस पावन अस्थान के चारों तरफ बारूद के कुप्पे रख कर आग लगवा दी । नीवें रह गईं और ऊपर से हरिमंदिर की सारी इमारत उड़ गई । ईंटें बारूद से बड़ी दूर-दूर तक उड़ गईं । एक ईंट अकाल तख्त के निकट खड़े यह सब कुछ देख रहे अहमद शाह अब्दाली के नाक पर जा लगी । ईंट से उसे गहरी चोट लगी, नाक फिस्स ही गया । यहां लाहौर जा कर अहमद शाह ने कई दिन नाक का इलाज करवाया । आराम न आया और काबुल चला गया । इसके बाद चाहे पांच-छः साल जीवित रहा, परन्तु इसी नाक के दुःख से ही आखिर यह बहुत तंग आकर मरा ।

यह बड़ा घल्लूघारा महीना वैसाख सम्वत 1819 में हुआ, जिस में लगभग 30 हजार दुरानी मारे गये और 13 हज़ार के लगभग सिंघ शहीद हुए और घायल होने से तो शायद कोई भी न बच सका था ।

श्री हरिमंदिर साहिब अमृतसर

खालसा पंथ का यह वह महान तीर्थ है, जिसको सिक्खी का स्रोत समझ कर दुश्मनों ने इसे सफा-इ-हस्ती से मिटा देने का सारा ज़ोर लगाया और सिंघों ने इस खातिर अपनी जानें कुर्बान कीं । इसीलिए इस पावन अस्थान के कण-कण में सिक्ख शहीदों का खून रचा पड़ा है । हज़ारों-

लाखों सिक्ख परवानों ने इस शमां पर अपना आप वार कर इस सिक्खी स्त्रोत को संजीव रखा और गुरु से महान बरकते प्राप्त की हैं। इसी कारण और इस पावन अस्थान का यही चुम्बकीय-आकर्षण है कि आज दूर-दूर बैठा सिक्ख इसके दर्शनों के लिए हर समय तांकता और अरदासें करता है। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इसीलिए लिखा है-

डिठे सबे थाव नही तुधु जेहिया ॥
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिया ॥
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइअै रामदास सर ॥१०॥

श्री हरिमंदिर साहिब का पुनर्निर्माण

सिंघ घल्लूघारे के बाद मालवे में जाकर रहे और वहां घायल सिंघ धीरे-धीरे जब आरोग हो गये तो फिर जत्थेदारों ने बैठ कर सारे हालात को विचारा। जितना खालसे को घाटा पड़ा था उतने और अमृत छक कर नये सिंघ सज गये। उधर अहमद शाह की तरफ से श्री हरिमंदिर साहिब की बेअदबी करने की खबर सिंघों को मिल चुकी थी। दोनों छत्तें और सरोवर का पुल उड़ चुका था। अहमद शाह एक महीना लाहौर रुक कर देखता रहा था कि सिंघ अब क्या करते हैं, परन्तु सिंघों को लगभग छः महीने आराम करने में लग गये। अहमद शाह समझता था कि अभी बहुत युवा (गबरु) सिंघ मुझ से बच कर निकल गये हैं, वह रुकेंगे नहीं, अमृतसर जरूर आएंगे। परन्तु उसका यह भी ख्याल था कि यदि सिंघ अमृतसर न आये, तो मुड़ कर मुझसे मुकाबले पर भी नहीं आ सकेंगे।

सिंघों को जब होश आ गई तो वह झट अपनी पहली चालों पर ही आ गये। सबसे पहले उन्होंने अहमद शाह की मदद करने वालों की भुगत संवारनी शुरू की। श्री हरिमंदिर साहिब जी की बेअदबी की खबरों ने सिंघों के मनों में गुस्से की आग लगाई हुई थी। इसलिए उन्होंने सबसे पहले मालेरकोटला को जा घेरा। वहां मार-काट करके फिर रायकोट और मोरिन्डा को जा शोधा। इधर से हट कर कुराली और सरहंद के

बीच ऐसी धूम मचाई कि जैन खां का अब हौंसला ही न पड़े कि वह सिंघों के मुकाबले पर आये। वह डरता किले से बाहर ही न निकला।

सिंघों को अमृतसर पहुंचने की शीघ्रता थी और बेअदबी की बेचैनी उनको अब और टिकने नहीं देती थी। इसलिए धीरे-धीरे सिंघ तेगें चलाते और अपनी कसरें निकालते सतलुज और ब्यास को पार कर अमृतसर आ पहुँचे; और यहां पहुंच कर हरिमंदिर की दशा देखकर सिंघों को जो दु:ख हुआ, उसका क्या बयान करें। कई जोर-जोर से रोने ही लग पड़े। सिंघों के मन में इस समय अहमद शाह के विरुद्ध भारी रोष जाग पड़ा और मन बना लिया कि इस समय हिमायतियों को शोध कर इससे भी बदला लेना है। सिंघों ने पहले मिट्टी से पूरे हुए सरोवर को साफ करने की सेवा की और फिर हरिमंदिर की सेवा को सिरे चढ़ाने के लिए अरदास की गई और अपनी मजबूरी की क्षमा और सेवा करने की समर्था बख्शाने की सतिगुरों से मांग की गई। सब प्रमुख सिंघ इस काम के लिए जरूरी सामान इकट्ठा करने के उद्यम में लग गये।

सम्वत 1819 में दीपमाला के मौके पर सिंघों का श्री अमृतसर में भारी समारोह हुआ। इस मौके पर श्री हरिमंदिर की सेवा आरम्भ करने का प्रोग्राम बनाया गया। सब सिंघों ने इस काम के लिए समर्था से अधिक हिस्सा पाया और इस तरह कोई 4 लाख रुपया और सामान इकट्ठा हो गया। खालसे के लिए अभी यहां ठहरने का मौका नहीं था। इसलिए यह सेवा भाई देस राज जी के हवाले कर दी गई। कुछ सिंघ उनकी मदद के लिए छोड़ कर बाकी सिंघ अपने राजकीय प्रबन्धों को संभालने के लिए चले गये।

सिंघों ने फिर इलाके कब्ज़े में लेने

सिंघों की जब चढ़ाई हुई तो कई जगहों का उनको बिना लड़ाई के ही कब्ज़ा मिल गया और बाकी पर तेग के ज़ोर से कब्ज़ा कर लिया गया। अहमद शाहियों को सिंघों ने फिर मार भगाया। अहमद शाह को ऐसी आशा नहीं थी, परन्तु जब काबुल उसको यह खबरें मिलीं तो वह बड़ी

चिन्ता में पड़ गया । उसने अपने पुत्र तैमूर को फौजें देकर सिंघों का मुकाबला करने के लिए भेजा, परन्तु वह भी लड़-लड़ हार गया और सिंघों का कुछ भी न बिगाड़ सका, बल्कि लाहौर पर कब्ज़ा करके वह लाहौर के किले में ही बन्द हो गया । बाहर निकल कर लड़ने की उसमें शक्ति नहीं थी, और लाहौर में किसी चीज़ को भी सिंघ दाखिल नहीं होने देते थे । अहमद शाह को खबर मिली तो उसने और फौज देकर हमीद खां और अब्दुल खां को तैमूर की मदद के लिए भेजा ।

इस समय तक सिंघ कई जत्थों में बंट कर सारे पंजाब में दूर-दूर तक बिखर चुके थे । परन्तु सरदार चढ़त सिंघ जी गुजरां वाले के निकट जो खालसे ने किला बनाया था, उसी में ठहरे हुए थे, और बहुत सारे इलाके पर उन्होंने कब्ज़ा किया हुआ था । आगे जब इस किले को अहमदशाहियों ने घेरा तो सिंघों ने दुश्मनों को करारे हाथ लगा कर भारी जंगी सामान अपने कब्ज़े में किया जो इस किले में रख दिया गया था । अब जब अहमद शाह ने तैमूर की मदद के लिए जो फौज भेजी, उस ने फिर इस किले को आ घेरा । अंदर सिंघ कम थे और स. चढ़त सिंघ जी ने बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया, परन्तु राशन पानी के समाप्त होने से अंदरले सिंघ बहुत तंग आ गये । आखिर इन्होंने बाहर निकल कर करो या मरो की नीति बनाई ही थी कि दूर बैठे सिंघों को इस घेरे की खबर लग गई । इसलिए इस सख्त समय बाहरले सिंघों ने इन अब्दाली की फौजों पर हमला कर दिया । उधर से अंदरले सिंघ भी बाहर निकल कर दुश्मन पर पड़ गये । अब अब्दाली ने लाहौर की तरफ दौड़ कर बचने का यत्न किया, परन्तु भागते दुश्मन का 10 मील तक सिंघों ने पीछा किया और अच्छी काट डाली । सिंघों के हाथ फिर दुश्मन का भारी जंगी सामान आ गया, जो फिर इस किले में रख कर स. चढ़त सिंघ के हवाले कर दिया गया ।

सिंघ जब अपने-अपने इलाकों को वापिस चले गये तो स. चढ़त सिंघ ने चढ़ाई करके जेहलम और चिनाब के बहुत से निचले इलाके पर कब्ज़ा कर लिया । फिर जेहलम निकल कर अब्दालियों के बड़े ठिकाने

पर हमला कर दिया। यहां का हाकिम अहमद शाह का चाचा था, जिसको स. चढ़त सिंघ ने जीवित पकड़ लिया, परन्तु कुछ दिन कैद रख कर छोड़ दिया और कहा, काबुल चले जाओ।

उसने काबुल जा कर सिंघों के साहस और बहादुरी की बड़ी तारीफ की। अहमद शाह ने स. चढ़त सिंघ को एक चिट्ठी लिख कर कहा- 'सरदार जी, आप मेरा सिंघों से समझौता करवा दें। सिंघ मुझे कुछ देना मान कर पंजाब पर सदैव राज करें, मैं कभी इधर चढ़ाई नहीं करूंगा।'

स. चढ़त सिंघ ने यह चिट्ठी अमृतसर सिंघों के पास भेज दी। परन्तु खालसे ने बड़ा शानदार उत्तर दिया। लिखा-'अहमद शाह ! खालसा तेरा दिया कुछ नहीं लेगा, सिंघ तो गुरु की बख्शी तेग के सहारे राज्य प्राप्त करेंगे। तेरा डर हमें कोई नहीं, कल आना है, तो आज ही आ जाओ। स्वयं गुरु की बख्शी हुई (तेग) तलवार इस बात का फैसला देगी कि पंजाब तुम्हारा है या हमारा।'

अहमद शाह सिंघों का उत्तर सुन कर कुछ समय के लिए चुप हो गया।

सिंघों का सरहंद फतेह करनी

इन दिनों में जबकि पंजाब में खालसे का बोलबाला हो रहा था और तुर्क हाकिम गिर रहे थे, अमृतसर बैठे खालसे में विचार चल पड़ी कि खालसे को गुरु-मारी सरहंद को मारने का यत्न करना चाहिए। गुरु महाराज का वचन है कि 'मेरा खालसा सरहंद की नींवें उखाड़ कर सतलुज में फैंक देगा।' 50-60 साल हो गए हैं इस वचन हुए को, परन्तु सरहंद अभी जैसी की तैसी कायम है हे खालसा पंथ, हमारा गुरु वचन को पूरे किये बिना जीवन ही क्या है ? उस सूबे वजीद खां ने तो साहिबज़ादों को शहीद किया था, परन्तु अब के सूबे जैन खां ने तो सैंकड़ों हमारे बच्चों को मरवाया है, क्या ऐसी जुल्मी सरहंद जैसी गुरु-मारी नगरी को और कायम रहने देना चाहिए ? उठो खालसा जी, अब देर न लगाओ। पापी जैन खां को भी मारें और गुरु के वचनों को भी पूरा करें।

सिंघ सरहंद पर कई देर से दांत पीस रहे थे, परन्तु कोई मौका ही

नहीं मिला था । पहले जब बंदा सिंघ बहादुर ने सम्वत 1767 में सरहंद पर हमला करके विजय प्राप्त की तो उस समय दुष्ट वजीदे और पापी सुच्चा नन्द को तो किये का फल दिया गया, परन्तु सरहंद को उजाड़ने और जलाने की बजाये कायम रखा गया । इसलिए इस किले को सिक्ख राज्य की मदद के लिए प्रयोग किया जा सके । क्योंकि यह किला बड़ा प्रसिद्ध और हिन्द का सिर कहलाता था, इस ख्याल ने सरहंद को सुरक्षित रहने दिया, परन्तु इस पापिन नगरी ने तो पाप ही कमाया है जब तक यह कायम रहेगी । ठीक है यहां का किला दिल्ली के लाल किले से भी मजबूत और लड़ाई में अधिक सुरक्षा वाला था । इसकी फसील इतनी चौड़ी थी कि इसके ऊपर दो तोपें इकट्ठी इधर-उधर आ-जा सकती थीं, तथा तोपों और हथियारों का इस किले में इतना बड़ा ज़खीरा था कि सरहंद सचमुच ही हिन्द का सिर था । इसलिए किले की ऐसी हालत देख कर ही बाबा बन्दा सिंघ जी ने स्वयं इस किले पर कब्ज़ा जमा लेने का ख्याल बना लिया था । चाहे आम खालसा इस बात के विपरीत था और सतिगुरुों के वचनों को याद करके सरहंद की नींवें उखाड़ देना चाहता था, परन्तु उस समय बाबा बंदा सिंघ जी के हुक्म आगे सभी ने सिर झुका दिया था ।

1767 के बाद आठ-दस साल सिंघों के ऐसे निकले कि मुसलमान राज्य की जड़ें ही उखड़ गई थीं, परन्तु बाबा बंदा सिंघ जी से बिगड़ जाने के कारण सारा काम ही बिगड़ गया, उस समय तत खालसा और बंदई खालसा, दो धड़े हो जाने के कारण मुसलमान राज्य का स्तम्भ बना रहा ।

फिर 1820 तक सिंघों के मन तो इस बात पर दृढ़ थे कि इस सरहंद को उजाड़ना और बर्बाद करना है, परन्तु सिंघ इसमें सफल न हो सके थे । इस समय के दौरान सिंघों पर अथाह मुसीबतें आईं और कई बार यह भी ऐलान हो गये कि सिंघ अब रहे ही नहीं, परन्तु भारी मुसीबतों का सामना करते हुए भी सिंघ अपने इरादे पर डटे रहे ।

आखिर 1821 में खालसे ने यह गुरमत्ता शोध दिया कि सतिगुरु के किये हुए इन "मेरा खालसा इस सरहंद की नींवों को उखाड़ कर सतलुज में फैंक देगा और ज़ालिमों को किये का फल ज़रूर चखाएगा" को अब

पूरा किया जाये ।

इस समय जंगी खालसे की संख्या लगभग 30 हजार के करीब थी । सब अरदासा शोध कर सरहंद की तरफ चल पड़े । चलते समय खालसे को यह खबर मिल गई कि जैन खां सूबा सरहंद इस समय किले से बाहर है और सहारनपुर की तरफ किसी मुहिम पर गया हुआ है । इस खबर को सिंघों ने खुशियां चढ़ा दीं और इरादा कर लिया कि इस ज़ालिम को किले में दाखिल नहीं होने देना ।

लड़ाईयों से फायदा उठाने वाले चोर डाकू भी खालसे की चढ़ाई की खबरों को सुन कर सरहंद के आस-पास इकट्ठे होने लगे । कुछ दिनों में ही सिंघों ने सरहंद को जा घेरा और लड़ाई आरम्भ कर दी । उधर सरहंद से काफी दूर गये हुए जैन खां को जब सिंघों के आक्रमण की खबर मिली तो वह उधर की मुहिम को बीच में ही छोड़ कर सरहंद को चल पड़ा ।

जब सिंघों ने सुना कि जैन खां लौट कर आ रहा है तो उन्होंने उसी समय युक्ति सोच ली कि इससे मार्ग में ही भिड़ना चाहिए, किले तक नहीं पहुंचने देना । यह सोच कर पाँच हज़ार सिंघ किले के इर्द-गिर्द रोकने के लिए रह गये और बाकी जैन खां की तरफ चल पड़े । आठ नौ मील की दूरी पर पहुंच कर सिंघों ने मोर्चे बना कर जैन खां को आगे रोक लिया । झटपट चले आ रहे जैन खां ने अगला रास्ता देख कर सिर फैंका । सोचने लगा कि अब लड़ाई के बिना कोई चारा नहीं, किले में पहुंचने की उसके मन में भारी अभिलाषा थी, परन्तु सिंघों की चाल देख कर समझ गया कि सिंघ अब मुझे किले में नहीं जाने देंगे ।

जैन खां ने पीछे रह कर अपनी मदद के लिए इलाके के सब मुसलमान हाकिमों को बुला भेजा और इस तरह यह मजबूत तुर्कानी दल बन गया, जो सिंघों की गिनती से कहीं अधिक था, परन्तु सिंघ अपने से दुगने-तिगुने को तो अपने जितना ही समझा करते थे और सतिगुरु की ओट लेकर ऐसी ज़ोर से तलवार चलाते थे कि दुश्मन ज़्यादा होते हुए भी भाग खड़ा होता था और ऐसा टाकरा एक बार नहीं सैंकड़ों बार सिंघ कर चुके थे । इसलिए सिंघों को ज़्यादा दुश्मन देख कर कभी बौखलाहट नहीं होती

थी । ऐसे कैसे होता था ? इसका बड़ा कारण एक ज़्यादा यह था कि सिंघ हमेशा मौत के डर को उतार कर लड़ता था, बस यही सबब था, सिंघों की जीत होने का । यही सिंघों की बहादुरी और कुर्बानी थी कि लड़ते समय अपना पूरा तान लगा कर जान की बाज़ी लगा देते थे ।

यही हाल अब हुआ । जब जैन खां अपना भारी लश्कर ले कर आगे निकलने के लिए सिंघों पर टूट कर पड़ गया, तो भयानक हंगामा मच गया । जैन खां की मदद करने आये और मुसलमान तो सिंघों की ताव दो घड़ी भी न झेल सके और हज़ारों ही जैन खां के मदद करने वाले सिंघों की तलवार का शिकार हो गये । यह देख कर जैन खां अपनी रिज़र्व दुरानियों की फौज से सिंघों पर आ पड़ा । यह भिड़त भी कई मीलों में बिखर कर हो रही थी । जैन खां ज़ोर डाल कर सिंघों को चीर कर आगे किले की तरफ निकल जाना चाहता था और किले की ओट प्राप्त करके आकी हो जाना चाहता था । कहते हैं कि वह एकदम हमला कर सिंघों को मार-काट करता आगे को निकल चला, परन्तु सारी फौज कैसे उसके साथ इतनी जल्दी आगे निकल सकती थी, जब वह अकेला ही घोड़ा दौड़ा कर सरहंद की तरफ निकल चला तो झट ही स. जस्सा सिंघ आहलूवालिये ने घोड़ा उसके पीछे लगा कर ललकारा, ''ओ जैन खां, पाज़ी और कायर बन कर क्यों भागा जा रहा है ? सिंघों से अब तुम बच नहीं सकता । आ ! शेरों वाली मौत मर, सामने लड़ कर शहीद हो, अपने नाम को कलंक क्यों लगाने लगे हो ?'

जैन खां ने देखा कि सिंघ दूर तक बिखरे उसकी तलाश में थे । उस ने सोचा वाकई भाग कर मैं बच नहीं सकता, तो झट घोड़े को पीछे मोड़ कर फिर अपनी फौज में आ मिला और सिंघों से लड़ने लगा । उसने लोहे की फौलादी संजोह पहनी हुई थी, इसलिए सिंघों के वार उसका नुक्सान नहीं करते थे और उसकी गोलियां और तीर सिंघों को लगते गए । यह देख कर स. जस्सा सिंघ ने अपनी दुनाली में डबल बारूद भर कर और एक गोली की जगह दो गोलियां रख कर सतिगुरु का ध्यान कर निशाना ला जैन खां की तरफ छोड़ दी । वह गोली निशाने पर ठीक बैठी

जैन खां की संजोह को फाड़ कर आगे निकल गई और जैन खां धड़ाम करता पहाड़ की तरह घोड़े से नीचे आ गिरा। इसके बाद सैद खां, मुहम्मद खां तथा और प्रमुख जरनैल सिंघों ने जल्दी मार लिये और मुसलमानों के पैर हिल गये। सिंघ यह देख कर जैकारे छोड़-छोड़ भागते दुश्मन को मारने लगे।

जैन खां की मृत्यु और सरहंद की तबाही

लड़ाई-भिड़ाई करने वालों को खत्म करके सिंघ सरहंद शहर की गलियों और बाज़ारों में घुस गये और लगे उन अमीरज़ादों पर हाथ साफ करने, जो हकूमत के नशे में इतने मस्त थे कि गरीबों के दुःखों की सार नहीं जानते थे। थोड़े समय में ही सरहंद के गली और बाज़ार रक्त से रंग गये। एकदम शहर में भगदड़ मच गई। डाकू और लुटेरों का भी अच्छा दांव लग गया, जबकि रोकने वाला कोई नहीं था। इस अचानक आई विपदा से कौन बच सकता था, किये पाप ही जरवानों के लिए काल का रूप बन गये। मां ने पुत्र नहीं संभाला। जिधर मुँह आया भाग-भाग कर लोग अपनी जानें बचाने लगे। ऐसी भगदड़ मची कि कुछ घंटों में ही परस्पर बसता शहर सुनसान हो गया। बड़े-बड़े महल खाली हो गये। चोर डाकुओं का कई दिन दांव लगा रहा। उन्होंने धन ढूँढने के लिए छत्तें उधेड़ मारी और नींवें खोद कर रख दीं। बड़े मकान तो वैसे ही ढह-ढेरी कर दिये, परन्तु छोटे मकानों का तो किसी ने कुछ भी न छोड़ा।

यह तो हुई शहर की हालत, परन्तु किला मामूली चीज़ नहीं था, उसको मामूली चीज़ से तबाह नहीं किया जा सकता था। इसलिए सलाह करके इस किले को तबाह करने के लिए बारूद का प्रयोग किया गया और चारों तरफ आग लगा कर बड़ी फसील को ध्वस्त कर दिया गया। हिसाब से सभी सिंघों के हिस्से एक-एक हाथ जगह आती थी, इसलिए उस समय सब सिंघ इसकी खुदाई करने में लग गये। सरदारों ने पहल की और बाकी सिंघों ने फिर इतनी तेज़ी की कि घंटों में ही उस मज़बूत किले को मलबे के ढेरों में बदल कर रख दिया। इस शहर को चोरों

डाकुओं ने भी खंडहर बना दिया और देर से खटक रहे सरहंद के किले को सिंघों ने खत्म करके यह सिद्ध कर दिया-

"पापी के मारने को, पाप महा बली है ।"

इसके बाद सिंघों ने साहिबज़ादों के नींवों में चिनवा जाने वाली जगह ढूँढी । वहां शहीदी याद में गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब बना दिया गया । फिर पाठ किये गये और अरदासें शोधे गये । फिर इस जगह पर इलाके का प्रबन्ध सिंघों ने पटियाले वालों को सौंप दिया ।

खालसे की धूमें

सरहंद की फतेह के बाद देश में खालसे की धूमें मच गईं । सरहंद जैसी मुसलमानों की बड़ी भारी ताकत जब सिंघों ने खत्म कर दी तब और अब सिंघों के आगे कौन टिके ? बंदा सिंघ बहादुर के समय भी एक बार ऐसा हो गया था, परन्तु उसकी शहीदी के बाद पचास साल सिंघों पर भारी मुसीबतें आई रहीं, परन्तु सिंघ अपने निशाने की तरफ बढ़ते रहे । सिंघों ने इस समय बंटवारा कर सारे देश पर कब्ज़ा कर लिया और तुर्कों की रहती ताकत खत्म कर दी ।

जब सिंघ ऐसे देश पर कब्ज़ा करने लगे तो तुर्क हाकिम बोलने की हालत में न होने के कारण बीचो-बीच झुलसने लगे । दूसरी तरफ किसी मुसलमान नवाब या हाकिम के विरुद्ध सिक्खी पास आ कर कोई फरियाद करता तो सिंघ झट इकट्ठे हो उधर हमला कर देते और अत्याचारी के शहर को जा घेरते । ज़ालिमों को शोध कर रख देते । इस तरह सिंघ सारे पंजाब में बिखर गये । सिर्फ लाहौर शहर ही दुरानियों के पास रह गया, वह तो बल्कि कैदखाना बन गया । दुरानियों के लिए क्योंकि बाहर से सिंघ कोई पैसा लाहौर को आने नहीं देते थे, बल्कि हाकिमों की तरह स्वयं उग्राही करने लगे । कुछ समय लाहौर में रह कर तैमूर काबुल को चला गया । उसने अहमद शाह को सारी हालत जा बताई कि सिंघों ने तो सारा मुल्क संभाल लिया है । 52 लाख आमदनी वाला सूबा सरहंद भी जीत कर उन्होंने अपने अधीन कर लिया है और जैन खां जैसे दुरानी सब उन्होंने मार दिये हैं ।

अहमद शाह का नौवां हमला

उधर दिल्ली में भी गड़बड़ हो गई। अहमद शाह ने नजीब खां को यहां का हाकिम बनाया था, परन्तु उसकी भरतपुरिये जाटों से शत्रुता हो गई। उसने भरतपुरिये राजा के पिता को मार दिया था और राजा की बेइज्जती की थी। इसलिए भरत पुरियों का ज़ोर पड़ गया और उन्होंने अपनी फौजें जोड़ कर दिल्ली को आ घेरा, जिस कारण नजीब खां ने सारी हालत लिख कर अहमद शाह को कहा कि जल्दी आ कर मेरी मदद करे। यह हालत देख कर अहमद शाह ने फिर नौवीं बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दी।

हिन्दुओं की पुकार पर सिंघों ने जल्लाबाद लुहारी फतेह करना

अहमद शाह चला तो इस अंधेरी की खबर सिंघों को भी हो गई। उन्होंने तुरंत सब इलाके छोड़ श्री अमृतसर आ जोड़ मेल किया और सलाह की कि अहमद शाह से मुकाबला करने की आवश्यकता नहीं। चार दिन फिर आगे पीछे हो जाये और यह लाखों का लश्कर फिर चल कर जब वापिस चला जायेगा तो हम फिर तेग के ज़ोर से अपने-अपने इलाके कब्ज़े में ले लेंगे। इससे लड़ कर हमें अपनी ताकत बेकार नहीं करनी चाहिए।

अभी सिंघ इन विचारों में ही थे कि इसी समय जल्लाबाद लुहारी के कुछ ब्राह्मण तथा और हिन्दू श्री अमृतसर आ पहुंचे। उन्होंने खालसे के पास पुकार की कि हम बहुत दुःखी हो कर आपकी शरण में आये हैं। जल्लाबाद लुहारी (लेहारू रियासत) यू.पी. में थी। अमृतसर से काफी दूर थी। इन दुःखी लोगों ने कहा कि हम ने हिन्दुस्तान के कई राजाओं पास जा कर पुकार की है, परन्तु हमारी किसी ने नहीं सुनी। हमारी कोई ज़िन्दगी नहीं। हमारी बेटियों, बहनों, बहुओं को जबरन ज़ालिम छीन ले जाते हैं और गाय तथा बैल हमारे घरों में आ कर नित्य (प्रतिदिन) मारते और हमें तंग करते हैं, हमारी कोई पेश नहीं चलती,

हम बड़ा दु:खी होकर आपकी शरण में आये हैं ।

सिंघों ने विचार किया और फैसला किया कि इनकी ज़रूर मदद की जाये । उधर अहमद शाह भी आ गया है, हम उसके आगे-आगे चले जाते है । साथ ही अहमद शाह की अंधेरी वापिस चली जायेगी और दूसरा इन गरीबों के दु:खों का निर्वाण करके ज़ालिमों को शोध कर आयेंगे । यह विचार करके खालसा दल पूर्व की तरफ को छलांगें मार कर चल पड़ा । सफर बड़ा लम्बा था, इसलिए रास्ते में खालसा शिकार खेलता और अहंकारी तुर्कों की बची-खुची ताकत को निबेड़ता, जल्लाबाद लुहारी के निकट जा पहुंचा ।

वहां के अहंकारी और ज़ालिम हाकिमों को यह ख्याल भी नहीं कि गुरु के सिंघ इतनी दूर भी आ धमकेंगे । परन्तु जब उनको पता लगा तो बहुत घबराये कि अब क्या बनेगा ? खैर उन्होंने अपनी तोपों, जंबूरों तथा और भारी जंगी सामान के हौंसले पर सिंघों से लड़ने की सलाह बनाई । बहुत जल्दी सिंघों के आने से पहले वे भारी जंगी सामान किलों से बाहर ले आये और शहर से कुछ दूर मोर्चेबंदी कर सिंघों का दल रोक लिया । यहां के नवाब ने इलाके भर के मुसलमानों को भी अपनी मदद के लिए बुला लिया और ऐसे यह भारी तैयारी करके आते सिंघों की प्रतीक्षा करने लगे ।

इधर सिंघ दल आगे बढ़ रहा था तो उसके आगे-पीछे लुटेरों का भी भारी समूह साथ-साथ आगे बढ़ रहा था । इसलिए यह दल भी निकट पहुंच गया । लड़ाई के माहिर सिंघों के हरिआवल दस्ते ने झट जान लिया कि आगे भारी तैयारी है । परन्तु फिर भी उन्होंने आते ही ऐसा हमला किया कि अगले मोर्चे पर कब्ज़ा कर लिया और फिर सिंघ भी मोर्चेबंद हो कर लड़ने लगे । एकदम ही घमासान युद्ध छिड़ गया । तीन के पहर यह लड़ाई बराबर जुटी रही । दोनों तरफ सूरमे गिर-गिर रण-भूमि लाशों से भर गई । सिंघ सरदारों ने देखा कि इस तरह लड़ाई पता नहीं कब तक समाप्त हो इसलिए उन्होंने एक बारगी ही हमला कर देने के लिए खालसे को ललकारा । अपने सरदारों की ललकार सुन कर और उनको आगे बढ़ते देख बाकी सिंघ भी एकदम तेगें घसीट कर दुश्मन पर टूट पड़े और

मारकाट करने लगे ।

यह देख कर जल्लाबाद का नवाब स्वयं आगे बढ़ा और सारा ज़ोर लगा कर आगे बढ़े आ रहे सिंघों को रोकने का यत्न करने लगा, परन्तु हाथी पर सवार यह नवाब जल्दी ही एक सिंघ की गोली का निशाना बन गया । दूसरा उसका साथी भी गोली का निशाना तो बना, परन्तु मरा न, घायल हो कर पीछे को दौड़ पड़ा । यह देख कर बाकी फौजों के भी पैर हिल गये और सिंघों ने जल्दी करके अनेकों भाग रहे दबोच लिये । फिर क्या था, दुश्मन को भगदड़ मच गई । सिंघों को फिक्र था कि ज़ालिम आगू हाकिम कहीं दौड़ न जाये, बाहरली फौजें कहीं किले में पहुंच कर फिर मजबूत न हो जाये, इसलिए सिंघ साहसी हो कर शहर के दरवाज़े की तरफ चल पड़े । चमकती तलवारों ने झट ही लाशों के अम्बार लगा दिये । जो भी दरवाज़े की तरफ जा रहा था, या आ रहा था, सब सिंघों की तेगों का शिकार हो गये । कुछ समय में ही सिंघ शहर में दाखिल हो गये और पलों में नवाबों के प्रमुख अस्थानों को जा घेरा ।

खालसे ने ज़ालिमों पर कहर बरपा दिया । जितना बड़ा ज़ालिम, उतनी सख्त सज़ा उसको दी गई । अब ब्राह्मण तथा और हिन्दुओं ने बता-बता कर उन ज़ालिमों को पकड़वाया, जो नौजवान हिन्दू लड़कियों को जबरदस्ती अपने घर रखे बैठे थे । सबको, जो भी मुनासिब समझा, सिंघों ने सज़ायें दीं । यह शोध वाला काम करके सिंघों ने फिर सब हिन्दू लड़कियों को इकट्ठे करके उनको अमृत छका कर शुद्ध कर दिया । और उनके वारिसों को उनके हाथों लंगर तैयार करके आप खाया और खिलाया कि बाद में कहीं यह इनको छेक ही न दे । भ्रमों-वहमों को निकाल कर सबको कहा-'जिन-जिन की यह हैं, इनको घरो-घर ले जायें । खालसे ने उन लड़कियों को सब बेगमों के गहने उतरवा कर दिये । इस तरह खालसे ने जल्लाबाद में भी परोपकार किया ।

सिंघों ने भरतपुरियों की मदद करनी

पाठक पीछे पढ़ आये हैं कि अहमद शाह ने दिल्ली के नजीब खां

की मदद के लिए इस बार हिन्दुस्तान पर हमला किया था, परन्तु सतलुज पार करते ही उसकी फौज में बीमारी फैल गई और दवा-दारू करने के बावजूद उसके सैंकड़ों फौजी प्रतिदिन मरने लगे। दिल्ली से लगभग 100 मील दूर ठहर कर यह अपनी फौज को ठीक करना चाहता था और फिर आगे बढ़ना चाहता था। उधर भरतपुरियों ने बेशक दिल्ली को घेरा हुआ था, परन्तु अहमद शाह के आने की खबर ने उन्हें चिन्ता लगाई हुई थी। उन्होंने और हिन्दू राजाओं की मदद लेनी चाही, परन्तु किसी ने हां न की मराठों को कहा तो उन्होंने साफ जवाब दिया कि आप ने हमारी मदद नहीं की थी तो हम आपकी मदद क्यों करें ? भरतपुरिया राजा निराश हुआ पड़ा था कि किसी ने उसको सिंघों से मेल करने के लिए कहा।

सिंघ इस समय दिल्ली के निकट ही जल्लाबाद लुहारी में उतरे हुए थे। भरतपुरिये राजा को यह बात बड़ी पसन्द आई और उसने संदेश भेज कर सिंघों को मदद के लिए बुला लिया। सिंघ आगे ही किसी की मदद के लिए यहां आये थे, इसलिए उन्होंने कहा, किसी और की मदद भी यदि इस तरह हो सके, तो क्यों न की जाये, साथ अहमद शाह से टक्कर लेने का मौका मिलेगा। इसलिए सिंघ भरतपुरिये की मदद के लिए पहुंच गये।

अहमद शाह की फौज में चूंकि बीमारी पड़ चुकी थी, इसलिए थानेसर के मुकाम पर आ कर ही रुक गया था। जब उसको यह खबर भी पहुंच गई कि सिंघ भरतपुरिये की मदद पर पहुंच गये तो उसने नजीब खां को कह भेजा कि मैं तुम्हारी मदद के लिए नहीं आ सकूंगा, तुम जैसे हो आप ही निपट लो। नजीब खां बेचारे ने बड़ी मुश्किल से बड़े नीचे हो कर भरतपुरिये से सुलह कर ली। लाखों रुपये तावान के उसने भरतपुरिये राजा को दिये।

अहमद शाह थानेसर के मुकाम से फिर वापिस हो गया और लाहौर तक बड़ी मुश्किल से पहुंचा। सिंघ इधर से फारिग हो कर फिर अहमद शाह से आ टकरे और उसको परेशान करने लगे। अहमद शाह की फौजें बीमारी से तो पहले ही मरी पड़ी थीं। इसलिए इस बार बहुत नुक्सान उठा कर मुड़ा।

यह समय सम्वत 1822 विक्रमी का था जब कि सिंघ दूर-दूर तक हकूमत करने लगे। लाहौर और मुलतान को सिंघों ने कब्ज़े में ले लिया था। रुहतास भी सिंघों ने कब्ज़े में कर लिया और अटक तक सिंघों के घोड़े फिर गये।

नजीब खां का पंजाब पर हमला

इधर जब पंजाब में सिंघ पूर्ण स्वतन्त्र हो कर राज्य करने लगे, तो उधर दिल्ली वाले नजीब खां ने जिसको सिंघों पर बड़ा गुस्सा था कि इन्होंने भरतपुरिये राजा की मदद करके मुझे नीचा दिखाया है। उसने तैयारी करके सम्वत 1824 के करीब पंजाब पर हमला कर दिया। क्योंकि सिंघों ने यमुना के पास-पास सब इलाके संभाल लिये थे, इसलिए दिल्ली वालों की चढ़ाई के कारण सिंघों ने दूसरे इलाके स्वयं ही खाली कर दिये और सरहंद के करीब इकट्ठे हो कर दुश्मन का मुकाबला करना शुरू कर दिया।

अहमद शाह का दसवां हमला

उधर अहमद शाह को भी सिंघों पर गुस्सा था, इसलिए वह भी दिल्ली वालों की मदद के लिए एक लाख गिलजा व पठान सवार लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ आया। सिंघों को खबर लगी तो वे इलाके छोड़ जंगलों पहाड़ों में जा घुसे। अभी तक सिंघों ने यह नीति धारण की हुई थी कि बच कर रहें। अहमद शाह का यह दसवां हमला था। उसने लाहौर में ठहर कर अपनी फौजें भेजीं कि सिंघों को ढूंढ कर मारो, परन्तु सिंघ तो घने खेतों में थे, इसलिए वह कोई भी अहमद शाहियों के हाथ न आया।

पंजाब में अहमद शाह कुछ समय रह कर अपनी तरफ से फिर लाहौर और मुलतान का सूबा मुकरर करके वापिस गया, परन्तु काबुल पहुंचा ही था कि उसको फिर खबरें मिल गईं कि सिंघों ने आपके मुकरर किये सूबे को अपने देश में से फिर निकाल दिया है। अब इतनी जल्दी उसने वापिस क्या मुड़ना था। सिंघों की दिलेरी की खबरें उसको रोज़ मिलती ही रही और सिंघों का फिर लगभग डेढ़ साल अच्छा निकल गया।

अहमद शाह का अंतिम हमला

सम्वत 1826 में अहमद शाह ने आखिर यह बात सोच कर कि पंजाब को सिंघों से ज़रूर छुड़वाया जाये, ग्यारहवां हमला किया । यह अहमद शाह का अंतिम हमला था । इस बार वह डेढ़ लाख गिलज़ा और दुरानी सवार साथ ले लिया । सिंघों को खबर मिली तो वे पहले की तरह अपने-अपने इलाके छोड़ कर जंगलों-पहाड़ों की तरफ चले गये । वे समझते थे कि इससे लड़ कर हमें अपनी ताकत बेकार नहीं करनी चाहिए । अहमद शाह ने फिर खुले दरवाज़े लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया । अहमद शाह का ख्याल था कि सिंघ रात-दिन कहीं उसकी फौजों पर हमला न करें इसलिए वह कुछ समय लाहौर बैठ कर इस बात की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु सिंघों ने कोई हमला न किया । अहमद शाह लाहौर का बन्दोबस्त करके इस बार दिल्ली की तरफ चल पड़ा । दिल्ली पहुंच कर इस बार इसने बड़े ज़ुल्म किये और अपनी फौजों को हुक्म दे दिया कि वह जैसे मर्जी है, लूट मार करे । इस छूट के कारण कहते हैं जो भाग गया वह बच गया नहीं तो ज़ालिमों ने हर किसी का धन-माल और इज्जत खूब लूटी ।

महाराजा अमर सिंघ ने बन्दी छुड़ाने

खूब माला-माल होकर 25-30 हज़ार नौजवान लड़के-लड़कियों को गिलजियों ने पकड़ लिया । फिर यह निर्दयी सब रोतों-चिल्लातों को सारी उम्र के गुलाम बना कर रखने के लिए साथ लेकर दिल्ली से वापिस मुड़े । सरहंद आने पर अहमद शाह ने डेरा किया तो महाराजा अमर सिंघ जो बाबा आला सिंघ का पोत्रा और पटियाले का इस समय महाराजा था, उसने अहमद शाह से मुलाकात की । बादशाह बड़ी उदारता से राजा अमर सिंघ से मिला, राजा अमर सिंघ को रोती-चिल्लाती अबलाओं की आवाज़ ने बहुत परेशान कर दिया था । उसकी बुद्धिमत्ता जानती थी कि वह अकेला लड़ कर एक भी आदमी नहीं छुड़ा सकता, परन्तु वह इन लोगों को छुड़ाना

ज़रूर चाहता था । इसलिए महाराजा ने दो लाख रुपये देकर अहमद शाह को खुश कर लिया व दो लाख और देकर इन बंदियों को छुड़ाने का ख्याल प्रकट किया । अहमद शाह ने दो लाख की और मांग की जो राजा अमर सिंघ जी ने उसी समय दे दिया और इन सब किस्मत को रो रहे मज़लूमों को ज़ालिम दुरानियों के हाथों छुड़ा कर पास से खर्चा देकर घर-घर पहुंचाया । इसी कारण ही उस समय महाराजा अमर सिंघ का नाम हिन्दुस्तान में बंदी-छोड़ करके मशहूर हो गया था ।

अहमद शाह वापिस लाहौर पहुंचा तो सिंघों ने पीछे आ रही उसकी फौजों पर सतलुज और ब्यास के दरम्यानी इलाके में भारी हमले शुरू कर दिये । न दिन को दुरानी चैन कर सके और न ही रात को सो सके । इसलिए बड़ी मुश्किल से यह दुरानी फौज ब्यास पार कर निकली तो सिंघ और अधिक आ टूट पड़े । सिंघ इस बात पर तुल गये थे कि अपने देश का धन और अपने देश का कोई बच्चा इन ज़ालिमों और निर्दयी डाकुओं को यहां से ले जाने नहीं देना, और इस बात के लिए चाहे हमें कितनी ही तकलीफ क्यों न उठानी पड़ी ।

अहमद शाह ने सिंघों के हमलों से खीझ कर फिर पंजाबी लड़के-लड़कियों को पकड़ लेना

सिंघों की छीना-झपटी से अहमद शाह तंग आ गया । वह खीझ कर फिर सिंघों के पीछे पड़ गया । कई जगह भारी आमने-सामने हुए । बटाले के निकट भारी घमासान मचा और हज़ारों दुरानी तथा सिंघ यहां मारे गये । यहां सिंघों का ज़ोर पड़ गया और दुरानी भगा दिये । परन्तु इस समय अहमद शाह और फौज लेकर आ पड़ा । उधर कश्मीर और पेशावर तक के हाकिम यहां आ पहुंचे । सिंघों ने फिर समय ताड़ा और झट जंगलों में जा घुसे ।

अहमद शाह इस समय अपनी भारी फौजों सहित रावी पार करके सियालकोट के इलाके में आ घुसा । यहां बड़ी लूटमार की गई, निर्दोष मारे गये और हज़ारों नौजवान लड़के-लड़कियां इन ज़ालिमों ने फिर पकड़

लिये। तीन दिन इस इलाके में इन दुरानियों ने खूब लूट मचाए रखी। यहां रोते चिल्लाते लड़के-लड़कियों को बांध-बांध गड्ढों में बिठाया और इस ख्याल से उनको फौज की रक्षा में देकर जल्दी से आगे भेज दिया कि इनको सिंघों से बचा कर काबुल को ले चले। परन्तु सिंघों ने भी इस समय यह अपना उसूल बना लिया हुआ था कि बंदी ज़रूर छुड़ाने हैं, सिंघ चाहे कितने भी शहीद क्यों न हो जाएं।

सिंघ अभी सड़क के निकट जंगलों से ज़्यादा दूर नहीं गये थे कि सड़क के निकट जासूसी रखने वाले सिंघों को ज़ालिमों की इस कारस्तानी का पता लग गया। दौड़ कर शीघ्र खालसे को खबर पहुंचाई कि आप तो हिन्दुस्तानी लड़के-लड़कियां निष्ठुरों के साथ नहीं जाने देते परन्तु अब तो हमारे पंजाबी लड़के-लड़कियां निष्ठुर लिये जा रहे हैं। जल्दी करो, यदि वह जेहलम पार कर गये तो फिर बन्दी छुड़ाये नहीं जा सकते।

सिंघों का बंदी छुड़ाने के लिए भारी युद्ध

आस-पास के सिंघ शीघ्र एकत्रित हुए। फैसला किया गया कि बाकी सिंघों को पहुंचने के लिए संदेश भेज कर, जितने आप इस समय हो, सब हमला कर दो और अहमद शाह को आगे से जा रोको। इसलिए सिंघ चल पड़े।

उधर अहमद शाह इस समय वहीर सहित चिनाब के किनारे से बड़ी जल्दी पार निकलना चाहता था। अभी उसकी फौज के एक दो दस्ते ही पार निकले होंगे कि इधर सिंघ भी चिनाब की सरहदों में पहुंच गये। इधर-उधर मिल-मिला कर 15-20 हज़ार के लगभग सिंघों का मार्च इस मैदान की तरफ हो गया। लड़के-लड़कियों के रोने-चिल्लाने की आवाज़ से ही सिंघों को पता लग गया कि वहीर अभी इसी तरफ ही है। सिंघों ने झट अरदासा शोधे और वहीर की रक्षा कर रहे अब्दालियों पर हमला कर दिया।

अहमद शाह आधी फौज सहित पार निकला ही था कि उसे सिंघों के हमले की खबर मिली। वह झट इस तरफ आया। वह समझता था

कि मैं आधी फौज से ही सिंघों को खत्म कर दूँगा, परन्तु बहादुर सिंघों की तेग उस समय इतनी तेज़ी और बे-खौफी से चल रही थी कि पठान और अफगानों के चिथड़े उतरते जा रहे थे । दुरानी फौज़ियों पर उस समय सिंघों की बहादुरी का ऐसा रौब पड़ा कि कोई-कोई सिंघ गिर रहा था, परन्तु दुरानी गिरतों के ढेर लगते जा रहे थे ।

अहमद शाह का भी आगे बढ़ने का हौसला न पड़ा उसने दूसरी तरफ से सारी फौज को इस तरफ आने के लिए कहा परन्तु सिंघों ने उसकी बाकी फौज के आने तक इतनी तलवार चलाई कि घल्लूघारे का बदला ले लिया और एक बार वहीर को अब्दालियों से आज़ाद करवा लिया । सिंघों ने बड़ी फुर्ती की । अब्दाली की बाकी फौज के आने तक सिंघों ने सब गड्डों के मुँह पीछे की तरफ किये तथा चला दिये । चलते-चलते ही सब बन्दियों की मुश्कें खोलने की कुछ सिंघों की डयूटी लगा कर आप फिर अब्दालियों से टक्कर लेने के लिए तैयार हो गये । परन्तु अहमद शाह को वहीर की खातिर सिंघों से अब और लड़ने का हौंसला न पड़ा और फौजों को फिर दूसरी तरफ ले जाने लग पड़ा ।

सिंघों ने देगें कृपाण भेट करनीं

सिंघ दोपहर से लड़ रहे थे और दूसरा उन्होंने खाया कुछ नहीं था । उन्होंने रोटी खाने का समय भी नहीं था गंवाया कि दुरानी कहीं दूर न निकल जायें । अब वे रोटी पानी के प्रबन्ध के लिए सोच रहे थे कि किसी सिंघ ने आ कर खबर दी कि लगभग चार मील दूर दुरानियों के बड़े-बड़े देगें आदि चावल के बन रहे हैं, खालसे को उन पर कब्ज़ा कर लेना चाहिए । वह देगें सारे खालसे के लिए काफी हैं । सभी ने यह सलाह मान ली और खालसे के घोड़े उस तरफ चल पड़े । वहां पचास देगें उबालने वाले रसोइये तथा कुछ फौजी आदमी थे । दिन डूब चुका था और अंधेरा फैलने वाला था । उन देगों के रखवालों ने सिंघों को बिल्कुल निकट आते ही पहचान लिया, बस फिर जिसने कुछ रुकावट डाली, वह शोधा गया, बाकी भाग कर अपनी जान बचाने लगे ।

यह देगें नमकीन और मीठे स्वादिष्ट पलाव की थीं । उसी समय अरदास शोध कर सब देगें कृपाण भेंट करके जत्थेदारों ने पहले सब सिंघों को छकाया फिर स्वयं छका । फिर बाकी ले जा कर उन गरीब मज़लूमों को भी छकाया जिनको दुरानी बांध कर ले जा रहे थे ।

इतनी देर में दुरानी पार निकल गये थे । सिंघों ने कुछ दूर जा कर डेरा किया । प्रातः काल सिंघों ने सबसे पहले वह लड़के-लड़कियां, जहां जहां के थे, वहां-वहां पहुंचाये । इसके बाद सिंघों ने कुछ दिनों में ही अपने-अपने इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया ।

जेहलम और रुहतास के किले में जाती बार अहमद शाह 10 हज़ार फौज छोड़ गया था, ताकि सिंघ उस इलाके की तरफ और न आगे बढ़ सकें, परन्तु दो-तीन महीने भी न बीते कि सिंघों ने इस फौज को भी शिकस्त देकर किले पर कब्ज़ा कर लिया ।

अहमद शाह की मृत्यु

अहमद शाह की बीते समय में की सब विजय सिंघों के तेज़-प्रताप से व्यर्थ चली गईं । ऐसे ख्याल याद आ आ कर, अब काबुल में बीमार पड़े हुए अहमद शाह की बीमारी में और वृद्धि कर रहे थे । उसके नाक का मामूली ज़ख्म इतना बढ़ गया कि आखिर वह नासूर बन चुका था । खैर सम्वत 1827 विक्रमी में अहमद शाह चल बसा और तैमूर शाह इसकी जगह काबुल का बादशाह बन गया ।

अहमद शाह के पुत्र तैमूर शाह के हमले

तैमूर, अहमद शाह का बड़ा पुत्र था । अहमद शाह के 11 पुत्र थे, जिनका पिता के मरने के बाद काबुल की गद्दी प्राप्त करने के लिए घमासान युद्ध हुआ । तैमूर की राज्य प्रबन्ध में ज़्यादा अख्तियार और जानकारी भी अधिक थी, इसलिए वह 7-8 भाईयों को मारने के बाद राज्य-गद्दी प्राप्त करने में कामयाब हो गया । यह पिता के साथ चढ़ाईयों समय बड़ी बार मुहिमों पर आया था और लाहौर का कई मौके सूबा भी बना था,

इसलिए कम से कम पंजाब को अपने प्रबन्ध में रखने की इसके मन में भारी इच्छा थी। परन्तु सिक्खों को वह अपने रास्ते की भारी रुकावट समझता था, इसलिए राज्य प्रबन्ध को संभालने के बाद वह कई देर इस काम के लिए तैयारियां करता रहा।

भारी तैयारी करके सम्वत 1829 में तैमूर ने पंजाब पर चढ़ाई कर दी। सत्तर हज़ार घुड़सवार फौज और भारी तोपखाना लेकर वह अटक से निकल कर पंजाब की सीमा में दाखिल हो गया। सिंघ इस समय मिसलों के रूप में सारे पंजाब पर राज्य कर रहे थे-ज़ेहलम, गुजरात, सियालकोट, लाहौर, मुलतान और इधर सतलुज से आगे यमुना के किनारे तक सिक्ख सरदारों की हकूमत कायम थी। जब सिक्ख मिसलों के सरदारों को तैमूर के चढ़ आने की खबर मिली तो उन्होंने नियत पालिसी अनुसार सब इलाकों को फिर खुले छोड़ दिया। इस तरह वह आती मुसीबत से एक तो आम लोगों को बचा देते थे और दूसरे आप भी इस अचनचेत खतरे से बच जाते थे।

तैमूर खुले दरवाज़े लाहौर और मुलतान में आ गया। तैमूर पंजाब को स्थाई तौर पर कब्ज़े में रखने के लिए अपने पिता के पदचिन्हों पर नहीं चलना चाहता था, इस बार उसने लाहौर बैठ कर अपनी फौजी मज़बूती के लिए कई कोट-किले बनवाये तथा और पांच-दस मील पर फौजी तैयार रखने का प्रोग्राम बनाया। आठ महीने तक ऐसे प्रबन्ध करके फिर वह लाहौर से काबुल को मुड़ गया।

यह सुनते ही सिंघ भी जंगलों से बाहर निकल आये। इस बार लाहौर और मुलतान को लेने के लिए सिंघों को भारी यत्न करना पड़ा। जब सारी मिसलों ने मिलकर यहां चढ़ाई की तो यह जगह फतेह हुई। तैमूर की तैयारी कारण सिंघों को यह जगह काफी जद्दोजहद से प्राप्त हुई और छः महीने इस काम में लग गये।

दिल्ली की ओर से फिर पंजाब पर हमला

सम्वत 1830 अब समाप्त होने ही वाला था कि दिल्ली के नज़ीब

खां ने मौके का लाभ उठाने के लिए पंजाब पर हमला कर दिया । वह तैमूर के फौज़ियों की मदद लेना और देना चाहता था, परन्तु सिंघ इतनी देर तक कामयाबी हासिल कर चुके थे । इसने यमुना पार करके सिंघों के बहुत सारे इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया । यह देख कर सिंघ मुकाबले के लिए थानेसर के अस्थान पर आ जुड़े । पटियाला, नाभा, जींद आदि फुलकिया मिसलों वाले और सतलुज के इस पार दोआबे और माझे के सब सिंघ आ इकट्ठे हुए । यहां नज़ीब खां की फौजों से सिंघों की भारी टक्कर हुई । परन्तु इस समय के सिंघों की बढ़ी हुई ताकत के आगे खड़े होने की बेचारे नज़ीब खां में ताकत कहाँ थी, सिर्फ दो घंटे की लड़ाई में दिल्ली वालों के पैर हिल गये और सिंघों की फतेह हो गई ।

दिल्ली पर कब्ज़ा और सिंघों में अनबन

दिल्ली वालों को भगा कर सिंघ यहां ही न ठहरे, बल्कि उनके पीछे लग गये । साथ ही उनको भगाते गये, तथा और इलाके फतेह करते गये । आगे बढ़ कर खुरजा, मेरठ तथा और कई इलाकों को सिंघों के अधीन कर लिया और फिर बिना रोकटोक मामूली छुट-पुट से ही दिल्ली में दाखिल हो गये । परन्तु अफसोस कि आपसी फूट ने दिल्ली सिंघों के कब्ज़े में न रहने दी ।

इतिहास बताता है कि कुछ सिक्ख मिसलों के सरदारों ने स. जस्सा सिंघ आहलूवालिये को दिल्ली के तख्त पर बिठा दिया कि नवाब कपूर सिंघ जी ने अपनी जगह इनको पंथ का जत्थेदार मुकरर किया था । परन्तु इस बात को स. जस्सा सिंघ रामगढ़िये के पक्षधर सिंघों ने बुरा मनाया और उन्होंने रामगढ़िये सरदार को तख्त पर बैठाना चाहा । झगड़ा बढ़ गया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि दोनों पक्ष लड़ने-मरने के लिए तैयार हो गए । यह देख कर स. जस्सा सिंघ आहलूवालिये ने ऐलान कर दिया कि वह इस भाई-नाशक तख्त पर बैठने के लिए तैयार नहीं है । इसके बाद रामगढ़िये सरदार ने भी इन्कार कर दिया और बिना लड़ाई जीती दिल्ली को खाली छोड़ सिंघ फिर अपने-अपने इलाकों में आ गये ।

तैमूर का दूसरा हमला

तैमूर लगभग आठ महीने लाहौर रह कर आगे के लिए स्थाई तौर पर पंजाब पर कब्ज़ा रखने के लिए कई कोट और किले बनवा कर गया था, परन्तु सिंघों ने भी भारी कठिनाईयों के बावजूद उसकी सारी ताकत को तोड़ दिया था, तो यह खबरें सुन कर उसको और चिढ़ चढ़ रही थी। इसलिए उसने तैयारी करके दो साल बाद सम्वत 1831 में पंजाब पर फिर चढ़ाई कर दी। सिंघ फिर हट गये और लाहौर, मुलतान उसने फिर खुले दरवाज़े कब्जे में कर लिए।

शहीदों की मिसल वालों ने युद्ध करना

इस बार और तो सब मिसलों वाले ठहर कर पीछे हो गये, परन्तु बहुत सारे सियालकोटी इलाके पर काबिज़ शहीदों की मिसल वालों ने फैसला किया कि हम कितनी देर इस तरह इलाके छोड़-छोड़ जंगलों को भागते रहेंगे ? हर बारी ठहर जाने की बात को उन्होंने ठीक न समझा और लड़ने का फैसला किया। इस मिसल के 8 हज़ार सिंघ थे। इन्होंने सब सिंघों को कह दिया जिसको जाना हो, वह चला जाये, यहां वह रहे, जिसने हमारे साथ शहीदियां प्राप्त करनी हों।

परन्तु हुआ क्या ? बस, कोई न गया। आठ के आठ हज़ार सिंघ ने ही शहीदी या फतेह की प्राप्ति के लिए अरदासे शोध लिये।

लाहौर बैठे तैमूर को जब पता लगा कि सियालकोट के इलाके पर सिंघ तुम्हारे होते कब्ज़ा जमाई बैठे हैं, वह तुम से डर कर भागे नहीं, तो तैमूर ने उस समय 20 हज़ार फ़ौज को सियालकोट की तरफ कूच करने का हुक्म दे दिया।

जंगलों में पास-पास घूमते सिंघों को शहीदी मिसल वालों के इस इरादे की खबर मिली, तो वह भी कई इन सिंघों से आ मिले। अब सिंघों की गिनती भी कोई दस हज़ार के करीब हो गई और आती फौज के आक्रमण के लिए शहीदी मिसल वाले सिंघों ने सियालकोट के चार मील

पास आ कर आती फौज के रास्ते में मोर्चे बंदी की और आगे से रोक कर बैठ गये ।

यह खबर आते-आते दुरानियों को दूर ही मिल गई । उन्होंने चार हज़ार फौज को आगे-आगे भेज दिया कि आप जल्दी से जा कर सिंघों से मोर्चे छीन लो । सिंघों के आप इलाके खाली छोड़ जाने के कारण कुदरती तौर पर इनके मन में यह ख्याल घर कर गया हुआ था कि सिंघ मैदान में आ कर हमारे साथ लड़ ही नहीं सकते ।

भारी युद्ध के बाद दुरानियों की पराज्य

लूट मार के आदि हुए यह दुरानी फौजी चाहते थे कि हम पहले ही जा कर सिंघों को मार कर सियालकोट को लूट लेंगे । लूट मार करनी, यह उस समय के फौज़ियों का सबसे बड़ा लालच होता था और फिर इन दैत्य-कद वाले दुरानियों को तो लूट-मार की सदियों से आदत थी । यह बहुत बे-रहम और ज़ालिम थे । जब यह चार हज़ार दुरानी पहुंचे तो सिंघ आगे ज़्यादा थे इसलिए भारी पड़े । मार-मार कर दुरानी भगा दिये । दुरानी भाग ही रहे थे कि पिछले पहुंच गये । भागे जाते खड़े हो गये । भारी घमासान युद्ध होने लगा और सिंघ सूरमे जानों की परवाह न करते हुए लड़ने लगे ।

इस समय बाबा नत्था सिंघ जी और एक पांच हज़ारी तुर्क सरदार का डट कर मुकाबला हुआ, परन्तु बाबा जी के हाथों वह मारा गया । फिर दोनों दलों में युद्ध होने लगा । इतनी देर में तैमूर की तरफ से मदद करने के लिए भेजी हुई 12 हज़ार फौज और आ पहुंची । इस फौज का सरदार अत्ताऊल्ला नामक एक जरनैल था । इस फौज ने एक तरफ हो कर सिंघों पर बड़ी तेज़ी से हमला कर दिया । इस हमले ने सिंघों को निराश कर दिया और काफी सिंघ शहीद हो गये । यह देख कर बाबा दयाल सिंघ जी कुछ सिंघों को साथ लेकर झट इस तरफ आ पड़े और आते ही उस हृष्ट-पुष्ट, हाथी जितने सरदार अत्ताऊल्ला को ललकारा कि आ, मेरे साथ दो हाथ कर । वह 12 हज़ारी सरदार थे और लोहे से मढ़ा हुआ था ।

बाकी को लड़ने से हटा कर इन दोनों शूरवीरों का धर्म युद्ध होने लगा। साबित बकरा खा जाने वाले नौजवान दुरानी बच्चे को अपनी जवानी, दिलेरी और शस्त्र विद्या पर मान था और उसको ख्याल था कि इस बूढ़े सिक्ख को मैं जल्दी ही मार लूंगा, परन्तु बाबा दयाल सिंघ जी ने तो उम्र भर ही जंगों, युद्धों में गुजारी थी। वह तीर अंदाज भी बहुत तगड़े और हाथों-पैरों के भी माहिर थे। इसलिए पठान को भी थोड़े समय में ही पता लग गया कि उसका वास्ता किसी उस्ताद से पड़ गया है।

काफी देर लड़ाई होती रही परन्तु कोई भी हारने में न आये। एक दूसरे के तीरों को रोकते और वार करते एक दूसरे को ललकार कर लड़ रहे थे। यह देख कर बाबा दयाल सिंघ जी ने राम जंगे (बंदूक) की संभाल की और अच्छी तरह ठोक-ठोक कर बारूद भर लिया। शिसत लेकर सिंघ जी ने दुगाड़ा खां के घोड़े की तरफ छोड़ दिया। दुगाड़ा ऐन घोड़े के माथे में लगा और घोड़ा उछल कर धड़ाम नीचे आ गिरा।

घोड़े के गिरने से बेचारा खां भी पटक पड़ा, ढहते की टांग नीचे आ गई। खां निकलने के लिए ज़ोर ही लगा रहा था कि बाबा दयाल सिंघ जी झट घोड़े से उतर खां के सिर पर जा पहुंचे और आँख फड़कने में ही वार करके खां का सिर कद्दू की तरह धड़ से अलग कर दिया।

घण्टे-डेढ़ घण्टे बाबा जी की लड़ाई के समय में सिंघों को सांस आ चुकी थी और अब बाबा जी की जीत ने तो सिंघों के हौंसले बढ़ा दिये थे। तब लड़ाईयां आम लड़ाईयां नहीं थी, यदि सरदार मारा जाये या भाग जाये तो फौजें भी मैदान छोड़ कर भाग जाया करती थीं। जरनैल की बहादुरी और बुद्धिमानी पर ही फतेह या हार निर्भर होती थी, शाह मुहम्मद को भी यही कारण सिक्ख फौजों से हार जाने का नज़र आया था। वह लिखता है-

शाह मुहम्मदा इक सरकार बाझों,
फौजें जित के अंत नू हारीआं ने।

इसलिए यह हालत दुरानी जरनैल अत्ताऊल्ला के मरने से हुई। चाहे उसके मरने के बाद एक बारी ही गुस्से से दुरानी सिंघों को जा पड़े, परन्तु

सिंघ आगे कौन से आलसी थे, वे आगे फतेह की खुशी में दुगने-चौगुने उत्साह से पड़े, और झट ही दुरानी और पठानों के अब पैर हिलने लगे और हिलतों को सिंघ कब छोड़ते हैं। जैकारों की घनघोर ने 'याह अली' को दबा लिया और भागतों की भी शामत आ गई उतने सारे लड़ाई में नहीं मरे थे जितने भागते मारे गये। इस युद्ध में शहीदी मिसल के बाबा दयाल सिंघ जी तथा और अनेकों सिंघ भी शहीद हो गये, परन्तु एक बारी दुरानियों के अभिमान चकनाचूर करके रख दिये।

सिंघों की सबसे बड़ी लड़ाई जमान शाह का हमला

जब तैमूर की फौज की सियालकोट वाली लड़ाई में हार हो गई तो उसका दिल टूट गया। 32 हज़ार गई फौज में से 10 हज़ार भी बच कर उसके पास न पहुंची, तो उसका दिल कैसे कायम रहता। फिर नामी जरनैल जिन पर उसको आशायें थीं, वे सारे के सारे ही इस लड़ाई में मारे गये और उधर शहीदों की मिसल के कारनामे ने बाकी सिंघों में ऐसा जोश भर दिया कि उन्होंने जगह-जगह ही तैमूर की फौजों को करारे हाथ दिखाने शुरू कर दिये। यह हालत देख कर तैमूर काबुल वापिस लौट गया। वहां जा कर महीने-दो महीने बाद ही काल वश हो गया।

इसके बाद इसका पुत्र जमान शाह काबुल के तख्त पर बैठा। लूट पर पलने वालों को भला लूट कैसे भूल सकती है, इसलिए इसने भी तख्त पर बैठते ही पंजाब और हिन्दुस्तान की तरफ ललचाई आँखों से देखना शुरू कर दिया। परन्तु पंजाब में अड़ कर बैठे हुए और उसके पिता, बाबे के हज़ारों यत्न करने के बावजूद अधीन न होने वाले सिंघ जब उसके ध्यान में आते, तो वह सोचने लग पड़ता कि इनके होते न मैं पंजाब पर राज्य कर सकता हूँ, न पंजाब से आगे बढ़ सकता हूँ। परन्तु फिर भी इसने पंजाब पर हमला करने की भारी तैयारी शुरू कर दी।

ज़मान शाह का हमला

ज़मान शाह ने भारी तैयारी करके डेढ़ लाख गिलजों की फौज लेकर

सम्वत 1832 में पंजाब पर चढ़ाई कर दी । धरती हिलने लगी और धूल ने आसमान को ढक लिया । लूट-मार जिनका पेशा हो और जो फौज में भर्ती ही लूट मार के लिए हुए हों, उनसे दया या भले काम की क्या आशा हो सकती थी । इसलिए ज़मान शाह का लश्कर गांवों के गांव लूटता और फूंकता अटकों निकल चला । देश में हाहाकार मच गई । सिंघों ने भी अपने इलाके छोड़ दिये और ज़मान शाह मारो-मार करता खुले दरवाज़े लाहौर आ घुसा ।

साल से ऊपर समय निकल गया, ज़मान शाह ने वापिस जाने का नाम नहीं लिया । गिलजे और दुरानियों ने देशवासियों का नाक में दम कर दिया । जिसको चाहते लूट लेते, जिसको चाहते मार देते । इलाकों में तहित बैठाने के ख्याल से ज़मान शाह ने फौज़ियों को खुली छूट दी हुई थी । इस तरह करते ज़मान शाह का चाव अभी पूरा नहीं हुआ था कि उधर गज़नी में इसके विरुद्ध गड़बड़ हो गई । इसलिए यह वहां का प्रबन्ध करने के लिए वहां चला तो गया परन्तु पीछे अपने पुत्र कुरान शाह के साथ लाख के लगभग फौज को यहां का कंट्रोल रखने के लिए छोड़ गया ।

सिंघों ने जब देखा कि दुरानी फौजें यहां से जाने का नाम नहीं लेती तो वह भी इकट्ठे हो कर विचारें करने लगे कि अब क्या करना चाहिए । फिर सिंघों ने जंगल से बाहर आ कर देखा तो हालात बड़े दुःखदायी नज़र आये । सिंघों के चढ़ती कला में होने कारण जो हिन्दू सिर ऊँचा करके चलने और सुख का जीवन व्यतीत करने लग पड़े थे, परन्तु फिर काफी दुःखी और दबाये जा रहे थे और मुसलमान हाकिम जिनको सिंघों ने दबा लिया था, वह फिर दब-दबाते और मनमानियां करते फिरते थे । यह हालात देख कर सिंघ देश की मुसीबत को और न देखने के चाहवान बन गये और उन्होंने इन ज़ुल्मों को हटाने के लिए अमृतसर इकट्ठे होने का फैसला किया ।

खालसे का समूह और लड़ाई लड़ने का प्रस्ताव

गिलज़ों का ज़्यादा समूह इस समय लाहौर के आस-पास था,

इसलिए सिंघ धीरे-धीरे अमृतसर आ पहुंचे । देश की हालत पर विचार विमर्श होने लगा, तो लड़ाई बारे सभी की एक राय नहीं थी । अधिकतर का विचार था कि छापे-मार लड़ाई ही हमारे लिए फायदेमंद है, परन्तु कई का विचार था कि यदि हमें इस मुल्क पर राज्य करना है, तो हमें मैदान में आ कर इन वैरियों को शिकस्त देनी चाहिए । क्या हम तब ही बाहर निकलेंगे, जब मुल्क वैरान हो जायेगा ? यदि दुश्मन ने अपनी नीती बदल ली है, तो तुम्हें भी इस पुरानी नीति को छोड़ना ही पड़ेगा । जब इस तरह सारे जत्थेदार आपस में गर्म-सर्द हो रहे थे तो कोई फैसला होने में नहीं था आता, तो सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिये ने सब सिंघों को सम्बोधन करके कहा, "खालसा जी, आपस में मत झगड़ो, आओ महाराज का हुक्म ले । यदि हुक्म में इशारा चढ़ाई का हो, तो सब चढ़ाई के लिए तैयार हो जाना, चल कर सम्मुख लड़ाई छेड़ लेंगे, नहीं तो फिर वाहिगुरु कह कर छापे मारने शुरू कर देना ।"

सबको जत्थेदार की यह सलाह बड़ी पसन्द आई । सतिगुरु पर भरोसा रखने वाले सिंघों ने उसी समय जैकारे छोड़े तो जगत-ज्योति, गुरबाणी स्वरूप सतिगुरु, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर, हरिमंदिर साहिब में सब सिंघ आ जुड़े । बड़े चाव से त्रिभावल की देगें सब सरदारों की तरफ से आ गई । तब सिंघ साहिब भाई चंचल सिंघ जी ने महाराज का हुक्म लिया-

"थिरु घरि बैसहु हरि जन प्यारे ॥
सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥
दुष्ट दूत प्रमेसरि मारे ॥
जन की पैज रखी करतारै ॥"

पांचवें पातशाह जी के इन दूतों दुष्टों के निवारण वाले हुक्म को सुन कर सिंघों को चाव चढ़ गये । अब सर्व-सम्मति से फैसला हुआ कि चढ़ाई जल्दी की जाये, ढील न लाई जाये ।

इस समय तक सिंघों की गिनती चाहे लाख से पार हो गई थी, परन्तु जंगी और तैयार-बर-तैयार सिंघों की गिनती 60-70 हज़ार के करीब ही थी । सब मिसलों के सरदार अपनी-अपनी फौजों को लेकर चल पड़े ।

उधर कुरान शाह को जब लाहौर यह खबर पहुंची तो उसने झट काबुल संदेश भेज यहां वाली फौजों को लाहौर इकट्ठा कर लिया कि सिंघ कहीं लाहौर को ही न आ पड़े ।

इधर सिंघों ने यह स्कीम बनाई कि लाहौर को एक तरफ छोड़ कर वह आगे गुजरां वाले को निकल जाये और काबुल की तरफ से आ रहे दुरानियों को रास्ते में ही रोक लें । लाहौर वाले दुरानियों से आते लश्कर को न मिलने दिया जाये, इनका ज़ोर फिर देख लेंगे ।

ज़मान शाह चाहे विशेष संदेश आने पर काबुल चला गया था परन्तु फिर भी वह काफी फौज पीछे जाता-जाता रुहतास के किले में भी छोड़ गया था । इन फौजों की कमान मीर सांहची के हाथ में दे गया, जो उसकी फौजों का नामी जरनैल था । यह तोपखाने का इंचार्ज था और माना हुआ निशानची होने के कारण इसको 'मीरिआतिश' का खिताब भी अहमद शाह की तरफ से मिला हुआ था । काबुल जब संदेश पहुंचा तो ज़मान शाह ने कुछ और फौज भी भेजी और मीर सांहची को अपनी फौज सहित एडवांस मार्च करने का हुक्म भी भेज दिया । इधर सिंघों ने चिनाब पार होकर गुजरात के पास जाकर अपनी मोर्चेबंदी कर ली । उधर सांहची बेअंत दारू सिक्के, तोपें और जंबूरचों से लैस हो अपनी तथा और बहुत सारी लाख के करीब फौजों को जोड़ कर जेहलम के किनारे आ पहुंचा ।

मीर सांहची से भारी युद्ध

यह पहला टकराव था जो तय करके और मरना प्रण करके होने लगा था । मीर सांहची ने 20 हज़ार फौज आगे हरियावल दस्ते तौर पर सिंघों की तरफ भेजी, जो गुजरात के पास सिंघों से आ भिड़ी परन्तु यह फौज सिंघों के हमले का ताव न झेलती हुई भागने को तैयार ही थी कि पीछे से सांहची अपनी सारी फौज सहित आ पहुंचा और एकदम तेज़ी का जंग मच गया ।

सिंघ बहुत बहादुरी से लड़े, मरे भी तो मारे भी उन्होंने बड़े, परन्तु थोड़े होने के कारण फिर जंगी सामान कम होने के कारण भारी मार नीचे

आ गये, इसलिए सिंघों के पैर पीछे हो गये, दुरानियों ने हज़ारों छोटी तोपें और जंबूरचे ऊंटों पर लदे हुए थे, जिनकी गोलियों ने सिंघें को लाचार और निढाल कर दिया। अब दुरानी सरदार किलकारियां मारते और सिंघ सरदारों को ललकारते रणभूमि में फिरने लगे। यह हालात देख सिंघ दहल गये और कई सरदार भी झूरने लगे कि हमारा कहा किसी ने नहीं माना, भला मैदानी जंग में हम थोड़े से बिना तोपों जंबूरचों से कैसे फतेह प्राप्त कर सकते हैं।

बाबा बेदी राम सिंघ जी शहीदों की मिसल वालों ने जब सिंघों को इस तरह दो-चित्ते होते देखा तो उनको रोष चढ़ गया। वह कहने लगे- "खालसा जी ! देखना, इस समय लड़ाई में से हरण होने की बात मत सोचना। याद रखो, यह लाखों की गिनती में दुरानी अब आपको भागतों को छोड़ेंगे नहीं और इस प्यारे पंजाब में तुम्हें फिर किसी ने नहीं घुसने देना। ओ खालसे ! गुरु महाराज आगे की अरदास को याद करो। आओ हौसला करें, लो मैं आगे चलता हूँ और आप पीछे-पीछे आओ। दुरानी फौज में धुस देकर धस जायें और तोपों की मार से आगे निकल कर जंग करें।"

यह कह कर बाबा बेदी राम सिंघ जी ने अरदास की और साफियों से सजे घोड़े सरपट दौड़ा लिये। पीछे बाकी सिंघ भी अकाल अकाल करने लग पड़े। मील के जगह दुरानी तोपों की मार नीचे थी, जिसको मिनट दो मिनट में सिंघों के घोड़े पार कर गये। फिर क्या था, ऊँटों पर चढ़े तोपचियों को पहले नेजों का शिकार किया और फिर तेगों से बाकियों का विनाश करने लगे। इस समय दुरानी भी बड़े अड़े, उनको ज़्यादा होने का बड़ा मान था। अकेले-अकेले, दो-दो और चार-चार के कई जगह मुकाबले शुरू हो गये-लेकिन हाथ-पैर की जंग में थोड़े समय में ही सिंघों का हाथ ऊपर हो गया। आगे बढ़ कर लड़ने वाले दुरानी जल्दी ही सिंघों की तेगों का शिकार हो गये। इस तरह एक बार सिंघों ने दुश्मनों के पैर हिला दिये।

बाबा राम सिंघ जी की शहीदी

अपनी फौज के पैर हिले देख कर मीर सांहची पीछे से स्वयं ताज़ा दम फौज लेकर आगे बढ़ा । उसने अब लड़ाई की कमान अपने हाथ में ले ली । बढ़ती आ रही दुरानी फौज की बाबा राम सिंघ जी से भारी भिड़ंत हुई, क्योंकि आप सब सिंघों का नेतृत्व कर लड़ रहे थे । बाबा राम सिंघ जी बड़ा लड़े, बड़े दुरानी उन्होंने मारे और आगे ही आगे बढ़ते गये, परन्तु आखिर दुश्मन की गोलियों और तीरों से छेद दिए गये, पुर्जा-पुर्जा हो कर मैदान ए जंग में शहीदियां पा गये । बाकी सिंघों ने भी कम न की और बढ़कर मुकाबला किया । हज़ारों सिंघ भी इस समय शहीदियां पा गये ।

अब फिर आम सिंघ हरण होने की सलाहें करने लगे । परन्तु इस समय जत्थेदार सिंघों को हरण नहीं होने देना चाहते थे । जत्थेदार बाबा राम सिंघ जी की शहीदी को बेकार नहीं जाने देना चाहते थे और इस ताने से भी बचना चाहते थे कि बाबा जी को मरवा कर जत्थेदार आप भाग आये हैं । इसलिए बिखर रहे सिंघों को घोड़े भगा-भगा कर जत्थेदारों ने कहना शुरू कर दिया-

"हे खालसो ! देखना, सिंघी को लाज न लगाना । महाराज के वाक को याद करो, वह दुष्ट दूतों को मारने में अवश्य हमारी मदद करेंगे । आओ, मिल कर एक बार ही हमला करके दुश्मन को मार मुकायें ।

इसके बाद जत्थेदारों ने कुछ सिंघों को लड़ाई करने पर लगा कर आप एक तरफ हो कर पांच प्यारे चुने और उनसे अरदास करवाई-

'दुष्ट दमन कलगीधर पातशाह ! इस मुश्किल समय पंथ का नेतृत्व और सहायता करो । इसलिए कृपा करो, आपके हुक्म और आपके आदर्श अनुसार, इस समय खालसा पंथ ज़ालिमों और दूसरों का हक छीनने वालों के मुकाबले में आया हुआ है, इसको फतेह बख्शो और अंग-संग होकर सहायता करो ।'

अरदास की देर थी कि खालसा दलों में अपने-आप ही कोई ऐसी

गूंज उठ खड़ी हुई ।

"खालसा जी ! ढील न करो अब फतेह आपकी ही होगी, एक बार टूट कर दुश्मन को पड़ जाओ ।"

सच्चे मन से की अरदास कभी खाली नहीं जाती । इस गूंज ने सिंघों के अन्दर नई आत्मा फूंक दी । गिरते-पड़ते मनों को इतना उल्लास आया कि कमाल हो गई ।

सांहची का मारे जाना

सिंघ सरदारों ने अब बड़ी फुर्ती की । बहुत जल्दी सिंघों को तरतीब सिर करके, एक बार ही तलवारें सूत कर दुश्मन के बीच घुस गये और उन्होंने जीत की आशा लगाये बैठे और आगे बढ़-बढ़ किलकारियां मार रहे गिलजों पठानों को पहले हाथ ही जा दबोचा । सुबह से यह लड़ाई शुरू हुई थी और अब सूर्य डूबने ही वाला था । इस अरसे में बेअंत सिंघ और बेअंत पठान मर चुके थे और विशेष कर दुरानियों के सब सरदार मीर सांहचो के सिवाय सिंघों ने एक-एक करके समाप्त कर लिये हुए थे । परन्तु मीर सांहची, फौज का सबसे बड़ा जरनैल अभी हाथी पर चढ़ा फौज को लड़ा रहा था, इसलिए गिलजे दुरानी जोश से लड़ रहे थे । यह देख कर भाई थराज सिंघ जी ने अपने राम-जंगे (बंदूक) को संभाला और दो गोलियां डाल कर बर्छे को खूब कूट-कूट कर भर लिया । भाई थराज सिंघ जी घोड़े को छेड़ कर बरछे की नोक से दुश्मन को चीर ऐन सांहची के सामने निकट आ गए । आप सिक्ख पंथ में माने हुए निशानची थे । आप जब सांहची तक बढ़ गये तो निकट हो कर निशाना लिया और बारूद को तोड़ा लगा दिया । बस बारूद को आग लगी ही थी कि गोली फुर्ती से निकली तो सांहची की संजो को चीर कर उसके शरीर में जा घुसी । वह मुनारे की तरह धड़ाम करके ज़मीन पर आ पड़ा ।

सिंघों की फतेह होनी

मीर-सांहची के मरने की ढील थी कि दुरानियों में खलबली मच

गई । दिल छोड़ गये दुरानियों के पैर उखड़ने की देर थी कि सिंघ और तेज़ हो गये । सारे दिन की लड़ाई का बदला अब लेने लगे । भागता-भागता जो जेहलम निकल गया वह बच गया, बाकी सब सिंघों की तलवार का शिकार हो गये । गुजरात से ले कर जेहलम तक धरती खूनो-खून और लाश पर लाश चढ़ गई ।

यह जंग कोई मामूली जंग नहीं थी, सिंघों के लिए जीवन-मृत्यु की जंग थी । इतिहास में लिखा है कि इस जंग में 10 हज़ार से भी अधिक सिंघ शहीदियां पा गये । लगभग 30 हज़ार दुरानी मारे गये और इतने ही घायल हुए, जिन में से कई काबुल जा मरे । यह महान जंग सम्वत 1836 में हुई और इसके बाद पंजाब पर सिंघों ने फिर पूर्ण तौर पर अधिकार कर लिया । इस हार के बाद पठानों और गिलज़ों के हौंसले इतने गिर गये और इस मार व नुक्सान ने उनके दिल में इतना सख्त डर पैदा कर दिया कि फिर यदि इनसे लड़ाई हुई तो बचोगे नहीं ।

मिसलों का राज्य

सारे पंजाब पर तकरीबन सरहंद की फतेह के बाद ही सिंघों ने मिसलवार कब्ज़ा कर लिया था । जब कोई दुश्मन आता था, सब सिंघ अपने-अपने इलाके छोड़ कर जंगलों में जा घुसते थे, और जब दुश्मन का भारी लश्कर वापिस चला जाता था, तो सिंघ जंगलों से वापिस आ कर बाकी दुश्मन को मार भगाते और अपने-अपने इलाके फिर संभाल लेते थे परन्तु जब ज़मान शाह ने भारी फौजों को स्थाई तौर पर पंजाब में छोड़ दिया था, तो 4 साल की खटपट के बाद सिंघों ने इकट्ठे होकर फिर सम्वत 1836 की भारी लड़ाई लड़ कर ही अपने इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया था ।

भंगी मिसल के पास लाहौर, मुलतान का भारी इलाका था और 15-20 हज़ार के करीब इस मिसल के सिंघों की संख्या थी पर बाकी मिसल वालों की 8 हज़ार से बढ़कर अधिक नहीं थी । लाहौर से दूर फरीदाबाद और चूनियां का इलाका नकईयों की मिसल पास, सियालकोट का इलाका

शहीदों की मिसल के पास और इससे दूर गुजरां वाले से लेकर रुहतास के इलाके तक शुक्रचकिया की मिसल का राज्य था। इधर बटाला और गुरदासपुर का इलाका मिसल घनईयां पास था और श्री हरि गोबिन्दपुरा से ब्यास का इलाका रामगढ़िया मिसल पास था। सतलुज और ब्यास के बीच वाले और डल्ले वाली पर आहलूवालिया मिसल का कब्ज़ा था। सतलुज आगे सिंघ पुरीया मिसल, फुलकिया मिसल का कब्ज़ा था। आगे अम्बाला पर निशाना वाली मिसल, शहीदों की मिसल का आनन्दपुर आदि के इलाके पर कब्ज़ा था। इससे आगे मिसल करोड़ियों तथा कुछ और सिंघ सरदार यमुना के किनारे तक के इलाके पर काबिज़ हो चुके थे।

शुरू-शुरू में सबसे ताकतवार भंगी मिसल थी, परन्तु जैसे राज्य बल बढ़ता गया, तैसे कई दूसरी मिसलों वाले भी मजबूत हो गये, राज्य भाग्य पा कर इनका आपस में कट्टर विरोध भी बढ़ता गया। क्योंकि प्रभु की माया का करतब जो शुरू से चलता आया है वह करती ही जाती है। इसकी पकड़ और खींच से कोई विरला ही बचता है।

सिंघ मिसलों के आपस में टकराव

अभी सांहची से युद्ध किये थोड़ा ही समय हुआ था कि रामगढ़ियों और घनईयों की टक्कर हो गई। घनईयों ने जम्मू के राजा संसार चन्द की मदद से रामगढ़ियों के इलाके छीन लिये। स. जस्सा सिंघ जी तब मालवे में महाराज पटियाला पास जा ठहरे। स. गुरबख्श सिंघ घनईयां मिसल वालों ने ज़ोर डाल कर और कई इलाके कब्ज़े में ले लिये। शुक्रचकिया मिसल के जत्थेदार इस समय स. महां सिंघ जी थे, उनसे भी इनकी शत्रुता बढ़ गई और कई टकराव हुए। स. महां सिंघ जी ने अब जम्मू के राजा को हाथ में किया और उधर स. जस्सा सिंघ रामगढ़िये को पटियाले संदेश भेजा कि आओ मिल कर जंग करें और जीत के बाद आप अपना इलाका संभाल लेना। इसलिए स. जस्सा सिंघ जी अपने 5-6 हज़ार साथियों सहित बटाले आ पहुंचे। यह सिंघों की आपस में सबसे बड़ी लड़ाई थी। घनईया मिसल वाले स. गुरबख्श सिंघ जी इस

लड़ाई में मरे तो इनके घर से सरदारनी सदा कौर ने उसी समय सुलह कर ली और अपनी पुत्री का शगुन दे कर बात निपटा ली । यह बात 1838 सम्वत की है । रामगढ़िये सरदारों ने अपना इलाका संभाल लिया परन्तु बाद में सदा कौर के मददगार होने के कारण शुक्रचकियों से इनका भी भारी विरोध हो गया था ।

सम्वत 1836 की बड़ी लड़ाई से पहले कुछ मिसल वालों ने पटियाले पर चढ़ाई कर दी थी कि इन्होंने अहमद शाह से मेल क्यों किया है और इन्होंने खालसी आदर्श के विपरीत उसको कई लाख रुपया क्यों दिया है । इस बात से सिंघ इनसे काफी समय से गुस्से थे । इसलिए पटियाले भारी युद्ध हुआ, परन्तु मिसल करोड़ियों के जत्थेदार स. बघेल सिंघ ने बीच पड़ कर इस भाई-भाई का नाश करने वाले युद्ध को बन्द करवा कर दोनों दलों का समझौता करवा दिया था ।

विदेशी हमले

सम्वत 1836 की बड़ी लड़ाई का बदला लेने के लिए पंजाब पर फिर भी ज़मान शाह दो-तीन बार चढ़ कर आया, परन्तु सिंघों ने फैसला किया हुआ था कि सामने अड़ कर लड़ना ही नहीं । इसलिए जब भी वह अपनी बड़ी भारी पठानों, अफगानों और कज़लबाशां की फौज लेकर आता, सिंघ अपने-अपने इलाके छोड़ जंगलों-पहाड़ों में जा घुसते और दुश्मन पर इस तरीके से छापे मारते कि उसका नाक में दम कर देते । सिंघ भी अब थोड़े नहीं थे, 60-70 हज़ार सिंघों के कई जत्थे दुश्मन के होश उड़ाये रखते । इसलिए दो बार तो ज़मान शाह जोश से आया परन्तु तीसरी बार उसने फैसला किया कि अब यहां हमले, मेरे लिए नुक्सानदेय है । सिंघ घोड़े, हथियार और मेरे फौजी मार जाते और जो कुछ मैं लूटता हूँ, वह भी लूट लेते हैं । एक और बात हुई । इतिहास में लिखा है कि उसको स्वप्न भी आया कि इस पंजाब का राज्य अब एक आंख वाला सिक्ख करेगा, इसलिए अब तुम बच कर चले जाओ तो ठीक है । जिन विचारों को दिन समय सोचे, वह रात समय सामने आते हैं ।

इसलिए ज़मान शाह पंजाब आता तो फौजें लेकर था परन्तु सिंघों से डरती और मार खाती अपनी फौजों को दौड़ता देखता था तो फिर यही विचार किया करता था, जिसका ख्याल था कि उसको स्वप्न में आया । यह कोई 1849 का समय था ।

वह जब वापिस आ जा रहा था तो पार निकलते समय जेहलम दरिया में उसकी 12 तोपें डूब गईं । उस समय महाराजा रणजीत सिंघ की कोई 15 साल की उम्र थी और वह राम नगर के इलाके में था । शाह ज़मान ने महाराजा रणजीत सिंघ को संदेश भेजा कि मेरी तोपें निकलवा कर भेज दें । महाराजा रणजीत सिंघ ने उसी साल ही वह तोपें निकलवा कर काबुल भेज दीं । शाह ज़मान ने संदेश तो भेजा था परन्तु उसका ख्याल था कि मुझे अब यह किसने भेजनी हैं, परन्तु जब तोपें देखीं तो बहुत खुश हुआ । उस समय उसने सोचा कि पंजाब पर मेरा हक सिक्ख जमने तो देते नहीं, क्यों न मैं अपनी तरफ से पंजाब का पट्टा महाराजा रणजीत सिंघ को लिख भेजूं, मेरा क्या हर्ज है । इसलिए उसने पंजाब का पट्टा और खिलयत महाराजा रणजीत सिंघ को भेज दी और कह भेजा कि हम ने पंजाब का हक छोड़ा और आपको हकदार करते हैं ।

महारानी साहिब कौर की बहादुरी

अहमद शाह से मार खाने के बाद मराठे कई साल नहीं उठे, परन्तु तीस साल बाद जब सिंघ अहमद शाहियों और दुरानियों के छक्के छुड़ा चुके थे । फिर यह ताकत पकड़ कर पंजाब की तरफ बढ़ आये । पंजाब में इनकी कई जगह सिंघों से मुठभेड़ हुई और आगे की तरह यह फिर एक बार सारे पंजाब पर कब्ज़ा कर लेना चाहते थे, परन्तु पटियाले के मशहूर युद्ध ने ही इनकी आशाओं पर पानी फेर दिया था और यह पंजाब छोड़ कर दौड़ गये थे ।

इतिहास बताता है कि मराठों ने पूरी तैयारी करके महाराजा पटियाले पर हमला कर दिया । पटियाले की फौजों ने मुकाबला तो बहुत किया, परन्तु मराठों की ताकत बहुत ज़्यादा थी । उनकी तोपों के गोले किले

में आ कर गिर रहे थे, और इनकी तोपें छोटी थीं और मुकाबला असम्भव बन रहा था। इस कारण सिक्ख फौजों में दहशत फैली हुई थी। परन्तु इस समय महारानी साहिब कौर की प्रशंसनीय बहादुरी और साहस ने हार को जीत में बदल दिया था। जब सिंघ फौजें बे-दिल हो रही थीं तो महारानी ने फौजों की कमान संभाल कर ऐसी प्रभावशाली तकरीर की कि ऐतिहासिक कारनामे सुना कर सिंघों के गिरते मनों को खड़ा कर लिया और फिर रात समय किले से बाहर निकल कर, दुश्मन पर एक दम हमला करने की योजना बनाई। सारे दिन की लड़ाई बाद जब मराठे खा-पी कर सो रहे थे, तो महारानी साहिब कौर ने सिक्ख फौज की आप अगुवाई की और साहिबों की बख्शी तलवार से अचानक हमला कर दिया। जीत की आशा लगाई बैठे मराठों को इस बात की उम्मीद ही नहीं थी, इसलिए वह बड़ी बेफिक्री से सो रहे थे। परन्तु अब अचानक हमले की ताव कौन झेलता ? रातो-रात ही भगदड़ मच गई, जिधर किसी का मुँह हुआ, भाग गया। सारा जंगी सामान फैंक कर और हज़ारों आदमी मरवा कर मराठे पंजाब छोड़ गये और फिर पंजाब की तरफ आने का नाम नहीं लिया।

जार्ज राबर्टसन का हमला

इस समय में दिल्ली से दूर अंग्रेज़ भी कई इलाकों पर कब्ज़ा कर चुके थे और उनके जरनैल हर कमज़ोर इलाके पर कब्ज़ा करने के लिए ललचाई आँखों से देख रहे थे। इसलिए पंजाब से मुड़ते मराठों ने दिल्ली की तरफ देखा और इस पर कब्ज़ा करने की योजनाएं बनाने लगे। ठीक इसी समय जार्ज राबर्टसन नामक एक अंग्रेज़ जरनैल फौजें लेकर घुस आया और इसने कई सिंघों के इलाके छीन लिये। परन्तु जब सारे सिंघ मिलकर इसके मुकाबले में आये तो यह भी भारी नुक्सान उठा कर पंजाब में से मुड़ गया।

दिल्ली पर मराठों का कब्ज़ा

भले ही अंग्रेज़ भी इस समय दिल्ली पर कब्ज़ा करना चाहते थे,

परन्तु मराठों ने तैयारी करके 1854 में इस पर कब्ज़ा कर लिया और मुसलमान अमीरों-वज़ीरों को अच्छी तरह दंडित किया। दिल्ली में इस समय भी बादशाह तो था, परन्तु नाममात्र ही था और दिल्ली के आसपास कुछ इलाके पर ही इसका कब्ज़ा था। यमुना तक पंजाब के सारे इलाकों पर सिंघों का राज्य था। इसलिए आलम शाह ने छलौदी में स. बघेल सिंघ के पास आदमी भेजा कि हमारी मदद के लिए आओ। सरदार बघेल सिंघ दिल्ली गये और सारी हालत देखी। सिंघों को इस तरह एक तो मराठों के पंजाब पर हमला करने का जवाब देने का मौका मिलता था और दूसरी एक और बात भी थी, जिस कारण सिंघों के मन बड़ी देर से तड़प रहे थे, परन्तु मौका नहीं मिलता था। सरदार बघेल सिंघ जी ने अब इस मौके का लाभ उठाने का फैसला कर लिया।

दिल्ली गुरुद्वारों की सेवा

स. बघेल सिंघ जी ने दिल्ली वालों की बातें सुन कर मन में विचारा कि सिंघ कई बार दिल्ली में सतिगुरों की यादगारें कायम करने की सलाहें करते रहे हैं, परन्तु आज तक हमें इस काम के लिए तो मौका ही नहीं मिला। इस बात को ख्याल में ला कर वह दिल्ली वालों को कहने लगा- 'हम आपकी मदद करेंगे, परन्तु एक बात यदि आप हमारी भी माने तो।'

उन्होंने मानने का विश्वास दिलाया तो स. बघेल सिंघ जी कहने लगे कि हमें सिर्फ यही कुछ चाहिए कि हमें दिल्ली में हमारे सतिगुरों की ऐतिहासिक यादगारें कायम कर लेने दी जाएं।

दिल्ली के मुसलमान हाकिम यह बात मान गये और बुद्धिमान स. बघेल सिंघ जी ने उनसे लिखवा लिया, जिस पर शाही काज़ी के दस्तखत भी करवा लिये।

यह कागज़ लिखवा कर स. बघेल सिंघ जी वापिस छलौदी आ गये। यहां आ कर उन्होंने सब सिंघ सरदारों को विशेष तौर पर लिख भेजा-

"खालसा जी, आओ! मिल कर हमला मारे, सतिगुरु के पावन शहीदी अस्थानों को बनाएं। शीघ्र आओ, सतिगुरु जी ने यादगारें कायम

करने के लिए समय बना दिया है ।''

यह संदेश मिलते ही सिंघों को चाव चढ़ गये और थोड़े दिनों में ही 60-70 हज़ार के करीब खालसा दल छलौदी आ पहुंचा और वहां से नगारों पर चोट लगा कर खालसे ने दिल्ली को कूच कर दिया । खालसे की चढ़ाई देख कर मुल्क के और लुटेरे भी आ इकट्ठे हुए । दांव मारों का काम क्या है कि दांव की तलाश में रहें । जब खालसा दल धूम मचाता दिल्ली के करीब पहुंचा तो मराठों को भी खबर हो गई । मराठे चाहे दिल्ली नहीं छोड़ना चाहते थे परन्तु उन्होंने फैसला किया कि इनसे जंग नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह सिंघ यहां टिकने नहीं लगे, इनका कोई बादशाह नहीं है और न ही यह दिल्ली पर बादशाही करने का ख्याल ही रखते हैं । आगे दो-तीन बार यह दिल्ली को खुली छोड़ कर जा चुके हैं । इसलिए जब सिंघ दिल्ली छोड़ेंगे, हम फिर कब्ज़ा कर लेंगे । यह सलाह बनाकर मराठे खालसे का आना सुनकर दिल्ली छोड़ गये । उधर जब मुसलमान हाकिमों ने देखा कि मराठे दौड़ गये हैं तो वह कहने लगे कि अब सिंघों को हम दिल्ली में क्यों घुसने दें । मूर्खों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई और क्या । जब सिंघ अज़मेरी दरवाज़े द्वारा आगे बढ़े तो इन्होंने आगे से लड़ाई शुरू कर दी, सिंघ भी अड़ खड़े हुए । सिंघ सरदारों ने देखा कि इस रास्ते मुसलमानों ने भारी मोर्चेबंदी की हुई है तो उन्होंने कहा, यहां भी लड़ाई जारी रखो परन्तु साथ का दरवाज़ा खुला है, उधर से अचानक घुस जाओ । इसलिए जो सिंघ आगे बढ़े थे वह यहां ही लड़ने लगे और पिछली तरफ से बाकी सिंघ चुपचाप ही दिल्ली जा घुसे । लगे मार-काट करने और जलाने । मुगलों का महल जला कर राख कर दिया गया और भारी लूट डाली । शहर में हाहाकार मच गई । यह काम करके सिंघ संध्या के समय बाहर मजनूं के टिल्ले पास आ इकट्ठे हुए ।

उधर मुसलमान कांप गये कि यह क्या बन गया । जब सब अमीर वज़ीर इकट्ठे हुए तो कहने लगे कि यह बला आप ने स्वयं ही अपने गले डाल ली है । बहुत सारी बातें हुईं और फिर उन्होंने सलाह बनाई कि जैसे हो सिंघों से सुलह-सफाई कर लेनी चाहिए । जो इनसे वायदा किया है,

वह पूरा करना चाहिए, भाव कि उनको गुरुद्वारे बना लेने दिये जायें।

स. बघेल सिंघ के पास उन्होंने आदमी भेजा और निवेदन किया कि हमारे साथ सुलह कर लो। सरदार बघेल सिंघ जी प्रात: काल अपने पांच सौ सवारों सहित दिल्ली पहुंचे और बातचीत हो गई। उन्होंने मान लिया कि सरदार बघेल सिंघ जी पांच सौ सवारों सहित यहां रहें और बाकी सिंघ वापिस मुड़ जायें। सरदार बघेल सिंघ जी ने कहा, 'ताकत के बिना काम नहीं बनता, इसलिए मैं यहां दिल्ली का कोतवाल बन कर रहूंगा, तो यह काम करूंगा।' मुसलमान भी मान गये। दिल्ली की कोतवाली संभाल कर सरदार बघेल सिंघ ने बाकी सिंघों को पीछे भेज दिया, परन्तु साथ ही उनको कह दिया कि संदेश मिलते ही फिर झट आने की कृपा करना क्योंकि इन मक्कार लोगों का पता नहीं कब फिर बिगड़ जायें।

सबसे पहले सरदार बघेल सिंघ जी ने माता साहिब कौर और माता सुंदरी जी का यादगारी अस्थान तैयार करवाया, फिर अष्टम पातशाह श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब का अस्थान ढूंढा और बनवाया, जो गुरुद्वारा बंगला साहिब के नाम से आज प्रसिद्ध है। इसके बाद फिर श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के अस्थानों की तलाश की जाने लगी। जिस बंजारे सिक्ख ने श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की देह का संस्कार किया था, उसने श्री आनन्दपुर साहिब जा कर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी को बताया था कि मैंने सतिगुरों की देह का संस्कार अपने घर में ही लकड़ी इकट्ठी करके किया है और घर को भी साथ आग लगा दी थी ताकि मुसलमान हाकिम शक न करें। घर को आग लगा कर हमने रोना शुरू कर दिया था, जिस कारण हमारे गड्ढों के पीछे शक करके जो मुसलमान आये थे, वह वापिस मुड़ गये थे। फिर हमने वह सारी राख इकट्ठी करके गागरों में डाल कर वहीं ही नीचे दबा दी। यह सुन कर दशम पातशाह जी ने वचन किया था कि अच्छा किया, हमारा खालसा निशानी ढूंढ कर सतिगुरों की याद कायम कर देगा।

यह वार्ता सरदार बघेल सिंघ को याद थी। सब सिंघों को बड़ा उत्साह था कि सतिगुरों की यादगारें ढूंढ कर कायम करें। जब सरदार बघेल

सिंघ जी ने तलाश की तो उस बंजारे खानदान के कुछ आदमियों ने बताया कि उस जगह तो इस समय मस्जिद बनी हुई है, सिंघों ने उसी समय मस्जिद ध्वस्त करनी शुरू कर दी। आधी मस्जिद तोड़ी थी कि हज़ारों की गिनती में मुसलमान पीछे पड़ गए। स. बघेल सिंघ ने उसी समय वज़ीर और शाही काज़ी को बुलावा भेजा कि हमारा इकरार पूरा करो, हम आपको निशानी दिखायेंगे। निशानी न मिली तो हम अपने खर्चे पर यह मस्जिद फिर बनवा देंगे। यह बात तय करके मस्जिद तोड़ी गई और मस्जिद खोदी गई तो सचमुच दो गागरें सिंघों को दबी हुई मिल गईं। सिंघों को खुशी चढ़ गई और मुसलमान दिलों की दिलों में ले कर पीछे हट गये। इस जगह गुरुद्वारा बनाया गया जो आज रकाबगंज के नाम से प्रसिद्ध है।

फिर सरदार बघेल सिंघ जी ने साहिबों के कत्ल होने वाले अस्थान की तलाश शुरू की। शहर के वृद्ध-वृद्ध आदमी और औरतों से पूछताछ की गई तो एक बड़ी वृद्ध स्त्री जो माशकी जाति में से थी, ने बताया कि मैं बता देती हूँ। उसने कहा कि यह जगह मेरे पिता ने मुझे कई बार बताई थी, मैं पिता के साथ अक्सर यहां से गुजरती थी। उसने चांदनी चौक के निकट खड़े बोहड़ की निशानी दी। उसने कहा-मेरा पिता उस समय पास खड़ा था, जब साहिबां ऊपर तलवार चलाई गई थी उस समय बड़ी अंधेरी आई और अंधेरा घनघोर हो गया था। इस जगह पर भी मस्जिद की एक दीवार आई हुई थी। बात सुनकर सिंघों के नैन सजल हो गये, झट सिंघ धारणा कर मस्जिद की दीवार पर चढ़ गये और ध्वस्त करने लगे। सिंघों को मस्जिद तोड़ते देख कर मुसलमान फिर आ पड़े और इस बार तो सिंघों से मुठभेड़ ही हो गई। लड़ाई होने से लगभग 60 आदमी मारे गये। इतनी देर को दिल्ली का वज़ीर तथा और अहलकार बीच आ पड़े और लड़ाई बन्द हो गई, परन्तु मुसलमान शरारत करने से न हटे और गुरुद्वारा बनने न दें। कई हाज़ी और बड़े काज़ी इस बात के विरुद्ध आगे लग गये और बादशाह आलम शाह को कईयों ने जा कर यहां तक कह दिया कि तुम काफिरों की मदद कर रहे हो, इसलिए तुम भी काफिर हो।

मुसलमानों की तरफ से रोक

सरदार बघेल सिंघ जी यह हालत देख कर दिल्ली से बाहर मजनूँ के टिल्ले जा ठहरे। उन्होंने खत लिख कर खालसे को खबर भेज दी कि मुसलमानों की तरफ से गड़बड़ हो रही है, सेवा में रुकावट डाली है, इसलिए झटपट पहुंचो, ताकि गुरुद्वारे कहीं बीच में ही न रह जायें। इसलिए पास-पास के सिंघ तो दो चार दिनों में ही आ पहुंचे। सरदार बघेल सिंघ ने उन शाही काज़ियों और मुसलमान अहलकारों के गांवों को विशेष तौर पर सिंघों को लूटने का इशारा किया, जो अपने दिये वचनों से फिर गये थे और खालसे के काम में रुकावटें पैदा करते थे। खालसे ने दिल्ली के आसपास धूम मचा दी। मुसलमान अहलकारों और काज़ियों झगड़ालुओं की जागीरों के गांव और अस्थान जब सिंघों ने लूट लिये तो उनको भारी ठेस पहुंची। फिर सब को फिक्र पड़ गया कि सिंघ अब दिल्ली भी नहीं छोड़ेंगे। यह देख कर वही झगड़ा करने वाले काज़ी और बड़े-बड़े हाज़ी मजनूँ के टिल्ले सरदार बघेल सिंघ के पास पहुंचे और कहा कि हमारी गलती माफ करो और अपने गुरुद्वारे बना लो।

सरदार बघेल सिंघ जी ने उसी समय कागज़ मंगवा कर उन सभी को कहा कि लिख दो और हस्ताक्षर करो। सभी ने हस्ताक्षर कर दिये। वह कागज़ फिर स. बघेल सिंघ ने आलम शाह के पास भेज दिया। बादशाह कहने लगा, चलो यह भी अच्छा हुआ, सरदार बघेल सिंघ ने मुझे काफिर कहने वालों को भी मेरे साथ ही मिला लिया है। इनके हस्ताक्षर करवा लिये थे।

बादशाह के बुलाने पर सरदार बघेल सिंघ जी फिर दिल्ली पहुंचे। उन्होंने मस्जिद की दीवार गिरा कर पाँच गज ज़मीन गुरुद्वारे के लिए निकाल कर फिर मस्जिद भी कायम रखी। बोहड़ के नीचे थड़ा बनाया, जहां गुरु साहिब शहीद किये गये थे। साथ ही एक गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश करने के लिए अस्थान बना दिया और दशम पातशाह का बख्शा खालसी निशान भी झुला दिया। स. बघेल सिंघ जी ने जहां दशम पातशाह

ठहरे थे वह जगह मोती बाग और मजनूँ के टिल्ले का अस्थान भी बना दिया, जहां कि गुरु नानक साहिब और छठे पातशाह ने चरण डाले थे।

अस्थान पाँच-छः महीने में तैयार हो गये तो बादशाह को कहा गया कि खालसा अब आगे बढ़ेगा। बादशाह ने मुलाकात की इच्छा प्रकट की तो सिंघ जी ने कहा, मुलाकात करने में तो कोई हर्ज नहीं परन्तु हम जैसे और लोग झुक कर सलाम करके बादशाह को मिलते हैं उस तरह नहीं मिल सकते, हमारा सिर तो केवल अकाल पुरख गुरु ग्रंथ साहिब और साध संगत के सिवाय और किसी के आगे नहीं झुक सकता। हम तो मुलाकात के समय केवल श्री वाहिगुरु जी की फतेह गुंजायेंगे। बादशाह ने यह बात मान ली और सरदार बघेल सिंघ हाथी पर सवार हो कर और बाकी सिंघों को पूरी तरह सजा-संवार कर जलूस की शक्ल में बादशाह को मिलने गये। लोग सिंघों की यह निडरता, अनख और शान देखकर चकित हो गये।

कहते हैं कि गुरुद्वारा शीश गंज को कुछ सालों बाद मुसलमानों ने फिर नुक्सान पहुंचाया और रुकावट डाल दी, और सन् 1857 के गदर तक यह इसी तरह रहा परन्तु गदर के बाद महाराजा गजपत सिंघ वालिये जींद ने अंग्रज़ों से मंजूरी ले कर फिर इस गुरुद्वारे की सेवा करवाई जो आज कल हम देखते हैं। मुसलमानों ने फिर मुकद्दमेबाज़ी की, परन्तु आखिर प्रिवी-कौंसिल (लंदन) ने भी इसका फैसला सिक्खों के हक में ही दिया।

महाराजा रणजीत सिंघ

सिक्ख मिसलों वाले विशेष कार्य या दुश्मन पर हमले के समय चाहे इकट्ठे हो जाते थे, परन्तु इनकी आपस में दुश्मनी दिनो-दिन बढ़ रही थी और सदा कौर के रणजीत सिंघ का मददगार बनने से इसकी ताकत और इलाका दिनो-दिन बढ़ता गया। नकई मिसल के सरदारों की आपस में लड़ाई हो जाने का रणजीत सिंघ को फायदा पहुंचा और दूसरे भाईयों से डरते स. भगवान सिंघ ने अपनी राज कौर का रिश्ता महाराजा रणजीत

सिंघ से करके उसको अपना मददगार बना लिया था ।

दरअसल बात यह थी कि जैसे-जैसे तलवारें मार कर इलाके पर कब्जा करने वाले सिंघ सरदार हमले करते गये, तैसे-तैसे आगे बनने वाले हाकिम सिंघों के राज्य प्रबन्ध में बदलाव डालते गये । यही हाल भंगी मिसल का हुआ । इनके कब्ज़े में बहुत भारी इलाका था, परन्तु जब मिसल के वरिष्ठ स. हरी सिंघ और स. झण्डा सिंघ स्वर्गवास हो गये तो इनके राज्य प्रबन्ध में इतनी त्रुटियां आ गईं कि प्रजा तंग आ गई ।

यंह एक ऐतिहासिक सच्चाई है जहां प्रजा ही तंग हो वहां राज्य कैसे रहे, वह बदलना ही था । लोगों में इस समय रणजीत सिंघ की समृद्धि की चर्चा थी, इसलिए कई लोगों ने इनको संदेश भेजे कि लाहौर को कब्ज़े में लेने का उद्यम करो । सम्वत 1856 में सदा कौर को साथ लेकर रणजीत सिंघ ने थोड़ी-सी झड़प होने के बाद ही लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया । स. गुलाब सिंघ भंगी ने कसूर के नवाब को मददगार बना कर लाहौर पर चढ़ाई की और महीना भर मुकाबला होता रहा परन्तु एक रात स. गुलाब सिंघ अपने शिविर में सोया ही चढ़ाई कर गया । सरदार की मृत्यु हो गई तो फिर फौज ने क्या लड़ना था, रणजीत सिंघ की फतेह हो गई । इससे भंगी मिसल के बेशुमार सिंघ फिर रणजीत सिंघ की फौज में आ शामिल हो गए ।

स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया सम्वत 1840 में स्वर्गवास हो गये थे । इनकी मिसल के सरदार इस समय स. फतेह सिंघ जी थे, जिनकी रणजीत सिंघ से अच्छी मित्रता हो गई । इसलिए लाहौर पर कब्ज़ा होने के बाद इन सब हितैषी सज्जनों की सलाह से लाहौर में भारी धूमधाम करके सम्वत 1858 में रणजीत सिंघ ने अपने साथ महाराजा शब्द लगा लिया । यह पद धारण करके महाराजा रणजीत सिंघ ने फिर अपने वसीह इलाके में नानक शाही सिक्का चालू किया, जिस पर यह अक्षर लिखे-

देगु ओ तेगु ऊ फतहि नुसरत बेदरंग ।
याफत अज नानक गुरु गोबिन्द सिंघ ।

रामगढ़िया मिसल के सरदार जस्सा सिंघ जी सम्वत 1859 में

स्वर्गवास हो गये तो बाद में इनके सपुत्र स. जोध सिंघ जी ने महाराजा रणजीत सिंघ से मित्रता गांठ ली और फिर सब सरदार सिक्ख राज्य की विशालता के यत्नों में जुट पड़े ।

सिक्ख मिसलों के समय श्री अमृतसर पर चाहे भंगी मिसल का ही कब्ज़ा था, परन्तु शहर में रहन-सहन और धार्मिक तौर पर हर मिसल वालों को आज़ादी थी और यह सबका सांझा शहर था । सब मिसलों वालों ने यहां अपनी-अपनी रिहायशें बनाई हुई थीं, जिनके नामों की याद अभी भी अमृतसर में मौजूद है । जैसे किला भंगियां, कटड़ा घनईयां, कटड़ा रामगढ़ियां, कटड़ा दल सिंघ, कटड़ा शेर सिंघ, छावनी निहंगां, बाग झण्डा सिंघ, दरवाज़ा महां सिंघ और रणजीत सिंघ का अपना रिहायश अस्थान- राम बाग । यह सब सिंघों की यादगारें हैं । अब महाराजा रणजीत सिंघ ने उस पर अपना अधिकार करना चाहा तो झगड़ा बढ़ता गया । आखिर सम्वत 1862 में अमृतसर पर कब्ज़ा करने के लिए चढ़ाई की गई । कुछ झड़प हुई थी कि अकाली फूला सिंघ जी ने बीच में पड़ कर लड़ाई हटा दी । महाराजा ने स. गुलाब सिंघ के घर से सरदारनी को जागीर दे कर अमृतसर को अपने प्रबन्ध में मिला लिया ।

सिक्ख राज्य के फैलाव के यत्न

1864 तक महाराजा ने सतलुज के इस तरफ के सब इलाकों को अपने राज्य प्रबन्ध में मिला लिया । फिर सतलुज के उस तरफ के इलाकों को प्रबन्ध में करने के लिए भारी फौज ले कर उधर को गये । मालेरकोटला तथा अत्य कई इलाकों के हाकिमों से नज़राने लिये । दोआबे के कई मुसलमान हाकिमों पर भी दबाव डाला गया । परन्तु महाराजा रणजीत सिंघ जी की यह सरगर्मियां फुलकिया रियासतों को बहुत खतरनाक लगीं ।

इधर से फिर कर महाराजा रणजीत सिंघ वापिस लाहौर पहुंचे, तो उधर फुलकिया तथा कुछ और मिसलों वाले सरदारों ने मिल कर सलाह की कि हमें रणजीत सिंघ से कैसे बचना चाहिए । बचने का तरीका उन्होंने

यही ठीक समझा कि अंग्रेज़ों से समझौता कर लिया जाये । अंग्रेज़ अब तक दिल्ली, यमुना के किनारे तक, सारे हिन्दुस्तान पर कब्ज़ा करके आगे के इलाकों की तरफ झांक रहे थे कि यह बात हो गई । इन मिसलों के सरदारों ने जब दिल्ली जा कर यह बात की तो अंग्रेज़ों को और क्या चाहिए था ? यह बात उनकी पालिसी के मुताबिक थी । यह सारे हिन्दुस्तान पर काबिज़ हुए ही एक दूसरे की विरोधता का फायदा उठा रहे थे । इसलिए झट उन्होंने समझौता कर लिया । समझौते अनुसार अंग्रेज़ों ने अपनी छावनी लुधियाने सतलुज के किनारे बना ली ।

महाराजा रणजीत सिंघ को जब यह खबर मिली तो वह हैरान रह गये । इतनी अभी उनके पास ताकत नहीं थी कि वह सारे हिन्दुस्तान पर कब्ज़ा जमा चुके अंग्रेज़ों से टक्कर ले लेते । इसलिए सम्वत 1867 में आपने भी अंग्रेज़ों से एक दूसरे पर हमला न करने का समझौता कर लिया । फिल्लौर, इस तरफ आप ने भी भारी किला बना लिया ।

इधर से हट कर महाराजा रणजीत सिंघ ने फिर दूसरी तरफ रुख किया । कसूर और फिर भखर के इलाके को सम्वत 1873 में अपने राज्य में मिला लिया । फिर बहावलपुर और मुलतान की तरफ हुआ । मुलतान के नवाब मुजफ्फर खां ने कई बार बगावत की और दबाया गया । परन्तु 1874 में इसने भारी तैयारी करके बगावत की । महाराजा ने फौज भेजी, तो वह काबू न पा सकी । इस पर कंवर खड़क सिंघ को और फौज देकर भेजा गया, परन्तु फिर भी काम न बना । लड़ाई लम्बी होती गई । आखिर 1875 में अकाली फूला सिंघ जी के पहुंचने पर यह मुहिम फतेह हो गई । मुजफ्फर खां नवाब अकाली फूला सिंघ जी के हाथों मारा गया तथा मुलतान को पूरी तरह सिक्ख राज्य में शामिल कर लिया गया ।

इधर अटक तक सिंघ काबिज़ हो चुके थे, परन्तु अटक के पार के पठान टिकने नहीं देते थे, आये दिन छेड़छाड़ होती रहती थी । सम्वत 1875 में ही इधर को फौज इकट्ठी की गई । अटक पर पुल बना कर फौज के कुछ दस्ते पहले भेजे गये और दूसरे दिन महाराजा साहिब भी काफी फौज सहित अटक निकल कर पार चले गये और कई लड़ाईयां

लड़ने के बाद 1875 में ही पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया गया ।

सम्वत 1876 में कश्मीर पर चढ़ाई की गई । दो-तीन महीने रास्ते की कठिनाईयों और दुश्मन का मुकाबला करते हुए आखिर श्रीनगर की आबादी में सिक्ख फौज दाखिल हुई और फतेह करके भारी खुशी मनाई ।

उधर पेशावर की फतेह पठानों को चुभ रही थी । अंग्रेज़ भी चाहते थे कि महाराजा को नुक्सान पहुंचे और वह ताकत न पकड़े, क्योंकि अंग्रेज़ों का निशाना सब जगह काबिज होना था । परन्तु यह महाराजा रणजीत सिंघ की काबलियत ही समझें कि उसने अंग्रेज़ों से समझौता-नामा करके अपनी ताकत और बढ़ाई और उसके जीते जी अंग्रेज़ों को पंजाब की तरफ मुँह करने का मौका न मिल सका । अब पेशावर की जंग फिर भड़क पड़ी, बारकज़यी खानदान के पठानों ने जेहाद खड़ा करके सब पठानी कौम इकट्ठी कर ली और पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया ।

महाराजा रणजीत सिंघ जी ने अकाली फूला सिंघ तथा और सरदारों सहित पेशावर की तरफ कूच कर दिया । महाराजा के अटक दरिया तक पहुंचने से पहले कंवर शेर सिंघ और सरदार हरी सिंघ नलुवा बेड़ी का पुल तैयार करके पार जा चुके थे, जिन्होंने जहांगीर के किले को जाते ही फतेह कर लिया था । परन्तु मुहम्मद जमान खां ने अपने आदमी भेज कर पीछे से अटक का पुल तुड़वा दिया और जहांगीर के किले को 25,000 लश्कर से आ घेरा था ।

इसी समय ही महाराजा रणजीत सिंघ अटक पर पहुंचे, तो खबर पहुंची कि खालसा फौज घेरे में आ चुकी है और यदि मदद न मिली तो पता नहीं क्या बने । यह सुनकर महाराजा साहिब सिंघ, साहिब अकाली फूला सिंघ तथा और कई शूरवीर सिंघ दरिया के तेज़ वेग की प्रवाह न करते हुए और पीछे ही कई फौजी और फौजदार भी बह गए परन्तु थोड़े समय में ही हज़ारों जवान पार निकल गये । इनके पार होने की सूचना मिलते ही दुश्मन किले का घेरा छोड़ गया और महाराजा रणजीत साहिब जहांगीर किले में जा पहुंचे ।

दुश्मन की गिनती अधिक देख कर महाराजा साहिब और फौज की

प्रतीक्षा करना चाहते थे , परन्तु अरदास हो चुकी होने के कारण अकाली फूला सिंघ जी उस समय एकदम हमला करना चाहते थे और महाराजा के न मानने पर वह अपने जत्थे के साथ ही अपने दुश्मन पर टूट पड़े । अकाली जी की दिलेरी देख महाराजा साहिब को भी हमला करने का हुक्म देना पड़ा । दो पहर घमासान लड़ाई में ही दुश्मन को भगदड़ मच गई, परन्तु अकाली जी तथा और हज़ारों सिंघ भी शहीदियां पा गये । साथ ही आगे बढ़ कर पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया और यह भारी लड़ाई 1879 में जा कर खत्म हुई ।

सिक्ख राज्य फैल गया

इस तरह ज़ोरदार लड़ाईयां लड़ कर महाराजा रणजीत सिंघ ने मुलतान, झंग, अटक, कश्मीर, मानकेरा, पेशावर और लद्दाख तक के इलाकों को कुछ सालों में ही अपने राज्य में मिला लिया । इस विशाल सिक्ख राज्य के 4 केन्द्र लाहौर, मुलतान, कश्मीर और पेशावर नियत किये गये । इस तरह यह राज्य उस समय एशिया के सब राज्यों से बड़ा हो गया । इसकी आमदन 4 करोड़ और फौज की गिनती पौने दो लाख के करीब थी । रिजर्व इससे अलग थी । विदेशी जरनैलों की शमूलियत ने सिक्ख फौजों को और भी सख्त और लड़ाई के माहिर बना दिया था और वह अंग्रेज़ जो पंजाब को ललचाई नज़रों से देख रहे थे अब इस कोशिश में लग पड़े कि इस राज्य से कोई अनबन न होने पाये ।

कितना शानदार जीवन है महाराजा रणजीत सिंघ का कि अपने जीवन में उन्होंने एक भी हार न देखी । अंग्रेज़ जैसे चतुरों से कई मुलाकातें कीं और ऐसी योग्यता दिखाते कि वे हैरान रह जाते । फिर सिक्खी में भी कम नहीं थे, अच्छी चीज़ जो नज़र आये, वह हरिमंदिर को भेज देते थे । बहुमूल्य हीरों का हार और लाख से अधिक कीमती चानणी अभी तोशेखाने पड़ी है । सिक्खी का सत्कार इतना है कि कोड़े खाने मंजूर करते थे, परन्तु हुक्म की उल्लंघना नहीं करते थे । दानी इतने कि जागीरें और खुले दान और लंगर लगाई रखते थे । गुरुद्वारों और साधुओं के डेरों से

आज जो आप भारी जागीरें देखते हों, यह सब सिक्ख सरदारों और महाराजा रणजीत सिंघ के समय से चली आ रही हैं । सबसे विशेषता यह थी आप प्रजा के दु:खों का ख्याल रखते थे । यदि देश में कहीं अकाल पड़ जाये तो अपनी रिजर्व कनक झट लोगों में नि:शुल्क ही बांट देते थे ।

महाराजा रणजीत सिंघ का राज्य बेशक सिक्खों का राज्य था, परन्तु मंत्रिमंडल में सिक्ख, हिन्दू और मुसलमान वज़ीर सारे शामिल थे और सही अर्थों में उस समय धर्मनिरपेक्ष राज्य था । यदि महाराजा साहिब हरिमंदिर साहिब के लिए या और गुरुद्वारों के लिए भेटें चढ़ाते तो साथ ही पूर्ण सत्कार से पेश आते और सहायता भी करते थे ।

महाराजा रणजीत सिंघ जी के समय में सिक्ख सरदारों और महाराजा साहिब ने ऐतिहासिक गुरुधामों की सेवा की तरफ विशेष ध्यान दिया । तख्त श्री हजूर साहिब (अबचल नगर) नांदेड़ की सेवा के लिए महाराजा साहिब ने विशेष उद्यम किया । इतिहास में ज़िक्र आता है कि साहिब दशम पातशाह जी ने अंतिम समय हुक्म किया था कि हमारा अंतिम अस्थान (देहरा) बिल्कुल न बनाया जाये और यदि कोई ऐसा करेगा, तो उसका सर्वनाश हो जायेगा, जब महाराजा साहिब ने इस अस्थान की सेवा का बीड़ा उठाया तो पुराने-पुराने सिंघों ने महाराजा साहिब जी को महाराज के उस वचन की याद दिलाई कि आप यह खतरा मोल मत लो । यह बात सुन कर महाराजा साहिब ने कहा कि यदि सर्वनाश हो कर भी यह भाग्यशाली सेवा करने का समय मुझे अब मिल रहा है तो मैं फिर भी इसको गनीमत समझता हूँ और उस सिक्ख पंथ को साजने वाले सिरजनहार की यादगार को ज़रूर बना कर छोड़ूंगा, सर्वनाश होता है तो होता रहे ।

पता नहीं यह बात ठीक या गलत, हुआ आखिर यही कुछ ही, महाराजा के आँखें बन्द करने के बाद, जब तक महाराजा के श्वास रहे तब तक सिक्ख पंथ और सिक्ख राज्य दोनों ही बराबर तरक्की करते रहे । सिक्ख राज के समय सिंघों की गिनती एक करोड़ से भी ऊपर हो गई थी । सिंघों की धाक काबुल-कंधार और इधर दिल्ली की तरफ इतनी

फैली कि आसपास के पड़ोसी राजे, महाराजे, महाराजा रणजीत सिंघ से मैत्री करने में शान समझते थे ।

अकाली फूला सिंघ जी

सिक्ख राज्य के लिए जानें कुर्बान करने वालों की गिनती तो चाहे बेअंत है, परन्तु अकाली फूला सिंघ और जनरल हरी सिंघ जी का इसमें खास हिस्सा है । अकाली फूला सिंघ जी तो आदि से अंत तक सिक्ख राज्य की समृद्धि के महान यत्नों में ही लगे रहे । आप रहन-सहन में ही उच्चकोटि के सिंघ और सिपाही थे । आपका जन्म बांगर के इलाके में हुआ । आप अभी सवा साल के थे कि पिता-हीन हो गये । आप के बारे में इतिहास में लिखा है कि आप उस दिन जन्में जिस दिन बाबा दीप सिंघ जी शहीद हुए थे ।

आप शुरू में काफी देर आनन्दपुर रहे और अकाली नैना सिंघ जी से आप ने हर तरह की शिक्षा हासिल की, फिर आप अमृतसर आ रहे थे।

शुरू-शुरू में अमृतसर जब महाराजा रणजीत सिंघ और भंगी मिसल वालों की आपस में मुठभेड़ हुई, तो उस समय अकाली जी को दुःख महसूस हुआ । आप झट अपने साथी सिंघों के सहित दोनों दलों के बीच जा खड़े हुए और कहने लगे-"हे सिंघो ! कुछ होश करो । सिंघों की गोलियां ही अपने सतिगुरु के शहर अमृतसर की तरफ चलें, यह कितने अफसोस की बात है ।" यह बात सुनते ही दोनों दलों ने लड़ाई बन्द कर दी।

बाद में अकाली जी महाराजा के सहायक बन गये, परन्तु डोगरों की हर बात में ज्यादती देख कर आप फिर आनन्दपुर साहिब चले आये । वहां से आप ने अपनी वसूली स्वयं करनी शुरू कर दी । अकाली जी के इस काम से अंग्रेज़ तड़प उठे । उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ के पास शिकायत की कि आपके अकाली जी समझौते की उल्लंघना कर रहे हैं । महाराजा रणजीत सिंघ इस समय हालात ही ऐसे थे कि समझौते के पाबंद रहना चाहते थे । उन्होंने अकाली जी को रोकने के लिए कुछ फौजी दस्ते भेजे, कुछ फौजी सतलुज पार की सिक्ख-रियासतों ने भी इस काम के

लिए भेजे कि अकाली जी को गिरफ्तार कर लिया जाये । परन्तु अकाली जी के सिदकी-रंग में रंगे हुए प्रभावशाली जीवन ने पहली मुलाकात में ही फौज़ियों के मन जीत लिये । उन फौज़ियों ने अपने अधिकारियों को जवाब दे दिया कि वह अकाली जी को गिरफ्तार करने वाला आपका काम करने को तैयार नहीं ।

जब महाराजा को खबर मिली तो वह बहुत घबराया । उसने बेदी साहिब सिंघ जी को बीच में डाल कर अकाली जी को मना लिया और सत्कार सहित श्री अमृतसर वापिस ला कर श्री अकाल तख्त साहिब की सेवा उनके सपुर्द कर दी । महाराजा ने आप और आपके साथी सिंघों के निर्वाह के लिए जागीर मुकरर कर दी ।

इसके बाद अकाली जी ने सिक्खी और सिक्ख राज्य के लिए भारी काम किये । आपने सिक्खी के विपरीत बात हुई देख कर महाराजा को भी सज़ा देने से फर्क न किया । अंग्रेज़ के फौजी शिया मुसलमानों को पीटने से कीर्तन में बे-रसी करने से रोका, जब नहीं रुके और उलटा शरारतें करते देखा तो आप जा कर उनकी भुगत सवारी ।

इतिहास बताता है कि आप जी का सारा जीवन युद्धों-जंगों में ही गुजरा । सिक्ख राज्य के विकास की सारी जंगों मुलतान, कश्मीर, हज़ारा, पेशावर की सब बड़ी लड़ाईयों में आप ने हिस्सा लिया, परन्तु सबसे प्रसिद्ध लड़ाई नौशहरे की है जहां आप आखिरी बार लड़े और जीत प्राप्त करते हुए शहीदी पा गये ।

पठान और अफगान नौशहरे की जंग में इस बात का फैसला करके उतरे थे कि सिक्खों को जेहलम से पार ही रोक देना है । उनसे टक्कर लेने के लिए भारी तैयारी की आवश्यकता थी, परन्तु अकाली जी ने अपने मुट्ठी भर साथियों से ही पिछली फौज का इन्तज़ार किये बिना गाज़ियों के महान लश्कर पर हमला कर दिया । वह शेरों की तरह दहाड़ते हुए आगे बढ़े और वैरियों में खलबली डाल कर उसके सारे इरादे खाक कर दिये । आपकी दृढ़ता के कारण शत्रु की हार हुई । इस समय आपका शरीर गोलियों से छलनी-छलनी हो गया, परन्तु आत्मा तब तक उसमें

डटी रही, जब तक फौजों की तरफ से जीत के आकाश भेदी नारे न गूँज उठे ।

यहां महाराजा को जीत की खुशी हुई वहां आप की शहीदी का भारी दु:ख भी हुआ । आप जी की समाधि नौशहरे लुण्डे दरिया के किनारे बनाई गई । इसके साथ भारी जागीर लगाई गई ।

जनरल हरी सिंघ नलुवा

नलुवा सरदार अभी सात वर्ष का था कि इनके पिता जी स्वर्गवास हो गये । मां को बड़ा दु:ख हुआ । आप गुजरांवाले के थे । भाई ने इस समय बहन की संभाल की और मामा इनकी सुन्दर प्रतिपालना करता रहा । इस अच्छी प्रतिपालना के कारण नलुवे सरदार का शरीर बचपन से ही बहुत सुडौल और चुस्त था । उस समय की विद्या और फौजी शिक्षा आपको दी गई, जिस कारण आप अच्छे भल्लथे-बाज़ बनते गये । घुड़सवारी का भी बहुत शौक था । इसलिए जल्दी ही आप अच्छे शूरवीर बन गये । इन्हीं दिनों लाहौर शहर पर महाराजा रणजीत सिंघ का राज हो चुका था । महाराजा साहिब ने भर्ती की ज़रूरतें पूरी करने के लिए सबसे पहले यहां फौजी मेला लगाना शुरू किया । दूर-दूर से घुड़सवार, भल्लथेबाज तथा और कबड्डी व दौड़ें लगाने वालों को संदेशे भेज कर यहां आने के लिए कहा गया । आम तौर पर यह मेला बसन्त के दिनों में करना शुरू किया गया । पहले या दूसरे मेले पर ही 17-18 वर्ष की आयु में ही सरदार हरी सिंघ नलुवा मेले पर अपने हुनर दिखाने के लिए पहुंचे । सब खेलों में नलुवा सरदार अव्वल निकला, जिस कारण महाराजा की निगाह एकदम नलुवे सरदार की तरफ खिंच गई । हरी सिंघ का पिता भी पहले सरदार महां सिंघ जी के पास मिसल में नौकर रह चुका था, इसलिए बातचीत करने पर झट ही महाराजा साहिब ने आपको अच्छे पद पर नियुक्त कर दिया ।

फौज में पहुंच कर कुछ सालों में ही नलुवे सरदार की प्रतिष्ठा बढ़ गई । आपकी यह खास सिफ्त थी कि जान की परवाह न करते आगे

बढ़ कर लड़ते थे। इस दिलेरी से झपटते थे कि अगला रौब ही न सहार सकता। कसूर, पेशावर, मुलतान और कश्मीर की जीतों में नलुवे सरदार की समझदारी का भारी हिस्सा था।

कश्मीर में अमन करने के लिए सरदार हरी सिंघ को महाराजा रणजीत सिंघ ने पहली बार गवर्नर जैसे बड़े पद पर नियुक्त किया। आप ने कश्मीर जा कर सब बगावतियों को कुछ महीनों में ही खत्म कर दिया। इसके बाद पेशावर का गवर्नर बन कर नलुवे जरनैल ने जमरौद छावनी डाल ली।

सम्वत 1895 की बात है कि जब महाराजा रणजीत सिंघ ने कंवर नौनिहाल सिंघ का विवाह किया तो सब सरदार और बड़े-बड़े फौजी अहलकार इसी खुशी में व्यस्त हुए थे कि मौका देख कर दोस्त मुहम्मद ने सिंघों के राज्य पर हमला कर दिया। उसका ख्याल था कि मैं एक दम अटक के इलाके तक बढ़ कर कब्ज़ा कर लूं और फिर यह इलाका सिंघों से छुड़ा लूंगा। नलुवा सरदार भी इस मौके पर लाहौर में था परन्तु वह जल्दी ही पेशावर जा पहुंचा, जिसका दोस्त मुहम्मद को इल्म न हुआ। अचानक हमले की खबर नलुवे सरदार को मिली तो वह खुद कमान संभाल कर हाथी पर सवार होकर आगे चल पड़े। सिंघ फौजें जब भी दुश्मन पर दबाव डाल कर पड़ती थी तो उसके हमले को रोकना कोई आसान काम नहीं होता था, क्योंकि उस समय जंग ही ऐसी किस्म की थी। दूसरी तरफ पहाड़ों की ओट लेकर लड़ने वाले पठान थे। बड़ी भयानक जंग होने के बाद पठानों में भगदड़ मच गई। नलुवे सरदार का हाथी आगे बढ़ता गया। बन्दूक उनकी दना-दन गोलियां चला रही थीं कि उसी पल एक पहाड़ी नाके पर पहुंच कर आपको एक गोली आ लगी, परन्तु आप हाथी से गिरे नहीं।' परन्तु ज़ख्मी हो कर, हाथी के ऊपर अंबारी में ही लेट गये सिंघ कुछ दूर पीछे ही थे कि झट पहुंच गये। हाथीवान ने इशारा करके नलुवे जरनैल की हालत बताई। सिंघ शोर मचाने से हटा दिये और कहा कि मुझे ले जा कर किले के ऊपर ड्योढ़ी पर बिठा दो ओर ऐलान करो कि सरदार स्वयं जंग का नज़ारा देखेंगे और

आप एकदम हमला करो, किले की रक्षा करो, इतने में महाराजा साहिब आ जायेंगे ।

यह कह कर नलुवे जरनैल ने शरीर त्याग दिया । आपके मृतक शरीर को किले की ड्योढ़ी पर इस तरह टिका दिया गया जैसे कि सचमुच ही जीवित और दुश्मन की तरफ देख रहे हैं । तीसरे दिन बाद महाराजा साहिब फौजें ले कर पहुंच गये और भारी लड़ाई में दोस्त मुहम्मद तीन चार हज़ार पठानों सहित मारा गया, परन्तु इस लड़ाई में सिक्ख राज्य का बहादुर और अमूल्य सूरमा कमांडर *इनचीफ हमेशा के लिए सिक्ख राज्य के सिर से उठ गया । पठानों पर नलुवे सरदार का इतना डर बैठा हुआ था कि अभी तक भी पठानिये बच्चे को 'हरिया रागले' (ओ नलुवा आया) कह कर डराती हैं ।

सिक्ख-राज्य चला गया

शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ अपने प्यारे देश पंजाब की महान अगुवाई करते हुए आखिर 15 आषाढ़ सम्वत 1896 को स्वर्गवास हो गये । उनकी जुदाई में सारा पंजाब तड़प उठा । अपने पंजाब की शान और जाहो-जलाल भी शेरे पंजाब अपने साथ ही ले गये ।

आप ने अपने जीवित रहते ही कंवर खड़क सिंघ को महाराजा बना दिया था, परन्तु प्रकृति की तरफ से कुछ चक्र ही ऐसा चला कि सब कुछ बर्बाद हो गया । खड़क सिंघ सिर्फ तीन महीने ही गद्दी पर रहा । 11 महीने बीमार रहने के बाद जब खड़क सिंघ चल बसा तो संस्कार करके वापिस आते कंवर नौनिहाल सिंघ को भी डोगरों ने किले के दरवाज़े

---

* सिक्ख-राज्य के विरोधी सिक्ख राज्य में ही पैदा हो गये और राज्य में ही पले थे । परन्तु अकाली फूला सिंघ जी और नलुवा बहादुर दो ऐसे कमांडर थे, जो महाराजा से भी बढ़ कर प्रताप रखते थे, परन्तु महाराजा की मौत और इन दो जरनैलों के न होने से विरोधी ऊँचे हो गये, ताकत पकड़ गये और उनकी खुदगर्जी ने आखिर इस कड़ी मेहनत से प्राप्त किये प्यारे सिक्ख राज्य को समाप्त करके रख दिया ।

की ड्योढ़ी गिरा कर ज़ख्मी होने के बहाने अन्दर ले जा कर मार दिया। डोगरे काल-रूप हो कर महाराजा रणजीत सिंघ की सन्तान को खत्म करने पर तुल गये।

इसके बाद खड़क सिंघ की रानी चन्द कौर ने राज्य प्रबन्ध संभालना चाहा परन्तु ध्यान सिंघ ने उसको घर की नौकरानियों को लालच दे कर महलों में मरवा दिया। यही सलूक कंवर की पत्नी के साथ किया गया। फिर चालाक ध्यान सिंघ ने यह जान कर कहीं भेद न खुल जाये सब दासियों को भी मरवा दिया।

ध्यान सिंघ सिक्ख राज्य पर कब्ज़ा करने के ख्याल से इस पाप भरे रास्ते पर चला था, परन्तु रणजीत सिंघ के पुत्रों के मौजूद होते वह राज्य पर कब्ज़ा कैसे कर सकता था ? इसलिए उसने कंवर शेर सिंघ को तख्त पर बिठा दिया, परन्तु इसको संधावालिया के हाथों मरवा दिया। घर की फूट बुरी ! सब को बहकावा देने वाले यह डोगरे ही थे। शेर सिंघ ने इनकी चालों से सुचेत हो कर संधावालिया से नेकी की, सब जागीरें वापिस दे कर इनको अपनी तरफ कर लिया, परन्तु इन्होंने गुस्सा रखा, इन्होंने एक ही दिन शेर सिंघ और उसके पुत्र कंवर प्रताप सिंघ को कत्ल कर दिया। साथ ही कलह की जड़ ध्यान सिंघ को भी खत्म कर दिया। शेर सिंघ दो महीने आठ दिन तख्त पर रहा। इन्होंने शेर सिंघ को मार कर दलीप सिंघ को तख्त पर बिठा दिया गया।

दूसरे दिन ही फौजों को भड़का कर ध्यान सिंघ के पुत्र हीरा सिंघ ने इनको मरवा दिया और स्वयं वज़ीर बन गया। इसने कंवर कश्मीरा सिंघ को मरवा दिया। सिक्ख फौजों को खबर हुई तो उन्होंने गुस्से में आ कर इसे भी मार दिया। फिर रानी जिन्द कौर का भाई जवाहर सिंघ वज़ीर बना परन्तु इसने कंवर पिशौरा सिंघ को मरवा दिया, जिस पर यह भी फौजों के गुस्से का शिकार हो गया।

सिक्ख फौजों के इस रवैये से दहशत फैल गई। अब आगे बने वज़ीर और जरनैलों ने सिक्ख फौज को मरवाने के ख्याल से अंग्रेज़ों से लड़ाई छेड़ ली। सिक्ख फौज को अंग्रेज़ों पर भी शक्तिशाली होते देख जरनैलों

ने विश्वासघात किये । इस पर सिक्ख फौज को हार होनी शुरू हो गई । सरदार शाम सिंघ अटारी भी मदद के लिए गये, जंग करते शहीद हो गये । धोखा देकर सिक्ख फौजों को इन डोगरों ने खूब मरवाया । अंग्रेज़ को मौज बन गई । गुलाब सिंघ ने अंग्रेज़ों से मिल कर जम्मू-कश्मीर पर अपना हक बनवा लिया और इधर भरोवाल के समझौते के अनुसार पंजाब को अंग्रेज़ी रैजीडैंट ने संभाल लिया।

अंग्रेज़ तो पंजाब पर मुकम्मल कब्ज़ा करना चाहते थे, इसलिए वह शरारतें करके सिक्ख सरदारों को तंग करने लगे । दीवान मूल राज, जो लाहौर दरबार की तरफ से मुलतान का हाकिम था, उसने अंग्रेज़ों के विरुद्ध बगावत कर दी । राजा शेर सिंघ अटारी वाला लाहौर दरबार की तरफ से उसे दबाने के लिए भेजा गया, परन्तु सिक्ख फौजें अंग्रेज़ों के सख्त विरुद्ध थी, इसलिए फौजों के व्यवहार ने उसको भी बागी कर दिया ।

राजा शेर सिंघ अटारी वाले का पिता पेशावर का गवर्नर था । उस पास गये हुए रैजीडैंट मि. ऐबिट ने उसको बहुत परेशान किया जिस कारण वह भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध हो गया । इसलिए पिता-पुत्र तथा और भी कई सरदारों ने मिलकर अंग्रेज़ों से फिर किस्मत आजमाई करने के लिए घमासान युद्ध किया कि कैसे पंजाब में से अंग्रेज़ों को निकाला जा सके, परन्तु अंग्रेज़ों से चार लड़ाईयें लड़ने के बाद दारू सिक्का समाप्त हो जाने पर मजबूरन उन बेचारों को हथियार डालने पड़ गये ।

क्योंकि लाहौर दरबार की तरफ से कई सिक्ख सरदार भी अंग्रेज़ों से मिलकर इन के विरुद्ध लड़ रहे थे । अब अंग्रेज़ों की जब फतेह हो गई तो उन्होंने महारानी जिंदा को पकड़ लिया, दलीप सिंघ को भी तख्त से उतार दिया व पंजाब मुकम्मल तौर पर अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया ।

पूरे सम्वत 1905 निकलने तक अंग्रेज़ पंजाब पर काबिज़ हो गए और अब आ कर कई सिक्ख सरदारों को भी पूरी तरह प्रतीत हुआ कि हम गुलाम हो गये हैं । वह अंग्रेज़ों की चापलूसियों को पहले अच्छी तरह न समझ सके, परन्तु फिर क्या बन सकता था ? अंग्रेज़ों ने चुन-चुन कर सब सिक्ख सरदार, पंजाब से बाहर दूर-दूर नज़रबंद कर दिये । कई साल तक सिक्ख

फौजियों और सिक्ख जरनैलों पर बिल्कुल विश्वास न किया गया।

क्या समझा जाये ?

अफसोस ! कि सौ साल के करीब तलवारें मार कर और बेशुमार कुर्बानियां देकर हासिल की आज़ादी कुछ वर्षों में ही समाप्त हो गई। क्यों ? इसका जवाब चाहे कोई कुछ दिखाई दे, परन्तु मुझे तो इसका सबसे बड़ा कारण पूर्ण गुरसिक्खी और क्रियाशील सिक्खी का कम हो जाना ही प्रतीत होता है। सरदारियां मिलने और ऐश-प्रस्ती में पड़ कर अपनी सिक्खी रीत-रिवाज पर चलने को भूल जाना ही असल में हमारी बर्बादी का कारण है।

ज़रा ज़्यादा ध्यान से विचारा जाये, तो साफ प्रतीत होगा कि सिक्ख धर्म गुरु देवों ने सृष्टि के अधर्म को खत्म करने के लिए साजा था। इस धर्म को ईश्वर प्रभु के अत्यन्त निकट होने का मान है। विशेष करके-

'मैं आपना सुत तोहि निवाजा ॥
पंथ प्रचुर करबे कऊ साजा ॥'

कहने वाले प्रभु का पंथ है।

इस धर्म के रीति-रिवाज, रहन-सहन सिक्ख का नाम सिमरन में ही जुटना और फिर फौजी योद्धा और बहादुर भी होना विशेष बातें हैं। इसलिए वाहिगुरु की इतनी निकटता, वाहिगुरु को इतना प्रत्यक्ष और ज़ाहरा ज़हूर देखने वाला सिक्ख, जब अपने असली निशाने से उकता जाये, निरवैरता, निरलेपता और निष्कामता के असली मार्ग से भटक जाये, तो यह कितनी गलत बात है। बस इसी कारण ही उस सृजनहार वाहिगुरु का हाथ ऐसे सिक्खों के सिरों से जल्दी ही उठ जाता है और सिक्ख फिर उसी जगह पर आ गिरता है, जहां आम भूला संसार गिरा पड़ा होता है अर्थात् जिस हालत में से सतिगुरुओं ने इसको उठाया और प्रभु के रंग में रंग कर आत्मिक रंगत चढ़ाई थी। अन्य धर्मों व कौमों के बारे मैं कोई ऐसा अनुमान नहीं लगा सकता, परन्तु यह अपनी कौम बारे मेरा एक निश्चय है कि हमारी गिरावट का बड़ा कारण केवल हमारा अपने आदर्शों को भूल जाना ही है।

हम मछली की तरह हैं, वाहिगुरु का सिमरन और सिक्खी सिदक पानी है हमारे लिए, परन्तु जब इस पानी से हम बिछुड़ते हैं तो फौरन हमारी वही हालत हो जाती है जो मछली की पानी से बिछुड़ने के बाद होती है। मछली तो उसी समय तड़प कर मर जाती है, परन्तु हम दुनिया के घेरे में आकर खूब पीसे जाते हैं। जब सिक्ख अपने निश्चय पर कायम था तो वह अपने पर आई हर मुसीबत को लताड़ कर निकल जाता था, परन्तु जैसे ही निश्चय से गिरा, वह मुसीबत की गर्दिश में फंस कर अपना निशाना धर्म और आन-शान सब कुछ ही खो बैठता है।

बाद में क्या हुआ ?

उस समय जब सिक्ख राज्य चला गया, तो ठीक यही हालत हुई। अंग्रेज़ों की सख्ती ने हमें बिल्कुल बेजान कर दिया और कई वर्ष यह हालत जारी रही। सिक्ख इतने सिक्खी से गिरे कि सिक्खों की गिनती 60-70 लाख से कम होती-होती सिर्फ 18 या 20 लाख पर आ पहुंची। परन्तु सम्वत 1914 (1857 ई.) के गदर ने इस बहाव को कुछ रोक दिया। अंग्रेज़ों ने इस समय पंजाब में अपनी पालिसी बदली और सिक्खों को अपनी फौज में भर्ती करना शुरू कर दिया। इस समय सिक्ख पलटनों की ज़्यादा मदद से ही अंग्रेज़ ने गदर पर काबू पाया। सिक्खों की उस समय दयनीय हालत और पूर्बीयों की फौज से रुष्ट हो कर इसने अंग्रेज़ों से मिल कर भारत के अकेले एक स्वतन्त्र राज्य, सिक्ख राज्य को समाप्त किया और अंग्रेज़ों की हर तरह पूरी-पूरी मदद की।

इसके साथ ही मुगलों से सिक्खों की पुरानी दुश्मनी से भी अंग्रेज़ों ने पूरा फायदा उठाया। नावाकिफ लोग आज उस समय के सिक्खों के इस कार्य को अच्छा नहीं कहते, परन्तु यदि सिक्खों और मुगलों की 100 साल लम्बी जंग और जद्दो-जहद और पूर्बीयों की फौजों का पंजाब को गुलाम बनाने में अंग्रेज़ों की मदद को मुख्य रखें तो उनके ख्याल बहुत गलत प्रतीत होते हैं। आज कई लोग 1857 के गदर को हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई का नाम देते हैं, परन्तु असल में सिक्खों को तो यह

पता था कि पंजाब को गुलाम करने वाले और सिक्खों पर ज़ुल्म करने वाले मुगल साम्राज्य के लिए पूर्वीयों की लड़ाई में सरदारी नज़र आई। फिर सिक्खी को इस गदर में शामिल करने की न दावत दी गई और न कोई जिम्मेवारी सौंपी गई।

नामधारी लहर

सिक्खों ने चाहे भर्ती दी, परन्तु इसके बावजूद सिक्खी में अंग्रेज़ों के खिलाफ ज़ज्बा उसी तरह ही मौजूद था, जो धीरे-धीरे बढ़ रहा था। गदर के आठ-दस साल बाद यह ज़ज्बा पंजाब में जाग उठा। कूका लहर के संस्थापक बाबा राम सिंघ जी ने इस समय अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ी तहज़ीब के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ उठाई। इस आवाज़ का सिक्खों पर बहुत जल्दी असर हुआ। साथ ही सिक्खी जीवन की असल चीज़ नाम बाणी की लहर चल पड़ी। सिक्खों के अन्दर इस समय गुरबाणी का इतना प्यार जागा कि घर-घर में से गुरबाणी की गूँज कानों में पड़ने लगी।

बाबा राम सिंघ जी के धर्म और सिक्खी प्रचार का यह परिणाम निकला कि जल्दी ही सारे पंजाब में तकरीबन सारे सिक्ख, एक संगठन में पिरोये गये और एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक ही आवाज़ उठने लगी। अंग्रेज़ पहले तो चुप रहे, परन्तु जब सिक्खी ज़ज्बे को बहुत बढ़ता देखा और गुलामी के खिलाफ आवाज़ उठती देखी तो वह फिर क्या बर्दाश्त कर सकता था तो झटपट पाबन्दी लगा दी। पकड़ भी की गई और निगरानी भी सख्त कर दी गई, परन्तु अफसोस कि यह लहर जल्दी ही दबा दी गई। बाबा राम सिंघ जी अभी और मज़बूत होने के लिए कुछ समय चाहते थे, परन्तु जल्दी पड़े दिलों ने पहले ही काम शुरू कर लिया। मुसलमानों के समय गायें मारी जाती थीं, परन्तु अंग्रेज़ों के समय भी यह काम कम नहीं हुआ। मालेरकोटला में सिंघों ने चढ़ाई करके बहुत सारी गायें मारने वाले बुचड़ कत्ल कर दिये। बस अंग्रेज़ों को बहाना हाथ आ गया और उन्होंने बाबा राम सिंघ जी को गिरफ्तार करके रंगून (बर्मा) भेज दिया। मालेरकोटला में सम्वत 1928 के माघ में 50 सिक्ख तोपों

के आगे रख कर उड़ा दिये । यह लहर बेशक अपने असल मकसद (अपनी खोई हुई जगह प्राप्त करने) में तो कामयाब न हो सकी, परन्तु इस लहर ने सिक्खों में एक बार नाम बाणी के सिमरन की भूली याद फिर याद करवा दी, जिसने सिक्खों के आत्मिक जीवन को झिंझोड़ा, जो कि सिक्ख की असल रास-पूंजी है ।

परन्तु एक और बात अफसोसजनक यह भी हो गई कि बाबा राम सिंघ जी की गिरफ्तारी के कुछ समय बाद नामधारी लहर के बाकी नेताओं ने बाबा जी को गुरु कहना शुरू कर दिया हालांकि नज़रबंदी के समय में रंगून से जो पत्र बाबा जी ने पंजाब की तरफ भेजे उनमें किसी जगह भी बाबा जी ने अपने आपको गुरु शब्द से नहीं लिखा, सिक्ख ही लिखा है परन्तु इस गलत बात को चालू कर लिया गया और ग्यारहवां, बारहवां और तेरहवां गुरु का सिलसिला अभी चालू है ।

इस तरह यह लहर गलत तरफ मोड़ ली गई और बाबा राम सिंघ जी की सेवा और कुर्बानी को एक छोटे से दायरे में सीमित करके गुरसिक्खी से इसका नाता तोड़ लिया गया है । सिक्ख तो केवल गुरु नानक-गुरु गोबिन्द सिंघ जी का गुरु रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को ही मानते हैं, इसलिए सम्बन्ध जुड़ा भी कैसे रह सकता था ? सिक्खों ने बाबा बंदा सिंघ जैसे बहादुर को भी (जिसने मुगल हकूमत को एक बार पंजाब में से एक तरह का समाप्त करके रख दिया था) ठुकरा दिया था, जबकि उसने भी गुरमति के विपरीत अपने उसूल शुरु करने की कोशिश की थी ।

इसलिए उस समय नामधारी लहर के दब जाने से उनका सिक्खों के अन्दर गद्दीदार बन बैठने से सिक्ख कौम की जागृति को फिर सख्त धक्का लगा । इस धक्के ने बची-खुची कसर पूरी कर दी और सिक्खी रहन-सहन और सिक्खी रीति-रिवाज कुछ समय के लिए फिर गहरी नींद में सो गये ।

सिंघ सभा लहर

सम्वत 1934-35 में पंजाब के अन्दर स्वामी दयानंद की आर्य समाज

लहर ने गहरे सोये सिक्खों पर और बुरा असर किया । कई सिक्ख इस लहर के असर से पवित्र केश कटवा कर पतित हो गये । इस बीमारी ने कई गुरसिक्खों के मनों को प्रेरित किया कि तुम देख रहे हो, इस समय सिक्खी की सेवा के लिए मैदान में उतरने का समय है । इसलिए ऐसे ख्यालों वाले गुरसिक्खों ने पहला उद्यम यह किया कि लाहौर में इकट्ठे हुए और सम्वत 1944 में खालसा दीवान की नींव रखी गई ।

यह सिंघ सभा लहर की जड़ थी । इस लहर के मुखियों में भाई जवाहर सिंघ, स. गुरमुख सिंघ, ज्ञानी दित्त सिंघ जी का नाम प्रशंसनीय है, जिनके उपदेश और लेखों ने सिक्ख कौम को झिंझोड़ कर रख दिया और सिक्खों में आर्य समाजी प्रचार का प्रहार कर दिया । इनके उद्यम और प्रचार से गांव-गांव और शहर-शहर सिंघ सभायें बन गईं जिन्होंने सिक्खी प्रचार में बढ़-चढ़ कर हिस्सा पाया । इसलिए ऐसे इस लहर ने सिक्खों में जागृति पैदा कर दी ।

सम्वत 1956 में चीफ खालसा दीवान बना जिसने फिर प्रचार करने में खालसा दीवान की जगह प्राप्त कर ली और इस दीवान ने प्रचार का अच्छा काम किया और विशेष करके विद्यियक प्रचार खूब चलाया । कई प्राईमरी, मिडल और हाई स्कूल शुरु किये । इसी दीवान की तरफ से सिक्ख ऐजुकेशन सम्मेलन करने का वार्षिक प्रोग्राम शुरु किया गया, जो अब तक जारी है ।

अंग्रेज़ों के विरुद्ध फिर ज़ज्बा बढ़ना

सम्वत 1967 के करीब अंग्रेज़ी सरकार ने हिन्दुस्तान की राजधानी कलकत्ता की बजाय दिल्ली बना ली । दिल्ली में गुरुद्वारा रकाबगंज के महंत से सरकार ने कुछ गुरुद्वारे की ज़मीन और कुछ गुरुद्वारे का हिस्सा खरीद कर गुरुद्वारे की दीवार गिरा कर गवर्नमैंट हाऊस के सामने वाली सड़क चौड़ी करनी चाही, जिसको जागी हुई सिक्ख जनता ने बहुत बुरा काम महसूस किया । इस के विरुद्ध भारी ऐज़ीटेशन हुई । इस ऐज़ीटेशन की रहनुमाई चीफ खालसा दीवान ने न की, क्योंकि इनकी रज़ामंदी

सरकार ने पहले हासिल कर ली थी जिस कारण इस दीवान के नेता के तौर पर स्थिति सिक्खी में कमज़ोर हो गई ।

इस समय ही प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया, जिसके कारण यह ऐज़ीटेशन कुछ समय के लिए बन्द हो गई और सरकार की तरफ से विश्वास दिलाया गया कि जंग समाप्त होने के बाद यह दीवार बना दी जायेगी, गुरुद्वारा रकाबगंज की यह दीवार सरकार की तरफ से अपने खर्च पर बना दी गई ।

चीफ खालसा दीवान और सिंघ सभा लहर के भारी सिक्खी प्रचार सदका इस समय सिक्ख कौम में इतनी जागृति आ गई थी कि जिसको ज़्यादा से ज़्यादा कह दिया जाये, तो ठीक ही होगा परन्तु इस कौम के जाग रहे ज़ज्बे को अंग्रेज़ी सरकार किसी तरह खत्म करने के लिए सोच रही थी, परन्तु हालात कुछ ऐसे बनते गए कि जैसे-जैसे सिक्खी जज्बे को दबाने की कोशिश की गई यह बल्कि बढ़ता ही गया । उधर जंग के दिनों में ही अमरीका से गुरु नानक जहाज़ में 500 सिक्ख भारत की आज़ादी का प्रण करके आये, जिन पर कलकत्ता में बजबज घाट पर गोलियां चलीं, कई शहीद हो गये और कई पकड़े गये, जिन पर बगावत के मुकद्दमे चले । यहां भी कई सिक्ख पकड़ कर जेलों में बन्द कर दिये गये और कई फांसी पर चढ़ा दिये गये ।

जलियांवाले बाग का खूनी-कांड

सम्वत 1976 की वैसाखी की यह बात है जिस दिन अंग्रेज़ों ने ज़ुल्म की हद कर दी । बड़ी जंग के बाद, जैसे कि वायदे किये गये थे कि हिन्दुस्तान को रियायतें की जायेंगी, बल्कि "रौलट एक्ट" (काला कानून) पास करके नये षड्यंत्र धारण कर लिये । नये नये टैक्स-रूलों के अनुसार आज़ादी की आवाज़ को दबाने के लिए बड़े-बड़े संगल और जेलखाने तैयार किये गये । सारे हिन्दुस्तान और विशेष कर अमृतसर में इस एक्ट विरुद्ध भारी ऐज़ीटेशन शुरू हो गई । महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक तथा और कई नेताओं ने इस लहर का नेतृत्व करते हुए अमृतसर

में आकर भारी समागमों में तकरीरें की। इसलिए अमृतसर के लोग भड़क उठे, कई बैंक और स्टेशन लूटे गये। कई बैंकों के प्रबन्धक अंग्रेज़ भी मार दिये गये।

जनरल उडवायर उस समय पंजाब का गवर्नर था, उसने भारी सख्ती की। वैसाखी से पहले भी एक दो जगह गोली चली, वैसाखी वाले दिन अमृतसर में भारी समागम था, लोग बाहर से काफी गिनती में श्री दरबार साहिब के दर्शन करने के लिए पहुंचे हुए थे कि मार्शल ला का ऐलान कर दिया। परन्तु इसके बावजूद भारी गिनती में लोग जलियांवाले बाग के मैदान में एकत्रित हुए और समागम शुरू हो गया। जनरल उडवायर आप अंग्रेज़ी फौज लेकर यहां पहुंचा। उसने शाम को चार बजे के करीब, ताड़-ताड़ निहत्थे लोगों पर मशीनगनों से गोलियां चला दीं। दो हज़ार के करीब आदमी जिसमें सिक्ख भारी गिनती में थे, मारे गये। महीना भर मार्शल ला लगा रहा।

चुरस्ती अटारी, चिड़े वाले कुएं के पास एक अंग्रेजन को मारने के दोष में लोगों पर भारी सख्ती की गई। मलकां के बुत वाले रास्ते से गुज़रने वाले आम लोगों को पेट के बल चलाया गया, बैंत मारे गये और कई उम्र कैद के लिए जेलों में भेज दिये गये। देश में इस घटना ने थरथराहट मचा दी। दुनिया के सब लोगों ने अंग्रेज़ों की इस दरिंदगी पर नाराज़गी प्रौटेस्ट प्रकट किया। इसके बाद अंग्रेज़ों ने मृतकों को मुआवज़े देकर इस विरोधी आवाज़ का असर कम करना चाहा, परन्तु यह आवाज़ बढ़ती ही गई।

देश अभी आज़ाद नहीं हुआ था कि इसी उडवायर को पैप्सू के सिक्ख नौजवान स. उधम सिंघ ने लंदन पहुंच कर गोली का निशाना बनाया और अपने देश के खूनी से बदला ले कर छोड़ा।

इसी समय सिक्खों के धार्मिक केन्द्र कुछ सरकार के अधीन थे और कुछ महंतों के कब्ज़े में थे। सिक्खों के बढ़ते जज्बे को देख कर सरकार ने इन महंतों को भी खुली छूट दे दी कि वे गुरुद्वारों में जो मर्जी करें। बस इसी महंतों और सरकार की सांठगांठ ने ही फिर अकाली लहर को

जन्म दिया, जिसने कुर्बानियां दे दे कर, महंतों को भी और सरकार के भी छक्के छुड़ा दिये। इस अकाल लहर ने एक बार सिक्खों में वह जज्बा (बहादुरी और कुर्बानी) को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया, जिसको दुनिया देख कर अश अश कर उठी।

अकाली लहर

सिक्ख राज्य के बाद लगभग 40 सालों से सिक्ख ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर अधिकार और प्रबन्ध सिक्ख संगतों के हाथ में नहीं रहा था। बड़े केन्द्रीय गुरुद्वारे दरबार साहिब अमृतसर आदि तो अंग्रेज़ी सरकार के प्रबन्ध में था, परन्तु ननकाना साहिब आदि दूसरे बड़े-बड़े गुरुद्वारे महंतों की मालकी और प्रबन्ध में था। सरकारी प्रबंध तो सरकार के नियत किये प्रतिनिधियों द्वारा होता था, परन्तु महंती प्रबन्ध उनका बिल्कुल निजी मामला था। इस प्रबन्ध में गुरमति और इखलाक के विरुद्ध बहुत खराबी आ गई जिनको दूर करने का रास्ता सिक्ख कौम पास दीवानी अदालतें ही थीं, जिनमें बीस-बीस, पचीस-पचीस साल मुकद्दमा चलाकर भी तबदीली नहीं हो सकती थी। अन्त गुरुद्वारा बाबे की बेर सियालकोट में एक नये तरीके का तजुर्बा हुआ जो यह तरीका था 'डायरेक्ट एक्शन'। वहां की संगतों ने महंतों के मुकाबले पर अपनी प्रबन्धक कमेटी बना ली और वह कमेटी प्रबन्ध को संभालने और चलाने में कामयाब हो गई और सरकार ने कोई लम्बी-चौड़ी दखलअंदाजी न की। बस यह राह खुल गया। संगतों ने इस राह पर चल कर श्री अमृतसर, तरनतारन और पंजा साहिब गुरुद्वारे आज़ाद करवा लिये।

इन दिनों में ननकाने साहिब के गुरुद्वारा प्रबन्ध के विरुद्ध बहुत चर्चा चल पड़ी। शिकायतें पहुंचीं कि महंत और उनके शिष्य शराब पीते हैं और घोड़ों को भी शराबें पिलाते हैं। जन्म अस्थान के सामने दो बार वेश्याओं का मुजरा हुआ। ननकाने साहिब के स्टेशन से रेलगाड़ी से रह गई छः औरतें रात काटने के लिए दक्षिणी बाही की कोठियों में ठहराई गई थीं, जिनकी इज्जत से खेला गया। एक सिंधी श्रद्धालु की लड़की

की ठज्जत लूटकर उसको तीन दिन तक छिपाई रखा गया। लायलपुर और शेखूपुरे की बार में इस बात का भारी रोष फैला। भाई लक्ष्मण सिंघ जी शहीद धारोवाली वालों को तो लगन ही लग गई कि यदि हम अपने इलाके के इतने महान गुरुद्वारे का सुधार न कर सके तो सिक्ख कैसे हुए। तब गुरुद्वारों के सुधार के लिए पंथ की तरफ से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी बन चुकी थी। ननकाने साहिब के बारे शिरोमणि कमेटी ने सम्वत 1921 के चैत्र में होलियों को ननकाने साहिब में इसी सम्बन्ध में दीवान रखना तय कर लिया।

ननकाने साहिब का महंत नरैण दास बड़ा मालदार और गुस्सैल महंत था। उस पास गुरुद्वारे की हज़ारों मुरब्बे ज़मीन थी। उसके पास ज़मीनों पर काम करने वाले मुज़ारे और जिमींदारों की ठाठ के लिए सैंकड़े खरीदे बदमाश, डाकू, मुसलमान और पठान बंदूकची और छुरेमार मौजूद रहते थे। वह और उसके भाई नांगे साधू भी हराम का माल खा-खा, शराबें पी-पी बड़े मार खोरे हो चुके थे। पंथ की तरफ से इस दीवान की खबर सुनकर उसने जुड़ी संगतों पर हमला करने और मारने की भरपूर तैयारियां शुरू कर दीं। शराब, मांस, बंदूकों, गोलियों, डांगें और छवहीयां आदि के लिए कई लाखों रुपयों की थैलियों के मुँह खोल दिये गये। बार के इलाके में इस तैयारी की आम चर्चा हो गई। भाई लक्ष्मण सिंघ जी ने एक तरकीब सोची। उन्होंने अपने साथी सरदार करतार सिंघ झबर और भाई बूटा सिंघ 402 वालों से सलाह की कि होलियों के दीवान समय महंत पूरी तैयारियां करके बैठा होगा। बेहतर यह होगा कि उससे पहले ही चुपचाप जत्था लेकर गुरुद्वारे ननकाना साहिब पर कब्ज़ा कर लिया जाये और महंत को पता ही न लगे। यह तरकीब करके तीनों ने अपने-अपने इलाकों का दौरा करके शहीदी जत्थे भर्ती करने शुरू कर दिये। इस गुप्त तैयारी का जब लायलपुर के पंथक नेताओं स. तेजा सिंघ समुंद्री आदि को पता लगा तो उन्होंने रोका कि पंथ के फैसले अनुसार दीवान के प्रोग्राम तक पहले कोई कार्यवाही नहीं करनी चाहिए, परन्तु इधर शहीदी चाव चढ़े हुए थे, कौन रुके ? लायलपुर के स्टेशन पर गाड़ी पर चढ़े हुए

भाई लक्ष्मण सिंघ को स. तेजा सिंघ समुंद्री ने उतार कर गाड़ी चलने तक गले लगा रखा । गाड़ी निकल गई है, छोड़ दो । परन्तु जब छोड़ा तो भाई लक्ष्मण सिंघ ने सारा ज़ोर लगा कर शूट मारी और दौड़ कर गाड़ी के डिब्बे की सलाख पकड़ कर गाड़ी पर सवार गये । स. करतार सिंघ झबर को अमृतसर से इस तरकीब की मंजूरी लेने के लिए भेजा हुआ था, कि यदि मंजूरी मिले तो तार दे दो कि 'गुम हुए कम्बल मिल गये हैं' । यदि न मिले, 'नहीं मिले' की तार दो । इसलिए तार दो दिन पहले 'मिल गये हैं' की आ पहुंची । दूसरे दिन ही सिंघों ने ननकाने साहिब जाने के लिए अरदासे शोध दिये । शाम को जत्थे रवाना हो गए । जत्थे ने शांतमयी रहने का प्रण कर लिया ।

असल में तार पहले ही जल्दी से फैसले के बिना ही दे दी गई थी और बाद में फैसला यह हुआ था कि नियत तारीख से पहले वहां कोई जत्था न जाये, इसलिए अब तार दे दी गई कि 'कम्बल नहीं मिले', परन्तु सिंघ रवाना हो चुके थे । तैयार हो रहे तो रोक दिये गये, परन्तु भाई लक्ष्मण सिंघ का जत्था रातो-रात गांवों से निकलता सवेरे 6 बजे श्री ननकाना साहिब जा पहुंचा । रोकने वालों ने ननकाने साहिब संदेश भेज दिया । चौधरी पाल सिंघ जत्थे को रोका और पंथ का संदेश दे कर कहा कि अभी गुरुद्वारे मत जाओ । परन्तु भाई लक्ष्मण सिंघ जी ने कहा कि हम अरदासा शोध कर आये हैं, रुकना न । रुकना, अब हमारे दोनों के लिए अच्छी बात नहीं । और भी कई बातें कही सुनी, परन्तु जत्थे ने रुकने से इन्कार कर दिया । आदमी भेज कर पता किया तो पता लगा कि दर्शनी ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला है ।

बस फिर क्या था ? सिंघों को शहीदियों के चाव चढ़ गये । बहुत जल्दी सिंघों ने क़दम बढ़ाये और दर्शनी ड्योढ़ी में से निकल कर जन्म अस्थान के दर्शन किये । ड्योढ़ी का दरवाज़ा बन्द करके सिंघ महाराज के हज़ूर आ बैठे ।

महंत का भी सब सामान तैयार था, इसलिए यह शहीद परवाने हंसते-हंसते गोलियों का शिकार हो गये, छवियां और गंडासों से काटे गये,

सिसकते हुए मिट्टी का तेल और पैट्रोल डाल कर जलाये गये, परन्तु आगे से किसी ने हाथ नहीं उठाया और तय करके शहीदियां प्राप्त कीं ।

शहीद दलीप सिंघ जी जत्थे को रोकने के लिए ननकाने साहिब में पहुंच चुके थे। जब गोलियों की आवाज़ सुनी तो अफरा-तफरी में गुरुद्वारे जन्म अस्थान की तरफ उठ दौड़े, आगे दरवाज़ा बन्द था । दूसरी तरफ महंत के चौबारे की तरफ हुए तो आगे से लहू से लथ-पथ छवियों से हथियारबन्द कातिल मिल गये । एक ने कन्धे पर छवी मारी और दूसरों ने पकड़ कर आग में फैंकने के लिए घसीटा तो आप ने 19 सौ रुपये के सौ सौ वाले नोट निकाल कर बाहर फैंक दिये कि किसी ज़रूरतमंद के काम आयेंगे, ऐसे ही क्यों जलें ? दलीप सिंघ को जला दिया गया । माघ के महीने सम्वत 1928 में ननकाने साहिब में यह शहीदी साका घटा और दो सौ सिंघ शहीदी जाम शौक से होठों से लगा कर गट गट छक गये । यह कांड संसार भर के शहीदों के इतिहास में अपनी मिसाल आप हैं और अकाली लहर का सबसे बड़ा और मशहूर कांड है ।

अकाली लहर सिक्खों के पुनः जीवित होने की निशानी थे । इसमें सिक्खी आचरण के प्रसिद्ध गुण पूरी शान से प्रकट हुए । कुर्बानी की आग ने सिक्खों के आचरण को ऊष्ण देकर सब कमज़ोरियां जला दीं और शुद्ध कुंदन ही बना दिया । यह लहर पंथ के सारे अंगों को छू कर एक कर गई । इसमें कुम्हार, महरे, नाई, दर्जी, जुलाहे, क्षत्रिय, अरोड़े, जट्ट, संत गुलाब दासिये, बिबेकी, रामदासिये, मज़हबी, नामधारिये, निहंग, रामगढ़िये, उदासी, अमीर, गरीब, पढ़े, अनपढ़ सभी ने मिल कर काम किया ।

चाबियों का मोर्चा

ननकाना साहिब के हादसे से कुछ समय पहले ही शिरोमणि कमेटी बन चुकी थी और गुरुद्वारा प्रबन्ध पंथक हाथों में लेने का भारी प्रयास शुरू कर दिया गया था । इससे पहले सिक्ख लीग ने कांफ्रैंसें कर-कर के सिक्खों में भारी उत्साह जगाया था । सिक्ख नेताओं ने पंजाबी जनता

पर विशेष कर सिक्खों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध इतना ज़ज्बा जगाया कि सरकार तिल-मिला उठी थी। इस समय पंथ में इतना इत्तेफाक हुआ कि दुनिया हैरान रह गई थी। परन्तु अंग्रेज़ी सरकार अभी इस कोशिश में थी कि कैसे सिक्खों की इस जत्थेबंदी को कण-कण करके बिखेर दिया जाये। इसलिए सरकार ने इस कोशिश की पहल इस तरह की कि श्री दरबार साहिब अमृतसर के तोशेखाने की चाबियां जबरदस्ती छीन लीं। तब शिरोमणि कमेटी ने सरकार की तरफ से मुकरर किये हुए प्रतिनिधि को प्रबन्ध में दखल देने से रोक दिया। प्रतिनिधि की बेइज्जती होने लगीं तो उसने इस्तीफा दे दिया। चाबियों के दौरान में ही संगतों ने पंजा साहिब, गुरुद्वारा भाई जोगा सिंघ पेशावर, श्री मुक्तसर तथा और कई गुरुद्वारे पंथक प्रबन्ध में शामिल कर लिये।

उधर सरकार को सिक्खों में प्रतिनिधिता के लिए कोई आदमी न मिला। सारे ज़िले में डिप्टी कमिश्नर की बदनामी होने लगी। तब उसने ज़िले भर में समागम रख कर सिक्खों सम्बन्धी गलत-फहमियां फैलानी शुरू कर दीं। यह देख शिरोमणि कमेटी ने भी उसी-उसी जगह समागम रख कर सही घटनाक्रम बताने शुरू कर दिये। इससे चिढ़ कर डिप्टी कमिश्नर ने गिरफ्तारियां शुरू कर दी, जिस की गिनती 183 तक पहुंच गई। डिप्टी कमिश्नर ने चाबियां वापिस करने के बहुतेरे प्रयोग किए परन्तु हर समय हर जगह से यही उत्तर मिलता रहा कि पहले तुम सारे कैदियों को रिहा करो, तो चाबियां लेंगे।

आखिर भरे दीवान में कुछ महीने बाद आप आ कर डिप्टी कमिश्नर ने चाबियां बाबा खड़क सिंघ जी प्रधान शिरोमणि कमेटी के हवाले कर दीं।

परन्तु इसके साथ ही सरकार ने पंजाब के गांवों में ताज़ीरी चौकियां बिठा दीं और अकालियों के खर्च न भरने पर कृपाण पहनने सम्बन्धी लगभग 2000 गिरफ्तारियां हुईं।

मोर्चा गुरु का बाग

गुरु के बाग के महंत सुन्दर दास ने ननकाने साहिब के हादसे समय

ही अकालियों के ज़ोर से डर कर गुरुद्वारे के प्रबन्ध को एक 11 आदमियों की कमेटी के सपुर्द कर दिया था, परन्तु जायदाद पर अभी उसका वैसे ही कब्ज़ा था । लंगर आदि के लिए लकड़ियां वहां के बाग में से रोज़ सिंघ काट लाया करते थे । डेढ़ साल के करीब यह सिलसिला चलता रहा, परन्तु 1979 सम्वत की यह बात है कि महंत ने एकदम अपना रवैया बदल लिया ।

जब आगे की तरह स्वाभाविक पांच सिंघों ने खेतों में इंधन के लिये एक सूखी कीकर काटी तो महंत ने पुलिस बुला कर इन पांचों को गिरफ्तार करवा दिया । यह छेड़खानी महंत और सरकार की सांठगांठ से हुई । इसके बाद दूसरे दिन सुपरिंटैंडैंट पुलिस बीटी ने गार्ड बिठा दी परन्तु सिंघ बाद में लकड़ें काटने जाते रहे और पुलिस ने दस बारह दिन कोई रोक डाली, परन्तु बाद में लकड़ें काटने वाले सिंघों की गिरफ्तारियां शुरू हो गईं ।

इस विरुद्ध प्रचार करने के दोष में शिरोमणि कमेटी के कुछ ओहदेदार भी गिरफ्तार कर लिये गये ।

सप्ताह के बाद गुरु के बाग लकड़ें काटने के लिए पहुंचने वालों पर सख्त मार-पीट शुरु हो गई और नाकाबंदी कर दी गई ।

फिर सौ-सौ का जत्था श्री अकाल तख्त से शांतमयी का प्रण लेकर जाने लग पड़ा, जो रास्ते में नहर के पुल पास रोका जाता और हरेक सदस्य को इतना मारा जाता कि वह बेहोश हो जाता । फिर उनको घसीट कर कीचड़ से भरे नाले में फैंक दिया जाता । जहां से उनको शिरोमणि कमेटी के भेजे डाक्टर मोटरों में अमृतसर कमेटी के अस्पताल में ले आते । यहां की संगत इनको बड़े प्रेम से आवश्यक सेवा करती ।

प्रति दिन मार-पीट होती रही । इन सिंघों की गिनती 1300 तक पहुंच गई ।

13 दिनों के बाद सख्ती कामयाब न होती देख कर सरकार ने रास्ते वाली चौकी उठा ली और जत्थे गुरु का बाग पहुंचने लगे । इसके बाद गवर्नर साहिब अमृतसर आये और मार पीट बंद हो गई । महीना भर लगातार गिरफ्तारियां होती रहीं । 5678 सिंघ गिरफ्तार हुए, जिनमें 35

शिरोमणि कमेटी के मैम्बर थे ।

आखिर सर गंगा राम लाहौर वालों ने महंत सुंदर दास से गुरुद्वारा गुरु का बाग की ज़मीन ठेके पर लिखवा ली और सरकार को लिख दिया कि मुझे पुलिस की आवश्यकता नहीं । इस तरह यह मोर्चा फतेह हो गया, परन्तु सिंघ रिहा न किये गये ।

सम्वत 1978 के आरम्भ में ही अमृतसर में भारी हिन्दू, मुसलमान दंगा हुआ, जिसमें सिक्खों ने तो विशेष कर अकालियों ने शांति और अमन कायम करने का वह काम किया कि पुलिस को भी मात पड़ गई । इस कारनामे को मुख्य रख कर सरकार ने स्वयं ही गुरु के मोर्चे के सभी कैदी कुछ दिनों बाद रिहा कर दिये ।

कार सेवा श्री अमृतसर

इसी साल सम्वत 1978 के ज्येष्ठ-आषाढ़ के महीने में श्री अमृतसर हरिमंदिर साहिब के सरोवर की कार सेवा शुरू हुई जो एक महीना जारी रही । सारे पंजाब और प्रदेशों से भी छोटे-बड़े रुतबों के सिंघ इस मौके पर श्री अमृतसर पहुंचे । बड़ा भारी समागम हुआ । पिपली साहिब से ले कर घंटाघर तक जुड़वां जलूस निकला । पंथक उत्साह और शान का यह कभी न भूलने वाला अद्भुत नज़ारा था ।

जैतो का मोर्चा

कार सेवा का पर्व अभी समाप्त हुआ ही था कि इसी साल महाराजा रिपुदमन सिंघ जी नाभा को गद्दी से उतार दिया गया । इस के विरुद्ध सिक्खों में भारी रोष जाग पड़ा । शिरोमणि कमेटी के इस फैसले के अनुसार सारे सिक्ख जगत में नाभा दिन मनाया गया । जलूस निकालने और भाषण देने के अपराध में जगह-जगह गिरफ्तारियां हुईं ।

नाभा रियासत के नगर जैतो में एकत्रित हुए सिंघों को जो किले के पास श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का यादगारी गुरुद्वारा है, यहां से भी गिरफ्तारियां की गईं ।

गिरफ्तारियों के बाद जैतो में एकत्रित हुए सिंघों ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अंखंड पाठ आरम्भ कर दिया । रियासती पुलिस ने सारी हाज़िर संगत और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर बैठे सिंघों को भी बाजू से घसीट कर उठाया और गिरफ्तार कर लिया गया । इस तरह अखंड पाठ खंडित हो जाने के कारण सारे सिक्ख संसार में ज़ोरदार रोष फैल गया ।

इस धार्मिक हक को कायम रखने के लिए 25 सिंघों का जत्था श्री अकाल तख्त साहिब से पैदल श्री गंगसर की यात्रा के लिए रवाना हुआ । जगह-जगह से 25-30 सिंघों के जत्थे रवाना होने लगे । सरकार इन सिंघों को रास्ते में ही पकड़ लेती और मार पीट करके 300-300 मील दूर बे-आबाद इलाके में ले जा कर छोड़ देती । 5000 सिंघों से ऐसी सख्ती की गई ।

जोश बढ़ता देख कर सरकार ने शिरोमणि अकाली दल और शिरोमणि कमेटी को कानून विरुद्ध जमातां करार दे दिया और कार्यकारी कमेटी के 60 मैंबरों को जगह-जगह से गिरफ्तार कर लिया । उन पर बगावत और साज़िश का मुकद्दमा चलाया गया ।

श्री अकाल तख्त साहिब से नाभे के सहायक प्रशासक सरदार गुरदयाल सिंघ को अखंड पाठ का खंडन करने का जिम्मेदार तय करके सिक्खी से खारिज़ करने का हुक्मनामा भी निकाला गया ।

जैतो का महान शहीदी कांड

माघ सम्वत 1980 की बसंत पंचमी वाले दिन पांच सौ सिंघों का जत्था श्री अकाल तख्त साहिब से बसंती पहरावे पहन कर बैंड-बाजों से अखंड पाठ प्रारम्भ करने के लिए जैतो की तरफ पैदल चलाया गया, जो 12 दिनों के बाद और भी बहुत सारी दर्शक संगतों सहित जैतो पहुंचा । नाभे हकूमत के कर्मचारियों की तरफ से जत्थे के सिंघों और संगत पर बड़ी-निर्दयता से गोली चलाई गई । धड़ाधड़ लाशें गिरने लगीं, परन्तु जत्था पूर्ण शांतमयी और सहज-अवस्था में आगे बढ़ता गया । यहां तक कि एक महिला के नवजात शिशु को गोली लगी और वह शहीद हो गया,

परन्तु रज़ा में राज़ी महिला ने धैर्य और हिम्मत से अपने जिगर के टुकड़े को ज़मीन पर लिटा दिया और आप जत्थे के साथ ही दौड़ी गई ।

गुरुद्वारा टिब्बी साहिब, जहां कलगीधर जी रहरासि का दीवान सजाया करते थे, तक जत्था दौड़ कर पहुंच गया । झण्डा गाड़ा गया और उठा कर लाये सिंघों को टिका दिया और सीधे गंगसर को चल पड़े । परन्तु रसाले और छाछी पुलिस ने जत्थे को घेर लिया । एक-एक सिंघ को पांच, छः छः सवारों ने मार-पीट करके बेहोश कर दिया और गड्डों में बोरियों की तरह ऊपर नीचे लाद कर किले में पहुंचा दिया । यहां 24 घण्टे तक घायलों की न तो हकूमत ने कोई सार ली और न ही और किसी को इनकी सेवा के लिये निकट आने दिया गया, जिस कारण कई घायल प्यासे ही तरस-तरस और सिसक-सिसक कर शहीद हो गये ।

300 सिंघ घायल हुए, जिन में अंदाजन सौ सिंघ शहीदियां पा गये । न्यूयार्क की अखबार ट्रिब्यून का पत्र प्रेरक फीमाड जत्थे के साथ था । उसने अपनी रिपोर्ट में गोली चलाने और जत्थे के मार्च का हाल लिखते हुए बताया है कि जत्था बिल्कुल शांतमयी रहा, परन्तु हकूमत ने 25 सिंघों से हिंसा का दोष लगा कर लम्बी सज़ायें दीं ।

इतनी भयानक सख्ती का हाल पढ़-सुन कर बजाये डरने के सिंघों का शहीदी खून उबाले खाने लग पड़ा । बसंती पहरावे पहनी बसंती निशान साहिब ले कर पांच सौ सिंघों का दूसरा शहीदी जत्था अकाल तख्त साहिब से रवाना हुआ और जैतो पहुंच गया । वहां पंडित मदन मोहन मालवीया तथा और मैंबर असैंबली जत्थे का हाल आँखों देखने के लिए पहुंचे हुए थे ।

यह जत्था बिना सख्ती से सरकार ने गिरफ्तार कर लिया और इसी तरह सत्रह शहीदी जत्थे लगातार श्री अकाल तख्त साहिब से जैतो की तरफ रवाना किये गये ।

अतः पंजाब के गवर्नर सर मैलकम रेली ने एक तकरीर करते हुए अकाली कैदियों की रिहाई और अखंड पाठों की छूट बारे मशरूत ऐलान कर दिया ।

सम्वत 1981 में आषाढ़ के महीने गुरुद्वारा गंगसर जैतो में अखंड पाठ आरम्भ कर दिया गया, बाद में शहीदी जत्थे ने पहुंच कर 101 अखंड पाठ निर-विघ्न समाप्त किये

इसके बाद लगभग सभी सिंघ रिहा कर दिये गये । सिंघ अमृतसर पहुंचे, जहां उनका बड़ा भारी उत्साह, प्रेम और कृतज्ञता भरा जलूस निकला जो अपने नमूने का आप था, जिसका नज़ारा बयान से बाहर है, देखने वाले ही जान सकते हैं ।

भाई फेरू का भारी मोर्चा भी पंथ ने इन दिनों में ही फतेह कर लिया । इस मोर्चे में भी तकरीबन पांच हज़ार सिंघ गिरफ्तार हुए । यह गुरुद्वारा तहसील चूनिया ज़िला लाहौर में स्टेशन छांगा मांगा से नौ मील दूर है ।

गुरुद्वारा कानून बनना

सम्वत 1982 में कौंसिल के शिमले सैशन में "पंजाब एक्ट नं. 8, की सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट 1925" के नाम नीचे गुरुद्वारा कानून पास हुआ, जिसकी मंजूरी गवर्नर ने दी । इसी साल इस पर अमल होना शुरू हो गया क्योंकि जिन शिरोमणि कमेटी के मैंबरों ने इसको प्रवान कर लिया, उनको उसी समय ही रिहा कर दिया गया था ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, जिसका नाम एक्ट में "सैंटरल गुरुद्वारा बोर्ड" लिखा गया था, की पहली चुनाव के बाद पहली मीटिंग में ही, नाम तबदील करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी रख लिया गया ।

इसके बाद सम्वत 1983 में सरकार ने शिरोमणि कमेटी और शिरोमणि अकाली दल को कानून में बागी करार दिये जाने वाला ऐलान वापिस ले लिया । मैंबरों के मुकद्दमें वापिस ले कर सभी को बिना शर्त रिहा कर दिया गया ।

स. तेजा सिंघ जी समुंद्री किले में कैद होने के दिनों में शहीद हो गये थे । पंथक सेवा में इनका विशेष हिस्सा था, इसलिए इनकी याद में शिरोमणि कमेटी के दफ्तर में बड़े हाल का नाम "स. तेजा सिंघ समुंद्री

हाल'' रखा गया। इसी हाल में ही आजकल शिरोमणि कमेटी के जनरल समागम होते हैं।

अकाली लहर के बाद

अकाली लहर में सिक्खों ने भारी कुर्बानियां कीं। फिर कहीं इतनी भारी जद्दो-जहद बाद अंग्रेज़ी सरकार ने महसूस किया कि सिक्ख अब दबाये नहीं दबेंगे। परन्तु अंग्रेज़ बड़े चालाक थे। उन्होंने गुरुद्वारा एक्ट दे कर सिक्खों को पीछे से हटा लिया और सिक्ख फिर आपस में लड़ने लगे। गुरुद्वारों की प्रधानगी और सचिवों के लिए भारी जद्दो-जहद होने लगी। दो धड़े बन गये। बस उनका निशाना यही बन गया कि गुरुद्वारों पर कैसे काबिज़ रहा जाये। सबसे बुरी बात जो इस एक्ट से हुई वह यह कि इससे सिक्ख पंथ में भारी फूट पड़ गई, जात-बिरादरियां फिर इस तरह उगम पड़ीं कि हद हो गई। हर जात-बिरादरी अपनी बिरादरी के नाम नीचे वोटें मांगने लगी। परन्तु आम जनता धीरे-धीरे इन दिलचस्पियों से दूरी होती गईं। यह पार्टी जंग काफी समय रही और स. ब. महताब सिंघ जी के स्वर्गवास होने के बाद मास्टर तारा सिंघ की पार्टी का ज़ोर पड़ गया और सभी गुरुद्वारे तकरीबन फिर इसी पार्टी के कब्ज़े में आ गये।

धारा 85 के गुरुद्वारे पहले अलग-अलग कमेटियों के प्रबन्ध में होते थे और शिरोमणि कमेटी का इन पर अधिकार नहीं था, जिस कारण शिरोमणि कमेटी वालों ने सम्वत 1997 (1940 ई.) में गुरुद्वारा एक्ट में संशोधन करवा लिया और दफा 85 के गुरुद्वारों के लिए अलग कमेटियों की श्रेणी को गुरुद्वारा एक्ट में से उड़ा दिया गया और इस तरह समूचे गुरुद्वारों का प्रबन्ध सीधा शिरोमणि कमेटी के प्रबन्ध में आ गया।

देश का खूनी-बंटवारा

सम्वत 1987 में अकाली लहर के बाद देश में आज़ादी के लिए भारी आंदोलन शुरू हो गया था। सिक्खों ने भी इस लहर में पूरा हिस्सा

डाला । जेलों, जुर्माने और फांसियों आदि में सिक्खों की गिनती अपने तनासब से कहीं अधिक है । अंग्रेज़ जलियांवाले बाग के कांड के बाद कुछ कांप गया था कि इन आज़ादी की लहरों ने उनको और उलझन में डाल दिया ।

इन दिनों में लाहौर में एक जलूस पर लाठीचार्ज हुआ । लाला लाजपत राय जी की इस सम्बन्ध में मृत्यु हो गई । एक सिक्ख नौजवान सरदार भगत सिंघ ने इसका बदला लिया और मिस्टर सांडर्स पुलिस कप्तान को गोली से उड़ा दिया, जिसके हुक्म से लाठीचार्ज हुआ था । इसलिए भगत सिंघ, राजगुरु और सुखदेव को इसी जुर्म के कारण फांसी चढ़ाया गया ।

देश में बढ़ रहे आज़ादी के जज्बे ने अंग्रेज़ों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि इस देश पर अब उनका ज़्यादा देर कब्ज़ा नहीं रह सकेगा । उधर मुसलमानों में यह ख्याल उत्पन्न हो गया कि इस देश में उनकी खुद-मुख्तियार हकूमत होनी चाहिए । इसी ख्याल के असर से मुस्लिम लीग अस्तित्व में आई । मुस्लिम लीग ने मुस्लिम बहु-गिनती के इलाकों को जोड़ एक अलग देश पाकिस्तान बनाने की मांग करनी शुरू कर दी । कांग्रेस ने सांझा होने के नाते इनको बेहद रियायतें दीं तथा और रियायतें देने के सुझाव भी पेश किये, परन्तु मिस्टर जिन्नाह की नेतागिरी ने कांग्रेस की मुसलमानों के आगे कोई पेश न जाने दी । मिस्टर जिन्नाह ने बार-बार यही ऐलान किया कि कांग्रेस हिन्दू श्रेणी है । महात्मा गांधी जी और मिस्टर जिन्नाह की कई मुलाकातें भी हुईं, परन्तु कोई नतीजा न निकला । अंग्रेज़ों ने जाते-जाते इस बात को और तूल दिया ।

सम्वत 1997 (1940 ई.) में पाकिस्तान की मांग भारी ज़ोर पकड़ गई । मज़हबी जनून ने तब से पूरे यौवन में छलांगें लगानी शुरू कर दीं । हिन्दू अखबारों ने मुस्लिम लीग को और मुस्लिम अखबारों ने कांग्रेस को खूब रगड़ना शुरू कर दिया । तब ही मुस्लिम कोरों और खाकसारों की फौजी परेडें शुरू हुईं । जवाब में सिक्खों ने भी अकाल रजिमैंटों और हिन्दूओं की तरफ से स्वयं सेवक संघ की लहर वजूद में आई । परन्तु सम्वत 1999 (1942 ई) की शुरू हुई आज़ादी की लहर ने अंग्रेज़ों का

नाक में दम कर दिया। साथ ही दूसरे विश्व युद्ध और आज़ाद हिन्द फौज के अस्तित्व में आने से अंग्रेज़ों को और भी पिस्सू पड़ गये।

देश की एकता के लिए सिक्खों की कुर्बानी

देश के आज़ाद होने के समय सिक्ख चाहते तो अपना अलग इलाका ले सकते थे क्योंकि अंग्रेज़ों ने सिक्खों को तीसरी कौम तय करके अलग इलाका देना मान लिया था, परन्तु कांग्रेस नेता की अपील, मुल्क की एकता और भलाई को मुख्य रखते हुए सिक्खों ने भारत के साथ रहने का फैसला कर लिया और अलग मुल्क की पेशकश को ठुकरा दिया था। सटैफोर्ड क्रिप्स के मिशन ने सिक्ख कौम के लिए काफी यत्न किया और ब्रिटिश संसद में ऐलान किया कि अंग्रेज़ देश छोड़ते समय भारत की हर अल्पसंख्या के लाभ का ख्याल रखेंगे, परन्तु सिक्ख नेता कांग्रेसी लीडरों के विश्वास के कारण भारत से अलग होना न माने।

उधर कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता तथा और देश-हितैषी आखिर तक पाकिस्तान बनने के विरोधी रहे और यही ऐलान करते रहे कि पाकिस्तान नहीं माना जायेगा। मुस्लिम लीग ने तैयारी करके सम्वत बिक्रमी 2003 (27 जुलाईए 1946 ईस्वी) को डायरेक्ट एक्शन करने का फैसला कर दिया। इस दिन से सारे देश में भारी फसाद शुरू हो गये। अंग्रेज़ों की चाल थी कि हिन्दुस्तान में ऐसे हालात पैदा कर दिए जाये कि हिन्दुओं के लिए राज्य संभालना कठिन हो जाये और इतनी भारी तबाही हो कि जिसको देख कर सबके रौंगटे खड़े हो जायें। इसलिए मुस्लिम लीगियों ने बंगाल (विशेष करके नवाखली) और साथ ही पंजाब (रावलपिंडी, जेहलम) और सरहंद में भारी खूनी फसाद करने शुरू कर दिये, जिससे हिन्दू, सिक्खों को भारी नुक्सान पहुंचा। पांच हज़ार के करीब मनुष्य मारे गये और करोड़ों रुपयों की जायदाद जला दी गई। बाद में बेशक कर्फ्यू लगा कर हालात ठीक करने की कोशिश की गई। परन्तु हालात कैसे ठीक होते, क्योंकि मुसलमान अफसर सारे के सारे मुसलमानों की पीठ पर थे और मुसलमानों को खुले दिल भारी मदद देते थे, परन्तु इसके

विपरीत हिन्दू-सिक्ख अफसर झिझकते सहायता करते थे, चाहे बिहार में भी इसके विपरीत फसाद हुआ, परन्तु हालात ठीक न हुए। देश में बड़े सब अंग्रेज़ अफसर थे और वही ही मुसलमानों को भड़का रहे थे। फिर जब फसाद कुछ रुके तो फिर लीगियों ने समागम करने और गाड़ियां रोक कर उस पर मुस्लिम लीगी झण्डे लगाने शुरू कर दिये।

तीन-चार महीने इसी तरह ही होता रहा, परन्तु जल्दी ही यही लावा फिर फटा और भयानक फसाद शुरू हो गये। पंजाब के वजीर खिजर हयात खां टिवाना ने 18 फाल्गुन 2003 (2 मार्च, 1947) को हिन्दू-सिक्ख और मुसलमानों की सांझी सरकार की वज़ीर आज़मी से इस्तीफा दे दिया। दूसरे दिन असैम्बली की मीटिंग होनी थी, इसलिए उस दिन सुबह ही लाहौर में मुसलमानों ने जलूस निकाल कर 'खिज़र हमारा भाई है' के नारे लगाने शुरू कर दिये।

इससे लगने लगा कि आज बंगाल की तरह यहां भी मुस्लिम सरकार बन जायेगी। हिन्दू सिक्ख नेता भी उस दिन लाहौर पहुंचे हुए थे। लीगियों ने असैम्बली की मीटिंग शुरू होने से पहले ही असैंबली हाल पर लीगी झण्डा लहरा दिया और पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे मारने शुरू कर दिये। जिस पर छन्नाटा छा गया। मास्टर तारा सिंघ जी ने भारी जुर्रत से काम लिया और उन्होंने अपने हाथ में नंगी तलवार पकड़ कर वह लीगी झण्डा असैम्बली हाल से उतार कर फाड़ कर फैंक दिया और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाये। ताकि असैम्बली की मीटिंग न हो सके और मुस्लिम लीग की सरकार न बन जाये।

पहले तो हिन्दू सिक्ख मैम्बर कुछ झिझके, परन्तु बाद में सारे यह नारा लगाने लग पड़े। बारह बजे के बाद हिन्दू, सिक्ख कालेजों के लड़कों का लाहौर में भारी जलूस निकला जिस पर पुलिस ने बिना वजह गोली चला दी और कई विद्यार्थी मारे गये और बहुत सारे घायल हो गये। 20 फाल्गुन को अमृतसर तथा और शहरों में हिन्दू, सिक्खों के भारी समागम हुए और 21 फाल्गुन (5 मार्च, 1947) को रोष के तौर पर हड़ताल करने का फैसला किया गया। परन्तु हड़ताल वाले दिन

और ही गुल्ल खिल गया।

इस समय मुसलमानों ने भारी तैयारी की हुई थी और वह इस बात पर अड़े थे कि पाकिस्तान की सीमा यमुना तक कायम कर लेनी है। इसीलिए लाहौर से इस तरह पंजाब (मशकरी पंजाब) में जहां हिन्दू, सिक्खों की कुछ बहु संख्या थी, मुसलमान भारी तैयारी करके बैठे थे। अमृतसर सिक्खों का विशेष शहर था और वे सिक्खों को विशेष करके कुचलना चाहते थे। इसलिए अमृतसर में भारी फसाद शुरू हो गया। दीवान का ढिंढोरा फेरने गये ढिंढोरची मंगल सिंघ को लीगियों ने मोनी वाले चौक में ईंटें मार कर मार दिया। अमृतसर में मुसलमान पुलिस अफसर बहु गिनती में थे और शहर में आम गिनती भी मुसलमानों की ही ज़्यादा थी। बाहरले सब दरवाज़ों की तरफ उनका ज़ोर था। इसलिए इस दिन बाहर से आते हिन्दू सिक्ख भारी गिनती में मारे गये। यह हिन्दू, सिक्खों पर भारी हमला था परन्तु फिर भी दूसरे दिन हिन्दू सिक्ख मुकाबले के लिए निकले। अकाली दल के सरगर्म जरनैल जत्थेदार ऊधम सिंघ जी नागोके और उनके साथियों ने इस समय अमृतसर की रक्षा के लिए प्रशंसनीय कार्य किया। घिरे हुए हिन्दू, सिक्खों की मदद के लिए बरसती गोलियों में गये और उनको बचा कर लाये। इस तरह शहर के कई मुहल्ला और गलियों से बड़े लोग बचाये। तीसरे दिन अभी सिक्खों का पूरा ज़ोर पड़ ही रहा था कि झट क्फ़्यू लगा कर सब को अंदर बन्द कर दिया गया। यही हाल दूसरी जगहों पर हुआ। जहां-जहां भी जितना-जितना समय मुसलमानों को कत्ल करने और लूटने मारने में हाथ ऊपर रहा उतनी देर किसी ने दखल नहीं दिया, परन्तु जब दूसरी तरफ सिक्खों, हिन्दुओं का ज़ोर पड़ा झट क्फ़्यू लग जाते रहे और हिन्दू, सिक्खों पर हमले करने वाले मुसलमानों को हर मुमकिन कोशिश से बचाने का चारा किया जाता रहा। इसका कारण एक तो भारी गिनती में मुसलमान अफसरों का होना था जिन पर अंग्रेज़ों का हाथ था, वह इनको बल्कि हल्ला-शेरी देता था, फिर रोकता कौन ? इसलिए सिर्फ अमृतसर में ही हज़ारों लोग मारे गये और सैंकड़ों मकान जलाये गये।

पंजाब और बंगाल बांटे गये

मुस्लिम लीगियों की मांग के अनुसार पाकिस्तान में पंजाब, बंगाल, सिंध और सरहंद के सूबे चले जाने थे । परन्तु जब सिक्ख लीडरों ने देखा कि पाकिस्तान की मांग कांग्रेस के नेता मानने के लिए तैयार हो गये हैं, तो इन्होंने मांग की कि पंजाब के सिक्ख हिन्दू बहुसंख्या वाले ज़िले काट कर भारत से लगा दिये जायें । सिक्खों की यह मांग को देख कर बंगाली हिन्दू भी चिल्ला उठे कि बंगाल के हिन्दू बहुसंख्या वाले ज़िले भारत से जोड़ दिये जायें । लीगियों ने इसका विरोध किया, परन्तु यह मांग चूंकि ऐन उनकी मांग के अनुसार थी, इसलिए यह भी मानी गई, इससे पाकिस्तान को नुक्सान पहुंचा और मिस्टर जिन्नाह को इस बात पर सिक्खों के विरुद्ध भारी गुस्सा चढ़ा । उन्होंने सिक्खों को धमकियां दीं और यमुना तक, आधे से ज़्यादा पंजाब की सिक्ख स्टेट बना देने के झांसे दे कर भी पाकिस्तान से मिलाने के उपाय किये, परन्तु सिक्ख कैसे भूलते ? उन्होंने बहुत पहले मुसलमानी शासकों के मजे चखे हुए थे । इसलिए पंजाब और बंगाल सिक्खों की हिम्मत से बांटे गये ।

आज़ादी का खूनी दिन

सम्वत 2004 शुरू भाद्रों (15 अगस्त 1947) को देश आज़ाद होने का ऐलान हो गया । इसके बाद तो हद हो गई । पाकिस्तान के बंटवारे में आये इलाके के हर शहर में लीगी जनूनियों ने हमले शुरू कर दिये । सामान और नकदी लूटने की खातिर हर हिन्दू, सिक्ख को खत्म कर देने के यत्न शुरू कर दिये गये । अभी किसी हिन्दू का तो शायद किसी जगह लिहाज हो गया, परन्तु सिक्ख को ढूंढ कर और पहुंच कर मारने की कोशिश की गई क्योंकि पाकिस्तान रेडियो उस समय सिक्खों के विरुद्ध झूठा और मनघड़ंत ज़ुल्म करने का दोष दब-दबा थापने लग पड़ा था । इस तरह सिक्ख कौम पर ज़ुल्म और अंधेरी झूल पड़ी और कमसंख्या होने के कारण यह बहुत ज़ुल्म का निशाना बन गई ।

आज़ादी का ऐलान होने के बाद खास कत्ले-आम हुई, जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नज़र नहीं आती । राज्य तो बदलते रहे हैं, परन्तु इस तरह अबादियों के आज तक तबादले नहीं हुए । लाखों की गिनती में हिन्दू, सिक्ख पाकिस्तानी पंजाब में कत्ल हुए । जिसके जवाब में हिन्दू, सिक्खों ने भी पंजाब में मुसलमानों से यही सलूक किया, जो सलूक मुसलमानों ने हिन्दू, सिक्खों से किया था । जवाबी कार्यवाही पर मुसलमानों को इधर से दौड़ कर पाकिस्तान की तरफ जाना पड़ा । परन्तु इधर से सिर्फ पंजाब के मुसलमान गये या कुछ उन इलाकों से गये, जहां सिक्ख, हिन्दू शरणार्थी भारी गिनती में पहुंचे थे । इसलिए सिर्फ पंजाब ही मुसलमानों से विरला हुआ, परन्तु उधर पाकिस्तान में से सारा पंजाब सारा सरहंद और कुछ सिंध और बंगाल का इलाका भी हिन्दू, सिक्खों से खाली करवा लिया गया ।

बाद में पाकिस्तान ने कबायलियों से कश्मीर पर भी हमला करवा दिया । इस हमले के कारण आधा कश्मीर भी हिन्दू, सिक्खों को खाली करना पड़ा । यहां भी हिन्दू और विशेष करके सिक्खों का भारी जानी और माली नुक्सान हुआ ।

काफिलों की शक्ल में आ रहे हिन्दू, सिक्ख बड़ी मुश्किल से सीमा तक पहुंचते रहे । रास्ते में काफिलों पर भारी हमले होते रहे, जिसमें मुस्लिम फौज और पुलिस के सिपाही आम हिस्सा लेते रहे और सिक्खों-हिन्दुओं को मारा और लूटा गया । विशेष करके सिक्ख तो इतने तबाह हुए कि बारह मुरब्बों वाले कोड़ियो आतुर हो, बे-आबरू हो कर भारत की सीमायों में आ घुसे । हज़ारों हिन्दू, सिक्ख लड़कियां पाकिस्तान में रह गईं ।

सिक्खों के ज़र, ज़मीन और आबरू के बिना पवित्र गुरुधाम श्री ननकाना साहिब, पंजा साहिब, बाबे की बेर सियालकोट, गुरुद्वारा करतारपुर (रावी) और डेरा साहिब लाहौर आदि पाकिस्तान में ही रह गये । आज इनके दर्शन करने से भी सिक्ख बहुत लाचार हैं । सिवाय सतिगुरु से और कोई आसरा प्रतीत नहीं हो रहा, क्योंकि भारत सरकार

गुरुद्वारों के मसले पर पाकिस्तान से कोई झगड़ा करने को तैयार नहीं, न ही अभी तक बातचीत द्वारा इनकी आज़ादी बारे कोई ढंग सोचा गया है । पता नहीं अभी गुरुद्वारों के दर्शनों से सिक्खों को कितनी देर अलग रहना पड़े । चाहे परमिटों और वीज़े आदि बनवा कर सिक्ख इन गुरुद्वारों की यात्रा जाते थे, परन्तु वह जो खुले दर्शन के करने का आनन्द था, वह तो एक स्वप्न की तरह हो गया । लाहौर डेरा साहिब का शहीदी जोड़ मेला, ननकाने साहिब का कार्तिक पूर्णमाशी और पंजे साहिब का वैसाखी का मेला, जब भी याद आता है, दिल हसरतों से भरकर फिर मायूस हो कर आहें भरता ही रह जाता है और कोई पेश नहीं जाती । अच्छा, भाने का मालिक, जिस हालत में रखता आया है, रहते आये हैं और अब भी रहते हैं ।

देश आज़ाद हो गया

देश के बंटवारे का भारी नुक्सान सिक्खों को पहुंचा । अपने देश की आज़ादी के लिए सिक्खों ने इनती भारी कीमत अदा की कि जिसका अन्दाज़ा कोई लगा ही नहीं सकता । सिक्ख उस समय चाहते तो भाईयों की बांट अनुसार बेशक थोड़ा इलाका ही मिलता, हासिल कर सकते थे, परन्तु देश के सच्चे वफादार सिक्खों ने देश की एकता को मुख्य रखते, ऐसा न किया । उन्होंने बड़े-बड़े कांग्रेसी नेताओं की सलाह मान ली और उन पर भरोसा प्रकट करके अपनी किस्मत उनके हवाले कर दी ।

इसलिए कांग्रेस की तरफ़ से देश के बंटवारे के बाद पंजाब सरकार में सिक्खों को उनके भारी कुर्बानी के कारण बराबर हक दिये गये । हर महकमे का आधा सिक्खों को देने का विश्वास दिलाया और साल दो साल इसी तरह ही हुआ भी, परन्तु जल्दी ही यह भरोसा अविश्वास में पलट गया । विशेष कर इस भरोसे को पलटने में उन अखबारों ने विशेष हिस्सा लिया, जिन्होंने बंटवारे से पहले मुसलमानों के विरुद्ध लेख लिख-लिख कर भारी ज़हर फैलाया था और अब यही ज़हर सिक्खों के विरुद्ध उगलने में पूरा ज़ोर लगाया जाने लगा । उन्होंने इस बात को सांप्रदायिक

कह कर इसकी विरोधता आरम्भ कर दी । इसलिए दो सालों बाद ही यह चीज़ समाप्त कर दी गई कि बराबरता सांप्रदायिकता के आश्रय से कायम की गई थी, हालांकि यह बात गलत है, सांप्रदायिकता के ख्याल से नहीं थी की गई, बल्कि सिक्खों का देश आज़ाद होने से जो भारी नुक्सान हुआ था, उसको मुख्य रख कर की गई थी, परन्तु सांप्रदायिकता रिवायत कह कर रिवायत बड़ी शान से खत्म कर दी गई । चुनाव सांझे होने से भी सिक्खों को भारी नुक्सान पहुंचा ।

इसके बाद कई सिक्ख तत्व और उनकी औलाद पतित होने लग पड़ी, क्योंकि उन्नति के चाहवानों को यही इच्छा अच्छी लगती है कि वह हाकिम का हज़ूरी-नज़र हो ।

इस समय कई सिक्ख लीडरों के मनों में यह ख्याल आया कि अब अपनी विशेष जत्थेबंदी की आवश्यकता नहीं । शिरोमणि अकाली दल के ज़्यादा नेता इस बात के हक में हो गये और असैम्बली के अकाली मैम्बरों ने तो कांग्रेस में शामिल हो जाने का फैसला ही कर लिया ।

परन्तु जल्दी ही कुछ लीडरों को यह अहसास हुआ कि यह फैसला गलत है और सिक्खों को अपनी अलग हस्ती की हर हालत में आवश्यकता है, क्योंकि कांग्रेसी हिन्दुओं में एक सांप्रदायिक हिन्दू हमारी उन्नति के चाहवान नहीं हैं । इसलिए इस फैसले के विपरीत ऐलान करने में मास्टर तारा सिंघ जी ने अगुवाई की । इस बात पर उन मैम्बरों ने विशेष करके बुरा मनाया, जो कांग्रेस में शामिल हो कर अभी कुछ हासिल करने के इरादे रखे हुए थे ।

इस के उपरांत यह हुआ कि अकाली पार्टी से निकल कर गये सज्जन कांग्रेसी मुखी हो गये और सारी कांग्रेस, कांग्रेस हकूमत और हिन्दू प्रैस उनकी मदद पर हो गये और मुकाबला शुरू हो गया । बेशक कांग्रेसी बने सिक्ख भी कुर्बानियों में किसी से कम नहीं थे और विशेष करके जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके और उसके साथियों की शहर अमृतसर की रक्षा के लिए मैदान में आ कर की कुर्बानी कोई कम नहीं थी । परन्तु शायद इसी कुर्बानी के परिणाम की वजह सतिगुरु की तरफ से उनको

इतनी शक्ति प्राप्त हो गई कि वह अपनी कौम के ज़्यादा हिस्से की आवाज़ को कई साल लताड़ते चले गये ।

अकाली और कांग्रेसी सिक्खों की टक्कर

इसलिए, गुरुद्वारों पर काबिज़ कांग्रेसी ग्रुप के सिक्खों और अकाली सिक्खों में भारी टक्कर शुरू हो गई । उन दिनों में शिरोमणि अकाली दल ने दिल्ली में आल इंडिया अकाली कांफ्रैंस करने का फैसला किया । दिल्ली के गुरुद्वारे भी कांग्रेसी सिक्खों के ही हाथ में थे, इसलिए उन्होंने इस समागम को गुरुद्वारा रकाब गंज में न करने देने का ऐलान कर दिया । मास्टर तारा सिंघ जी ने कहा कि यह समागम अवश्य होगा, इसलिए कांफ्रैंस पर पहुंचने के लिए आप अमृतसर से दिल्ली रवाना हो गये, परन्तु रास्ते में दिल्ली से पहले नैराला स्टेशन पर आपको 1858 के काले कानून अधीन गिरफ्तार कर लिया । आपकी स्वस्थता के लिए अरदासा करने और प्रोटैस्ट करने के लिए शिरोमणि अकाली दल ने 18 फाल्गुन सम्वत 2005 विक्रमी (2 मार्च, 1949 ईस्वी) का दिन मुकरर किया और इस दिन अमृतसर में भारी हंगामा हो गया । अकाली ख्यालों वाले श्री अकाल तख्त पर जा कर अरदास करना चाहते थे, परन्तु प्रबन्ध कांग्रेसी सिक्खों (अकालियों में से निकल कर गये) का होने के कारण उनका अरदास करने से इन्कार कर दिया जिस पर झगड़ा बहुत बढ़ गया ।

जत्थेदार ऊधम सिंघ जी नागोके उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रधान और जत्थेदार मोहन सिंघ जी श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार थे । संगतों में इनके विरुद्ध उस समय से भारी रोष फैल गया । हजूम की बहुतायत देख मिलट्री बुलाई गई तथा पहले ही पुलिस आई हुई थी । व ी जगह धक्के मुक्के भी हुए और ईंट पत्थर भी चले, जवाबी नारेबाज़ी भी हुई । आखिर ब्रिगेडियर साहिब के ज़ोर देने पर श्री अकाल तख्त साहिब के सामने खड़े हो कर अरदास की गई । परन्तु बाद में भड़के हुए हजूम की कुछ ज़्यादतियों के कारण पुलिस ने भारी गिनती में टीयर गैस के गोले छोड़े, जत्थेदार मोहन सिंघ जी भी कुछ

धक्के-मुक्के का शिकार हुए और आपकी रक्षा के लिए कुछ गोलियों के फायर भी किये गये। इसलिए इस तरह पवित्र गुरुद्वारों की बेअदबी सिक्खों के अपने हाथों ही हो गई। इसके बाद कर्फ्यू लगा कर हालात पर काबू पाया गया।

इसके बाद स. भाग सिंघ ऐडवोकेट और बावा हरकिशन सिंघ जी के यत्नों से श्री अकाल तख्त साहिब पर दीवान करके प्रायश्चित किया गया।

कांग्रेसी सिक्ख अपना स्टैंड यह बयान करते हैं कि गुरुद्वारों में निरोल धार्मिक बातें की जायें, वहां राजसी प्रचार नहीं करना चाहिए। परन्तु अकाली सिक्खों ने 'धर्म और सियासत एक है' का नारा लगाया, जो ऐतिहासिक तौर पर ठीक है। इस तरह इन दोनों ख्यालों के सिक्खों के अंदर कशमकश बढ़ती गई। परन्तु कांग्रेसी सिक्खों की धर्म और राजनीति को अलग-अलग करने की सरगर्मियों के कारण, आम सिख जनता में उनकी पोजीशन कमज़ोर होती गई। फिर भी भारत के नये विधान अनुसार चुनाव सांझा हो जाने के कारण कांग्रेसी सिक्खों को पौ बारह पड़ते ही गये। हिन्दू भाई तय करके अकाली सिक्खों के विरुद्ध वोट डालते। इसी सबब ही अकाली सिक्खों को असैंबली के चुनाव में एक बार भारी शिकस्तें हुईं। परन्तु आफरीन कहो अकाली सिक्खों (विशेष कर मास्टर तारा सिंघ जी) के, कि उन्होंने दिल नहीं छोड़ा। वह अपनी इस सच्चाई के पीछे चले ही गये कि यह कांग्रेस सरकार हमें (ज़्यादा सिक्खों को) मायूस करके ही चुप करा देना चाहती है।

आखिर सम्वत 2011 के भाद्रों अस्सू में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नए चुनाव हुए। इस समय अकाली और कांग्रेसी सिक्खों में भारी टक्कर हुई। एक दूसरे के विरुद्ध भारी प्रचार किया गया। परन्तु सिर्फ सिक्खों की वोट होने पर कांग्रेसी सिक्ख बुरी तरह हार गये। अकालियों को ख्याल और उम्मीद से कहीं अधिक जीत प्राप्त हो गई।

पटियाला यूनियन का बनना

सिक्ख राज्य जाने के बाद यह सतलुज पार की कुछ सिक्ख रियासतें

अंग्रेज़ों के संधि पत्र के अनुसार कायम रह गई थीं, जो अब देश आज़ाद होने के एक साल बाद सम्वत 2005 में तोड़ दी गई। पटियाला, नाभा, जींद, मालेरकोटला, नालागढ़, कपूरथला और फरीदकोट आदि को एक करके इन सब का नाम "पैप्सू पटियाला स्टेटस यूनियन" रखा गया। महाराजा साहिब पटियाला इस यूनियन के राज-प्रमुख नियत किये। नये चुनावों तक सरदार ज्ञान सिंघ जी राड़ेवाला प्रशासक मुकरर हुए। आपने पैप्सू में पंजाबी की उन्नति के लिए भारी मेहनत की। पंजाबी महकमा चालू कराया, पंजाबी की यूनिवर्सिटी बनाने के ख्याल भी बनाये।

नये चुनावों के बाद कांग्रेस सरकार बनी तो यहां भी अकाली और कांग्रेसी ख्यालों के सिक्खों का अच्छा टाकरा होना शुरू हो गया। सरदार पटेल ने इस यूनियन को सिक्खों का होम-लैंड कहा था, धीरे-धीरे हिन्दू सांप्रदायिक तत्व इसकी तरफ टेढी निगाहों से देखने लग पड़े। परन्तु कुछ ऐसा अवसर बना कि कांग्रेस सरकार टूट गई और अकाली ख्यालों के मैंबरों की बहुगिनती से सरदार ज्ञान सिंघ राड़ेवाला मुख्यमंत्री बन गये। इसको तोड़ने के लिए कांग्रेसियों ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया। जब वोटों से उनकी पेश न गई तो राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी के हुक्म से यह सरकार तोड़ दी गई, क्योंकि सरदार ज्ञान सिंघ जी के विरुद्ध चुनाव निष्कासित मंजूर हो गई थी और वह मैंबर ही नहीं रहे थे। यूनियन के एक गैर सज्जन को प्रशासक बना दिया गया।

पैप्सू के नए चुनावों में अकालियों ने मुकाबला तो किया, परन्तु हिन्दू सांप्रदायिकता के कारण फिर हार गये और कांग्रेस सरकार बन गई। करनैल रघुबीर सिंघ जब तक जीवित रहे, मुख्यमंत्री वही रहे। परन्तु उनके मरने के बाद सरदार पटेल के कहे हुए इस सिक्ख होम-लैंड का मुख्यमंत्री सिक्ख बनाने की बजाये हिन्दू बनाने के लिए सारा ज़ोर लगाया गया और इस यूनियन के मुख्यमंत्री श्री ब्रिश भान जी बनाये गये। परन्तु अफसोस कि फिर पैप्सू को भी तोड़ कर पंजाब में ही मिला दिया गया और वहां की प्रचलित हुई पंजाबी को पंजाब में मिलाते ही समाप्त कर दिया गया।

पंजाबी सूबा

सम्वत 2007 के करीब पंजाब सरकार ने एक सरकुलर जारी किया था कि पंजाब सरकार ने फैसला किया है कि पूर्वी पंजाब के सारे प्राईमरी स्कूलों में उर्दू की जगह गुरमुखी में और हिन्दी देवनागरी अक्षरों में शुरू की जाये । जिन स्कूलों में पंजाबी गुरमुखी अक्षरों में शुरू की जाये, उनमें तीसरी कक्षा से बच्चे हिन्दी देवनागरी अक्षरों में पढ़ेंगे और जिन स्कूलों में हिन्दी देवनागरी अक्षरों में शुरू हो, उनमें तीसरी कक्षा से पंजाबी गुरमुखी अक्षरों में पढ़ाई जाएगी ।

इन हिदायतों पर अमल करने के लिए पंजाब सरकार की तरफ से आठवीं कक्षा तक नया सिलेबस तैयार करवाया गया । इसी वर्ष पंजाब यूनिवर्सिटी की सीनेट ने मैट्रिकुलेशन के विद्यार्थी के लिए एक परचा हिन्दी का और एक पंजाबी का अनिवार्य तय किया ।

श्री सच्चर ने अपनी भाषा बारे फार्मूला बाद में बनाया और पंजाब सरकार की तरफ से पहले फैसले की दोबारा ताईद भी की गई कि स्कूलों में पढ़ाई पंजाबी (गुरमुखी अक्षरों) और हिन्दी (देवनागरी अक्षरों) में कराई जाये । परन्तु उन्होंने एक और बड़ी रियायत हिन्दी पढ़ने वालों के काम आने वाली अपने फार्मूले में रख दी । माँ बोली के बारे ऐसी रियायत किसी दूसरे सूबे में तो क्या, दुनिया के किसी और इलाके में नहीं मिलती । संसार भर में बच्चे की मां-बोली का फैसला इस बात से होता है कि उसने और उसके पिता-पितामह ने जिस बोली की भूमि पर जन्म लिया हो, वही उसकी मां-बोली होती है परन्तु सच्चर फार्मूले में हिन्दुओं को अख्तियार दे दिया गया कि वह पंजाब में जन्म लेकर, पंजाबी बोलते हुए भी यदि चाहे तो बच्चे की मां-बोली हिन्दी लिखवा कर उसको हिन्दी विद्या दिलवाएं और इसी बात ने सारा झगड़ा खड़ा कर दिया है ।

समझ नहीं आती कि इन झगड़ों को जब सारे नेता श्री सच्चर, पंडित जवाहर लाल जी नेहरू और ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी 'मुसाफिर' आदि सब समझते हैं तो क्यों वे इस माता-पिता वाली रज़ामंदी को उड़ा कर पंजाबी

को लाज़मी करार नहीं दिलवा देते ताकि सारी कलह और झगड़ा ही निपट जाये ।

सम्वत 2007 (सन 1960) में जनसंख्या हुई । पंजाब में सब लोग क्या हिन्दू और क्या सिक्ख पंजाबी बोलते हैं, परन्तु इस समय हिन्दू अखबारों की तरफ से यह प्रचार किया गया कि हिन्दू अपनी बोली हिन्दी लिखवाएं । इस किस्म के झूठ का प्रचार खुल्लम-खुला किया गया । इस तरह की गद्दारी आज तक अपनी मातृ-भाषा के साथ किसी भी देश के लोगों की तरफ से नहीं की गई देखने में आई । परन्तु पंजाब में इस बीमारी का भारी हमला हुआ । सिक्खों ने इस हमले को रोकने के यत्न किये । कई बुद्धिमान और अनखीले हिन्दुओं ने भी अपनी बोली पंजाबी लिखवाई, परन्तु फिर भी यह गड़बड़ घोटाला हो ही गया । असली बोली को झूठ के नीचे दबाने की कई बार कोशिश की गई । भारत सरकार ने भी इस बोली के गलत लिखाने को बुरा मनाया तथा हिन्दी और पंजाबी के क्रम की गिनती को हटा ही दिया, परन्तु इसका इतना भारी ज़ुल्म होता देख कर शिरोमणि अकाली दल ने पंजाबी सूबे की माँग की । पंजाब के ज़िलों को नये ढंग से बोली के आधार पर अदल-बदल करने का प्रोग्राम पेश किया । कांग्रेस हाईकमान देश आज़ाद होने से पहले इस बात को मान चुकी थी कि अंग्रेज़ों ने सूबों की सीमाबंदी बोली के आधार पर नहीं की हुई । इसलिए हम देश आज़ाद होने और हिन्दुस्तान के सूबों को बोली अनुसार ठीक तरतीब वार कर देंगे । जब अकाली दल ने यह माँग पेश की तो उसकी इस माँग को सांप्रदायिक कह कर मानने से इन्कार कर दिया गया । अकाली दल ने इस पंजाबी सूबे के काम को अपना निशाना बना लिया ।

बहुसंख्या की अकड़ और उसकी सांप्रदायिकता ने और सांप्रदायिक हिन्दू अखबारों की सख्त विरोधता ने धीरे-धीरे ज़्यादा सिक्खों को इस तरह चलने के लिए मजबूर कर दिया कि वह पंजाबी की रक्षा के लिए मैदान में उत्तरे ।

सन 1954 की शिरोमणि कमेटी के चुनाव ने बेशक यह साबित कर

दिया था कि सिक्ख पंजाबी सूबा चाहते हैं और उनके वोट पंजाबी सूबे के सहमतों को ही मिल सकेंगे, परन्तु सांप्रदायिक अखबारों और सांप्रदायिक तत्वों के असर के कारण सरकार की तरफ से अपने देश की मातृ-बोली पंजाबी से यह बेइन्साफी होती ही चली गई।

शिरोमणि कमेटी के चुनाव के नतीजों ने सांप्रदायिक हिन्दुओं और कांग्रेसी सिक्खों के हाथों के तोते उड़ा दिये, परन्तु फिर भी वह इस कोशिश में लगे ही रहे कि अकालियों को एक बार ज़रूर दबा देना चाहिए। इसी बात को मुख्य रख कर, यदि सिक्ख लाहौर गये और वहां देर से बिछुड़े मुसलमानों ने यदि सिक्खों का कुछ ज़्यादा ही स्वागत किया, तो इन सिक्ख-दुश्मन ख्यालों के लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि पाकिस्तान से मिल गये हैं। लंदन के बी.बी.सी. रेडियो ने यदि सिक्खों की कोई खबर ब्राडकास्ट की तो इन्होंने कहा कि यह अंग्रेज़ों से मिल गये हैं। अमरीका के साथ मिलने के ताने भी दिये गये परन्तु सच्चाई इनमें कोई नहीं थी। पंजाब के सांप्रदायिक हिन्दू-अखबारों के सम्पादकों ने एक गलतफहमी सरकार को यह डाल दी कि आम सिक्ख अकालियों के साथ ही नहीं हैं और अकालियों की ताकत कोई नहीं। हालांकि शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी के चुनाव में सब लोग देख चुके थे, परन्तु क्योंकि सरकार में भी कुछ सांप्रदायिक तत्व मौजूद थे, जो हर समय इस मौके की तलाश में थे कि इनको कुचला जाये। भारत में और सब पार्टियां कांग्रेस के मुकाबले हार चुकी थीं, परन्तु यह एक अकाली पार्टी बराबर कांग्रेस की गिरती हुई हर हालत में विरोधता करती चली आ रही थी।

पंजाबी हिन्दुओं के पंजाबी के पीछे हाथ धो कर पड़ जाने के कारण सिक्खों के लिए यह बात बड़ी ज़रूरी हो गई थी कि वह पंजाबी भाषा की रक्षा करे। क्योंकि सच्ची पंजाबियत से ही उनकी बहादुरी, उनकी रिवायतें और उनके धर्म का प्रचार बच सकता था। इसलिए वह इस तरफ पड़ गये। पंजाबी को शुरू करवाने के लिए जब और सब कोशिशें सिरे न चढ़ सकीं, तब यह पंजाबी सूबे की मांग की गई। जिसका मतलब

था कि वह सब इलाके इकट्ठे कर दिये जायें जो पंजाबी बोलते हैं और उनका नाम पंजाबी सूबा रखा जाये। इस सूबे की सरकारी भाषा पंजाबी होगी। इसलिए पंजाबी अपने आप उन्नति करती चली जायेगी क्योंकि देश में और सूबे भी भाषा के आधार पर बन चुके थे।

इस हक की माँग का ज़ोर पड़ गया। यह आसार नज़र आने लगे कि पंजाबी सूबे की माँग सरकार को माननी पड़ेगी जो विरोधियों ने इसकी रोक के लिए महां पंजाब का नारा लगाना शुरू कर दिया। पंजाब के अमन को बिगाड़ने के लिए जवाबी नारे का प्रोग्राम बनाया गया।

नारों का मोर्चा

लुधियाना में सम्वत 2011 की पौष शुदि सप्तमी पर सिक्खों ने भारी जलूस निकाला। वहां के कुछ सांप्रदायिक हिन्दुओं की तरफ से ऐलान किया गया कि सिक्खों को जलूस में पंजाबी सूबे के नारे नहीं लगाने दिये जायेंगे। अगर उन्होंने नारे लगाये तो वह जवाबी नारे लगाने लगेंगे। यह साज़िश बड़ी गहरी लगती थी, क्योंकि नारे तो कहीं रह गये, जलूस पर ईंटों की बारिश की गई। आज तक कभी मुसलमानों ने भी इतनी जुर्रत नहीं थी की कि वह सिक्खों के धार्मिक जलूस पर हमला करें। मुसलमानों की बहुसंख्या वाले शहरों में ऐसे जलूस बड़ी शान से निकलते रहे थे। इसलिए इस घटना से सिक्ख-जगत में भारी रोष फैला। सांप्रदायिक हिन्दू अखबारों ने बल्कि विपरीत यह खबरें छापीं कि सिक्खों ने दुकानें लूट लीं और गड़बड़ी पैदा करने के यत्न किये हैं। सिक्ख अखबारों ने इस झूठ-मूठ की तरदीद की। सरकार ने पड़ताल करने के लिए वोहरा साहिब कमिश्नर को वहां भेजा, परन्तु पड़ताल के निर्णय को बाहर नहीं निकाला गया।

अभी इस बात की चर्चा ही थी कि अमृतसर में शीश भेट महल्ले के जलूस सम्बन्धी हिन्दू अखबारों ने पहले ही शोर मचाना शुरू कर दिया कि अकाली इस जलूस में फिर नारे लगायेंगे, सरकार को इसको रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए। इसलिए सरकार ने इस जलूस के निकलने

से पंद्रह दिन पहले ही नारों पर पाबन्दी लगा दी। उधर जनसंघियों ने भारी तैयारी की और जलूस निकलने से पहले ही घण्टाघर चौक में वे भारी गिनती में एकत्रित हो गये। यहां भड़काऊ जवाबी नारे लगाये गये और सिक्खों के ज़ज्बात को भारी गलत तरीके से दबाने की कोशिश की। जिसके कारण झगड़ा और भी बढ़ गया। दोनों तरफ के बहुत सारे वर्कर पकड़े गये।

चाहिए तो यह था कि पंजाब सरकार इन जवाबी नारे मार कर बे-वजह झगड़ा खड़ा करने वालों को रोकती, परन्तु उसने तो बल्कि इसकी आड़ में नारों पर ही पाबन्दी लगा दी कि पंजाब में भाषा के आधार पर बनने वाले सूबों का कोई नारा नहीं लगने दिया जायेगा। मतलब यह था कि नारे लगाने पर ही ज़ोर आजमाई देख ली जाये और इसी बात में ही इस आवाज़ को दबा दिया जाये।

अकाली दरअसल इस समय पंजाबी सूबे के चाहवान थे। अब उनके इम्तिहान का वक्त आ गया। यदि वह अड़े तो सामने सरकार से भारी टक्कर लग जाने का खतरा था और यदि नहीं अड़ते तो फिर पंजाबी सूबे के प्राप्त करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था।

इसलिए अकाली लीडरों ने इस पाबन्दी को न मानने का ऐलान कर दिया। 28 वैसाख सम्वत 2012 (10 मई, 1955) को शिरोमणि अकाली दल की तरफ से इस के विरुद्ध अंदोलन शुरू कर दिया गया। सबसे पहले दिन मास्टर तारा सिंघ जी मंजी साहिब श्री अमृतसर से जत्था लेकर गये। फिर इसी तरह 64 दिन यहां नारे मार कर गिरफ्तारी के लिए पेश होते रहे। इन दिनों में तकरीबन 12 हज़ार सिंघ जेलों में चले गये।

निर्दयी पुलिस एक्शन

सरकार ने इस लहर को दबाने के लिए कई पापड़ बेले। इंतजार करती रही कि आज वर्कर समाप्त हो जायेंगे, कल समाप्त हो जायेंगे, परन्तु पकड़ो-पकड़ी से यह लहर बल्कि बढ़ती ही गई। आखिर इस लहर को दबाने के लिए अपने देश की कांग्रेसी हकूमत की तरफ से एक भारी

गलत कदम उठाया गया, जिसने सिक्ख जगत को पूर्ण तौर पर इस लहर में शामिल कर दिया। वह थी सरकार का पुलिस एक्शन जो 20 आषाढ़ सम्वत 2012 (4 जुलाई, 1955) को बड़े पैमाने पर किया गया। उस दिन प्रभात समय ही साढ़े तीन बजे के करीब पुलिस की गाड़ियां सराय वाले बाज़ार में आ पहुंची और उसने दरबार साहिब आने-जाने वाले सब रास्ते रोक लिये। गुरु राम दास निवास, दफ्तर शिरोमणि कमेटी, दफ्तर अकाली दल और दफ्तर श्री दरबार साहिब को घेरा डाल लिया गया। सराय में ठहर रहे कुल यात्रियों को, डयूटी पर क्लर्कों, सेवादारों तथा और प्रबन्धकों को गिरफ्तार करके ट्रकों पर चढ़ा-चढ़ा कोतवाली ले जाया गया। श्री दरबार साहिब से पहला हुक्म सुन कर जा रहे कई सिंघ भी पकड़ लिये। डयूटियों से आते और डयूटियों पर जाते भी कई सिक्ख कर्मचारी पकड़े गये।

इस पकड़-धकड़ का शिकार कोई 600 सिंघ हुए। सराय के कमरों में महिलाएं और बच्चे सहमे बैठे थे कि दिन निकलते ही पुलिस उनको फौरन कमरे खाली करने का हुक्म दे कर कमरे खाली करवा लेगी।

डी.सी.आई.जी. (श्री अश्विनी कुमार), एस.एस.पी. मैजिस्ट्रेट सरदार हरदयाल सिंघ, ऐ.डी.एम. आदि बड़े-बड़े अफसर मौके पर हाज़िर थे और कार्यवाही करने के लिए हुक्म दे रहे थे।

सराय, शिरोमणि कमेटी, अकाली दल और दरबार साहिब कमेटी के दफ्तरों की पत्र-पत्र फरोल कर तलाशी ली गई और जो चीज़ पुलिस को अपने मतलब की लगी, कब्ज़े में ले ली।

11 बजे के करीब बिल्कुल अचनचेत सिक्ख सेना बुला ली गई। सेना ने शिरोमणि कमेटी के सामने वाली सड़क पर कब्ज़ा कर लिया। सेना को देख कर सरदार हुक्म सिंघ जी ने कहा कि जब आप सारे दफ्तरों की तलाशी ले चुके हो, कुल सिंघ गिरफ्तार कर चुके हो, फिर अब सेना की क्या ज़रूरत पड़ गई है ?

स. हुक्म सिंघ जी ने गेट पर खड़े होकर संगतों को शांतमयी रहने के लिए कहा और साथ ही यह भी कहा कि सरकार का रंग ढंग कुछ

शंकी है । इसलिए आप से प्रार्थना है कि यहां केवल वह ही सज्जन ठहरे जो कुर्बानी कर सकते हों, बाकी चले जाएं । बावा हरि किशन सिंघ जी ने संगतों को शांतमयी रहने के लिए और अड्डा जोड़ों के पीछे जाने के लिए कहा । इस दिन के पुलिस एक्शन विरुद्ध सरदार ईशर सिंघ मझैल ने भी पंजाब सरकार को तारें दी ।

कोई डेढ़ बजे के करीब डी. सी, डी. आई. जी., एस. एस. पी., सिटी मैजिस्ट्रेट, ए. डी. एम. आदि अफसर गैस मास्क आदि से तैयार हो कर वहां आ पहुंचे । पुलिस के कुछ दस्तों को जोड़े उतार कर तैयार रहने का आर्डर देकर वह सारे दफ्तर शिरोमणि कमेटी अंदर चले गये । कुछ बातचीत कर, 15 मिनटों बाद बाहर निकल कर पब्लिसिटी वैन द्वारा सराय वाली सड़क और मंजी साहिब की तरफ खड़ी संगत को हुक्म दिया गया कि यहां धारा 144 लगी हुई है । 15 मिनट में संगतें यहां से चली जायें, नहीं तो सख्त कार्यवाही की जायेगी ।

परन्तु जब संगतें न हिलीं तो पुलिस ने अंधाधुंध टीयर गैस चैकिंग गैस के बंबों की वर्षा करनी शुरू कर दी । लाठीचार्ज भी किया गया । अड्डा जोड़ों पास खड़े सिंघों को एक-एक करके निकाला गया और छड़ियों से धिक-धिक गाड़ियों में चढ़ा दिया गया । अस्पताल की तरफ से पुलिस जूतों सहित मंजी साहिब और दीवान अस्थान पर गई । 100 के करीब सिंघ घायल हो गये । कड़ाह प्रसाद वाली दुकान के आगे लाकर ट्रक खड़ा कर दिया गया । गुरुद्वारा मंजी साहिब पर चढ़ कर डी. एस. पी. ने गोलियां चलाईं ।

आस-पास के मकानों पर पुलिस ने कब्ज़ा कर लिया और गैस गोली की वर्षा दिन में दो बार इतनी की गई कि दरबार साहिब की हदूद में धुआं ही धुआं हो गया । अनेकों अखंड पाठी आँखों को धुआं लगने से कितनी-कितनी देर केवल एक ही तुक उच्चारते रहे और पांच-पांच मिनटों बाद डयूटियां बदलते रहे । गुरुद्वारा पंज प्रकाश पर जूतों सहित पुलिस चढ़ी और कई दिन छावनी रखी । गुरु का लंगर बन्द किया गया । लंगर पर भी पुलिस की छावनी रही परन्तु उस दिन जत्था फिर भी न

रुका और नारे लगाते हुए इसी रास्ते बाहर निकला । ड्योढ़ी पर चढ़ी संगत पर लाठीचार्ज किया गया और कई सिंघ घायल हुए । दरबार साहिब, अकाल तख्त आदि पर बाबा अटल जाने वाली चौकियों को न जाने दिया गया । ड्यूटियों पर जाने वालों को भी रोका गया । लंगर के लिए प्रसादे तैयार करके लाई महिलाओं की बेइज्जती की और कोतवाली ले जाया गया । दरबार साहिब की पूरी नाकाबंदी की गई, शहर में दाखिल होने वाले सब रास्ते रोके गये और जो भी सिंघ जत्थे में जाने वाला मालूम हुआ, उसको तंग किया और गिरफ्तार कर लिया गया । दरबार साहिब के लोहे के जंगले को ताला मार कर संगतों के लिए रास्ता बिल्कुल बंद कर दिया गया ।

इसलिए 20-21 और 22 आषाढ़ (4-5 और 6 जून) को अमृतसर में ऐसे मालूम होता था कि जैसे किसी भारी हमलावर का मुकाबला करने के लिए भारी तैयारी की हुई है । सब तरफ पुलिस, घुड़सवार और सेना की गाड़ियों की घू-घू सुनाई दे रही थी । 21 आषाढ़ को सरदार ज्ञान सिंघ जी राड़ेवाला अमृतसर पहुंच गये । उधर से बावा हरि किशन सिंघ जी और स. हुक्म सिंघ जी भी गिरफ्तार कर लिये गये । बावा जी को मास्टर जी ने अपनी जगह शिरोमणि कमेटी का प्रधान मुकरर किया था और अब बावा जी ने स. ज्ञान सिंघ जी को चार्ज दे दिया । सरदार ज्ञान सिंघ जी ने इस नाजुक मौके पर बड़ी सतर्कता से काम किया । तीन दिन पुलिस भारी ज़ोर लगा कर सख्ती करके थक गई और सिंघ इतने बाहर से आ गये कि बाढ़ ही आ गई ।

बस, इस किस्म की सख्त बेइन्साफी के एक्शन ने सिक्ख जगत में हलचली मचा दी । क्या कांग्रेसी तथा और सब सिक्ख तड़प उठे और सब ने पुलिस की इस घृणित कार्यवाही पर प्रोटैस्ट किया ।

अब सरकार को भी कुछ महसूस हुआ कि वह गलती कर बैठी है । इसलिए उसने बदले हुए हालात को समझते 28 आषाढ़ (12 जुलाई) झट पाबन्दी वापिस ले ली और हालात को और बिगड़ने से बचा लिया । इसलिए मोर्चा फतेह हो गया । कुछ कैदी उसी समय छोड़ दिये गये ।

परन्तु ज़्यादा कैदियों को महीने-सवा महीने के बाद रिहा किया गया।

पुलिस के घृणित एक्शन के विरुद्ध सिक्खों में भारी रोष था और शिरोमणि कमेटी की तरफ से उसकी जांच-पड़ताल करवाने के लिए ज़ोरदार माँग हुई। हर सिक्ख का दु:खी हृदय इस निरादरी करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने की मांग करने लगा। दो-तीन महीने तो सरकार ने इस बात को न माना परन्तु मुख्यमंत्री श्री सच्चर ने अपने तौर पर इसकी छानबीन करवाई और तसल्ली कर ली कि कुछ कर्मचारियों की तरफ न-मुनासिब बातें की गईं थीं। इसलिए 25 कार्तिक (10 नवम्बर) को श्री सच्चर साहिब ने श्री अकाल तख्त साहिब हाज़िर हो कर संगतों के भरे दीवान में अफसोस प्रकट किया।

इस मोर्चे में पंजाब विधानसभा के 15, पैप्सू असैंबली के 8, पार्लियामैंट के 2 और पंजाब कौंसिल के तीन मैंम्बर जेल गये। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कौंसिल के 110 मैम्बर और उसके चार सचिव, श्री दरबार साहिब के मुख्य ग्रन्थी और श्री अकाल तख्त और श्री केशगढ़ साहिब के जत्थेदार साहिबान भी गिरफ्तार किये गये। बहनें और मातायें भी पीछे न रहीं, इनकी गिरफ्तारियों की गिनती भी 417 तक जा पहुंचीं। सरदार कपूर सिंघ जी हिसार जेल में शहीद हुए और पांच-छ: सिंघ और भी चढ़ाईयां कर गये, जिनको जेलों में से बीमारी की हालत में निकाल दिया गया था।

सीमाबंदी कमिशन की रिपोर्ट

भारत सरकार ने देश के सूबों की सीमायें अदल-बदल करने के लिए एक तीन आदमियों का सीमाबंदी कमिशन मुकरर किया था, जिसको पंजाबी सूबे का केस भी पेश किया गया था। अकाली भाईयों के बिना जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके पूर्व जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब विधायक और सरदार तेजा सिंघ सांसद तथा और भी कई कांग्रेसी भाईयों ने अपने मैमोरंडम पेश करके पंजाबी सूबे की तकरीबन हिमायत की। परन्तु कमिशन की रिपोर्ट का नारों के मोर्चे के बाद 24 अस्सू (10 अक्तूबर

1955) को जब पंजाब में भारी बाढ़ों के कारण आम तौर पर सिक्ख जगत भारी मुसीबत में घिरा हुआ था, ऐलान कर दिया गया और पंजाबी सूबा तो क्या बल्कि इस द्वारा पंजाबियत को ही समाप्त करने का यत्न था। पंजाब, पैप्सू और हिमाचल प्रदेश को इकट्ठे कर देने की सिफारिश इस कमिशन ने की, जो सिक्खों से भारी बे-इन्साफी थी। सिक्ख जगत ने इसके विरुद्ध भारी रोष प्रकट किया, जिससे पंडित नेहरू जी का हमदर्दी भरा रवैया खींचा तो गया, परन्तु सांप्रदायिक हिन्दू इसके हक में बहुत शोर मचा रहे थे।

रिजनल कमेटियां

चाहे सीमाबंदी कमिशन की रिपोर्ट सिक्खों के विपरीत थी, परन्तु पंजाबी सूबे के नारे के मोर्चे की विजय ने खालसा पंथ का सिर ऊँचा कर दिया था। इसलिए अकाली दल के प्रतिनिधियों को बुला कर बातचीत करके समझौता किया गया और पंजाब की दो, हिन्दी और पंजाबी रिजनल कमेटियां बना दी गईं।

परन्तु बाद में फिर वही हाथ हुआ। नाम को दो रिजनल बने, परन्तु पंजाबी की उन्नति के लिए कोई भी ठोस काम न हुआ बल्कि पंजाबी सूबे के चाहवान अकाली नेता सरकारी शक्ति से इसके विपरीत कर दिये।

यह देख कर शिरोमणि अकाली दल ने पंजाबी सूबे की मांग को फिर दोहराया और कांग्रेसी सिक्खों व कांग्रेसी सरकार ने इस मांग को रोकने के लिए शिरोमणि कमेटी को अकाली प्रभाव के नीचे से निकालने के षडयंत्र बना लिये। नवम्बर 1958 (सम्वत 2014) की शिरोमणि कमेटी की जनरल मीटिंग में यह काम उनका सिरे चढ़ गया। अकाली दल की टिकट पर बने मैंबर अकाली दल से गद्दारी कर गये। शिरोमणि कमेटी को कब्ज़े में लेने के बाद इनकी तरफ से फिर दिल्ली के गुरुद्वारों पर कब्ज़ा करने की कोशिश की गई और यह कोशिश बेशक कामयाब न हुई, परन्तु पवित्र गुरुद्वारों की बेअदबी हुई और सिक्खों के हाथों हुई। सूझवान सिक्खों के सिर इस समय शर्म से नीचे हो गये।

इसके बाद शिरोमणि कमेटी के नए चुनाव हुए । इस 1960(सम्वत 2016) के चुनाव में बड़ा सख्त मुकाबला होने के बावजूद अकाली दल फिर बड़ी शान से जीत गया । सिक्ख जगत ने कांग्रेसी ख्यालों वाले सिक्खों को सरकारी मदद मिलने के बावजूद भारी हार दी । पंजाबी सूबे का सवाल अब फिर सरगर्म हो गया ।

फिर पंजाबी सूबा-आंदोलन

इतिहास को पढ़ा आप ने देख ही लिया होगा कि यह गुरुद्वारे की स्टेजों को सिक्खों से छीनने के लिए हर हकूमत ने कोशिश की, मुगलों ने तो हद कर दी, परन्तु उनके ज़ुल्म आखिर उनको ले डूबे । सिक्ख राज्य के बाद फिर अंग्रेज़ों का समय आया । उन्होंने भी महंतों के रूप में गुरुद्वारों पर कब्ज़ा रखने के भारी यत्न किये । परन्तु गुरुद्वारा सुधार लहर की बेअंत शांतमयी कुर्बानियों ने उनके सब षडयंत्रों को मिट्टी में मिला दिया और गुरुद्वारे आखिर सीधे सिक्खों के प्रबन्ध में आ गये ।

देश की आज़ादी के बाद कांग्रेसी सिक्खों के रूप में सरकार की तरफ से फिर यही यत्न किये गये, परन्तु हर चुनाव ने उनको हार दी है । सम्वत 2016 के चुनाव अकाली दल ने जीते ही पंजाबी सूबे के मुद्दे पर थे, इसलिए लाज़मी तौर पर उसको इस बारे कुछ करना पड़ना था । इसलिए उन्होंने प्रचार शुरू किया और सरकार पर रिजनल फार्मूले के पांच सालों तक चालू न करने का सच्चा दोष लगाया । यह वायदा-शिकनी बे-मिसाल थी, परन्तु 'जिसके हाथ डंडा उसकी भैंस' वाली बात थी ।

1955 के मोर्चे की तपिश को खत्म करके फिर इस समझौते के कागज़ों को अलमारी में बन्द कर दिया और पंजाबी से धक्का जारी रहा । पंजाब का वासी हिन्दू वीर, सांप्रदायिकता का शिकार हो कर पंजाबी को मातृ-भाषा मानने से इन्कारी हो गया । चाहिए तो यह था कि झूठ बोलने वालों, पंजाब में रहते हुए पंजाबी से मुकरने वाली सांप्रदायिकता विरुद्ध एक्शन लिया जाता, परन्तु सरकार भी सांप्रदायिकता की साथिन हो गई । उसने अपनी सांप्रदायिकता का लेबल डंडे के ज़ोर से सिक्खों पर लगाना

शुरू कर दिया । महाशा-प्रैस आगे ही सांप्रदायिकता का सरदार हुआ, इसलिए उसने भी आसमान सिर पर उठा लिया । अकाली दल ने शांतमयी प्रोग्राम बनाया, परन्तु उसको 'तोड़-फोड़' का प्रोग्राम बता कर, उस पर अचानक कानूनी डंडे का भयानक वार कर दिया गया ।

पंजाब सरकार ने एक रात में ही सब महान अकाली नेता और वर्कर पकड़ कर जेलों में बन्द कर दिये और इस किस्म का प्लान बनाया कि इस एजीटेशन को सिर पर न उठाने दिया जाये, परन्तु जिस वाली (मालिक) का यह पंथ है, उसको मंजूर नहीं था, इसलिए एजीटेशन चला और पूरे पांच महीने चलता गया, परन्तु न सरकार झुकी और न अकाली हटे ।

इन पांच महीनों में क्या हुआ था, इस बारे हम सिर्फ इतना ही लिखना काफी समझते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा सख्ती की गई । लाठीचार्ज हुए, टीयर गैस फैंकी गई और बहुत सारे सिंघ इनका शिकार हुए और यह कुछ सरकार ने यह कह कर किया कि अकाली पथराव करते हैं, तशदद करते हैं । दिल्ली 12 जून का जलूस विशेष तौर पर इस बात का निशाना बना और सिक्ख होने के नाते ज़्यादा को मार पड़ी । सांप्रदायिक अखबारों की बात नहीं, परन्तु निष्पक्ष अखबारों ने इस ज़ुल्मी लाठीचार्ज की तस्वीरें छापीं और निष्पक्ष पड़ताल की मांग की गई, परन्तु पड़ताल किस ने करवानी थी ।

गुरुद्वारों के विरुद्ध नाकाबंदियों पर आने-जाने वालों की सीमा से अधिक पकड़ धकड़ की गई । कछहरे और काली पगड़ी को इसका विशेष निशाना बनाया गया और फिर इस एजीटेशन के विरुद्ध ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार किया गया । आल इंडिया कांग्रेस और पंजाब कांग्रेस के प्रधानों ने यहां तक गलत तकरीरें की कि पंजाब का हर गांव द्विभाषी है और यदि पंजाबी सूबा बन गया, तो दूसरे सूबों से सिक्खों को पाकिस्तान बनने की तरह निकलना पड़ेगा और उनको पंजाब में ही आना पड़ेगा । 1947 ईस्वी की बंटवारे की तशबीहें देकर पंजाबी सूबे के पक्ष के लोगों को सख्त गुमराह करने और दहशत फैलाने का ज़्यादा से ज़्यादा यत्न किया गया । परन्तु इतनी

साफ गलत-बयानबाजी की हिमायत कौन कर सकता था, बल्कि चीफ खालसा दीवान जैसे नरम-ख्यालियों ने भी इसके विरुद्ध बयान देकर पूछ की कि बोली के आधार पर यदि केरला, आंध्र, महां गुजरात ओर महाराष्ट्र के बनने पर ऐसा नहीं हुआ तो पंजाबी सूबा बनने पर ऐसा कैसे होगा, जबकि इसकी मांग भी उन सूबों की तरह बोली के आधार पर की जा रही है ।

परन्तु इससे बढ़ कर सरकार आगे चली गई । आज तक गोली चलने की एक भी मिसाल नहीं मिलती और कोरिया में अमेरिकन फौजी कैदियों से मार खा कर भी *जनरल थमाया को गोली न चलाने देने वाले 'कांग्रेसी-राज्य' में यह घटना हुई कि बठिण्डे ज़ेल में घटिया खुराक और नावाजिब माफी मंगवाने पर ज़ोर देने वालों के विरुद्ध प्रोटैस्ट करने और निहत्थे अकाली कैदियों पर गोली चलाई गई और सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 4 अकाली स. जसवंत सिंघ, स. चरण सिंघ, स. नाजर सिंघ और स. रणजीत सिंघ जगह पर मारे गये और 100 के लगभग सख्त घायल हुए, जिन में से 14-15 के लगभग सख्त घायल हुए । इसके विरुद्ध भारी रोष जलूस निकाले गये तो पटियाला में फिर गोली चलाई गई और तीन सिंघ संत दीवान सिंघ, स. हजारा सिंघ और स. हरी सिंघ शहीद हुए । बहुत सारे घायल हुए । सौ से अधिक सिंघ धारा 144 तोड़ने पर पुलिस पर हमला करने के इल्ज़ाम में पकड़ लिये गये ।

बी. बी. सी. रेडियो लंदन की सूचना के अनुसार इस मोर्चे में 40

---

* कोरिया के युद्ध में अमरीका और चीन के कोई करोड़ आदमी मारे गए । आखिर जेनेवा मीटिंग अनुसार समझौता हुआ और 38 पैरालल लाईन पर युद्धबंदी हुई और दोनों देशों के कैदी हिन्दुस्तान ने अपने आपको संभालने के लिए पेश किया । दो कैम्प लगाये गये, एक में चीनी और एक में अमरीका के कैदी थे, और जनरल थमाया उनकी देखरेख के लिए फौज देकर भेजे गये थे । अमरीकी कैदियों ने तशदद किया और जनरल थमाया को गले से पकड़ लिया कि हमें खाने के लिए मक्खन और डबलरोटी दें, वायरलैस पर नेहरू जी को यह हालत बताई गई, तो नेहरू जी ने कहा कि मर बेशक जाओ, परन्तु कैदियों पर सख्ती नहीं करनी इसलिए जनरल थमाया ने मार खाकर भी अमेरिकन कैदियों पर डंडा तक न चलाया । इसी कारण भारत और विशेष कर जनरल थमाया का दुनिया में बड़ा सम्मान बढ़ा ।

हज़ार के करीब सिंघ जेलों में गये थे, 289 घायल हुए और 44 सिंघ शहीद हुए थे । यह खबर उसने बठिण्डा जेल और पटियाला जलूस की फायरिंग के बाद दी थी । परन्तु इसके विपरीत सरकार ने बयानों के अनुसार अधिक से अधिक 21 हज़ार सिंघ ज़ेलों में गये । सरदार कैरों के कथन अनुसार 6 हज़ार सिंघ मोर्चे से ला-तुअलकी का इज़हार करके ज़ेलों से निकले थे, परन्तु यह रोशनी भरी सच्चाई है कि बहुत कम माफी मांगने वाले और ज़्यादा को फुसला कर बाहर निकाला । सरकार की इस गलत पालिसी को मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंघ कैरों पंजाब ने भी माना और कहा कि आगे ऐसा नहीं कहा जायेगा कि सिक्ख माफी मांग कर या ला-तुअलकी ज़ाहिर करके रिहा हुए हैं, परन्तु आखिर बठिण्डे की कुर्बानी ने इस पालिसी को ब्रेक लगाई और ऐसी रिहाइयां कुछ दिन के लिए रुक गईं । परन्तु सरकार यह कुछ क्यों करना चाहती थी ? इसलिए मोर्चे को बिना किसी फैसले के लटका दिया जाये और लटकाने से शायद मोर्चे वाले दिल हार जायें ।

प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा कि अकालियों का सोचा हुआ सूबा नहीं बनेगा, इनका मोर्चा पंजाबी के लिए नहीं यह सांप्रदायिक है । परन्तु यदि यह बात थी तो फिर पंडित जी ने पंजाबी को सुबाई सूबों वाला दर्जा दे कर इस बात को समाप्त क्यों न कर दिया । अकालियों की तो यही मांग थी कि पंजाबी से इन्साफ हो जैसे और 13 बोलियों से हो चुका है जब और लोग पंजाबी होते हुए पंजाबी से द्रोह करने पर आमदा हो जाये, तो सिक्ख प्यारी पंजाबी की रक्षा के लिए मैदान में उतरे तो वह सांप्रदायिक कैसे हुए ? सांप्रदायिक तो वह हुए जो इसकी विरोधता करते थे । शुक्र है कि राष्ट्रीय संघ के गुरु गवालकर ने पंजाबी के हक में आवाज़ उठाई थी और हिन्दुओं को पंजाबी को मातृ-भाषा मानने के लिए कहा था ।

कांग्रेस के बड़े नेता असलियत को जान गये थे कि पंजाबी सूबे की मांग नैशनल कसवटी अनुसार पूरी ठीक है । भाषा के आधार पर जब सारे भारत में सूबे बन चुके हैं तो पंजाबी सूबा क्यों न बना दिया जाये

और सिक्खों जैसी बहादुर कौम के मनों को जो ठोकर लगी हुई है, जो कट्टर हिन्दुओं के दबाव नीचे आ कर सरकार की तरफ से धक्का किया जा चुका है और किया जा रहा है, उसको हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाये। इसलिए यह सच्चे और देश के हितैषी कांग्रेसियों के विचार थे। दूसरी तरफ इस बात का असर पाकिस्तान की लड़ाई में सिक्ख शूरवीरों की बहादुरी ने विशेष करके हिन्दी लीडरों पर पाया था। संत जी भी व्रत छोड़ने के बाद लगातार मांग कर रहे थे कि पंजाबी बना कर सिक्खों की इस मांग को जल्दी पूरा कर दिया जाये। क्योंकि यह सूबा इसीलिए नहीं बनाया जा रहा कि इसके बनने से सिक्खों को कुछ ज़्यादा हक प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु यदि सिक्ख ताकतवर बनेंगे तो ताकतवर बन कर अपनी रक्षा बाद में करेंगे, देश की रक्षा पहले करेंगे। इसलिए देश के नेताओं के मनों पर असर डाला।

संत जी ने व्रत त्यागने

कई महीनों की जद्दो–जहद के बाद संत फतेह सिंघ जी ने व्रत रखने और भूखे रह कर प्राण त्याग देने का फैसला किया था, परन्तु सरकार ने नई चाल खेली और मास्टर तारा सिंघ जी को अचानक धर्मशाला जेल से रिहा करके बातचीत करने का संदेश दिया। उन दिनों में भाव नगर में आल इंडिया कांग्रेस का जनरल सम्मेलन 7–8 जनवरी 1961 को हो रहा था। शिरोमणि अकाली दल की वर्किंग कमेटी ने मास्टर तारा सिंघ जी को कांग्रेस के सम्मेलन में ही जा कर नेहरू जी से मुलाकात करने की आज्ञा दे दी और मास्टर जी, स. लक्ष्मण सिंघ जी गिल को साथ लेकर हवाई जहाज़ द्वारा वहां पहुंचे। कई घण्टे पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा और बड़े लीडरों से मुलाकात हुई, परन्तु कोई खास बात नतीजे पर न चढ़ी। वायदे ही किये कि सब कुछ माना जायेगा, परन्तु पहले व्रत को छोड़ देना चाहिए।

संत जी कहते थे कि पंजाबी सूबे के ऐलान किये बिना मैं व्रत नहीं छोड़ूंगा और कांग्रेसी नेता खास करके (पंडित नेहरू जी) इस बात पर

अड़े थे कि पहले व्रत छोड़ा जाये ।

दिल्ली का हृदय-वेधक कांड

इधर पोजीशन यह थी कि कौम ने बड़ी कुर्बानी की थी, सरकार की ज़ेलें भर दी थीं । सरदार प्रताप सिंघ कैरों, कांग्रेस हाई कमान और विशेष कर पंडित नेहरू जी का अज़मूदा तो माना हुआ प्रधानमंत्री था और कांग्रेस की यह चाल कि सिक्खों को सिक्खों से ही लड़ायो, यह पालिसी कामयाब हो चुकी थी, परन्तु अभी इसका पिछोकड़ बाकी था । खैर, मास्टर जी के भरोसा देने और शिरोमणि अकाली दल की वर्किंग कमेटी के फैसले मान कर संत जी ने व्रत त्याग दिया और कौम की कुर्बानियों का कुछ विशेष परिणाम न निकला । विशेष करके दिल्ली का 12 जुलाई का कांड बड़ा ही हृदय-वेधक और दर्दनाक था । दिल्ली अकाली दल की तरफ से भी दूसरे मुहाज़ पर लड़ाई स. रछपाल सिंघ जी, दिल्ली मोर्चे के डिक्टेटर की निगरानी में बहुत ही कामयाब थी । केन्द्र सरकार गिरफ्तारियां करके थक-हार चुकी थी और दिल्ली के इस आंदोलन को वह सख्ती से दबा कर खत्म कर देना चाहती थी परन्तु 12 जुलाई को इस सख्ती की हद हो गयी । गुरुद्वारा शीश गंज के आगे और चांदनी चौक में एक बार अंग्रेज़ी जालिम की याद ताजा हो गई । टीयर गैस और लाठीचार्ज की कोई सीमा न रही ।

इतनी सख्ती के बावजूद सिंघ बढ़ते गये । कई सिंघ शहीद हो गये और सैंकड़ों घायल हुए । दहशत और दबदबा पाने के लिए यहां तक सख्ती हुई कि हर सिक्ख को ही चाहे वह स्टेशन से आ रहा यात्री था, चाहे सिनेमा की तरफ से आ रहा था, चाहे किसी होटल से रोटी खा कर बाहर निकल रहा था, सबको जब कैद किया गया, मारा-पीटा और डराया गया । परन्तु यह श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी की बहादुर कौम थी । जितनी भी सख्ती अधिक हुई, जितनी भी शक्ति से इसको दबाने का यत्न किया गया, यह गेंद की तरह उभरी और उछली और इस सख्ती ने हर सिक्ख को सरकार के खिलाफ होने के लिए मजबूर कर दिया । यहां तक कि

वह अखबार, जो मोर्चे के विरुद्ध थे और सरकार के हक में थी, वह भी सरकार की इस सख्ती के विरुद्ध हो गये और इस मोर्चे ने अकाली मोर्चों के इतिहास को एक बार दोहरा कर दिखा दिया। परन्तु वह लड़ाई गैर-हकूमत से थी और वह मोर्चे की मजबूती और सिक्खों के कुर्बानी के जज्बे को देख कर सख्ती करने से रुक गई थी।

रुक नहीं गई, बल्कि सिक्ख कौम की कुर्बानी ने उनके पैर ही उखाड़ छोड़े थे, परन्तु यह हकूमत अपनी और पंजाब में तो मुकाबला ही सीधा उस हुक्मरान से थी, जो सिक्ख थी और केन्द्र की मंजूरशुदा थी। यही कारण था कि उस विरुद्ध सुप्रीमकोर्ट के फैसले देने पर भी उसको हटाया नहीं गया था। 1962 के चुनाव में तो जत्थेदार मोहन सिंघ जी तुड़ के मुकाबले में सरदार प्रताप सिंघ जी कैरों वोटें लेने में ही तकरीबन हार ही गये थे, परन्तु चूंकि केन्द्र सरकार उनकी हार नहीं चाहती थी, इसलिए जिस तरह हुआ उनको जिता दिया गया। इसलिए इस हालत में फिर वायदे-खिलाफी भी होती रही। सिक्खों की सब मांगें मानने के झांसे देकर दिल्ली मोर्चे को भी फेल करा दिया गया। संत जी ने व्रत त्याग दिया।

सरकार की कामयाबी और पंथ में भारी फूट

मोर्चे के दिनों में कौम ने तन, मन और धन से सब तरह की कुर्बानी दी। अमृतसर और दिल्ली भी लाखों रुपये मोर्चे की सहायता के लिए दिये गये। माया ने अपना रंग दिखाना ही दिखाना था। कुछ तो संतों के व्रत छोड़ने और कुछ इस चीज ने सरकार को दांव लगाने का मौका दे दिया। रही सही इज्जत और सतिकार को मास्टर जी के व्रत छोड़ने ने खत्म कर दिया। यह ठीक है कि मास्टर जी यदि व्रत न छोड़ते तो शरीर त्याग देते, तो पंजाबी सूबा चाहे फिर भी बनता कि न, यह कोई यकीनी बात नहीं थी, परन्तु इस व्रत छोड़ने ने मास्टर जी की नेतागिरी को ऐसा धक्का लगाया कि वह कौम की नज़रों में गिर ही गये। असल में बात यह है कि मास्टर जी को मिलने आये मलिक हरदित्त सिंघ जी,

महाराजा •पटियाला तथा और नेताओं ने यह सलाह दी थी कि आपके मरने से फायदे की जगह कौम को नुक्सान होगा ।

गर्ममिजाजी और सिक्खों के विरुद्ध प्रचार हर सूबे में, *हाकिम टोले की तरफ से किया जा रहा था । इसलिए मास्टर जी आपको व्रत छोड़ देना चाहिए । मास्टर जी ने भी व्रत छोड़ते समय, संत फतेह सिंघ जी की तरह अकाली दल की वर्किंग कमेटी से हाँ करवा ली थी, परन्तु जो होना था, वह हो गया । विरोधियों ने मास्टर जी के विरुद्ध मुहिम चला दी और सरकार का दाँव लग गया । पंजाबी सूबे की मांग किनारे लग गयी । दो अकाली दल बन गये । एक मास्टर जी का और एक संत फतेह सिंघ जी का । बेशक मास्टर जी ने बहुत ज़ोर लगाया, परन्तु संत फतेह सिंघ जी का पलड़ा भारी होता गया । स. हजारा सिंघ जी गिल ओर जत्थेदार मोहन सिंघ जी तुड़, जो स. प्रताप सिंघ जी कैरों की सरकार ने अन्दर बन्द कर रखे थे, संत जी उनको रिहा करवाने में भी कामयाब हो गये और उनकी ताकत बढ़ती गई । शिरोमणि कमेटी पर भी 1962 में उनका कब्ज़ा हो गया और प्रधान संत चन्नण सिंघ जी चुने गये । फिर शिरोमणि कमेटी के जनरल चुनाव में तो संत फतेह सिंघ जी को वैसे ही ठोस बहुमत प्राप्त हो गया । इस समय मास्टर जी ने ब यान दे दिया कि यह हार मेरे व्रत छोड़ने के कारण हुई है । इसलिए मास्टर जी ने व्रत रखने की तो गलती की, परन्तु उससे बड़ी गलती व्रत छोड़ने की कर दी ।

पाऊंटे साहिब का खूनी कांड

गुरुद्वारा पाऊंटा साहिब श्री दशमेश जी का वह ऐतिहासिक अस्थान

* कलकत्ता के बाघमरी इलाके की मिसाल अब सबके सामने है कि वहां कैसे सिक्खों से ज्यादती हुई है । पुलिस और वहां की जनता की तरफ से भी । ऐसे हालात को सिक्खों के विरुद्ध उस समय आम फैलने की प्रेरणा दी जा रही थी । पंडित नेहरू जी ने रुदरपुर में 'पंजाबी सूबा' जिंदाबाद कहने वाले सिक्खों को कहा था-यदि यह बात है तो आपको पंजाबी सूबे ः. ही जाना पड़ेगा और वहां चले जाओ । इस तरह 1969 में दिल्ली में भी यही कुछ हुआ, जब जनसंघ ने गुरुद्वारा शीश गंज पर हमले किये और गुरुद्वारे को आग लगाने की कोशिश की ।

है, यहां गुरु जी नाहन के राजा मेदनी प्रकाश के निमंत्रण पर 1739 सम्वत में गये थे। यहां ही आप जी के दरबार में 52 कवि पहुंचे और आप ने पुरातन साहित्य के अनुवाद किये और करवाये। यहां ही राम राय को मिले। भीम चंद कहिलूर वाला सतिगुरु जी के बढ़ते प्रताप को सहार न सका था और ईर्ष्या करने लग गया था। इस ईर्ष्या ने भयानक रूप धारण कर लिया था। वह समझता था कि मेरा राज्य हो तथा प्रताप और शान शौकत इनकी ज़्यादा हो, यह कैसे हो सकता है ? भीम चंद अपने पुत्र की बारात लेकर इधर आया और उसने श्रीनगर (दून) के राजा फतेह शाह के घर जाना था। उस तरफ जाने का रास्ता पाऊंटा साहिब ही था। उसके साथ बारात में 13-14 राजा और साथ उनकी फौजें थीं। उसके ईर्ष्यालु मन में यह था कि गुजरते-गुजरते गुरु जी के डेरे पर हमला करके उसको लूट ले चलें। वह चाहता था कि काबुल से आया शामियाना, जिसकी कीमत तब दो लाख थी, पंच कला शस्त्र, सफेद हाथी तथा अन्य चीज़ों को छीन लिया जाये। आगे आनन्दपुर में उसने इन चीज़ों से ही झगड़ा बढ़ाया था। अंतर्यामी सतिगुरु जी ने उसकी खोटी नियत देखकर, इस रास्ते से उसको निकलने न दिया। उसको बड़ा चक्कर मार कर और तंग होकर श्रीनगर पहुंचना पड़ा था।

फतेह शाह गुरु जी का मित्र बन चुका था, इसलिए उसकी पुत्री के विवाह पर महाराज ने सवा लाख रुपये दहेज के लिए भेजा था, परन्तु जब भीम चंद को पता लगा, तो वह फतेह शाह से बिगड़ गया कि मैं तेरी लड़की की डोली तो ले जाऊंगा, यदि तुम गुरु गोबिन्द सिंघ का आया सामान वापिस कर दे। जो पांच सौ सिंघ यह सामान लेकर आये हैं, इनको पकड़ ले या मार कर निकाल दे। फतेह शाह को मजबूरन भीम चंद के कहने लगना पड़ा। परन्तु सिंघ भी सब कुछ ताड़ गये थे, इसलिए वह सब सामान संभाल कर निकल पड़े। कुछ पहाड़ी राजा फतेह शाह के घर भी आये हुए थे, इस तरह सब पहाड़ी राजा इकट्ठे हुए थे। भीम चंद और फतेह शाह की फौजों ने बड़ा ज़ोर लगाया कि सिंघों को रोक कर सामान छीन ले, परन्तु सिंघ उनके काबू न आये।

सिंघों के जाने के बाद पहाड़ी राजा इकट्ठे होकर चढ़ आये । वह जानते थे कि हमारे सभी के मुकाबले पर गुरु गोबिन्द सिंघ जी क्या करेगा । गुरु जी के पठान सैनिक भी इन्होंने लोभ-लालच देकर अपनी तरफ कर लिये । यह पांच सौ पठान पीर बुद्धु शाह ने गुरु जी के पास नौकर रखवाये थे । इसलिए पठानों की इस गद्दारी को सुन कर पीर बुद्धु शाह अपने 700 मुरीद और चारों पुत्रों को लेकर गुरु जी की मदद को आ गया । नादौन गांव के पास भारी लड़ाई हुई । पठान भी बहुत मारे गये । तीन चार राजा भी मरे । आखिर गुरु जी की फतेह हुई । श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने बचित्र नाटक में लिखा है-

भई जीत मेरी ॥
क्रिपा काल केरी ॥

इसलिए यहां हर वर्ष होले महल्ले के मेले पर महल्ला निकलता और भारी समारोह होता था । यहां का प्रबन्ध अभी तक महंत के अधीन ही था । 1964 में 28 मार्च को होला था । एक निहंग सिंघों का जत्था 28 तारीख को वहां पहुंचा । महंत की तरफ से उनसे अच्छा बर्ताव न किया गया । वह सिंघ थे, गुरु की लाडली फौजें थे । महंत के विरुद्ध उन्होंने रोष किया और गुरुद्वारे में अखंड पाठ आरम्भ कर दिया । महंत गुरुद्वारों को अपनी निजी जायदाद समझते थे और अपनी मनमर्जी करते थे । इसी बात के लिए अकाली लहर चली थी, परन्तु यह गुरुद्वारा साहिब पंजाब से बाहर होने के कारण महंत के कब्ज़े में ही था । महंत गुरुद्वारे को बिल्कुल ही निहंगों गोचरा छोड़ कर चला गया । उससे सब्र न हो सका उसने समझा यह निहंग अब गुरुद्वारे को छोड़ेंगे नहीं । उसने निहंगों पर नाजायज कब्ज़े का दावा कर दिया । महंत की वाकफियत थी । उसने अफसरों से मिल मिला कर अदालत से फैसला अपने हक में करवा लिया । अदालत के फैसले अनुसार पुलिस गई और उसने निहंगों को निकल जाने के लिए कहा, परन्तु निहंग सिंघ न माने । उन्होंने अखंड पाठ शुरू किये हुए थे । एक पाठ का भोग डाल कर दूसरा रख लेते थे । 15-20 दिन ही सारे अभी निहंग सिंघों को वहां रहते हुए थे । कभी किसी

अदालत का ऐसा फैसला इतनी जल्दी नहीं हुआ, परन्तु महंत और हिमाचल सरकार की मिली-भुगत से यह फैसला इतनी जल्दी हो गया था ।

जब निहंग-सिंघ न माने तो पुलिस ने सख्ती की, गोली चलाई, गुरुद्वारे के बड़े दरवाज़े को तोड़ दिया गया । गोलियों से 10-12 निहंग-सिंघ शहीद हो गये । पाठ खंडित हो गया । इस कार्यवाही ने सिक्ख जगत में खलबली मचा दी । जगह-जगह से दूर निकट से सिंघ यहां पहुंचे और सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाई । मास्टर तारा सिंघ और संत फतेह सिंघ दोनों ही यहां पहुंचे । आखिर पड़ताल के लिए सरकार ने कमिशन नियुक्त किया । गुरुद्वारा प्रबन्ध तो उसी समय ही इलाके के सिक्खों की कमेटी के हवाले कर दिया गया, परन्तु कमिशन का फैसला निहंग सिंघों के विरुद्ध दिया गया । हां, प्रबन्ध हमेशा के लिए महंत के हाथ से निकल गया । अब यहां प्रबन्धक कमेटी काम कर रही है ।

भारत सरकार के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी इस खूनी कांड समय देहरादून पहुंचे हुए थे । इस विरुद्ध उनको याद-पत्र दिया गया, परन्तु उन्होंने उस समय प्रतिनिधि मंडल से कोई बात न की । परन्तु कुछ दिनों के बाद ही दिल्ली जा कर पंडित नेहरू जी का देहांत हो गया और उनकी जगह श्री लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री चुने गये ।

चीन का हमला और सिक्ख फौजों की बहादुरी

सन 1962 में चीन ने अचानक हिन्द पर हमला किया, परन्तु हिन्दुस्तान उस समय तक ''शांति-सद्भावना'' का दावेदार रहा था, इसलिए उसको ख्याल भी न था कि 'हिन्दी-चीनी' भाई-भाई कहने वाला चीन हिन्दुस्तान पर इस तरह हमला कर देगा । चाहे यह पालिसी हर देश प्रयोग करता है और सख्त से सख्त एटम बम्ब तक बनाना वाले देश रूस और अमरीका भी 'अमन रखो' और हम 'अमन पसन्द हैं' का नारा लगाते हैं, परन्तु अपनी रक्षा के प्रबन्ध वह पूरी तरह रखते हैं, परन्तु हिन्दुस्तानी हकूमत तो सिवाय देश के लोगों को दबाने और अधिकार भी न मानने

तक ही प्रयोग करने पर सीमित थी । बे-हथियारे लोगों को तो डंडे वाले भी मार सकते हैं, परन्तु जब हथियारों वालों से मुकाबला पड़े, तो पता लगता है कि क्या बात है । चीन की एटमी मशीनगनों के मुकाबले के भी हिन्द के पास कोई हथियार नहीं थे, सिर्फ एटमी और आटोमैटिक मशीन गनों का मुकाबला कैसे कर सकता था । इसलिए कुछ दिनों में ही चीन ने हिन्द का भारी नुक्सान किया, 8-10 हज़ार फौजी मार दिये । नेहरू जी की अपील पर बर्तानिया और अमेरिका ने झट ही हथियार दिये तथा और सुविधायें भी पहुंचाईं । नेफा की लड़ाई में भारतीय फौजों का भारी नुक्सान हुआ और बड़े इलाके पर चीन ने कब्ज़ा कर लिया । परन्तु लद्दाख की लड़ाई में हिन्दी और विशेष कर सिक्ख फौजों ने वह कसर पूरी कर दी । नेफा का बदला चुका लिया । चीनी सारा ज़ोर लगाने पर भी लद्दाख के हवाई अड्डे पर कब्ज़ा न कर सके । फिर लड़ाई बन्द हो गई और चीन स्वयं ही पीछे हट गया ।

चीन ने हिन्द को जगा दिया था । दो-तीन साल में हिन्द भी काफी शक्तिशाली हो गया और तैयारी करने लग पड़ा, क्योंकि पाक लोग सरहदों पर शरारतें करते ही रहते थे । इसलिए यह तो थी देश की हालत और सिक्ख फौजें देश की रक्षा के लिए उसी तरह ही तैयार-बर-तैयार थे, जैसे कि देशवासी को होना चाहिए । चीन की लड़ाई ने सिक्खों पर जो बेवजह शक किये जाते थे कि यह देश के हितैषी नहीं वह काफी हद तक दूर हो गये ।

संत जी ने व्रत रखना

सन 1965 में संत जी ने फिर व्रत रखकर 15 दिन के बाद जल-मरने का ऐलान कर दिया । सितम्बर की 25 तारीख को संत जी ने जलने का ऐलान किया और श्री अकाल तख्त जी के साथ वाली छत पर अग्नि कुंड बना दिया, जिनमें उनको जलना था, परन्तु इन्हीं दिनों में ही पाकिस्तान से कश्मीर में जंग छिड़ गई । 6 सितम्बर को भारतीय फौजों ने सारे ही बार्डरों पर लड़ाई छेड़ दी और बड़ी जंग लग गई ।

जंग लगी देख कर संत जी को अपीलें की जाने लगीं। इस समय देश के प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे, इसलिए देश के नेताओं ने अपील की संत जी यदि देश बच गया, तो आपका सूबा भी बन जायेगा, परन्तु यदि देश गुलाम हो गया या तबाह हो गया, तो आपका सूबा कौन देगा और कौन बनायेगा, परन्तु संत जी न माने। देश की फौज के सिक्ख जरनैलों ने स्वयं आ कर कहा कि संत जी व्रत छोड़ दो और उस समय के गृहमंत्री(गृहमंत्री जितने भी बने, वह पंजाबी सूबे के विरुद्ध ही रहे) श्री नंदा जी ने भी अपील की कि संत जी व्रत छोड़ दें। संत जी ने व्रत छोड़ दिया। चाहिए तो यह था कि यदि उस समय कोई कुण्ड बनाया गया प्रयोग में नहीं आया तो उसको ध्वस्त कर दिया जाता, परन्तु वह उसी तरह बना रहा और ऊपर लिखा रहा कि संत जी इस अग्नि कुण्ड में अपनी आहूति देंगे।

पंजाबी सूबा बनना

युद्ध समाप्त हो गया। थोड़े दिनों की लड़ाई में ही भारी नुक्सान हो गया था। श्री लाल बहादुर शास्त्री तथा और कई हाईकमान के नेता (श्री नंदा जी के बिना) सारे ही चाहते थे कि पंजाबी सूबा बना दिया जाये। बहादुर और देश भक्त सिक्ख कौम की यह लम्बे समय की मांग पूरी कर दी जाये। परन्तु जनसंघ टाईप के कांग्रेसी और उसके नेताओं को यह बात एक आंख भी नहीं भाती थी। पंजाबी और हिन्दी रीजन आगे ही 1954 के वजूद में आ चुके हुए थे और पंजाबी रीजन आगे ही पंजाबी सूबा बनाना था, परन्तु चालाक और कट्टर सांप्रदायिकों ने जनसंघियों को भी मात कर दिया। इसी सम्बन्ध में ही आल इंडिया कांग्रेस के प्रधान श्री कामराज की कोठी पर हमला और पथराव प्रदर्शन भी किया गया। परन्तु नंदा जी, जो गृहमंत्री थे, उन्होंने देखा कि कांग्रेस हाई कमान अब पंजाबी सूबा बना देगी, तो उन्होंने दूध में मेंघने डालने वाली नीति चला दी। 9 मार्च, 1966 को पंजाबी सूबा बनाने के लिए आल इंडिया कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने प्रस्ताव पास करके सिफारिश कर दी। इस पर जनसंघियों

ने दिल्ली और पंजाब के अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना आदि शहरों में वह शोर मचाया कि जैसे कोई सरकार ही नहीं होती । आग लगाई गई, दुकानें लूटी गईं और कई जगह सिक्खों और सिक्ख गुरुद्वारों पर हमले किये गये ।

दूसरी तरफ पंजाबी सूबे के हक में और विरुद्ध दोनों तरह के बयान इससे पहले कांग्रेसी नेता देते आ रहे थे, परन्तु पंजाबी सूबे के विरोधियों को इतनी आशा नहीं थी कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी इतनी जल्दी कोई ऐसा प्रस्ताव पास कर देगी, परन्तु जैसे ही यह प्रस्ताव पास हुआ, पंजाबी सूबे के विरोधियों को आग लग गई । पंजाबी सूबे के विरोधी आर्य समाजी और जनसंघी बड़े विरोधी हैं, जिन्होंने पंजाबी सूबे और पंजाबी भाषा के विरुद्ध सौगन्ध खाई हुई थी । उन्होंने यह प्रचार किया हुआ था कि यदि पंजाबी भाषा लागू हो गई तो हिन्दू लोग सिक्खी के प्रचार का असर कबूल करके, उसके पैरोकार बन जायेंगे, क्योंकि पंजाबी भाषा (गुरमुखी अक्षरों में) सिक्खों का इतिहास, सिक्खों की सभ्यता, सिक्खी कल्चर का अधिक प्रचार है, इसलिए इसके चालू होने से हिन्दी और हिन्दुओं को नुक्सान पहुंचेगा । उसके इस प्रचार से सरकार के पंजाबी विरोधी होने के कारण स्थिति यह थी कि सरकार के विभागों में अफसरशाही में पंजाबी विरोधियों की बहु-सम्मति थी । हिन्दू बहु-सम्मति में होने के कारण अफसरों में ज़्यादा और निचले हिस्से में भी ज़्यादा होने के कारण ज़्यादा सरकारी मशीनरी, पंजाबी विरोधी भावों से ही भरी पड़ी थी और दूसरी तरफ हिन्दू अखबारों की बहु-सम्मति इस सांप्रदायिक प्रचार के बाढ़ को और तेज़ करने में ज़ोरदार काम कर रहे थे । इसलिए कांग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव पास होने से क्या हुआ ? जनसंघी और आर्य समाजी खुले-दिल फसाद करने पर तुल गये । आग लगाने और सरकारी काम में रुकावटें पैदा करने, कालेजों, स्कूलों और अस्पतालों सब तरफ हमले करने लग गये । बहुसम्मति पुलिस अफसरों की शह पर कुछ न करने का पक्ष देख कर यह आग लगाने और सरकारी बसों को फूंकने में भी कामयाब होते गये । जो कम सम्मति पुलिस अफसरों (भाव सिक्ख अफसरों) ने इसके

विरुद्ध अपनी ड्यूटी अनुसार फर्ज निभाया, तो उनके विरुद्ध ज़ुल्म करने के किस्से घड़ कर ज़ालिम होने के सर्टीफिकेट दिये गये। क्योंकि प्रचार करने की मशीनरी (अखबार) भी तो ज़्यादा पंजाबी विरोधी लोगों की ही थी।

फिर फसाद कहां तक बढ़े ? इसकी एक ही मिसाल काफी है कि रोहतक जैसे शहर में तीन कांग्रेसी वर्कर जीवित ही जला दिये गये और उनके विरुद्ध कुछ भी न हुआ (भाव कोई पक्का सबूत न मिला) परन्तु बाद में एक जनसंघी विधायक (जो सांप्रदायिक और शरारत अंग्रेज़ प्रचार करने में नेता था) के विरुद्ध पुलिस की कार्यवाही पर पुलिस अफसर ही निशाना बन गये, भाव वह ही तबदील हो गये। यही कारण था कि जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना आदि जगहों पर पंजाबी सूबे के विरुद्ध इस तरह भारी प्रगटावा किया गया। ऐसा कुछ करने वाले लोगों ने कर करवा कर फिर वही बात की, जो नहीं होनी चाहिए थी। पंजाबी सूबे की हदें मुकरर करने के लिए कमिशन बनाया और उसके फैसले अनुसार पंजाबी सूबे का सिर चण्डीगढ़ और दिल भाखड़ा डैम आदि निकाल कर बाकी के हिस्से को पंजाबी सूबा बनाया गया। इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई तो केन्द्र ने यह इलाके सीधे अपने कब्ज़े में रखने का ऐलान कर दिया।

श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के शस्त्र

जब पंजाब पर अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा किया था, तब लाहौर के किले में तोशेखाने में जहां कोहिनूर हीरा और धन माल पर अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा किया, यह शस्त्र जो श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के थे, अंग्रेज़ इनको इंगलैंड ले गये और वहां अपने तोशेखाने में संभाल कर रख दिये थे। जब से देश आज़ाद हुआ, तब से मांग की जा रही थी कि लंदन से यह चीज़ें वापिस मंगवाई जायें। परन्तु सरकार का ध्यान इस तरफ विशेष कर नहीं था और वह अमन के हामी होने के नाते हथियारों के प्रयोग के विरुद्ध थे, परन्तु चीन और पाकिस्तान के हमलों ने भारत को महसूस करवा दिया है कि शस्त्र ही सब कुछ हैं। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ महाराज ने यह बात

ऐसे नहीं थी लिखी-

असि क्रिपान खंडो खड़ग, तुबक तबर अरु तीर ॥
सैफ सिरोही सैहथी, यही हमारे पीर ॥

सब शस्त्रों का वह सत्कार करते हैं-

जिते शस्त्र नामं ॥ नमस्कार तामं ॥
जिते असत्र् भेयं ॥ नमस्कार तेयं ॥

गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंघ जी लिखते हैं-

शस्त्रन के अधीन है राज ॥
जो ना धरहि तिस बिगरहि काज ॥

इसलिए चीन के हमले के बाद हमारी सरकार ने अंग्रेज़ी सरकार से मांग करनी शुरू कर दी थी कि श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी की कलगी और उनके पावन हथियार वापिस किये जायें। इसलिए यह मांग चलती रही और विशेष कर पाकिस्तान के हमले के बाद श्री शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री जी की तरफ से इस मांग पर बहुत ज़ोर दिया गया।

आखिर अंग्रेज़ी सरकार ने यह बात मान ली और उसने यह पावन शस्त्र देने का इकरार कर लिया। परन्तु श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी की कलगी बारे बताया गया है कि उसकी पड़ताल हो रही है। इसलिए यह शस्त्र हवाई जहाज़ द्वारा सरकारी तौर पर भारत भेजे गये और दिल्ली में 1 जनवरी 1966 को हवाई अड्डे पर पहुंचे। बेशक हमारे भारतीय नेता, कुछ कमज़ोर असर नीचे आ कर इन शस्त्रों और शस्त्र वालों को ज़रा अच्छी नज़र से नहीं देखते थे, परन्तु चीन और पाकिस्तान के हमले से स्वर्गीय श्री शास्त्री जी हमारे राष्ट्रपति और बाकी भारतीयों को पता लग गया है कि इन शस्त्रों की क्या कीमत और महानता है। श्री शास्त्री जी ने हवाई अड्डे पर साफ शब्दों में शस्त्रों का स्वागत करते हुए श्री राम चन्द्र जी महाराज, श्री कृष्ण भगवान, राणा प्रताप, शिवा जी, श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब और दशमेश पिता की तरफ से शस्त्रों का प्रयोग और पूजा करने के विचारों का सत्कार किया।

गुरु जी ने शुरू में ही अपना ख्याल साफ शब्दों में बता दिया था-

देगो तेगो फतहि नुसरत बेदरंग ॥
याफति अज़ नानक गुरु गोबिन्द सिंघ ॥

पिता गुरु जी ने कृपाण को ही देवी चंडिका, दुष्ट दमणी बताते हुए फरमाया है-

प्रगट चंडका खंडका दुष्ट दमणी ॥
डरै दुष्ट दोखी इहै जवाल बमनी ॥
रहै म्यान मधं समै दुष्ट घावै ॥
इही है जवाला भवानी कहावै ॥

लंदन से यह शस्त्र पहुंचे-

1. **शमशीर का सिपर : (तलवार और ढाल)**-यह महाराज की निशानी 1823 ईस्वी में पेशावर के भाई दया सिंघ जी ने महाराजा रणजीत सिंघ जी को भेंट की और महाराजा रणजीत सिंघ ने पूर्ण सत्कार से प्राप्त करके भाई दया सिंघ जी को इनाम के तौर पर खिलत और एक कुएं की जागीर बख्शी ।
2. **दाह-बे आहिनी :** साहिबां की यह पवित्र यादगार भी एक पहाड़िये ने 1823 ईस्वी में ही महाराजा रणजीत सिंघ साहिब की भेटा करके इनाम प्राप्त किया ।
3. **चक्कर-ए आहिनी :** साहिबां का यह लोहे का चक्कर जिस पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है, महाराजा रणजीत सिंघ को एक अकाली सिंघ (निहंग) ने अटक में भेंट किया ।
4. **शमशीर तेग :** साहिबां की यह मुबारक याद एक बाबा भारती के पास थी, जिससे महाराजा रणजीत सिंघ जी ने 1821 ईस्वी में प्राप्त करके अपने तोशेखाने में रखी थी ।
5. **कलगी-ए-कच्च :** यह साहिबां की शीशे की कलगी जो साहिब श्री गुरु नानक देव जी के वंश के एक बेदी साहिबज़ादे के पास वैरोवाल में थी, 1824 ईस्वी में महाराजा साहिब को दी गई ।
6. **नेजा :** दशमेश पिता का पवित्र नेज़ा अबचल नगर के सिंघों ने महाराजा रणजीत सिंघ को भेंट किया था ।

7. **बरछी :** साहिबां की यह पवित्र बरछी कमलागढ़ (मंडी) के राजा के पास थी, जो इसकी नित्य प्रति पूजा करता था । यह पवित्र यादगार महाराजा रणजीत सिंघ की फौज के अंग्रेज़ जरनैल वंतूरा को कमलागढ़ के किले को फतेह करने के समय मिली, जो उसने कंवर नौनिहाल सिंघ को 1839 ईस्वी में भेंट की ।
8. **बरछा :** साहिबां का यह पवित्र बरछा खालसा फौज ने 1843 में जम्मू फतेह करने के समय प्राप्त किया और सारी सेना इनका सत्कार और पूजा करती थी ।

इन पावन शस्त्रों सम्बन्धी उपरोक्त इतिहास राय मिसर मेघराज के उस परवाने में दर्ज है जो उसने तोशेखाने में से इन शस्त्रों को भेजते समय तिथि 12 नवम्बर 1850 को लिख कर साथ भेजा था । इन महान एतिहासिक यादगारों के साथ ही महाराजा रणजीत सिंघ की एक सुंदर सोने की कुर्सी भी थी । इन समूह वस्तुओं को एक विशेष बक्से में बन्द करके लाहौर के डिप्टी कमिश्नर ने 23-9-1851 को एक जमादार, 2 हवलदार और कई सिपाहियों की निगरानी में अम्बाले की तरफ भेजा । लार्ड डलहौज़ी उस समय शिमले में थे । बाद में महाराजा रणजीत सिंघ की एक तलवार और सोने की कुर्सी कलकत्ते से 5-2-1853 को बोसफोरस नामक समुद्री जहाज़ द्वारा इंगलैंड भेज दिये गये और साहिबां के पवित्र शस्त्र लार्ड डलहौज़ी पास ही रहे ।

ठीक एक सदी के बाद देश की आज़ादी के उपरांत पंजाब सरकार की तरफ से इन पवित्र शस्त्रों को मुड़ देश में लाने के लिए यत्न आरम्भ किया गया । श्री एम. एस. रंधावा आई. सी. एस. जो पहले अंबाला डिवीज़न के कमिश्नर थे, वह इंग्लैंड गये हुए थे, अपने एक मित्र मि. आर्चर का घर भूल कर उसी गली के किसी और घर में चले गये । जब इस घर में उनको बैठाया गया तो उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ के खानदान की अनेकों तस्वीरें देखीं जिनका बाद में उन्होंने मिस्टर आर्चर से ज़िक्र किया । मिस्टर आर्चर ने उस सम्बन्धी पता करने का वचन दिया और खोज करते-करते इन पवित्र शस्त्रों का पता लगा । ठीक 13 वर्ष

के अनथक यत्नों के बाद यह पवित्र शस्त्र स. केवल सिंघ और स. कंवलजीत सिंघ जी जो भारतीय राजदूत इंग्लैंड के आफिस में थे, के यत्नों से लेडी लिंडसे जो लार्ड डलहौजी के खानदान में है, पास से प्राप्त करने के उपरांत 1-1-1966 को पुनः देश वापिस पहुंचे ।

गुरुद्वारा बाघमरी कलकत्ता के हाल

बताते हैं कि इस इलाके के घटिया और शरारती तत्वों ने गिन-चुन कर यहां के विधायक की शह पर गुरुद्वारे की जायदाद पर कब्ज़ा करने की योजना बना रखी थी, जो सफल न हो सकी । जब शरारती और फिरकू लोगों ने गुरुद्वारे पर हमला किया तो वहां के सेवादारों ने जो कि गिनती में बहुत ही कम थे, काफी समय उनको अंदर न घुसने दिया । वह बाहर से ईंटें-पत्थर मारते रहे । अन्दर थोड़े से सिंघ अपना बचाव करते रहे परन्तु उन्होंने जान की बाज़ी लगा दी और किसी को अन्दर न घुसने दिया । इस तरह कामयाबी न होती देख कर उन्होंने स्वयं ही पुलिस को बुलाया और पुलिस ने बजाय इसके वह अन्दर घिरे हुए सिंघों की मदद करती, उसने बल्कि अन्दरले सिंघों पर गोली चला दी । उनको घायल करके कुछ को शहीद करके इस भीड़ को घुसाया । भीड़ ने अन्दर जा कर आग लगाई । श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बेअदबी की । अफसोस यह कि पुलिस ने पास खड़े हो कर यह कार्यवाही करवाई । यह भी बताया गया है कि यहां की विधायक ने जो दायें दल की कम्युनिस्ट पार्टी की मैम्बर चुनी गई है, उसने यह सारा कार्य करवाया । एक वज़ीर भी इस पार्टी का सुना है जिसका इसके पीछे हाथ है ।

इस घटना के बाद कलकत्ते के सिक्खों ने यह फैसला किया था कि वह जा कर गुरुद्वारा बाघमरी में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश करेंगे । एक जलूस 29 मार्च को गुरुद्वारा बड़ी सिक्ख संगत से चला । जलूस के आगे पांच सात सिंघ थे । पीछे एक सिंघ स. दर्शन सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बीड़ अपने सिर पर विराजमान की हुई थी और उनके पीछे ढ़ाई तीन सौ सिंघ शब्द कीर्तन करते जा रहे थे । जलूस

महात्मा गांधी रोड से पूरे अमन चैन से निकल गया, परन्तु जब यह जलूस कालेज रोड पर पहुंचा तो इस पर ईंटें, पत्थरों, बम्बों, गोलियों और सोडा वाटर की बोतलों से आस-पास के मकानों से हमला किया गया। पुलिस ने यहां जलूस पर लाठीचार्ज किया, आंसू गैस फैंकी और फिर गोली चलाई। अगले सिंघों में से कुछ सिंघ बिखर गये, परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ जिस ने उठाई हुई थी, वह सिंघ और उनके ढ़ाई तीन सौ साथी आगे निकल गये।

माणकतला के पुल पर पुलिस ने फिर जलूस रोका और आगे न बढ़ने के लिए कहा। यहां सिंघ धरना मार कर बैठ गये और कहा, 'हमने सतिगुरु जी की सवारी गुरुद्वारा बाघमरी ले कर जानी है, पीछे नहीं मुड़ना, यदि आगे न जाने दोगे तो यहां ही शहीदियां दे देंगे।' पुलिस ने गोली चलाने के लिए पोजीशनें ले लीं, परन्तु पीछे बातचीत करने में तीन घण्टे लगा दिये। जत्था पीछे न मुड़ता जान कर पश्चिम बंगाल के उप-मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु मौके पर पहुंच गये। उन्होंने जलूस के नेताओं से बातचीत की और उनको हक और सच्चाई समझ कर आगे बढ़ने की आज्ञा दे दी और आप भी गुरुद्वारा साहिब तक जत्थे के साथ गये जहां उसी समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया गया। अगले दिन 30 मार्च को सुबह श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अखंड पाठ शुरू हुआ, जिसका भोग पहली अप्रैल को पड़ा। इस तरह कलकत्ते के सिंघों ने कमाल की बहादुरी और कुर्बानी का सबूत दिया और जलूस लेकर अपनी मंज़िल पर पहुंचे। सिंघों ने बाघमरी पहुंचने के लिए अरदास की थी और उसको पूरा करके ही दम लिया।

इस दुखदायी घटना के बाद सिक्ख जगत में हाहाकार मच गई थी। तकरीबन सब पार्टियों के नेता इस जांच-पड़ताल के लिए पहुंचे और देखा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ने फाड़-फाड़ कर जला-जला कर फैंके हुए बिखरे पड़े थे। कई आधे जले हुए थे। कई आधे उसी तरह झुलसे हुए पड़े थे। वह ट्रंक वहां उसी तरह ही खुला पड़ा था, जिसमें से पावन बीड़ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को निकाल कर जलाया गया। रुमाले जलाये सभी ने देखे। अन्दर से गुरुद्वारा जलाया गया, खिड़कियां जलाई गई थीं।

राख वहां उसी तरह बिखरी पड़ी थी । इसके पिछली तरफ लंगर के बरामदे भी जलाये गये । श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज की आदम-कद फोटो घोड़े की सवारी वाली भी जलाई गई । बाकी सामान भी उसी कमरे में राख हुआ देखा । दीवार गिरी हुई थी यहां से भीड़ को अन्दर घुसाया गया था । वह समाधि जिसको उन्होंने मंदिर बनाने का यत्न किया इसलिए बहुत खस्ता हालत में थी । जो सदियों भर न कभी किसी ने इसकी मुरम्मत करवाई, न कोई देखभाल की है । इसकी बनावट से पता चलता है कि यह किसी सिक्ख की समाधि है, जिसके चार दरवाज़े थे । सिक्ख गुरुओं ने ही इस दिशा-भ्रम को मिटाया है । मंदिरों की आम बनावट एक ही दरवाज़े की होती है ।

सैकुलरइज़्म का गलत प्रयोग

चीन की जंग से पहले हमारी सैकुलरइज़्म की दावेदार भारत सरकार को इस बात में भी सांप्रदायिकता नज़र आई थी कि फौजों में सिक्ख फौज, डोगरा और जाट, हिन्दू और मुसलमान नाम की अलग-अलग रैजीमैंटें क्यों हैं ? यह तो गैर-हकूमत (अंग्रेज़ों) ने कायम की थी, इसलिए यह नहीं चाहिए, यह चीज़ भारत की सैकुलरइज़्म की नीति के खिलाफ है । अच्छा यह था कि सैकुलरइज़्म के पर्दे में इस किस्म का सांप्रदायिक प्रभाव फौजों तक न ही जाता, परन्तु चला गया । सिक्ख, डोगरा, जाट और मराठा आदि सब रैजीमैंटों को तोड़ कर मिलगोभा कर दिया गया ।

अंग्रेज़ बेशक विदेशी थे और वह देश में हर बात अपनी नीति की करते थे, परन्तु यह बात उनकी नीति से सम्बन्ध नहीं थी रखती, बल्कि यह बात लड़ाई और जंगों से सम्बन्ध रखती थी और बहादुरों की बहादुरी की वह कद्र करते थे । इनाम रुतबे तथा और भी मदद करते थे । हिन्दू रैजीमैंट को अपने हिन्दू धर्म, मुसलमान रैजीमैंट को अपने धर्म में और सिक्ख रैजीमैंट को सिक्खी के उसूलों में पक्के रहने की प्रेरणा थी । जो सिपाही अपने धर्म के उसूलों पर नहीं चलता, वह देश की रक्षा के उसूलों पर पाबन्ध कहां रहेगा ? यह थी फौजियों को फौज में धर्म पर पक्के

रखने का मतलब । परन्तु हमारी सरकार ने इस बात को खत्म कर दिया । परन्तु चीन के हमले के समय ही सरकार को अपनी इस गलती का अहसास हो गया और चीन की जंग के बाद पहले की तरह ही पुनः रैजीमैंटों को वहीं शक्ल दी गई, जो पहले थी । विशेष कर सिक्ख फौजियों को जिनको अधिक तोड़ने और सिक्खी से दूर करने का यत्न किया गया था, वह सब कुछ छोड़ कर फौजियों को मुड़ उसी रूप में लाया गया था ।

भारत में श्री शास्त्री जी के प्रधानमन्त्री बनने के बाद सिक्खों से जो भेद-भाव हो रहा था, उसमें फर्क पड़ा । इससे पहले सिक्खों से केन्द्र का जो बर्ताव था वह किसी से छिपा नहीं ।

स्वर्गीय श्री शास्त्री जी ने 1965 के पाकिस्तानी हमले के बाद गुरुद्वारा बंगला साहिब के एक विशेष समागम में तकरीर करते कहा था-"इस जंग की जीत का सेहरा पंजाबियों के सिर है और विशेष कर बहादुर सिक्ख कौम इसके लिए बधाई की पात्र है । सिक्ख कौम ने अपने पुराने इतिहास को दोहरा कर यह साबित कर दिया है कि यह बहादुर कौम देश प्रति वफादार और देश की अनख के लिए मर मिटने वाली है ।"

परन्तु अफसोस कि श्री शास्त्री को जल्दी धुर का बुलावा आ गया और आप अचानक ही रूस में बातचीत करने गये हुए, हम से हमेशा के लिए बिछुड़ गये ।

दिल्ली चाँदनी चौक की कोतवाली

दिल्ली शहर की कोतवाली उस जगह पर बनी हुई थी, जिस जगह साहिब श्री गुरु तेग बहादुर जी शहीद हुए । भाई मती दास और भाई दयाला जी भी यहां शहीद किये गये । यहां ही पहले औरंगज़ेब की भी कोतवाली और जेल भी थी । इसलिए यह ऐसा शहीदी अस्थान था, जो सदियों से पहले मुगल हकूमत फिर अंग्रेज़ हकूमत और अब अपनी हकूमत के समय में भी कोतवाली चली आ रही थी ।

अंग्रेज़ एक विदेशी हुक्मरान थे, इस पुलिस चौकी वाली जगह की उस समय से सिक्ख मांग करते आ रहे थे, परन्तु यह मुराद सिक्खों की

कैसे पूरी होती ? भाव किसी ने इस तरफ ध्यान न दिया । फिर अंग्रेज़ जाते समय, निरोल सिक्ख-स्थान देना चाहते थे, जो आज के पंजाबी सूबे से कहीं बड़ा होना था । परन्तु सिक्ख देश-भक्त थे, वह देश के टुकड़े करवाने में खुश नहीं थे । उस समय इस बात को मुख्य रख कर बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता भी यही कहते थे कि सिक्ख हमारे भाई हैं और यह हमारे साथ रहें, हम इनको भाईयों की तरह रखेंगे । परन्तु आज़ादी मिलने के साल दो साल बाद ही सिक्खों से भेद-भाव शुरू हो गया । अंग्रेज़ समय पंजाब में राज्य भाषा उर्दू थी, क्योंकि मुसलमान पंजाब में बहु-गिनती में थे, परन्तु उनके जाने के बाद पंजाब में पंजाबी भाषा को राज्य-भाषा बनाने की मांग की गई और सूबे तो भाषा के आधार पर बांट दिये गये, परन्तु पंजाबी में पंजाबी से बहु-गिनती के बलबूते पर धक्का किया गया था । कांग्रेसी नेता भी समझने लग गये कि अब हमें कोई क्या कह सकता है । अंग्रेज़ समय वोट सिक्ख को सिक्ख, हिन्दू को हिन्दू और मुसलमान को मुसलमान डालते थे । इस तरह सभी के ठीक नुमाईंदे चुने जाते थे । परन्तु यह जो पंजाबी से ईर्ष्या करने लग पड़े थे, यह इस बात को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे कि कोई सिक्ख मैंबर उनकी मर्जी का न बने । इसलिए पंजाबी को तो जो रियायत मिलनी, मिलनी ही थी, सिक्ख के इस वोट डालने के हक को भी खोखला कर दिया गया, भाव चुनाव सांझे कर दिये गये ।

इन बातों ने सिक्खों को भी तमक लगाई, परन्तु वह क्या कर सकते थे, सिवाय ऐजीटेशन के । इसलिए इसी ऐजीटेशन ने पंजाबी सूबे की मांग का रूप धारण कर लिया । बेशक कितनी सख्तियां हुईं, कैदें और जुर्माने भी हुए, परन्तु यह मांग ज़ोर पकड़ती गई, क्योंकि बहुगिनती के सांप्रदायिक तत्वों ने इस समय सिक्खों के कलचर और आवाज़ को कुचल देना ही निशाना बना रखा था । बेशक सिक्ख इस तरह घोर बेइन्साफी से काफी तंग थे, परन्तु जब गैरों ने हमले किये, तो सिक्खों ने सब कुछ भूल कर देश की रक्षा के लिए बढ़-चढ़ कर हिस्सा पाया और सच्चे देश भक्त होने का सबूत दिया ।

सिक्खों की देश-भक्ति ने आखिर विरोधियों को भी कायल कर दिया । वह भी सिक्खों से हो रही बेइन्साफी को महसूस कर गये । इसलिए आज पंजाबी सूबा अस्तित्व में आया । अब देश की प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गान्धी जी थीं । अभी-अभी ही केन्द्र सरकार ने सिक्खों की इस पुरानी मांग-'दिल्ली की कोतवाली सिक्खों को दो'-मान लिया। अब खबर भी थी कि इस कोतवाली की इमारत, 2 अक्तूबर, 1968 को गुरुद्वारा शीश गंज दिल्ली की गुरुद्वारा कमेटी के हवाले कर दी जायेगी । जत्थेदार संतोख सिंघ जी इस काम की पूर्ति के लिए दिन-रात लगे रहे और आखिर कामयाब हो ही गये ।

1966 की शिरोमणि कमेटी के चुनाव

पाकिस्तान के हमले से पहले पता नहीं था कि पाकिस्तान इस तरह हमला करेगा और इससे पहले के वातावरण और ही थे । सिक्ख कौम में पंजाबी सूबे के न बनने के कारण भारी निराशा और फिर फूट भी बड़ी थी । मास्टर तारा सिंघ जी बेशक एक किस्म से हार गये थे और कौम का मजबूत हिस्सा उनके खिलाफ था, परन्तु फिर भी वह अपने हठ (पंथक मैदान) से हारे नहीं थे, क्योंकि ऐसे संत फतेह सिंघ के विरोधता करने जैसे आगे कई बार हालात पैदा हो चुके थे और वह फिर विरोधियों पर फतेह पाते ही आये थे, इसलिए उनकी यह विचारधारा व दृढ़ता उनको पीछे हटने की आज्ञा नहीं देती थी और न ही हटे । संत फतेह सिंघ जी उनके ही आगे लाये हुए थे, परन्तु एक बार व्रत तोड़ने की गलती ने बेशक उन पर तन्खाह लगवाई, भूल भी मान ली, परन्तु विरोधता के कारण और इनके विरुद्ध तीखे प्रचार के कारण आप आगे की तरह विरोधियों की विरोधता को दबा न सके, न अगली जगह पहुंच सके । संत फतेह सिंघ जी ने भी बेशक व्रत रख कर, पाकिस्तानी जंग के कारण व्रत तोड़ दिया था और लेखा दोनों लीडरों का बराबर हो गया था, परन्तु धुएंदार प्रचार एक दूसरे पर कीचड़ फैंकने का नतीजा उनके लिए अच्छा न निकला । गलतियां सब मनुष्य करते हैं और कोई भी गुरु और परमेश्वर के बिना

अभूल नहीं है, परन्तु दोनों ही दल एक दूसरे को दोषी ठहराते रहे और कौम को अपने-अपने पीछे लगाने की लगन में व्यस्त ही रहे थे। नतीजा आखिर वाहिगुरु के हाथ ही होता है। दो लड़े तो एक को हारना ही होता है, परन्तु लड़ने वाले, लड़ते समय इन बातों पर विचार नहीं किया करते और यदि करें तो, हां वाहिगुरु के भरोसे मरने-मारने की जंग तो लड़ सकते और शहीदियां पा सकते हैं, परन्तु इस विचार से भटक जाने से भाई-मार जंग में कामयाबी नहीं ले सकते। परन्तु असल में इस लड़ाई के पीछे काम कर रही तो माया और माया की प्रशंसा थी। इसलिए अब प्रेमी गुरसिक्ख आप ही अंदाजा लगा लें कि यह आपसी जंग और पंथक फूट किस लिए पड़ी हुई है।

शिरोमणि कमेटी की 140 सीटों के चुनाव होते हैं तो दोनों धड़ों ने इतने-इतने आदमी खड़े किये। इस चुनाव में निरोल सिक्खों की वोटें पड़ती हैं, जिस कारण विरोधी हुक्मरान के धड़ों को हर बार शिरोमणि कमेटी के चुनाव में हार होती रही और 1947 के बाद 1954, 1960 के दोनों चुनाव में पंथक जत्थेबंदी, शिरोमणि अकाली दल ने चुनाव जीती और सरकारियों को हार होती रही, परन्तु अब 1966 के चुनाव तो अजीब ही शक्ल के थे। दो अकाली दल (संत ग्रुप और मास्टर ग्रुप) का मुकाबला था, दोनों ही एक दूसरे को सरकारिये, कांग्रेसी, पंथ दोषी और प्रण तोड़ू कहते रहे, परन्तु नतीजा निकलने पर फिर मास्टर तारा सिंघ जी को मानना पड़ा और उन्होंने एक बयान में माना कि मेरे व्रत तोड़ने की बात ने ही मुझे आज इस दशा तक पहुंचाया। संत ग्रुप ने 100 से अधिक सीटें जीत ली और साबित कर दिया कि कौम उनके साथ है। संत जी सेवा की लगन से सेवा करता-करता और शब्द कीर्तन का आनन्द मानने वाला जीवन समय पा कर इस मार्शल कौम का आगू जीवन बन गया।

जेतू मास्टर जी क्यों हारे ?

असल में मास्टर जी ने कौम की अगुवाई जो बड़ी देर से संभाली हुई थी, उसने आप के विरोधी तो पैदा किये थे, परन्तु आपका यह नारा

'कौम खतरे मे़ है' कौम पर असर करता रहा और विरोधियों के विरुद्ध 'गद्दार' का फतवा कामयाब होता रहा। आप की निर्भयता और ईमानदारी कारण कौम विरोधियों के धुआंधार प्रोपेगंडे के बावजूद भी उनको कामयाबी न हुई और आप जीतते रहे। देश के बंटवारे से पहले आम लोगों का ध्यान इस तरफ नहीं था, परन्तु जब से गुरुद्वारा एक्ट बना, कौम में लड़ाई और झगड़े की जड़ बन गया था। 1947 से पहले जब मास्टर जी पंथक मैदान में आगे बढ़े तो सबसे पहले स. बहादुर महताब सिंघ पर फतेह डाली। फिर बाबा खड़क सिंघ को इस पंथक घेरे में से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया और वह दिल्ली जा कर कांग्रेसी बन गये। फिर स. अमर सिंघ आफ शेरे पंजाब को आप ने हराया, सर सुन्दर सिंघ मजीठिये से टक्कर ली। 1947 के बाद अकाली दल के सरगर्म नेता जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके कांग्रेस से मिल गये और मास्टर जी को छोड़ गये। शिरोमणि कमेटी पर उन्होंने कब्ज़ा कर लिया। मास्टर जी ने कई बार उन से हार खाई परन्तु दिल न छोड़ा और शिरोमणि अकाली दल के झण्डे को बुलंद रखा। कांग्रेसी सरकार की मदद से 1954 तक शिरोमणि कमेटी उनके (कांग्रेसी जत्थेदारों) पास रही, परन्तु इस साल शिरोमणि कमेटी के जरनल चुनाव में मास्टर जी इतने कामयाब हुए कि दुनिया दंग रह गई। जत्थेदार नागोके दल का एक भी मैंबर कामयाब न हो सका। कांग्रेस वालों ने लालच दे कर आदमी खरीदे और मास्टर जी को दो-तीन साल बाद फिर शिरोमणि कमेटी से जवाब हो गया। स. प्रेम सिंघ लालपुरा प्रधान बन गये। इस समय भी विरोधियों (ज्ञानी करतार सिंघ धड़े) की तरफ से मुकाबले का अकाली दल बनाया गया। परन्तु इस बार सम्वत 1960 की 17 जनवरी को जब दोबारा जनरल चुनाव हुए तो मास्टर जी फिर बड़ी शान से जीते। मास्टर जी वाकिया ही मास्टर थे। आप नेता पैदा करने वाले मास्टर थे। कांग्रेस में गये सिक्ख लीडरों को देख लो स. प्रताप सिंघ जी से लेकर ज्ञानी करतार सिंघ, स. हुक्म सिंघ, स. स्वर्ण सिंघ, स. ज्ञान सिंघ राड़ेवाला, स. अमर सिंघ झबाल, स. जसवंत सिंघ, स. संपूर्ण सिंघ जी 'रामा' आदि सब मास्टर जी के

ट्रेंड किये हुए और मास्टर जी की मदद से आगे गये, परन्तु आगे जा कर मौका मिलने पर कांग्रेसी बन गये और मास्टर जी फिर वैसे लड़ाई-भिड़ाई करने के लिए ही रह जाते थे। परन्तु आखिर संत फतेह सिंघ जी का यह कर व्रत छुड़वाना कि-'आपकी सब मांगें मानी गई हैं' और दूसरा आप व्रत रख कर, फिर छोड़ने के कारण, संत फतेह सिंघ के मुकाबले पर हार गये और बहुत बुरी तरह हारे। परन्तु मज़े की बात यह है कि आखिर अपने ही आगे लाये हुए नेता से हारे।

कुण्ड कायम रखने का मामला

शहीदों की यादगारें, शहीदों के शहीद हो जाने के बाद, उनकी याद में कौमें बनाया करती हैं, परन्तु यह भी एक कलयुगी करिश्मा ही समझना चाहिए कि शहीद हुए बगैर बिना मांगें मनवाये अपनी मांग से पीछे हट कर, जान बचा लेने वाले लोग भी चाहते हैं कि हमारी यादगारें उन शहीदों के बराबर बन जाएं और कौम हमारा जीवित रहते ही उतना सत्कार करे, जितना कि सच्चे शहीद होने वाले सिंघों का शहीद होने के बाद होता है।

संत फतेह सिंघ जी ने सबसे पहले जो व्रत रखा था, वह अपनी मर्जी और कौम की सलाह के बिना रखा था, परन्तु चलो कौम के कहने के अनुसार उन्होंने व्रत छोड़ दिया, गवर्नमैंट टेढ़े तिरछे तरीके से कुछ न कुछ मानी भी, चाहे उसके दिल में न हमदर्दी थी, न मांगें माने जाने का ही कोई वातावरण था, परन्तु फिर भी वह व्रत, कौम की सर्वसम्मति से छोड़ा था और किसी सीमा तक ठीक था। बाद में मास्टर जी ने भी अपना व्रत इसी इरादे में ही छोड़ा था और गवर्नमैंट संत फतेह सिंघ जी के व्रत छोड़ने के समय से ज़्यादा इस बात पर कायम थी कि सिक्खों की मांगें मानी जानी चाहिएं, परन्तु तकरीबन एक साल बाद कौम का नेता बन कर और मास्टर जी की जगह पर कब्ज़ा करके संत फतेह सिंघ जी मास्टर जी की विरोधता पर डट गये। एकता रख कर जो कुछ प्राप्त कर सकना था तो उस बात को इस विरोधता ने बिल्कुल ही खट्टे डाल दिया और बात जहां से चली थी, वहां ही आ गई। कुर्बानियां, जेलें और जद्दो-

जहद के सब असर समाप्त हो गये। कौम में नेतागिरी और ढिंढोरा प्रचार की जंग शुरू हो गई। संत जी इस बात पर बिल्कुल अड़ गये कि जिस मास्टर जी की कोशिशों से आप एक अनजाने और बेमालूम वर्कर से बढ़ते-बढ़ते इतने बढ़ गये थे कि मास्टर जी से नेतागिरी में भी आगे निकल गये थे परन्तु ऐसी जगह पहुंच कर, इतिहास इस बात की गवाहियां दे रहा है कि किसी को भी आगे बढ़ने और प्रसिद्ध बनने की ख्वाहिश के अधीन दूसरे की कृतज्ञता की बातें याद नहीं आया करतीं।

दूसरी बार अपनी पोजीशन कुछ बड़ी करके और ताकत (शिरोमणि कमेटी) पैदा करके संत जी ने पंजाबी सूबे के लिए श्री अकाल तख्त पर साथ के मकान पर पंजाबी सूबे की प्राप्ति के लिए व्रत रखा और साथ ही 15 दिन के बाद जल-मरने का ऐलान कर दिया। परन्तु आदमी का किया क्या होता है, यदि परमेश्वर को मंजूर न हो।

संत जी को व्रत रखे अभी कुछ दिन ही हुए थे कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जंग शुरू हो गई, सभी का ध्यान उस तरफ खींचा गया। संत जी को अपीलें की गईं कि व्रत छोड़ दें, परन्तु आप ने माने। सिक्ख फौजी जरनल आप के पास श्री अकाल तख्त साहिब आये और उन्होंने भी संत जी को व्रत छोड़ने के लिए कहा परन्तु संत जी तो भी न माने। हिन्द के गृहमंत्री श्री नंदा जी की अपील भी एक बार आप ने ठुकरा दी, परन्तु आखिर व्रत खोल दिया, क्योंकि जंग तेज़ होती जा रही थी।

देश की रक्षा का सवाल था। यह हर विरोधता और हर विरोधी ख्याल को छोड़ कर करनी ज़रूरी थी। पंडित नेहरू जी की जगह इस समय श्री शास्त्री जी प्रधानमंत्री थे। देश की लीडरशिप में तबदीली आ चुकी थी। दूसरी तरफ सिक्ख फौजी बहादुरों ने सबसे ज़्यादा काम किया, जानों की बाज़ियां लगा-लगा कर दुश्मन के हमलों का मुकाबला करते हुए देश की खातिर अपनी जानें कुर्बान करते गये। इस बात को विरोधियों ने भी देखा और नेक दिल नेताओं ने भी। कठिन मुहिम को सिक्ख फौजों ने फतेह किया सिक्ख जाँबाज़ सिपाहियों ने विरोधियों के छक्के छुड़ा दिये। इस बात ने जहां विरोधी पाकिस्तानियों के मनों पर असर किया,

वहां हिन्दीयों पर भी किया ।

कुछ दिनों के बाद जंग समाप्त हो गई, परन्तु सिक्ख फौजियों की बहादुरी ने हिन्दी लीडरों के मन में यह ख्याल पैदा कर दिया कि 'सिक्खों की मांग' 'पंजाबी सूबा' सांप्रदायिक नहीं यह बोली के आधार पर है' तथा और बोलियों के सूबों की तरह ही है । इसलिए 9 मार्च, 1966 को कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने पंजाबी सूबा दिये जाने की हिमायत का रैजूलेशन पास किया । उधर पाकिस्तान ने भी सिक्खों के हक में रेडियो पर प्रचार शुरू कर दिया, बेशक वह दिल से था या किसी तरह भी था, परन्तु पाकिस्तान रेडियो पर गुरबाणी के शब्द और सिक्खों के हक में प्रचार शुरू हो गया ।

चाहे पंजाबी सूबा बनाना माना गया, परन्तु फिर भी विरोधी अभी काफी थे और उन्होंने कमिशन मुकरर करके चण्डीगढ़, भाखड़ा डैम तथा और कई इलाके, जो पंजाबी रीजन में, पंजाबी माने जा चुके छीन कर हरियाणा के हवाले कर दिये । परन्तु जब इसके विरुद्ध आवाज़ उठी तो केन्द्र ने चण्डीगढ़, भाखड़ा डैम तथा और भी कई कुछ पर सीधा अपना कब्ज़ा कर लिया और यह स्थान किसी को भी न मिले ।

संत जी ने दिसम्बर के महीने में चण्डीगढ़, भाखड़ा डैम तथा और पंजाबी इलाकों की प्राप्ति के लिए फिर व्रत रखने का ऐलान किया, परन्तु अफसोस कि इस बार भी व्रत रख कर फिर बिना कुछ लिये दिये ही छोड़ दिया । स. हुक्म सिंघ जी आये तथा उनके दिये भरोसे के आधार पर व्रत छोड़ दिया गया ।

सांझा सरकार

इस समय हालात बड़े ही नाजुक थे । हिन्दू-सिक्ख का विरोध सिरे पर पहुंच चुका था । 1967 में पंजाबी सूबे के बाद पहले चुनाव थे । चुनाव बड़े खिंचाव वाले थे । पंथ में भारी फूट थी और चुनाव में दोनों दलों ने अपने-अपने उम्मीदवार खड़े किये थे ; जिसका विरोधी पूरा-पूरा फायदा उठा गये । संत जी के दल को केवल 24 और मास्टर जी

के दल को केवल दो सीटें मिलीं । परन्तु इस विरोधता से जनसंघ को विशेष तौर पर फायदा हुआ । आगे उनका पार्लियामैंट का मैंबर पंजाब में से कोई भी नहीं बनता था । इस बार दो बन गये और अमृतसर शहर की असैंबली की तीनों सीटें जनसंघ वाले ले गये । दूसरी तरफ कांग्रेसी बेशक बहुत जीते परन्तु बहुसम्मति न बना सके, 48 सीटें ले जा सके ।

परन्तु प्रकृति ने क्या चक्कर चलाया ? एक दूसरे को देख न सकने वाले जनसंघी और अकाली इकट्ठे हो गये । इन दोनों पार्टियों को सांप्रदायिक और देश के लिए हानिकारक समझने वाले कम्युनिस्ट इन से मिल गये । सभी ने मिल कर सांझा सरकार बना ली । इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि खिंचाव कम होकर प्रेम पैदा हो गया । परन्तु इस सांझी सरकार बनते ही पंजाबी को बिल्कुल ही समाप्त कर दिया गया था ।

गिल सरकार

पंजाबी सूबे में पंजाबी (गुरमुखी लिपि) लागू न करने की कमी ने फ्रंट में दरारें डाली और आठ महीने यह सरकार चलने के बाद टूट गई । स. गुरनाम सिंघ मुख्यमंत्री ने इस्तीफा दे दिया और स. लक्ष्मण सिंघ गिल ने कांग्रेसी मैंबरों की हिमायत से सरकार बना ली । इस सरकार ने भाव स. लक्ष्मण सिंघ मुख्यमंत्री ने पंजाबी को राज्य भाषा का दर्जा दे कर इसको वैसाखी के शुभ अवसर पर सचिवालय दर्जे तक लागू करने का ऐलान कर दिया । इस खुशी में चण्डीगढ़ में तीन दिन समागम हुए तथा और जगहों पर भी विशेष समागम होते रहे । म्युनिसिपैलिटीयों, राज्य के उच्च-अधिकारियों और हाई कोर्ट को भी अदालती भाषा पंजाबी कर देने के सरकुलर भेजे गये और हिदायत की गई कि अब से सब काम पंजाबी में शुरू कर दिया जाये । इस सरकार ने और भी कई अच्छे काम किये, परन्तु संत फतेह सिंघ जी के लगातार किए जा रहे विरोध ने आखिर इसको तोड़ दिया और अब पंजाब में गवर्नरी राज लागू हो गया है । अब फिर चुनाव होंगे । पहली विधानसभा भी तोड़ दी गई ।

बीर खालसा दल

बीर खालसा दल (फौजी तरह की परेड करने वाली) की जत्थेबंदी की ज़रूरत तब बहुत महसूस की गई जब देश के बंटवारे से पहले मुसलमानों की बेलचा पार्टी और हिन्दुओं की महाबीर दल नामक पार्टी अस्तित्व में आई हुई थी। बीर खालसा दल की आल इंडिया अकाली कांफ्रैंस, अटारी के मौके पर जो रैली हुई, उसने कमाल कर दिया। जगह-जगह पर बीर खालसा दल के यूनिट यहां पहुंच कर रैली में शामिल हुए थे। देश बंटवारे के बाद इस काम को शिरोमणि अकाली दल ने सीधा अपने हाथ में ले लिया था। लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर और पटियाला आदि इस लहर के गढ़ रहे। 1956 में सर्व हिन्द अकाली कांफ्रैंस अमृतसर के मौके पर एक बार फिर इस परेड करने वाली जत्थेबंदी ने कमाल की रैली की। ठीक इस मौके पर आल इंडिया कांग्रेस और जनसंघ ने भी मुकाबले पर आल इंडिया कांफ्रैंसें की परन्तु कांग्रेसी और संघी अखबारों ने गलत खबरें छापीं और खालसे की इस शान-शौकत वाली कांफ्रैंस की रौनकों को बड़ा घटा कर बताया, परन्तु सच सच ही होता है। कौम की एकता और सिक्खी शान इस समय शिखर पर पहुंची हुई थी। बहुत देर इस जत्थेबंदी के सरदारे-आज़म मास्टर तारा सिंघ जी रहे।

परन्तु जब कौम में फूट पड़ी तो इस जत्थेबंदी पर भी इसका असर पड़ा। कहीं-कहीं यह जत्थेबंदी रही और कहीं-कहीं इनकी रैली होती रही, परन्तु समूची ताकत वाली रैली न हो सकी।

अब दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी के चीफ जत्थेदार संतोख सिंघ और उनके साथियों के परिश्रम से यह जत्थेबंदी अस्तित्व में आ गई। जत्थेदार संतोख सिंघ जी सरदारे-आज़म थापे गये हैं। जालन्धर और लुधियाना आदि में इसके यूनिट फिर से खोल दिये गये हैं।

धर्म के स्त्रोत गुरुद्वारे

सतिगुरु जी महाराज ने गुरुद्वारे धर्म का स्रोत और धर्म के गुणों को

प्रचलित करने के लिए सैंटर कायम किये थे और सचमुच ही इन धर्म अस्थानों में से सच और आदर्श, सेवा भाव और गुरसिक्खी का प्यार टपक-टपक पड़ता था, परन्तु अफसोस से लिखना पड़ रहा है कि महान पवित्र गुरुद्वारे अब पार्टीबाज़ी और धड़ेबाज़ी को सहारा देने वाले बना दिये गये हैं । सुनते थे कि कुंबापरवरी और भ्रष्टाचार सरकारी दफ्तरों में, सरकारी अदालतों में चलता है, परन्तु अब जब से तकरीबन सारे गुरुद्वारों के प्रबन्ध की बागडोर निरोल शिरोमणि कमेटी के हाथ आई है, दफा 85 की गुरुद्वारा कमेटियां समाप्त कर दी गई हैं, तब से वह सब बुराईयों-कुंबा प्रस्ती और भ्रष्टाचार ने इन पवित्र जगहों पर भी हमला बोल दिया है ।

शिरोमणि कमेटी का दफ्तर, एक धार्मिक संस्था है । परन्तु पार्टी प्रबन्ध के कारण भला पुरुष और सच्चा धर्मी पुरुष इस तरफ आता नहीं और न आ सकता है, यदि आ जाये तो उनकी चल नहीं सकती । ढिंढोरा प्रचार में अच्छे पुरुष को पड़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, क्योंकि इधर तो वही जाये, जिसने इल्जाम लगाने और लगवाने हो, किसी का लिहाज करना हो और किसी से करवाना हो किसी आगे नीचा होना हो और किसी को झुकाना हो और वह असल मनोरथ जिसके लिए यह प्रबन्ध महंतों से छीना गया था, वह गायब-सा हो गया है ।

देखने को सब कुछ ही ठीक हो रहा है, कागज़ी कार्यवाही को पूरे करने के माहिर लोगों के लिए सब कुछ ठीक दिखाना क्या कठिन है ? परन्तु जो गुरसिक्खी का प्यार, गुरसिक्खी का जज्बा, गुरु की श्रद्धा, भरोसा, और सिदक को धारण कर, कुर्बानियां करके महंतों की कुरीतियों और मनमानियों को खत्म किया गया था, धीरे-धीरे वैसे ही माया के लोभी और शिकारी पुरुषों का इस पवित्र प्रबन्ध में दखल हो गया लगता है । यह सच्चाई है, परन्तु कई मेरे वीरों को यह सच्चाई चुभेगी, परन्तु लिखा यह भलाई को मुख्य रख कर है, किसी बुराई को मुख्य रख कर नहीं । सांझी चीज़ है, गुरु पंथ मालिक है, गुरु पंथ के सामने ठीक बात पेश करनी तो ठीक ही लगता है । परन्तु गलती और भूल के लिए क्षमा याचक हूँ ।

साथ मनुष्य तो सब पुतलियां हैं, संसार के रचनाकार प्रभु की यह रचना है । संसार की आवाजायी और प्रयोग विहार के प्रपंच को चालू रखने के लिए उस प्रभु ने यहां सच-झूठ की जंग लगा रखी है । कभी झूठे मनुष्य गालिब आ जाते हैं और कभी सच्चे, इस तरह यह रचना चलती ही रहती है । परन्तु सच्चे की प्रशंसा और झूठे की बुराई, यही ही मनुष्य के अमलों की तस्वीर है । इसी अनुसार ही संसार का संहार और उद्धार का कार्य बनता चला आ रहा है । प्रभु का नाम सच्चा है और आखिर वह सच्चे को फतेह बख्शता है ।

इसलिए सच्चे बनने का यत्न करो और सच्चे का साथ दो । सच्चे की ही सतिगुरु और प्रभु सहायता करेंगे ।

सति श्री अकाल